



श्री ॥

महाकविहोमरकृत

# इलियडर्चे

कविताबद्ध मराठी भाषांतर.



भाग २ रा.



गणेश रामकृष्ण हवलदार, बी. ए. एल्. एल्. बी.  
सुपरिन्टेन्डन्ट, हायकोर्ट, अपील शाखा, मुंबई,  
यांनी केले.



सन १९१३-शके १८३५.

[ सर्व हक्क स्वाधीन. ]



आवृत्ति १ ली.



समग्र ग्रंथ भाग १ व २ मिळून  
किंमत २॥ रुपये.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मुंबई पायघोनी पास शान्ति सुधाकर ग्रेसमें  
चीमनलाल सांकळचंद मारफतीवाने  
मुद्रित किया.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

## रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभ ॥  
तत्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनार्थजिननत्वा, धर्मशीलंचलहुं ॥  
गीर्वाणीहृदयेधृत्वा, लिखामिरत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थं जन्मजीवा  
नां, तत्त्वामृतादिमेलनं, आवश्यकदिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णयं  
॥ २ ॥ द्वादशमासपद्धानि, पौषधंदेववंदनं ॥ स्तोत्राणिस्तवनंरम्यं,  
स्वाध्यायंशुरुवंदनं ॥ ३ ॥ इत्यादिबहुंरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चयं ॥  
जातोयंकल्पकल्याणं, नित्यानंदश्चसंपदं ॥ ४ ॥

अथ ग्रंथ संग्रहकृतसंक्षेप गुरु प्रशस्ति ॥

श्रीमद्भोरजिनेन्दतीर्थतिलकः सद्भूतसंपन्निधिः, संजज्ञेसुगुरुः  
सुधर्मगणज्ञतस्यान्वयेसर्वतः ॥ पुण्येचांद्रकुलेऽजवत्सुविहितेपक्षे  
दाचारवान्, सेव्यशोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनःसूरिराद् ॥ ५ ॥  
आसीत्तत्पदंपंकजैकमधुकृतश्रीवर्द्धमानाजिधः, सूरिस्तस्यजिनेश्वर  
ख्यगणज्ञातोविनेयोत्तमः ॥ यःप्रापत्तन्त्रसिद्धिपंक्तिसरदि ।  
१०८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्विरुद्धकृतोत्तरतरे त्पाख्यं  
चुपादेर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमेश्रीमत्, सूरिःश्रीकुशलाजि  
धः ॥ दादाविरुद्विरुयातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ हेमकीर्त्तिनप,  
ध्यायः, जातोसौसकलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, हेमवाटी  
चिरंजयी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविक्रातः, धर्मशीलवुधाग्रणीः ॥ पाठ  
कानेकज्ञव्यानां, ज्ञानक्रियाप्रपालकाः ॥ ९ ॥ तत्वरणसमालोढा, नि  
धानकुशलाजिधः ॥ धर्ममग्नसमाधिस्था, स्तुर्वन्तिबहुमानवाः ॥ १० ॥  
उपाध्यायसदाचारा, वादीनांमानजंजका ॥ शास्त्रार्थेविजयंप्राप, सं  
पदंयुक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकज्ञप्तिरारेण, कृतोयंग्रंथसंग्रहः ॥  
स्वपरोपकृतेसम्यग्, प्रसिद्धंप्रापितंमया ॥ १२ ॥ सुशिष्यहेमचंद्रेण,  
प्रेमामरसबांधवैः ॥ श्रीसंघकृतसहायेन, सुबह्यांशोसकाक्षरैः ॥ १३ ॥



यंत्रेमुद्रापितंसम्यग्, यंत्राध्यक्षेणशोधितं ॥ पत्रकःपाठकेऽप्योवै, नि  
त्यंश्रेयश्चमंगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेऽस्ये, वृद्धत्वरतरेगणे ॥ वृद्ध  
दोषाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदंमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खर्च तथा इसका लाज शुज  
हमारे पोषपुत्र शिष्य पं । श्रीकैमचंड चि । पैमचंड चि ।  
अमरचंडका हे. हमने हमारा सर्व स्वजपासरा पुस्तक धनमालका  
मालक इन तीनोंको किया हे, दूसरा किस्तीका दावा जर नही ॥  
शुजं ॥

दसकत । ३० । श्रीरामलालगणिका खुद ॥



## ॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमद्दावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रज्ञवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशार्ङ्गवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीवशोन्नतसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंज्ञतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीजम्बाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीधूलजस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहृत्तिसूरजी ज्ञये सो वीरजगवानसे १३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकं प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोन सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगण प्रसिद्ध जया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वघर बने प्रज्ञावीक विद्यासिद्ध ज्ञये इनोंसे वज्रशाखा प्रसिद्ध जई, तेसे १८ पट्टपर श्रीजिनचंडतूरी दुये इनोंसे चंडकुल प्रसिद्ध जया, इस तरे पट्टानुपाट जगवानसे ३८ में श्रीउद्योतनसूरिः ज्ञये सो एक तो निजशिष्य उर इसरा साधुनुके ८३ अपणे विद्यार्थी शिष्योको आचार्यपद दिया तबसे ८४ गण जया, यह ८४ गणोंके आचार्य बने प्रज्ञावीक धर्मोद्योतक जए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाठधारी आवूजीतीर्थ प्रगटकर्त्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः ज्ञये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः ज्ञये सो अणहलपुरपट्टणमें डलैजराजाकी सजामें चैत्यवासियोंको ज्ञा स्वार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटशके राजाने खरतर विरुद्ध दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके ऊ लज्जलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कहीये बने कठोर इस वास्ते खरतर विरुद्ध पाया,

कोटिकगञ्ज वज्रशाखा चंडकुल खरतर विरुद्ध ऐसैं ४ जेद नवदी  
 कित शिष्यकूं कहणा सरू जया, इनोके ४१ में पट्ट दिखीके बाद  
 साह प्रतिबोधक जीवहिंसा बुनाणेवाले श्रीमालमदतियाण गोत्र  
 प्रतिबोधक श्रीजिनचंडसूरिजी जये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके  
 लघुभ्राता श्रीस्थंजणातीर्थे उर नवांगवृत्ति प्रगटकर्त्ता श्रीअजयदेव  
 सूरिः जये, तत्पट्टे ४३ में अगरे हज्जार वागमीश्रावक प्रतिबोधक  
 श्रीजिनवज्रजसूरिः युगप्रधान जये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रज्ञावीक  
 युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिः जये जिनोने चितोर उर उज्जयणी  
 वज्रखंजसे सादीतीन कोटी विद्यान्नायकी पुस्तक निकालके साथ  
 कर बावनवोर चोसठ योगणी एक लाख तीस हज्जार धर राजन्य  
 वंशीयोंको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उंसवाल बणाया, उस  
 वखत तीनसे गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा  
 सावणसुखा ठाजेम इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत  
 सातसे करीब होगये हे, वह गुरुका गुण लिख नहीं सकते, वह  
 आज तक बने दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५  
 में मणीधारी दिखीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दि-  
 खलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंडसूरिः जये जिनो  
 का दिखीके जरबजारमें दाग जया बना चमत्कार देख बादसाहा-  
 दिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी जये, अनुक्रमे  
 ५० में पट्टपर महाप्रज्ञावीक कुशलसूरिःजी जये, सो आचार्यपद  
 पायके बावनवीर चोसठयोगणीकूं वसकर संघमें बने२ उपगार  
 किये, गुजरमल बोथरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूप  
 सें उहां जाकर दरियावमें तिराई ऐसैं परमोपकारी अंतमें फागुण  
 वदि अमावशको स्वर्गवाश जये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्र-  
 गट होय प्रथम दर्शण दिया, तिसपीठे जकलोकोंका उपगार

जगे२ करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघने अपने आचार्यको इष्टदेव समझके सर्व नगर गाम२में चरणमूर्ति स्थापन कर दादाजीके नामसे वंदन पूजन करणे लगे, सर्व जगे दादागुरुका जश प्रख्यात जया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी जये, इनोके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंडसूरि जये, जिनोने अकबर बादशाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका वताशा इत्यादि दिखाकर अमारि उदघोषणा फिरवाई, सर्व वेषधारियोंकी हिंडुस्थानमें रक्का करवाई, क्रियानुद्धार कर पतितोंको ठांटा गह्वकी व्यवस्था करमचंद चढावतकी वीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी, इनोके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरि, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन राजसूरि: इनोके समयमें आचार्य गह्व सागरचंडसूरि:सें जया, इनोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरि: इनोके समय रंगविजयसूरि:सें रंगविजय गह्व जया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंडसूरि, इनोके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनजक्तिसूरिजी जये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलालसूरिजी जये, इनोके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनदर्शसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौजाग्यसूरिजी जये, इनोके समयमें महेंद्रसूरिजीसें मंमोवरागह्व जया, इनोके ७२ में पट्ट श्री जिनहंससूरि:जी जये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरि: जये, इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्तिसूरि:जी वर्तमान विजयराज्यै ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिब श्रीजिनकुशलसूरि: महाराजके शिष्य म. होपाध्याय श्रीक्षेमकीर्तिगणि: जीने जं । यु । प्र । ज । श्रीजिनपद्मसूरि:जीके वखतमें साधूलोक आचार्यमहाराजके पासमें ब-  
होत थोमे रहे ठर वने२ ज्ञानवंत क्रियावंतोंको ठर२ जगे चंतु-

मांस करणे जेजेगये, थोमे बहोत रदेथे सो जी गोचरी थंमिल्ल  
 जूमी चलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी  
 ही बैठेथे, श्रीजीका थंमिल्लजूमीका हाथ धुलाणेकूं उठै, अपणे वि-  
 द्यापाठकजीका एसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप  
 विराजो समयका बमा अपरवलीपणा हे सो गळमें साधू बहोत  
 कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिबके वखत  
 कैसेर ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसेर पंमित वि-  
 द्यमानं थे, अब यह गळ किसदशाकूं पोहचा हे, थोमा समुदाय,  
 जिसमें सुपात्र तो बहोतही थोमे हैं, तब उपाध्यायजीने कहा म-  
 हाराज यह वृहज्ज खरतरमें किसी बातकी कमी नही रहेगी  
 अज्जी गुरुदेवकी कृपासें यतीर होजायेंगे, एसा कह दादासाहि  
 बका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे,  
 गुरुके ध्यानमें लीन जये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह क-  
 रणेकूं जारहीथी, साधूसुनिराजकूं बैठे देख पाशमें आके वंदन  
 नमस्कार कर गुरुके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीने शांतरज्ञ  
 का ज्ञरा वैराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपूतोंने वि-  
 वाहकी वांछा भोग दीक्षा ली, दादासाहिबनें देवशक्तीसें सबोको  
 धर्मोपगरण वेष दीया, इन सबोको लेकर श्रीआचार्य पास आये,  
 सूरिस्वरनें कहा, हेमाजी, धारुकीधारु लेआये, उपाध्यायजीने  
 कहा तथास्तु, मेरे शंतानी हेमधारु नामहीसे प्रसिद्ध रहे,  
 उस दिनसें वृहत्साखा हेमधारु विस्तारजावकूं प्राप्त जई.  
 यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरेसेमें सीवाणची  
 देशमें जई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध  
 हे, इस साखामें बनेश विद्वान होते चलेआये जिनोके बनाये  
 अनेक प्रकारका काव्य न्याय टीका वगैरह विद्यमान हे, उस साखा

( ए )

में उपाध्याय श्रीनेमभूर्तिजीजिणिः तत् शिष्य उ । श्रीक्षेमभाषि  
कजीजिणिः तत् शिष्य । पंरित प्रवर श्रीविनयनद्रजिजिणिः तत्  
शिष्य श्रीपं । प्र । लब्धिद्वर्षजिजिणिः तत् शिष्य पं । प्र । श्रीधर्म  
शीलजिजिणिः (श्रीताभूजी) तच्छिष्य पं । प्र । श्रीकुशलनिधानजि  
जिणः तच्छिष्योपाध्याय श्रीशुक्तिवारिधिः श्रीश्रद्धितारगणिजित्संगृहीत  
रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविदाश तच्छिष्य पं । कमासौज्ञाग्यमुनिः  
चि । पेमचंद चि । अमरचंदकी तरफसे यह ग्रंथ सब जीवोंके उ-  
पगारार्थ पढायेकूं उपाया । श्रीबीकानेरमें सं । १९५९ की ज्येष्ठ  
वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ  
स्थापन करी दे इसमें मदत देणेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीका-  
नेरमें दिया ॥

४१ रु । श्रीनमसेठजी चांदमलजी ठंढा.

११ रु । श्रीमगनमलजी मंगलचंदजी जावक.

११ रु । श्रीसदारामजी गोलठा.

११ रु । मानमलजी केसरीचंदजी साद.

११ रु । श्रीचूनीलालजी गोलठा.

१० रु । श्रीराजूरूपजी देवचंदजी नाइटा.

७ रु । श्रीआसकरणजी वरदिया.

११ रु । श्रीबादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.

११ रु । श्रीतिरवारमलजी तातेम.

२५ रु । श्रीबालचंद कनीराम आनन मुमईवाला.

३ रु । श्रीवठराजजी नाइटा.

आगे जो विवेकी श्रावक इस पाठशालाकूं मदत देंगे तो  
ज्ञानका अक्यनिधान पावेंगे, जतीलोकोके केइयक शिष्य जैनपं-  
रित तत्त्वज्ञानी बण जायंगे, जैनउपदेशक बधेगें, सर जो नदी प-

दते हैं उनको हरतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढाणेकुं उद्यमवंत  
 करणा यह काम श्रावक मातपिता नर गुरुलोकोंका हे, इस नही  
 पढाणेके सबब जैनके जेष्ठधारी नर जेष्ठधारणीयां अनेक कुम्भोंक  
 वश नरकके पात्र नर धर्मकुं लजाते हे, क्यों की दशवी-  
 कालक सूत्रमें लिखा हे ( ॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥ ) पढ-  
 ली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीछे दया पाल सकता हे ॥ ज्ञा-  
 नीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ ऐसा  
 कहते हैं हमारे जावे विगरे तो क्या नर सुधरे तो क्या, हम नतो  
 इनको गुरुकरके मानेगें न अन्नवस्त्र देंगे, देंगेतो भानरहित कंग-  
 लोकी तरे ॥ हम पढाणेकी क्यों कोसील करें ॥ उत्तर ॥ यह स-  
 मझसें तो जैनधर्म अमावश चंडताकुं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें  
 जैनधर्ममें पूनमचंद्रता कैसे उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलाशादि  
 श्रावकाचार ग्रंथोंमें ऐसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें ध-  
 र्मसें नृष्टजये धर्माचार्यकुं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो बदला कतरे,  
 दस बीस आदमी एकठे होकर निंदा करणेसें विगारुका सुधार नही  
 होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जरु विद्यावृद्धि हे, स्वज्ञाव कोई  
 किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चे हे, तथापि कारणसें  
 कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढाणे हे कार्य सो अग्नी क्रिया चोथा  
 पांचमा षष्ठा सातमा गुणगुणा चदशेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास  
 करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोंका हे सो विचारणा,  
 प्रश्न । हम जतियोंको धर्माचार्य नही मानते ? ॥ उत्तर ॥ कोइ  
 कृतघ्नी अपणे पितासे पिताज्ञाव नरुके तो उसका क्या कोइ कर  
 सकता हे लेकिन संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, ए-  
 सेइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य  
 तो जतीही हे, जतियोंसें पढते हैं, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पनिष्क्रमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा चौपी आदि वाचते हैं। यह तो चलता उपगार है, उर जतियोंके वनेरोंनें तुमारे वने-  
 रोंकों धितामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया है, यह उपगार सबसे  
 वमा है ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानते है लेकिन सुशाणे  
 पढाणेवाले तो कम उर धर्म लजाणेवाले बहोत जिनोकों केसे  
 माने ? ॥ उत्तर ॥ सच्च है, इस बातका निर्णय हमने आगे लिखा  
 है सो वांचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों  
 करते हैं इनोसें यथार्थ धर्म पलता नही ? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ  
 धर्म तो यथाख्यात चारित्रकुं कहा है सो तो वज्ररुषज्जनाराच सं-  
 हयान विन्नेद होतेइ गया, सामायक वेदोपस्थापनी यह दोय रहा,  
 जिसमें जी उत्सर्ग उर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी  
 प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग  
 सूत्रोंमें वांचलें योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकनीका व-  
 रतावा देखके मध्यस्थ हो के रहै, आरंजत्यागकी इमेसां बुद्धि रखे  
 पंचमकालमें वोही साधू है, जतियोंके चेला बशाणेमें इतना फायदा  
 है—मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रम-  
 का पाप ज्ञानपदे बाद आपसेंही ओम्देणा, केइयक इनोमें चोथा  
 पांचमा ठा सातमादि गुणठाणे चढणा, श्रावगवर्गका इस जव  
 परजव संबंधी अनेक कार्योका सधाणा, इत्यादि लाज परजीवकुं  
 सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थंकर गोत्रकर्म बांधता है, ओम्में  
 विचारणा ॥ प्रश्न—जिनोकुं पढाया नही उर गुरु मरे बाद गुरुके क-  
 माये धनसें पापारंज करे तो वह पाप चेलेका गुरुकुं जरूर लगे  
 या नही ? उत्तर—जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह  
 वोसिराय दिया उनोको पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंज  
 सो करणेवालेकुं लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका



मर्म है, मातापिता गुरु शुज अनुष्ठान सिखलाते हे संतान वेसा करे तो जरूर शुजफल मिलै, जूआ चोरो आदि कुविसन गुरु सिखलाते नही इस नास्ते करै करावै अनुमोदे उसकूं पाप लगे ॥

षोकानेर वडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें उ० । श्रीराम-  
लालजीगणिः पं । क्षेमचंदजी मुनि पास इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
लीलेचाणक्य स्वरोदय ज्ञाषा	१	०
करुणावत्तीस। दादासाहिबपूजा	०	४
मूर्तिमंरुणाका अवन्तुत ग्रंथ सिद्धमूर्ति०	०	८
सर्वपूजामहोदधी खरतरगङ्गा तपगङ्गकी	४	०
आवकव्यवहारालंकार	१	८

## विज्ञापन.

॥ अथ वर्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिघंत रूपघंत उर विद्यावंत सुशी-  
लही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्ष-  
णवाला दूसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसँही होणा,  
फेर हमेंसा शास्त्राच्यासी होणा, बहोत प्रनादवंत नहीं होणा, देश  
क्षेत्र काल ज्ञाव मुजब सदा गन्नकी सारसंज्ञालसँ जैनधर्मके दीप-  
क होणा, वेजा चलणसँ यतीयोंकों दृढकणा, उनोके मन मुजब  
नही चलणे देणा, लांठित पुरुषकी संगत नही करणी, उन्नय  
काल प्रतिक्रमण करणा, अन्नक्षके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य  
जाप करणा, देवदर्शन उर थापनाचार्यादि पन्तिदेण करणा, जती  
जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेष उर संघ तरीफ करे ऐसे मार्गमें  
प्रवर्त्तणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणादही करणा,  
स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अथै सुशील पंन्तितो  
की सोदबत करणी, क्कमावंत जी होणा, समय जी सोचणा, उ-  
पदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य उर  
पंन्तितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख उर अयोज्ञ उर बुद्धिहीन अव-  
स्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणेश गन्नके अविष्टायक क्षेत्रपा-  
ल मानजद्रादिकके साहायसँ धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रा-  
दिक विद्या लब्धिवलसँ संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रज्ञावीक  
होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोके पढने उर पढाणेवाले होणा,  
वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकूं सुविहित मार्गमें चलाणा, गङ्ग के घोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुद्ध अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधूओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके जंमर नही हे उहां पुस्तक लिखवाके जंमर करवाणा, अपणी निशायें हजारो रुपेके पुस्तक लिखवाके आवकों पास लेणा यह साधूजंका धर्म नही, फकत अप-  
णोंसे उठे उर नित्य पढिलेइण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकूं चहीये तो ज्ञानजंमरसे लेकर पीठा देशा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिसर व-  
स्तुकी आवश्यकता होय सो उहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रत करवादेणा, अथवा दुसरे क्षेत्रोंके समर्थ आव-  
कोंसे करवाके जेजादेणा, गृहस्थोंसे वैयावच्च कराणी नही, बती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंक्तियोंसे तो पहली ज्ञान पढे उर फेर कृतग्री होकर उनही की पीठी हीलणा उर निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्क उर बीजभूत जतीही हे क्योंकि जतियोंकेही प्रतिबोधक जसवाल पोरवाल उर श्रीमालादि आवक हैं, फेर इन जतियोंमेंसेही हजारों त्यागी वैरागी इस पन्ते सम-  
यमेंनी होतेआए हे, तपा सत्यविजयजी जिनके शंतानमें बूटे-  
रायजी उर आत्मारामजी वगेरे जये हे, खरतर अमृतधर्मजी उपा-  
ध्यायजी कामाकल्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे जये हैं उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी ज्ञानचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं तो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनोंकी जग इन पुरुषोंके जतीही है इस वास्ते जतीयोंका घराणा रत्नोंकी खाण है, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीजी प्रमादी ठे गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते है उर आजकलके साधूजी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती है इस वास्ते केइयक तो ठाने दोष लगाते है केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोंमें ज्ञाव करके पंचम गुणघाणी है केइयक चतुर्थ गुणघाणी, इसी तरे साधुजके मुजबही शुज ज्ञावसंयुक्त जतियोंके ज्ञाव आश्री गुणघाणा समझणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीजगवान कह सकते है तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुज बलवान है, लोचादि कायक्केस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके है, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी बहुलता आजकल साधुजमें ज्यादा देखणेमें आता है, गणश्वालोंसे आपसमें द्वेष रखते है, खरतर तथा तपोके जी देखणेमें आता है, जब कषाय विद्यमान है तो सिद्धिपद केसे सधेगा बलीहारी उनहीकी है जिनोंने कषायकी चोकनी त्यागी है. किंवहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वशिष् राजपूत जाट वगेरे उत्तम जाती का चेला तीन च्यार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेखा यावत् बारे वर्ष तकका उपरांत ऊमरवाला पढता नही उर बहोत ओटा लेणेसे धाय रखणी होती है उसकी प्राजगेट करणोकूं तब बहोतसे कमजात अपणी एबकूं ठिपाणेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते है लेकिन न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूमसं वात नही निंकावते मुखोंके कदणेसे सोना पीतल नही वषाता, डुष्टोंका स्वप्ना-

वही होता है सो गुणमें उद्युष्ट निकालते हैं, जर्तृहर लिखता है-  
 सूरवीरकुं निर्दश कहते है गमखाखेवालेकुं मरुकम केते है ब्रह्म-  
 चारीकुं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत है, खैर ऐसे चेलेकुं मुखपाठ  
 जैनधर्मका अवस्य कर्तव्य गुणाना निच फेर अक्षर वांचने सि-  
 खाणा अक्षर जमाखे वोखखा पाटी लिखाणी फेर कौश व्या-  
 करण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्वानुसार सीखाकर जी-  
 वविचारादि षट् प्रकरण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोल-  
 पट्टा मुंहपत्ती उधा मांसा चेहर पांगरणी स्वेत हमेसां रखणा, म-  
 स्तकके बाल केचीलें कतराणे या उस्तरेलें मुंराणा, पादस्त्राण स्वे-  
 त वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर  
 देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहां एसा उपसर्ग  
 नही देश विरुधके कारण त्याल्य है, प्रवचनसारोद्धार ग्रंथमें का-  
 रणविशेष साधूजंको पादस्त्राण पहरणोकी आज्ञा है, पुस्तक लि-  
 खाणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गुंधणा तिर्यणोके मोरे बणाणे  
 माला बणाणी ठोकरे पढाणा मंत्रविद्यामें कुशलाता रखणी सो जी  
 जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातकुं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख  
 यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखत पक्कमणा करणा, उची शक्ते  
 सच्चित्त त्यागणा, राजदंमे लोकजंमे एसे रस्ते नही चलणा, कुलम-  
 र्याद लोपणा नही, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके वरखि  
 लापनसा पीखेवालेकी संगत नही बेठणा, कुविसनीयोके संगतसे  
 लंठन लगता है, श्रावक जो द्रव्य देवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थ-  
 यात्रा चेला लेणा उनोकुं खिखाणा पिजाणा पंरुतोको रजगार देके  
 चेलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय  
 पापोंकी गर्हा सुकृतकी अनुमोदना कर सब दोस्तराके परजव सा-  
 धणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुलज्जबोधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धांतोंमें लिखा है, उस गुणोंकूं धारणा चाहिये. गणसंगसूत्रमें साधुत्वकी प्रतिपाल करनेसे श्रावकोंकूं मातापिता तुल्य जगवंतनें कहा है, बालक कसूर ज्ञी करे तो ज्ञी मातापिता अपने शंतानपर अंतरंगसे कष्टी द्वेष नही करते हैं, इसी तरे श्रावकोंकूं साधुत्वोंसे वर्त्तना चाहिये, जेवधारीसाधुत्वमें कोई तरेकी एव दीखपने तो एकांतमें हितशिक्षा देके बुझाणा चाहिये, नहीं माने तो बालककूं धमकावे जेसे धमकाणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नही दीखेतो कर्मोंकी विचित्रता समझके एसेंकी संगत न करे, जैनधर्मकूं लजावै एसी एव कोई नही होय नर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल जाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय नर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानी नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, नर जिनधर्मकूं लजावै एसा होयतो वहांसे रुकसत करादेणा. जिनमंदिर नर उपासरेकी आवंद खरचकी सारसंज्ञाव जरूर करे, विनासंज्ञाव किये बहोतसे मंदिर उपासरोकी तजबीजें बिगन रही है, जंनार लोक स्वागये हे, उती ज्ञाके इस बातका खयाल हरतरेसे करें, अपना लरुका लरुकीयोकूं संसारविद्या नर धर्मकी मजबूती करणेकूं पक्किमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार नर जैनन्यायशास्त्री अकर बचपणेसें सिखलाणा चाहिये देव गुरु नर बनेर अकलवंतोंकी संगत करवाणी चाहिये, विरादरीमें सनातन कुलमरजावसें जो विपरीत आचारणा करै उसकी देखदेख आप न करणा, वणे जहांतक जणोंको ज्ञी रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इहम लरुकोंकूं सिखलावे तो पहली जैन न्यायसें दुसियार कर पीठे सिखलाणा कयोंकी इस अंग्रेजी इहमकी ज्यादा किताबोंके पढणोंसें पीठे उस

कं सत्य सनातन दयार्थमका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा उर अंग्रेजीमें चोथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमें ढढा गुलाबचंदजीकों हम धन्य-वाद देतें हैं इस वजें वेलासक पढे उर पढावै, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती उर तारीफ जिसने समजा है वोही ज्ञाणता है उर लस-नकूं मुसककी खुसबो कब लग सकती है, जिनोंको संसारमें अजी बंदोत नवभ्रमण करणा बाकी रहा है मुनोंकों जैनधर्म किसी तरे रुचता नही, कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे२ है मानेजी तो कोन सच्चा उर कोण फूग ? ( उत्तर ) हे ज्ञय हमने पेस्त-रही लिखा है न्याय जो जैनका सात जंगरूप है उसकूं समजा उर वस्तुत पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता है, ( प्रश्न ) इ-तनी बुद्धि उर परिश्रम तो करणेवाले घोने हैं सो एसा न्याय प-ढके निश्चय करे सहजमें निश्चय कैसे होय ? ( उत्तर ) जो इतना नही समजो तो जो रुषनदेवजीसे लेकर आज दिनतक जो स-नातन जैनधर्म चलता आया है वोही जैनधर्म सच्चा है बीच२ में अद्वपङ्कोने अहंकारके वस मनोकाछिपत फंदसे एक नय पकरके अपने२ मत खूने किये है, षटशास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार जगवान जड्वाहुस्वामी उमास्वाती ज्ञाण्यकार जिन-जद्रगणी कमाश्रमण इत्यदि पंचांगीकार जो समुद्र सरीषे बुद्धी-के धणी उनोंने जिस बातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समजणा, आवगधर्मवालों पर वसा उपगार रत्नप्रजसूरि उर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया है सो केइयक पापारंज की बातें तो इस जातीके कायदेसेही बंध होगई है, जैसे मद्यका पीणा उर मांसादि अन्नक खाणा लेकिन आजकल कर्मके वस धीरे२ ऐसे उत्तम कुलमें निरबुद्धीयोंने अधोगतीकी समक बां-

धर्म पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निरज्जाग्रकी तरे क्यों हाथसें फेरते हो पीठे पड़तावा होगा थोभे दिनकी जिङ्गानी हे, मदिरा पीछेमें बावन ठगुण हे एसें मांसमें देखो जैनतत्वादर्श ज्ञायाग्रंथ, यही चीज अग्री होती तो तुमारे वमेरे लाखों राजपूत इस चीजोंको क्यों ठोमते छरं मुसलमानीनों जौ धर्मकायदेसें इस बातकी सकंत मनार्ह हे इत्यादि, किंबहुना ॥ जैनपाठशाखान्त स्थापन करणी पढ़नेवालोंको अन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाहिये, जैनकोममे संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पं-  
 नित तो दुस्मन जौ अग्री होता है मूर्ख हितकारी जौ कामका नही, विद्यावान सब काम विचारकेही करता है मूर्खके विनाकारण द्वेष छर अहंकारीपणा होता है बाकी तो कवियोंने कहा हे—  
 दुहा ॥ सज्जन जाके सो नही, दुस्मन नही पंचास ॥ जंशनी जणके क्या किया, जार मरी नव मास ॥ १ ॥ श्रावक जितनी चीज अपणे उपजोगमें लेना हे सो सब जेतम चीजका दान करेता हे एक स्त्री वर्जके उस करके जन्मांतरमें लहंमीकी एश्वयता ज्ञाग कर संसारका पार पुन्यानुबंधो पुन्यसें पाता हे मुक्तिपथ जाते हुये जीवकुं पुन्यबोलांवरूप हे, अन्न वस्त्र डंबधी सज्या पात्रादिकसाधुजेंकों देवे, देवकं निमत्त अष्टद्रव्य गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाजेंते दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगेरे अंजमसें दान करे, साधुधर्मी तथा जैनपंथितोंकुं नगदद्रव्य वस्त्र जोजनादिक बधायोग्य दान करे, तीर्थंकर जंगवान जौ सैवत्सरी दान देते हैं, दानधर्म मुख्य हे जंगवतीजीनें ग्रहस्थका अजंगद्वार कहा हे, जंगवतीसूत्रमें तीन गुरु कहे हे सिद्धगुरु ? जो कारीगरी सिखलावे सो, कछोगुरु ? जो लिखशा पढ़शादि ७१ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु



३ सामायक पक्कमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेस दे के मुक्ति-  
पंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य जत्ती करे ॥ अब  
चउत्तंगी लिखते हैं ॥ सम्यग्ज्ञानवन्त देसैंविराधक । १ । कष्टरूप  
क्रिधा करणेवाला देशेंआराधक । २ । ज्ञान उर क्रियारहित सर्वे-  
विराधक । ३ । ज्ञान उर सत्क्रियावन्त सर्वेआराधक । ४ । ॥ इति  
पत्रिगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोके करणे योग्य कर्तव्य देखणा  
होय तो हमारा उपाया श्रावग व्यवहारलंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोके कर्तव्य ॥

मारवाममें प्रायें जैनमंदिर जोगगद्दी पूजते हैं उनोंमें इस  
धखतें प्रायें मिथ्यात्वी वहोत सम्यकी वहोतही कम दे, गुजरातमें  
जो जोगक जैनमंदिर पूजते हैं सो सब जैन हैं जिनोंकों अन्य  
देशमें गंधर्व कहते हैं. ( प्रश्न ) पूर्वोक्त जोगकोंनैं जैनधर्म कबसें  
बोना हे ? ( उत्तर ) पहले श्रीरुषजदेवजीनैं जोगवंश स्थाप-  
नकर अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछे जतरजीनैं ब्राह्मणवंश  
स्थापन करी, राजा सूर्ययज्ञनैं जोगवंशीयोको पूज्य जाण जिनमं-  
दिरकी सारसंजाख सौधी लेकिन जिनमंदिरका चढापा मंदिरके  
कूटेंपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होणसें बलिदान जोगवंशी नही  
खातिथे वो सब पंथी जानेवर खायाकरते, इनोको अनेक तरेसें पर्व  
महोत्सव परे डव्य वस्त्र जोगनादिकसें राजा हर प्रजा सब संस्कार  
करतेथे वो सब नेवमें देशमें जोगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मी होगये  
बाद कजी कोइ जैन कजी मिथ्यात्वी ऐसे होते चलें आये, जब २४  
वर्ष पहले छर्सीयामें जैनधर्म फैला तब राजाके पुरोहित राज-  
ाके संग जोगवंशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव प-  
वगेरोंने जत्ती उर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारी-  
साधर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

सैवत् बारेसेमें रामानुज माधवाचारी वगैरोंने विष्णु संप्रदाय नि-  
 काली, उसही जमानेमें अनेक राजन्यवंशीयोंको वादा दत्तसूरजो  
 ने लाखों ठसवाल फेर वषायें, तब राजवीयोंने गुरुसे अरज की  
 इस दयाधर्मके प्रज्ञावसे निर्दयीपणा हम लोकोंमें होगा नही राज्य  
 तो सदा धिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा,  
 गुस्ने कहा जो जिनमंदिरोकी जत्ती ठर जतीगुरुकी सेवा अजह  
 त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां  
 तक पाटका मालक राजा ठर सर्व थाटका मालक तुमलोक रहोगे  
 तथास्तु वरदान एसाइ जया, राजाठने अपणें जार्इ स्वजनवर्गी  
 ठसवालोकूं प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथा-  
 योग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सौं रजवामोंमें ठसवालोकंका राज्या-  
 धिकार वषा तबसे ठसवालोंने महरवानी रखके विष्णुमंदिर शि-  
 वालयादिकोंका पूजारीपणा जौ जोजकोंको सोंपा वह जोगवंशी  
 फेर पीठे धारेइ मिथ्यास्वी वषावेठे, विद्याहीनता होणेंसे सब तरे  
 की हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण जोजकोंको कर्म कर  
 करके मानणे लगे पूज्यज्ञाव उठगया, जो कज्जी जोजकलोक एसा  
 समजतें होंगे की हम तो अबलसेही शैव बैष्णव थे ( उत्तर )  
 यह समजकी जूल हे हम पदली लिखदिया हे जैनधर्मकी बहु-  
 लायतमें प्रजा जैन रही, बोधोक अमल बोद्ध, शांख्यादिकोंके अ-  
 मलमें सांख्य, इत्यादि बातें तवारीकोसें जौ पाईजाती है लेकिन  
 जैनधर्म ठर मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका हे इतना जोज-  
 कोंको जरूर समजणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मी हो-  
 ते तो राजा उपलदेव पमारादिक परमजैन तुमारा लागा ठर बहु-  
 मान ठसवंश पर कज्जी नही लगाते, मिथ्याधर्मीयोका जोर ठसं-  
 बाल जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समजणा, पीठेंसे

विष्णुमंदिरोंकी पूजा और राजा वगैरोंकी देखदेखें संग दोष लगा, उसवालोंने तिथि नहीं करी वध गया, इस तरेही बहो-तसें उसवंशी जी खुसामंदीसें दुसरा धर्म धारलिया तुमकों क्या कह सकतेथे, खैर इस बातोंसें हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन अब हम आगे लिखते हैं उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकीक कहणांवट जी हे “ जिसकी खावे बाजरो जिसको औरणी हाजरी ” उसमें हरज करणोंसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगजकीसें जिनमंदिरमे जाहू देणा, वरतन मलणा, अंगलूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विंगरं जिनमूर्तीका स्पर्श नही करणा, पूजां एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा जी नही रहणे देणा, दीपक जलाणोंमें ढकणा वगैरे देकर जीवरको करणी, जल शुद्ध ठाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री ब-होतही विवेकसें रखणा, देवड्यकी चोरी नही करणी, दकमें हरकत मालणा नही, देव उरं गुरुकी सेवा करणोंसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो ज्ञावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके वश जो श्रद्धा नही आवै तो जिसकी व दोलत रौटी आदि सइकनों रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य जंपासरे के जरीये तुमें सइकनों रुपे आवक देते हैं वो सब देवगुरुका प्रताप समज इन दोनोंकी सेवा तन मनसें बजाया करो ॥ अलंविस्तरेण ॥

ऊपर उ उपदेश मैंने लिखे हे कोइ कठोर लबज लिखां होथे तो माफी मांगताहूं सरलज्ञावसें लिखा हे द्वेषसें नही ॥

इस ग्रंथके ठोपणमे कानन मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके वांचे या गुरुसें शुद्ध करावेवें में मनशु-द्धिसें सर्व संघसें कृपा मांगताहूं सकल तो सदा गुणग्राहीही होते

हैं, उनोंका मैं सदा आज़ार मानता हूँ ॥ यतः ॥ तथापि क्रियत  
ग्रंथ, संतियद्यपि दुर्जना ॥ नहिदस्युज्जयाल्लोको, दैन्यवानिहवर्त्तते ॥  
॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तो ज़ी करता हूँ यद्यपि डुरजन बहोत हे  
चोरोके मरसे लोक कंगाल नही बूझ वेठते तेसे १ मेने अपने  
हाथसे लिखकर मुंबई जेजकर शिष्यवर्गोंके कहणेसे इसमें सं-  
ग्रह मेने अनेक ग्रंथोंसे किया हे, बहोत चीजें पं । प्र । श्रीअवी-  
रचंङ्गीमुनिःसे लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संचय हे,  
ऋषभदेवजीका आदिग्रंथ । र । महावीरस्वामीका । म । इन दोनोंसे  
बना जो । राम । उनोंके मध्यवर्त्ती सब जगवंतोंके गुणोंका विलास  
इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे ॥

॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सर्वईया ॥

दाशानुदाशाङ्गवसर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतलेलुगंति ॥ मरु-  
क्ष्मलीकट्पतरुःसङ्गीया, झुगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंताम-  
णिः कट्पतरुर्वराक्रो, कुर्वन्तिजगत्याःकिमुकामगत्या ॥ प्रसीदतःश्री  
जिनदत्तसूरैः, सर्वेपदाहस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनचयोगिनी,  
जचधराधीशस्यनोशाकिनी ॥ नोवेचाल पिशाचराक्षसगणाः, नोरो-  
गशोगोज्ञयं नोभारीनचविग्रहः, प्रजृतयः प्रीत्याप्रयत्पुञ्चकैः ॥ य-  
स्तेश्रीजिनदत्तसूरि, गुरवोनाम्नाकरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ स-  
र्वईया ॥ बावन वीर किये अपणे वश, चौसव योगण पाय ल-  
गाई ॥ नाइण साइण व्यंतर खेचर, नूतरुमेत पिशाच पुलाई ॥  
बीज तमक कमक जटक, अटक रहै जु खटक व काई ॥ कहे प्र-  
मसीह लंघै कुण लीह, दीयै जिनदत्तकी एक डुलाई ॥ १ ॥ इति ।  
राजै शुंज गौरगौर, एसो देव नह । और ॥ दादौ दादौ नामसें, १  
गत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही ज्ञाव आय, पूजै लस्क लोक पा-  
म्यासनकुं रांनमांजि, पाणी आन पायो हे ॥ वाट घाट शत्रु ६

हाट पुर पाठसमें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसी-  
ह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करै, सार्चो श्रीजिनकुशलसूरि, नाम थुं  
कहायो हे ॥ १ ॥ कुशल अंग उठरंग, कुशल वणिजै व्यापारै, कु-  
शल देव देहरे, कुशल धन राजहुवारे ॥ पुन्य पसाथे कुशल कुशल  
श्रीसंघ जपिजै, वाहण आवै कुशल कुशल घरं२ गाईजै ॥ जिन-  
चंद्र सूरि पुद्गलपट्टधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि  
पाय, पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वनो संसार  
कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल माल लखि घर कुशले  
आवै ॥ कुशलै धन वरसंत कुशल धन धनरुवन्तो, कुशलै घोमां  
पट्ट कुशल पहरीय सुवन्तो ॥ एरसो नाम सदगुरुतपो कुशलै जग  
रखियामणो, जट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घरं२  
होय वधामणो ॥ १ ॥

---

## रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



ग्रंथोका नाम.	पृष्ठांक.
१ ऊँकारं बिंदुसंयुक्तादि मंगलाचरण ...	१
२ स्वरवर्ण ... ..	२
३ वर्णव्यंजनमाला ... ..	३
४ शिक्षावाक्य ... ..	३
५ संधिसूत्र ... ..	४
६ हितोपदेश ... ..	५
७ विद्वं जिन नाम सोले सती नाम ...	७
॥ प्रतिक्रमण सूत्र प्रारंभ ॥	
८ नवकारमंत्र ... ..	१०
९ ध्यापनाचार्यजीकी तेरेपनिलेइण ...	१०
१० खमासमण ... ..	१७
११ सुगुरुने शाता सुखपुञ्जा ... ..	११
१२ मुहपत्ती पनिलेइणके पञ्चीस बोल ...	११
१३ अंगकी पञ्चीस पनिलेइण ... ..	११
१४ सामायकका पञ्चखाण ... ..	१२
१५ इरियावहि ... ..	१३
१६ तस्तउत्तरी ... ..	१३
१७ अन्नबूसतिणं ... ..	१३
१८ लोगस्त ... ..	१४
१९ वेसणोसंविस्तार्ण ... ..	१४

२०	राई प्रतिक्रमण विधि...	...	...	१५
२१	सकलतीर्थनमस्कार ...	...	...	१५
२२	जंकिचिंनामति० ...	...	...	१५
२३	नमोब्रुषं ...	...	...	१५
२४	जावंति चेइआई ...	...	...	१६
२५	जावंति केवि साहू ...	...	...	१६
२६	परमेष्ठिनमस्कार ...	...	...	१६
२७	उपसर्गहरस्तोत्र ...	...	...	१६
२८	जयवीयराय ...	...	...	१७
२९	परिक्रमण ठायवेका अवसर ...	...	...	१७
३०	सबस्तवि ...	...	...	१८
३१	इच्छामिगमि ...	...	...	१८
३२	वंदणावतियाए ...	...	...	१८
३३	पुस्करवरदी ...	...	...	१९
३४	सिद्धाणंबुद्धाणं ...	...	...	१९
३५	वेयावच्चगराणं ...	...	...	२०
३६	संभासाप्रमार्जन ...	...	...	२०
३७	सुगुरुवांदणा ...	...	...	२०
३८	देवसियं आलोचं ...	...	...	२१
३९	रात्रि संबंधी अतिचार आलोयण ...	...	...	२१
४०	अगरे पापस्थानक आलोयण...	...	...	२२
४१	आत्रकवंदितासूत्र ...	...	...	२३
४२	वंदितासूत्र पीठेकी विधि ...	...	...	२६
४३	अधुमिठमि ...	...	...	२६
४४	आयरिय उवझाए ...	...	...	२६

४५	आवश्यकक्रीमुहपत्ती	...	...	२७
४६	सकल तीर्थ नमस्कार	...	...	२७
४७	परसमय तिमरतरणि	...	...	२८
४८	संसारदावाकी स्तुति...	...	...	२९
४९	काजसगर्भे स्तुतिका पृथग् पाठ	...	...	२९
५०	अढाइकोसु द्वीवसमुदे	...	...	३०
५१	जय२ त्रिभुवन० सीमंधर चैत्यवंदन	...	...	३१
५२	सीमंधर स्तवन ॥ श्रीसीमंधर साहिबा...	...	...	३१
५३	सीमंधर स्तुतिकी एक गाथा महीमंरुणं	...	...	३२
५४	सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन जय२ नाजिनरिंदनंद	...	...	३२
५५	सिद्धाचल स्तवन ॥ सिद्धाचलगिरिजेठ्या रे	...	...	३२
५६	सिद्धाचलशुद्ध शेरुंजगिरिनमीये रुषजदेवपुंररीक	...	...	३३
५७	पन्निखेइण विधि	...	...	३३
५८	सामायक पारनेकी विधि	...	...	३४
५९	जयवं दसणजदो	...	...	३४
६०	संध्याकालसामायक विधि	...	...	३५
६१	देवसी पन्निक्कमण विधि	...	...	३६
६२	जयतिहुअण	...	...	३६
६३	जयमहायश	...	...	४०
६४	महावीर स्तुति॥मूरति मनमोहन कंचण को०	...	...	४०
६५	स्तुति कहां पोठेकी विधि	...	...	४१
६६	श्रुतदेवताकी स्तुति...	...	...	४३
६७	क्षेत्रदेवताकी स्तुति...	...	...	४३
६८	वरकनक	...	...	४३
६९	नमोस्तु वर्द्धमानाय...	...	...	४४



४०	श्रीजिनविंब जुहारो रे ज्ञविका ॥ स्तवन	४४
७१	तिस पीठे काजसग करणोकी विधि ...	४५
७२	थंजणापार्थनायका चैत्यवंदन ॥ श्रीसेदो०	४६
४३	थंजणयठियपाससामिणो ...	४६
४४	दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधना ...	४४
४५	दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी आराधना	४७
७६	चणकसाय चैत्यवंदन ...	४७
४४	लघुशांतिस्तवन ...	४८
४७	कमलदल स्तुति ...	४९
४८	कल्याणकमला गेहं ॥ स्तुति...	४९
८०	सकलकुशलवल्ली ॥ स्तुति ...	५०
८१	सर्व जिन स्तुति ॥ दर्शनात् डुरि० ...	५०
८२	आदिजिन स्तुति ॥ सुवर्ष वर्षी गजराजगामिनं	५०
८३	सोखम जिनवर शांतिनाथ स्तुति चैत्यवंदन	५०
८४	प्रह शम प्रणमुं ॥ नेमनाथ स्तुति चैत्यवंदन	५०
८५	पुरसादाणी पास नाह ॥ स्तुति चैत्यवंदन...	५१
८६	बंदू जगदाधार ॥ महावीर स्तुति चैत्यवंदन	५१
८७	अथ पाक्षिकादि प्रतिक्रमण विधि ...	५१
८८	वृद्धदत्तिचार ...	५२
८९	अतिचारके पीठैकी विधि ...	६३
९०	जुवनदेवता स्तुति ॥ चतुर्वर्णाय संवाय...	६४
९१	दस पञ्चस्काण ...	६५
९२	पञ्चखाणोकी आगार संख्या ...	६९
९३	पञ्चखाणके आमारीका अर्थ ...	६९
९४	साधू प्रतिक्रमण सूत्र चत्वारिमंगलं ...	७२

९५	परकीसूत्र ... ..	७६
९६	अठपहरी पोसेकी विधि ... ..	९०
९७	पोसहरा पञ्चस्काण ... ..	९१
९८	चोवीस थंरिला करणोका पाठ ... ..	९२
९९	थंरिलाकहाकरणा ... ..	९३
१००	पांचे शक्रस्तवे देववंदण विधि... ..	९३
१०१	पञ्चस्काण पारणेकी विधि ... ..	९५
१०२	राइ संथारा विधि ... ..	९८
१०३	पोसह पारणेकी विधि ... ..	९९
१०४	दिन उग्यां पीठे पोसह लेणेकी विधि ... ..	१००
१०५	रात्री चोपुदरी पोसेकी विधि... ..	१०२
१०६	ठाणेकमणे चंकमणे... ..	१०३

॥ देववांदणेमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके

प्रतिक्रमणमें कहनेको स्तुति ॥

१०७	दूजकी शुइ ॥ मदी मंरुणं ... ..	१०३
१०८	पांचमीकी शुइ ॥ पंचानंतक०... ..	१०४
१०९	आठमकी शुइ ॥ चोवीसे जिनवर... ..	१०४
११०	मैानएकादशी स्तुति ॥ अरस्य प्र० ... ..	१०५
१११	पार्श्वजिन स्तुति ॥ डेंडेंकि चतुर्दशीकी... ..	१०५
११२	निरुपम सुखदायक ॥ नवपद स्तुति ... ..	१०६
११३	वलि२ हूं ध्याऊं ॥ पजूषण स्तुति ... ..	१०६
११४	सुर असुर वंदिय ॥ नेमजिन स्तुति ... ..	१०७
११५	पापायांपुर चारुः॥ दीपमालिका स्तुति... ..	१०८

॥ शुई संग्रह ॥

११६	पंचविदेद विषै विहरंता॥दीसविहरमान स्तुति:१०८
-----	---

११४	समदमोत्तम वस्तुमहापणं ॥ पार्थस्तुतिः	१०७
११८	वरमुत्तिथहार ॥ रुषज्ञस्तुति ...	१०९
११९	प्रणमुं परमपुरुष ॥ रुषज्ञस्तुति ...	१०७
१२०	विश्वनायक लायक ॥ अजितजिन शुद्ध...	११०
१२१	यदंद्गिनमनादेव० वर्द्धमानस्तुति ...	११०
१२२	वीरदेनं० वीरजिन शुद्ध ...	१११
१२३	सुरति मनमोहन० वीर शुद्ध ...	१११
१२४	चञ्चवीस जिन पंचकड्याणक स्तुति ...	१११
१२५	श्रीशैत्रुंजमंरुण आदिदेव ॥ सेत्रुंज शुद्ध...	११२
१२६	गिरनार शिखरपर० नेमजिनस्तुति ...	११२
१२७	सुख समकितदायक० शीतलजिनशुद्ध...	११३
१२८	मिन्न चोविह सुरवर० समवसरणस्तुति...	११३
१२९	सेत्रुंजगिर नमिथै ॥ चैत्रीपूजमस्तुति ...	११४
१३०	समकं सुखदायक० नवपदस्तुति...	११४
१३१	शिवसुख दाता ॥ वीसस्थानकस्तुति ...	११५
१३२	अरिहंत सिद्ध पवयण० वीसस्थानक शुद्ध	११५
१३३	अनुपमगुण आगर० नवपद स्तुति ...	११६
१३४	विमंलाचल मंरुण जिनवर ॥ शैत्रुंजय स्तुति	११६
१३५	शांतिजिनेसर जगअलवेसर ॥ शांतिनाथ शुद्ध	११७
१३६	मन सुष वंदो जावे जविषण ॥ सीमंधर स्तुति	११८
१३७	पंच अनंत महंत गुणाकर० पंचमी स्तुति	११८
१३८	अरताथ जिनेश्वर दीक्षा ॥ अग्र्यारस स्तुति	११९
१३९	जयकारी जिनवर वासुपूज्य ॥ रोहणी स्तुति	११९
१४०	प्रथम तीर्थंकर आदिजिनेश्वर ॥ अस्की चौदश स्तुति	१२०

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

१४१	अजित शान्त स्तव प्रथम ... ..	१२०
१४२	जल्लासिक्रम ॥ द्वितीय स्तव लघुअजित शान्ति	१२५
१४३	नमिज्जण ॥ तृतीय स्तव ... ..	१२६
१४४	तंजयन ॥ गणधर स्तुति चतुर्थ स्तव ...	१२८
१४५	मयरदियं ॥ गुरुपारतंत्र्य ॥ पंचम स्तव	१३०
१४६	सिग्गमवहरिज्ज ० षष्ठ स्मरणं ... ..	१३१
१४७	जवसगगहरं स्तोत्र ॥ सप्तम स्मरणं ...	१३२
१४८	जक्कामर स्तोत्र ... ..	१३३
१४९	वन्नी शान्ति ॥ जोज्जोज्जव्या ... ..	१३७
१५०	जिनपंजर स्तोत्र ... ..	१४१
१५१	किंक्कप्पत्तरु ० वन्ना नवकार ... ..	१४२
१५२	तिजयपद्दुत्त ॥ शसतिजिन स्तोत्र ...	१४५
१५३	दोसावहारदक्को ॥ नवग्रह ० पा० ...	१४६
१५४	जगद्गुरु नमस्कृत्य ॥ शान्ति स्तोत्र ...	१४६
१५५	कळ्याणमंदिर स्तोत्र ... ..	१४८
१५६	रुषिमंरुल स्तोत्र ... ..	१५३
१५७	लघुजिनसदस्सनाम ... ..	१५५
१५८	महिच्च स्तोत्र ... ..	१५८

॥ अथ तुटकर चैत्यवंदन ॥

१५९	सिद्धो विज्जाय चक्की ॥ सेत्रुंज चैत्यवंदन	१६२
१६०	श्रीसेटीतट मेरु धाम ॥ थंजणापार्श्व चैत्यवंदन	१६५
१६१	वंदू जिनवर वीहरमान ॥ सीमंधरजिन चै०	१६३
१६२	पूरव देसे दीपतो ॥ शिखरगिरी चैत्यवंदन	१६३
१६३	प्रथम महेसर पद्मनाज ॥ पद्मनाजजिन स्तुति	१६३

१६४	अवामावामार्घे ॥ पार्श्वे स्तुति ॥ ...	१६३
१६५	अविरलशब्दधनोद्या ॥ सरस्वती स्तुति...	१६३
१६६	दर्शनं देवदेवस्य ॥ सर्वजिन वंदन स्तुति	१६४
१६७	ज्ञाषामर्षं दोहा ॥ वंदनस्तुतिरूप॥इत्याजेहसुल.	१६४
१६८	श्रीअरिहंत उदार कांति ॥ नवपद चैत्यवंदन	१६५

॥ अथ वमा स्तवन संग्रह ॥

१६९	सुगण सनेही साजण श्रीसीमंघर स्वामि	१६५
१७०	सफल संसार ॥ दूजका वमा स्तवन ...	१६६
१७१	प्रणमुं श्रीगुरु पाय ॥ पंचमीका वमा स्तवन	१६८
१७२	पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी ॥ पंचमी लघु स्त.	१७०
१७३	अमल कमल० अष्टमी लघु स्तवनं ...	१७१
१७४	विमलजिन म्दारे तुमसुं प्रीत ॥ विमलजिन स्त.	१७२
१७५	समवसरण बैठा जगवंत ॥ मूनङ्गयारस स्त०	१७२
१७६	सारदमात नमूं शिरनामी ॥ शांतिनाथ स्तवन	१७३
१७७	चौरासी आसातनाका स्तवन...	१७५
१७८	चोवीसजिन देहमान स्तवन ...	१७६
१७९	चोवीसजिन आयुप्रमाण स्तवन ...	१७७
१८०	त्रेसठ शलाकापुरुष स्तवन ...	१७८
१८१	श्रीविमलाचल शिरतिलो ॥ संत्रुज स्तवन	१८०
१८२	सिध्याचल मंरुणस्वांमी रे ॥ सिध्याचल स्त०	१८१
१८३	रुषंजजिनेसर दिनकर साहिब ॥ स्तवन	१८२
१८४	वीर सुषोमोरी वीनती ॥ अमावसका म, स्त.	१८३
१८५	चोवीस दंरुक स्तवन ...	१८५
१८६	इरियावही मिठामिडुकम संख्या स्तवन	१८८
१८७	पंच समबाय स्तवन...	१८९

१८८	चौदे गुणग्राशा स्तवन	...	...	१८५
१८९	नव-तत्व ज्ञाषागर्भित स्तवन...	...	...	१८९
१९०	दंभक ज्ञाषागर्भित स्तवन	...	...	२०३
१९१	जीवविचार ज्ञाषागर्भित स्तवन	...	...	२०६
१९२	समवशरणा विचारगर्भित स्तवनं	...	...	२१०
१९३	सुखा२ सेतुंजगिरिस्वामी ॥ रुषजदेव स्त०			२१२
१९४	पासजिनेसर जगतिलो ॥ दशमीका पार्श्वस्त०			२१३
१९५	मंगल कमला कंद ए ॥ अजित शान्ति स्त०			२१५
१९६	मुंहपत्ती पम्प्लेहण स्तवनं	...	...	२१८
१९७	आलोयण दंभ स्तवनं	...	...	२१९
१९८	नंदीश्वर बावन जिनालय स्तवनं	...	...	२२२
१९९	अढाईद्वीप वीस विहरमान स्तवनं	...	...	२२३
२००	जात्रीमाजाइ आवूजीनी जात्रा करण्यो			२२७
२०१	सकल शाश्वता चैत्य नमस्कार स्तवन...			२२८
२०२	जविजन पूजो रे शीतल जिनपती ॥ स्तवन			२३०
२०३	म्हारे धरमजिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो ॥			
	धर्म जिन स्तवन	...	...	२३१
२०४	राणपुरो रलियामणो ॥ राणपुरा स्तवन...			२३२
२०५	समकित द्वार गुंजार पेसतां ॥ दर्शन, आ. स्त.			२३३
२०६	आदिजिनेसर अरज सुखीजै ॥ स्तवनं	...		२३३
२०७	देवचंदजी कृत अजितजिन स्त० ज्ञानादिक गुण२३४			
२०८	बे कर जौमी-वीनवूजी ॥ आलोयण स्तवन			२३५
	॥ आनंदघनजी कृत स्तवनं ॥			
२०९	रुषज जिनेसर प्रीतम माहरो...	...		२३७
२१०	पंथिमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे...			२३८

२११	शंजवदेव ते धुर सेवो सवे रे...	...	२३९
२१२	अजिनंदन जिन दरशन तरसिये	...	२३९
२१३	सुमति चरण कज आतम अरपणा	...	२४०
२१४	शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी	...	२४०
२१५	मनमो किमही न बाजे हो कुंथु जिन...	...	२४१

॥ पार्श्वनाथजीके ठोटे स्तवन प्रतिक्रमणके ॥

२१६	श्रीशंखेसर पास जिनेस जेठिये	...	२४२
२१७	मनमोहन माहाराज	...	२४२
२१८	जयकारी जिनराज ..	...	२४३
२१९	वालेसर मुऊ वीनती गोमीचा	...	२४३
२२०	अरज सुणीजै अंतरजामी	...	२४४
२२१	प्यारी पासकी देखो मूरति०	...	२४४
२२२	श्रीचिंतामण पासजी	...	२४४
२२३	जीवन म्हारा तेवीसमा जिनरायरे	...	२४५
२२४	सुगण सनेही प्रजुजी अरज सुणीज्यो...	...	२४६
२२५	मोरा पास जिनराज	...	२४६
२२६	जिनजी महिर करीने राज	...	२४७
२२७	तूं मेरे मनमें प्रजू तुं मेरे दिलमें	...	२४७
२२८	मार्ग देशक मोहनो ॥ दीवाली निर्वाण स्त०	२४८	
२२९	सैत्रुंज रुषज समोसरचा ॥ तीर्थमाळा स्त०	२४८	
२३०	आज आपे चालो सहिया ॥ सिद्धाचल स्त०	२४९	
२३१	महावीरस्वामीका पारणा	...	२५०
२३२	पद्मावती जीवरास खमाणा ॥ द्विवराणीपद्मा०	२५२	
२३३	वाणी ब्रह्मा वादनी ॥ गोमीजीका वृध्दस्तवन	२५४	
२३४	धम्मो मंगल मुक्किठं ॥ मंगलीक	...	२५९

२३५	आत्मरक्षा स्तोत्र ... ..	२५९
२३६	सुखकारण त्रिविध ॥ नवकार ढंद ...	२६०
२३७	सेवो पास संखेसरो मन सुधै... ..	२६१
२३८	बोर जिनेसर केरो सीस ... ..	२६१
२३९	झोल सती ढंद ॥ आदिनाथ आदिदेई...	२६२
२४०	गौतम स्तवन ॥ जय२ मंगल निधान ...	२६३
२४१	मुनित्रेष वर्णन स्तवन ... ..	२६४
२४२	जबसे अद्धा शुद्ध जई ॥ अरिहंत स्तवन	२६४
२४३	आवककी करणी ॥ आवक तुं जवे० ...	२६४
२४४	गौतमस्वामीका रास... ..	२६६
२४५	सेत्रुंज रास ॥ श्रीरिसदेसर पाय नमी ...	२७२
२४६	शिखरजीका रास ... ..	२८०
२४७	मुनिमालका ... ..	२९१
२४८	बिहूँजिन स्तवन ... ..	२९५

॥ अथ सिंहायसंग्रह माला ॥

२४९	उपदेशमाला पोसह सिंहाय ॥ जगचुक्रामणीजूठ२९७	
२५०	राइ संधारा पोसह सिंहाय ॥ निस्तिही०	३००
२५१	निंदावारक सिंहाय ... ..	३०१
२५२	शीतासती सिंहाय ॥ जलजलती मीलती०	३०३
२५३	अनाथोरुषि सिंहाय ॥ श्रेणिक रयवामी०	३०३
२५४	प्रतिक्रमण सिंहाय ॥ कर पक्रिमणो जावसुं	३०३
२५५	मांगलिक सरणा चार ... ..	३०४
२५६	ढंदशरुषि सिंहाय ... ..	३०५
२५७	श्रीजिन वाणी रे धन्ना ॥ धन्ना रुषीसिंहाय	३०६
२५८	देव दाणव तीर्थकर ॥ कर्मसिंहाय ...	३०७



२५९	सात-व्यसन सिंहाय	...	...	३०८
२६०	चेलणा सती सिंहाय	...	...	३०९
२६१	वैराग्य सिंहाय ॥ जूखो मन जमरा कांई जमे	...	...	३१०
२६२	बाहूवल सिंहाय ॥ राजतणा अति लोन्नीया	...	...	३११
२६३	अरणक मुनि सिंहाय	...	...	३११
२६४	इलापूत्र सिंहाय	...	...	३१२
२६५	मेघकुमार सिंहाय	...	...	३१३
२६६	असिंहाई निर्णय सिंहाय	...	...	३१४
२६७	बावीसअन्नक सिंहाय	...	...	३१५
२६८	गजसुकमाल सिंहाय	...	...	३१६
२६९	प्रण्णचंड सिंहाय	...	...	३१७
२७०	उतपति सिंहाय	...	...	३१८
२७१	आत्मनिंद्या	...	...	३२२
२७२	मंदिर जाणोकी उर दर्शन करणोकी विधि	...	...	३२४
२७३	चवदे नियम श्रावकके चितारणोकी विधि	...	...	३३१
२७४	श्रावकके बारे व्रत उच्चरावण विधि	...	...	३३४
२७५	वीसस्थानक लघु स्तवन देववंदनमें कहणोका	...	...	३३८
२७६	चलोदेखोरी मधुवनको राव ॥ पार्श्वजिन स्त०	...	...	३३९
२७७	मेरो मन बस कर लीनो ॥ पार्श्वजिन स्तवन	...	...	३४९
२७८	सुषो सुजाण नेमजी ॥ स्तवन	...	...	३४०
२७९	नेमजिनंदजोसें आंखमली ॥ स्तवन	...	...	३४०
२८०	आज प्रभु तोरे चरण लागि	...	...	३४०
२८१	रात-गई अब प्रात होन जयो	...	...	३४०
२८२	तुम विन दीनानाथ दयानिध	...	...	३४१
२८३	जाव धर धन्य दिन० सिद्धचल स्तवन	...	...	३४१

२८४	श्रीनीर्मघर साहिवा ॥ स्तवन	...	३४१
२८५	मनमो अष्टपद मोह्यो माहरो	...	३४२
२८६	सुण अरदासा सुगुण० पार्थ्वजिन स्तवन		३४२
२८७	अंतरजामी सुण अलवेसर ॥ पार्थ्वजिन स्त०		३४२
२८८	प्राण पिचारा जीदो पासजी	...	३४३
२८९	महाराज वधाई वाजे वै ॥ सुमतिजिन स्त०		३४३
२९०	आज महोत्सव रंग रलीरी - ...	...	३४४

### ॥ पूजा प्रारंभ ॥

२९१	देवचंडजी कृत स्नात्रपूजा	...	३४४
२९२	अष्टप्रकारी पूजाके आठ श्लोक	...	३५०
२९३	सतरहजेदी पूजाकी विधि	...	३५२
२९४	सतरहजेदी पूजा	... ..	२
२९५	आरतिविधि तथा आरती॥ जै जै आरति शां०		३६२
२९६	नवपदजीकी पूजामें चहिये सो चीजोंकीविधि		३६३
२९७	नवपदजीकी वस्ती पूजा	... ..	३६३
२९८	नवपदपूजामें कलसढालण त. वासुदेवपूजा वि.		३७३
२९९	दादाजीकी अष्ट प्रकारी पूजा आठ श्लोक		३७४
३००	दादाजीकी आरती	... ..	३७५
३०१	सूतकविचार	... ..	३७५
३०२	असिज्ञाह विचार	... ..	३७७
३०३	जकाजक विचार	... ..	३७९
३०४	नव ग्रह दश दिग्पालकी आहुतान विशर्जनविधि		३८०
३०५	नवपद मंरुल पूजा विधि	... ..	३८६
३०६	नवपद मंरुल प्रतिष्ठा विधि उजमये तक		३८९

## ॥ अथ सर्वे तपस्या विधि ॥

३०७	सत्तरसयको गुणनो...	...	...	३१६
३०८	सत्तरसय तप स्तवन...	...	...	४०३
३०९	कम्मपयनी तप गुणनो	...	...	४०५
३१०	कम्मपयनी स्तवन ...	...	...	४०७
३११	नवकार तप स्तवन ...	...	...	४०९
३१२	नवकार तप विधि ..	...	...	४११
३१३	पंच कट्याणक तप स्तवन ...	...	...	४१२
३१४	रुषिमंरुल सुणणेकी पूजणकी विधि ...	...	...	४१५
३१५	जगवंतके नव अंगपूजन डहा...	...	...	४१५
३१६	शिक्षाका डहा ५ ...	...	...	४१६
३१७	नवपदोका नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा थुई.	...	...	४१७
३१८	शंस्कृतवद् चतुर्विंशति जिन स्तुति ...	...	...	४२५
३१९	नवपद वृद्ध स्तवन ॥ सुरमणी शम सहुमंत्र०	...	...	४२८
३२०	नवपद स्तवन ॥ तीरथनायक जिनवरू रे	...	...	४२९
३२१	नवपद ध्यान धरो रे जविका ॥ स्तवन	...	...	४३०
३२२	जीया चतुरसुजाण नव० स्तवन ...	...	...	४३०
३२३	जिन नित नमो नित नमो नमो ॥ स्तवन ...	...	...	४३०
३२४	नितप्रति प्रणामुं ॥ नवपद थुई ...	...	...	४३०
३२५	अथ जैती संयुक्त नवपद उंली करण विधि	...	...	४३१
३२६	अथ तपस्या ग्रहणकरणेकुं गुरु पाश जाणेकी वि.	...	...	४४८
३२७	उंलीकी संक्षेप उजमणा विधि ...	...	...	४४९

## ॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

३२८	प्रथम चैत्रमास पर्वाधिकार प्रथम १ उंलीतप	४५०
३२९	अष्टापद उंली करण विधि: मंरुलविधि स. द्वि. ३.	४५३

३३०	महावीरस्वामी जन्मकल्याणक पर्व तीसरा	४५४
३३१	चैत्रीपूजन पर्वधिकार पर्व ४ देववंदन वि०स०	४५४
३३२	चैत्रीपूजन स्तवन ... ..	४५६
३३३	नंदीश्वर तपस्या करण विवि ... ..	४५७
३३४	वैशाखमास पर्वधिकार आखातीज ... ..	४५८
३३५	ज्येष्ठ कृष्ण १३ श्रीशान्ति पर्वधिकार ... ..	४५९
३३६	आषाढमास १४ पर्वधिकार ... ..	४५९
३३७	आषाढमासमें बुटकर तपस्याधिकार ... ..	४६०
३३८	ज्येष्ठमासमें पर्युषण पर्वधिकार ... ..	४६५
३३९	आश्विनमासमें उज्ज्वली पर्वधिकार ... ..	४६७
३४०	कार्तिकमासमें ४ पर्वधिकार... ..	४६७
३४१	दीपमाता गुणनो करण विधि... ..	४६८
३४२	ग्यानपंचमी पर्वधिकार ... ..	४६९
३४३	ग्यानपंचमी देववंदन विधि ... ..	४६९
३४४	ग्यानका वस्त्र चैत्यवंदन धुई ... ..	४६९
३४५	श्रीआचारांगसूत्र सिंहाय ... ..	४७१
३४६	श्रीसुयगडांगसूत्र सिंहाय ... ..	४७२
३४७	श्रीठाणांगसूत्र सिंहाय ... ..	४७२
३४८	श्रीसमवायांगसूत्र सिंहाय ... ..	४७३
३४९	श्रीजगवतीसूत्र सिंहाय ... ..	४७४
३५०	श्रीज्ञातासूत्र सि० ... ..	४७५
३५१	श्रीउपाशकदशासूत्र सि० ... ..	४७६
३५२	श्रीअंतगरुदशासूत्र सि० ... ..	४७६
३५३	श्रीअणुचरोववाइ सूत्र सि० ... ..	४७७
३५४	श्रीप्रभव्याकर्णसूत्र सि० ... ..	४७७

३५५	श्रीविपाकसूत्र सि० ...	४७८
३५६	इग्यारे अंग वर्षात सि० ...	४७९
३५७	मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी ॥ ज्ञानका स्त०	४७९
३५८	श्रुत अतहि जलो ॥ जिनागमस्तवनं ...	४८०
३५९	कार्तिक चतुर्मास पर्वाधिकार...	४८०
३६०	कार्तिक १५ पर्वाधिकार ...	४८०
३६१	सिद्धगिरि स्त० ते दिन क्यारे आवस्यै...	४८२
३६२	नमो रे नमो सेजुंजगिरी ॥ स्तवनं ॥ ...	४८२
३६३	अंग ऊमाहो मोने अतिघणो ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८३
३६४	जात्रा निनाखूं करियै ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८४
३६५	जाव धर धन्य दिन० सिद्धगिरि स्त० ...	४८५
३६६	मार्गशिरमास पर्वाधिकार मौनएकादशी	४८५
३६७	मौन ११ देहसे कळयाणक गुणो ...	४८६
३६८	पौषमासे वदि १० पर्वाधिकार ...	४९०
३६९	माघमासे मेरुत्रयोदशी पर्वाधिकार ...	४९१
३७०	फाळगुनमासे पर्वाधिकार ...	४९२
३७१	द्रव्यहोली जावहोली अधिकार ...	४९२
॥ होली स्तवन संग्रह ४७ ॥		
३७२	होरी खेलिये नर बहुरन० ...	४९५
३७३	जय बोलो पाश जिनेशरकी ...	४९६
३७४	मधुबनमें जाय मची होरी ...	४९६
३७५	यादव मन मेरो हर लियो रे ...	४९६
३७६	इक सुणले नाथ अरज मोरी ...	४९६
३७७	सांवरो सुखदाई जाकी छिब ...	४९७
३७८	नेना दरखाई आज तेरी सू० ...	४९७

( ४१ )

३४९	एसें फागुण मस्त महीनें चलोरी ...	४९७
३५०	नेम स्थामसें कहियो मोरी ...	४९८
३८१	होरी खेलो रे जविक मन थिर करके ...	४९८
३५२	होरीके खेलइया तूं तो प्रजु०... ..	४९८
३५३	वाके ममतानें धूम मचाई ... ..	४९८
३५४	समकित विन जीव जगत जटक्यो ...	४९९
३५५	विसरे मत नाम प्रजुजीको ... ..	४९९
३५६	नेम निरंजन ध्यावो रे ... ..	४९९
३५७	गढ गिरनारकी तलहटी ... ..	४९९
३५८	धन राजुज तेरो जगरी ... ..	५००
३८९	एसी होरी तो हो रही चंपानगरमें ...	५००
३९०	बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी ...	५००
३९१	एसे प्रजु नेमनाथ मेरे दिख वसिया ...	५०१
३९२	संजव जिन सुखकारी हो लाला ...	५०१
३९३	सारो सोरठ देश दिखावो रसिया ...	५०२
३९४	जिनराज जुहारो, क्या वेठे जव हारो रे	५०२
३९५	मनमोहन गजगतकी कामनी... ..	५०३
३९६	रंग लग्यो गुरु ज्ञान... ..	५०३
३९७	चिदानंद खेलें फाग... ..	५०३
३९८	होरी खेलो नेमसें धाय२ ... ..	५०४
३९९	मेरी घटकी गागरिया रंगसें जरी ...	५०४
४००	बावो रुषज वेठे अलवेसर ... ..	५०४
४०१	गिरराजकुं हमारी वंदना रे ... ..	५०४
४०२	दरशन कियो आज सिखर गिरको ...	५०५
४०३	सिद्धगिरीजीको दरशन करले ...	५०५

४०४	मोहे अपणो रंगमें रंगदे ...	५०५
४०५	मेरे पारस प्रज्जुजीके रंगमंमपमें ...	५०५
४०६	रंग मन्व्यो जिनद्वार चाखो खेलिये दोरी ...	५०६
४०७	नेमजीसे कहियो मोरी ...	५०६
४०८	माहाराजा तोरे मंदिरमें बरसे रंग ...	५०६
४०९	तोरी अंगिया वणी हे सुरंग ...	५०६
४१०	चिंतामणि चित्त ध्यावो रे ...	५०६
४११	मत मारो पिचकारी रे ...	५०६
४१२	नेम मिले तो वातां कीजिये ...	५०७
४१३	आतमतत्व विचारो ज्ञानसे ...	५०८
४१४	लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी ...	५०८
४१५	दर्शन बिन जीव संसार जन्म्यो ...	५०८
४१६	मत जोमो माने यूँही रे कोइ चूक बतावो ...	५०९
४१७	अटक्यो चित्त हमारो री जिनच० ...	५०९
४१८	मंगल राजै गिरनार... ...	५०९
४१९	मंगलकलश ...	५१०

### ॥ तपस्याविधि स्तवन संग्रह ॥

४२०	पांच कल्याणक टीप ...	५१०
४२१	पांच कल्याणक विधि ...	५१३
४२२	पखवासेको स्तवन... ...	५१४
४२३	पखवासा तप विधि... ...	५१६
४२४	दश पञ्चस्काण स्तवन ...	५१६
४२५	दश पञ्चस्काण तप विधि ...	५१९
४२६	वीश स्थानक तप स्तवन ...	५१९
४२७	वीश स्थानक तप करण विधि ...	५२१

४२८	वीश स्थानक गुणना चर काजसग प्रमाण	५३२
४२९	वीश स्थानक मंमल पूजन विधि	५३४
४३०	रोहणी तप स्तवन...	५३९
४३१	रोहणी तप विधि	५३९
४३२	उम्मासी तप स्तवन...	५३३
४३३	उम्मासी तप विधि...	५३४
४३४	बारे मासी तप स्तवन	५३४
४३५	बारे मासी तप विधि	५३५
४३६	अर्गाईत लब्धि स्तवन	५३६
४३७	अर्गाईत लब्धि तप विधि	५३८
४३८	चौदे पूर्व स्तवन	५३८
४३९	चौदे पूर्व तप विधि	५४०
४४०	तिलक तप स्तवन	५४१
४४१	तिलक तप विधि	५४२
४४२	शोलिये तपका स्तवन	५४३
४४३	शोलिये तपकी विधि	५४३
४४४	पैतालीश आगम तप विधि तथा गुणना	५४४
४४५	पैतालीश आगम स्तवन	५४५
४४६	इग्यारै गणधर तप विधि	५४८
४४७	११ गणधर नाम गुणना	५४८
४४८	सर्व तपस्या गुरु पास अहण करण विधि	५४९
४४९	सर्व तपस्या पारण विधि	५५१
४५०	उपधान तप स्तवन...	५५१
४५१	संघ मात्मारोपण विधि:	५५३
४५२	संघमात्माकी देववंदन विधि	५५४



४५३	उपधान तप नित्यकर्तव्यता ...	५५७
४५४	उपधान तप विधि ...	५५९
४५५	उपधान तप प्रवेश विधि ...	५६१
४५६	उपधान तप उत्क्षेप विधि ...	५६३
४५७	वाचना विधि: ...	५६३
४५८	तप संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि ...	५६३
४५९	पम्पुन्ना विगय तप पारण विधि: ...	५६३
४६०	कम्पाश्रमणादि प्रज्ञात संध्या पम्पुलेहण विधि: ...	५६४
४६१	उपधान तप विवरण गाथा ...	५६६
४६२	शुभिमंमल मंमलपूजा विधि ...	५६६
४६३	शांतिक पूजा विधि: ...	५६७
४६४	पंचतीर्थी आरती ...	५७०
४६५	चक्रेश्वरी आरती ...	५७१
४६६	चोपन खेलण सिझाय ...	५७१
४६७	सेत्रुंज खेलण सिझाय ...	५७२
॥ राग रागणी सरस स्तवन संग्रह १०१ ॥		
४६८	हुक निजर महरदी क० ...	५७२
४६९	लोक चवदके पार किनारे ...	५७३
४७०	सखी सब बनठन ...	५७३
४७१	हो जिन तेने दरशपर० ...	५७३
४७२	म्हारा रुषन जिनंदने ग० ...	५७३
४७३	मन लीनो हमारो जिन चरषारे ...	५७४
४७४	अजित२ जिन ध्यान ...	५७४
४७५	यह अरजी मोरी सहीयां ...	५७४
४७६	मुजरो मानी लीजे हो गो० ...	५७४

४७३	तुं मैना प्रभु इण दिख वसणावे ...	५७४
४७४	हम जाणत हे तुम तारोगे ...	५७५
४७५	पंथीना पंथ चलेगो ...	५७५
४७६	तेवीशमा जिनराज जोमे थारे कोण जुमेगो	५७६
४७७	केसें काज सेरे माहाराजविन केसें० ...	५७६
४७८	राजरी वधाई वाजैठै ...	५७६
४७९	मोतनकीमाला जित्तगल सोदे... ..	५७६
४८०	रहे तुम आज क्यूं जीवन डुराय ...	५७६
४८१	हे माय वांकनी करमगति जाय न कही	५७६
४८२	म्हाने प्यारो लागेठे जी थारो उपदेश ...	५७६
४८३	मेरो पिया परसंग रमत हे ... ..	५७७
४८४	वरषित वचन ऊरी० ... ..	५७७
४८५	या घरमें रंग० ... ..	५७७
४८६	चिहुं नर वदरिया वरसे ... ..	५७७
४८७	मोरवा पपइया बोले ... ..	५७८
४८८	समऊ नर जीवण थोरो .. ..	५७८
४८९	मत कर मान गुमान ... ..	५७८
४९०	निश दिन जोडं थारी वाटनी० ...	५७८
४९१	आज तो हमारे जाग्य वीरप्रभु आए हे	५७९
४९२	बावरो रे आज मनवो मेरो ... ..	५७९
४९३	रुषज विहारी थारीतो ठवि न्यारी हो ...	५७९
४९४	सुश मन होनहार न ठरे रे ... ..	५७९
४९५	सहियोरी मिल चालो प्रभु पूजन काज...	५८०
४९६	मनवा जिनंद गुण गाय रे ... ..	५८०
४९७	चलो देखोरी मधुवनको राव... ..	५८०

५०२	राखूं रे हमारा घटमें	...	...	५००
५०३	तेरे दरशको चाह लग्यो	...	...	५००
५०४	धारे मुखमारी हो वारी राज...	...	...	५०१
५०५	एसी विध तेने पाई रे	...	...	५०१
५०६	मोहि अपणो कर जाणो प्र०	...	...	५०१
५०७	वीर प्रजु तेरी दोस्तीमें	...	...	५०१
५०८	जोर जयो अब जाग बावरे	...	...	५०१
५०९	जाग रे सब रैण विहाणी०	...	...	५०१
५१०	सांवरो सखनो सखी...	...	...	५०१
५११	आज रुषज घर आवै	...	...	५०३
५१२	अंगण कलप फढ्योरी	...	...	५०३
५१३	ऊठेने मोरा आतमराम	...	...	५०३
५१४	जज मन नाजिनंदन देव	...	...	५०३
५१५	आवो नेम रह जावो सदन	...	...	५०४
५१६	कीरतीबाग मन प्रेम लाग	...	...	५०४
५१७	अधम जग काम जये अगीवान	...	...	५०४
५१८	प्रजु तेरी सूरतिचा लागे जली...	...	...	५०५
५१९	आयो सही अब जातं कहां	...	...	५०५
५२०	घमो२ पल२ ङिन३ निशदिन...	...	...	५०५
५२१	सुमतानें क्या कर मारा रे	...	...	५०६
५२२	तुम तो जले विराजो जी ॥ शिखर गिरि स्त०	...	...	५०६
५२३	शिखर गिरिंइ जुहारो ॥	...	...	५०६
५२४	सांवरिया में दीवो दरश तिहारो ”	...	...	५०७
५२५	त्रिजुवन नायक वीरजी ॥ पावापुरी स्तवन	...	...	५०७
५२६	निरख हीया हरख जरे ॥ चंपापुरी स्तवन	...	...	५०८

५२७	मैं मु'व देख्यो गोमीपारसको...	...	५८९
५२८	किरपा करो रे गोमीपांश जिनेसर	...	५८९
५२९	मुजरा साहिब मुजरा साहिब...	...	५८९
५३०	घंट वाजै घननननन...	...	५९०
५३१	निरंजन सांझियां रे ...	...	५९०
५३२	एसे सहर विच कोनसा दिवान दे	...	५९०
५३३	आय रहो दिलबागमें	...	५९०
५३४	रहो रे यादव दो धर्मिया	...	५९०
५३५	विराजो बंगलामें ...	...	५९१
५३६	किण देखा हमारा स्वामी	...	५९१
५३७	अबधू सो जोगी गुरु मेरा	...	५९१
५३८	अबधू एसो ज्ञान विचारी	...	५९१
५३९	हंसा तूं मानसरोवर वासी	...	५९२
५४०	बेरु नही आवै अवसर०	...	५९२
५४१	ये जिनजीके पाये लागे रे	...	५९३
५४२	चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो	...	५९३
५४३	अबधू निरपक्व विरला कोई	...	५९३
५४४	चलया जरूर जाकुं ताकुं केसा सोचया	...	५९३
५४५	समऊ परी मोहे समऊ परी...	...	५९४
५४६	जलांजी मेरो नेम चढ्यो गिरनार	...	५९४
५४७	रतना सफल जई मेंतो गुण०	...	५९४
५४८	राजुज पुकारे नेम पिया	...	५९४
५४९	कोन किलीको मित्त	...	५९५
५५०	आदीसर जिनराज	...	५९५
५५१	गोमी गार्हिये मन रंग	...	५९५

५५२	हारे हूं तो मोह्यो रे लाल ...	५९५
५५३	प्रभुजी सैं लागो मारो नेह ...	५९६
५५४	खतरा दूर करणा ...	५९६
५५५	रे जीव जिनधर्म कीजीये ...	५९६
५५६	सोई२ सारी रैन गमाई ...	५९७
५५७	चंदा प्रभुजीसैं ध्यान रे ...	५९७
५५८	ते शिवपुर गये रहे रे ...	५९७
५५९	म्हारे जले रे कुगो ठै दामो आजनो रे ...	५९७
५६०	घन२ ते दिवाली मारे आजनी रे ...	५९८
५६१	घन२ आजूनो दिन रलियामणो रे ...	५९८
५६२	म्हारे आज आनंद वधामणा रे ...	५९८
५६३	सवालाख टकानी जाय एक घन्टी ...	५९८
५६४	आवो२ने प्यारा नेम अम घर ...	५९९
५६५	मनमोहन पारस प्यारारे ...	५९९
५६६	मेरे मन ज्ञावनकी ठबि नीकीजी ...	६००
५६७	साहिब सुगुण सुपारससैं ...	६००
५६८	सांवरिया पासजी सुख दीजे ..	६००
५६९	तुम जजो रुषन प्रभु प्यारा जग० ...	६०१
॥ अथ लावण्या संग्रह ३४ घन १० ॥		
५७०	अगरुदू२ वजै चोधना ...	६०३
५७१	आखातीजकी लावणी ...	६०४
५७२	दीवालीकी लावणी ...	६०५
५७३	सीमंधरजिन लावणी ...	६०६
५७४	अजीमगंजमें सांवलियाजीकी लावणी ...	६०७
५७५	नेमनाथ मेरी अरज सुणीजै ...	६०८

५७६	तुम जपो मंत्र नवकार ॥ जिनदाशादि कृतघन	६०६
५७७	चल चेतन अब ठठकर० ... ..	६१०
५७८	तुम जजो जिनेसर देव ... ..	६११
५७९	तुं कुमति कलेसण नार लगी क्युं केने...	६१२
५८०	तुम तजो जगतका ख्याल ... ..	६१२
५८१	दे गया दगा दिखदार ॥ नेमजीकी लावणी	६१३
५८२	मुलक बीच मगसी पारसका... ..	६१४
५८३	सुकतकी बात तेरे हाथ रती ना रही रे...	६१५
५८४	तुम तज कर राजुल नार ... ..	६१५
५८५	आप समझका घर नहीं पाया ... ..	६१६
५८६	नमुं२ में गुरु निर्यणकुं ... ..	६१७
५८७	करुं२ में ऐसे सदगुरु ... ..	६१७
५८८	तजूं२ में उन कुगुरुकुं ... ..	६१८
५८९	यो जिनदाश जूगे रे जूगे ... ..	६१८
५९०	जब तन दोस्ती हे इह मस्ती ... ..	६१८
५९१	अरज हमारी सुणो दीनपति... ..	६१९
५९२	मुक्ति जाणेकी निगरी ... ..	६१९
५९३	अनुजव पद निगरी... ..	६२१
५९४	नेमकी जान बणी ज्ञारी ... ..	६२२
५९५	नेमनाथजीका चोमासा ॥ बई घटा ग०	६२३
५९६	सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ...	६२४
५९७	सज शोखे सिपागार हुई दुसियार ...	६२६
५९८	चंदावदनी मुखसें कहती गिरनारीकुं० ...	६२७
५९९	कोइ देख्या रे हो सांवलिया साहिब ...	६२८
६००	सुणजो वातां राव- सदाशिव... ..	६२८

६०१	केशरीयानाथजीकी माहात्मकी लावणी	६२९
६०२	पार्श्वप्रभु आरती लावणी ... ..	६३४
६०३	आदि जिनेस कीयो पारणो ... ..	६३५
६०४	अजितनाथजीकी लावणी ... ..	६३५
६०५	पिया मैरा गिरनार सिधाए ॥ ने० छा० ...	६३६
६०६	दीवाली स्तवन ॥ धन२ मंगल एह सकलदिन	६३७
६०७	मारे दीवाली अई आज प्रभु मुख जोवाने	६३७
६०८	पोढोश जी कृष्ण विहारी ... ..	६३८
६०९	कीजे मंगल ब्यार आज घर० ... ..	६३८
६१०	सिद्धाचल गिर जेटो रे जविजन ...	६३८
६११	जगतमें नवपद जयकारी ॥ लावणी ...	६३९
६१२	ध्यान धरो नवपदका चेतन ... ..	६४०
६१३	चखो सखी जिन मंदिरमें जग नवपद...	६४०
६१४	सांवरो लागे प्यारो प्रभु मनमोहनगारो ॥ होरी	६४१
६१५	आज सुरंग धन वरसत होरी... ..	६४२

॥ अथ बारे मासा ॥

६१६	मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें ...	६४२
६१७	नेमनाथजीका बारेमासा ... ..	६४४

॥ स्तोत्र लुटकर संस्कृतबंध ८ ॥

६१८	सकल मंगल केलि० शीतल० स्तोत्र ...	६४६
६१९	विशद गुण विचित्र० पार्श्व० स्तोत्र ...	६४६
६२०	यस्य ज्ञान दया० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र...	६४७
६२१	लक्ष्मी निदानं० पार्श्व० स्तोत्र ...	६४७
६२२	गोपीग्रामे० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र ...	६४८
६२३	विशदसद्गुण० पार्श्व स्तोत्र ... ..	६४८

६१४	श्रीमत्पार्श्वजिनेश्व० पार्श्व स्तोत्र	...	६४९
६२५	आद्य श्रीकृष्ण० चतुर्विंश० स्तोत्र	...	६४९
६२६	मंगलाष्टक स्तोत्र	...	६५०
६२७	परमात्मा स्तोत्र	...	६५१
६२८	नमस्कार स्तोत्र	...	६५१

### ॥ अथ तपगञ्ज सामाचारी ॥

६२९	पुण्य प्रकाश आलोचन स्तवन	...	६५२
६३०	जरहेसरनो सिञ्जाय...	...	६५९
६३१	मन्दजिष्णाणं सिञ्जाय	...	६६०
६३२	सकल तीर्थ वंदना	...	६६०
६३३	सकलार्हस्तोत्र	...	६६१
६३४	शान्तिकर स्तोत्र	...	६६३
६३५	सीमंधर चैत्यवंदन ॥ सीमंधर परमात्मा		६६४
६३६	श्रीसीमंधर जग धणी	...	६६५
६३७	सिद्धगिरी चैत्यवंदन ॥ विमल केवल०	...	६६६
६३८	श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र	...	६६६
६३९	परमात्मा चैत्यवंदन० परमेश्वर परमात्मा		६६६
६४०	सुणो चंदाजी सीमं० सीमंधर स्तवन	...	६६६
६४१	आंखनीधे में आज० सेत्रुंजा स्तवन	...	६६७
६४२	विमलाचल नित वंदिये ॥ स्तवन	...	६६७
६४३	पंचतीर्थ संस्कृतबद्ध स्तवन	...	६६८
६४४	नेम राजुल सिञ्जाय ॥ पित्रजी२ नाम	...	६६८
६४५	आम्रलो तूटाने सांयो० सिञ्जाय	...	६६९
६४६	आदि देव अरिहंत नमूं ॥ पंचती० चैत्यवं०		६७०
६४७	डुविध धर्म जिन उ० दूज चैत्यवंदन	...	६७०



६४८	त्रिगुणै वैरा वीर जिन ॥ ग्यानपंचमी चैत्यर्व	६७०
६४९	महा सुदि आठमने० अष्टमी चैत्यवंदन	६७१
६५०	शाशन नायक वीरजी० इग्यारश चैत्यवंदन	६७५
६५१	सीमंधर जिनवर स्तुति० ... ..	६७२
६५२	श्रीसीमंधर देव सुहंकर ॥ थोय ...	६७२
६५३	दिन सकल मनोहर ॥ बीजनी थोय ...	६७३
६५४	श्रावण सुदि दिन पंचमी ए ॥ पांचमनी थोय	६७३
६५५	मंगल आठ करी० आठमनी थोय ...	६७४
६५६	एकादशी अति रूवमी ॥ इग्यारश थोय	६७५
६५७	स्नातस्या प्रति० चवदशनी थोय ...	६७५
६५८	कढ्याणकंदनी थोय... ..	६७६
६५९	श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ० थोय ...	६७६
६६०	महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी ॥ थोय	६७७
६६१	पंचेदिय संवरणो ... ..	६७७
६६२	सामायक पारवागाथा ॥ सामायक पारवागाथा	६७८
६६३	सागरचढो ॥ पोसह पारवा गाथा ...	६७८
६६४	जगर्चितामणि चैत्यवंदन ... ..	६७८
६६५	अतीचारनी ८ गाथा... ..	६७९
६६६	विशाललोचन स्तुति ... ..	६७९
६६७	सुयदेवया जगवई ॥ स्तुति ... ..	६८०
६६८	जीसे खिचे साहू ॥ क्षेत्रदे० स्तुति ...	६८०
६६९	सामायक लेवा विधि ... ..	६८०
६७०	सामायक पारवा विधि ... ..	६८१
६७१	दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८१
६७२	राई प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८२

६७३	परकी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८५
६७४	चन्द्रमाशी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८७
६७५	संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८७
६७६	पन्ध्रदश करवानी विधि ... ..	६८७
६७७	पञ्चक्राण पारवानी विधि ... ..	६८८
६७८	पुष्कलवद् विजयें जयो ॥ श्रीमंधर स्तवन	६८८
६७९	बीज तिथीनो स्तवन वक्रो ॥ प्रणमी शार०	६८९
६८०	पंचमी वृद्ध स्तवन ॥ सुत सिद्धारथ० ...	६९०
६८१	आठमनुं वृद्ध स्तवन ॥ मारे ठाम ध० ...	६९६
६८२	एकादशी वृद्ध स्तवन ॥ जगपतिनायक०	६९८
६८३	महावीरस्वामीनुं हालरिथुं ... ..	७०१
६८४	निंदा भ करज्यो कोईनी० सिद्धाय ...	७०३
६८५	देववांदवानो विधि ... ..	७०४
६८६	ज्ञानविमलजी कृत चन्द्रमाशी देववंदन...	७०४
	आदिनाथ चै० श्रोय स्तवन ... ..	७०४
	अजितनाथ चैत्यवंदन, श्रोय ... ..	७०५
	संज्ञवनाथ, अजिनंदन चैत्यवंदन श्रोय...	७०६
	सुनतिनाथ, पद्मप्रज्ञ, सुपार्श्वनाथ चै० श्रोय	७०७
	चंद्रप्रभु, सुविधिनाथ, सितलनाथ चै० श्रो०	७०८
	श्रीश्रेयांस, वासुपूज्य, विमलनाथ चै० श्रो०	७०९
	धर्मनाथ, शांतिनाथ चै० श्रोय स्तवन...	७१०
	कुंभनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ चै० श्रोय	७११
	मुनिसुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ चै० श्रोय	७१३
	पार्श्वनाथ चैत्यवंदन श्रोय स्तवन ...	७१४
	महावीरस्वामी चैत्यवंदन श्रोय स्तवन	७१६

	शाश्वता अशाश्वताजिन चैत्यवन्दन श्रोय	७१७
	नीलमी रायण तरु तले ॥ सिध्वाचल स्तवन	७१०
	नेम निरंजन देव के ॥ गिरनार स्तवन...	७१०
	आवो आवोने राज अर्बुदगिरी स्तवन...	७२२
	अष्टापदगिरी जात्रा करणकुं ॥ अष्टा० स्तवन	७२२
	समेतशिखरगिरी जेटीये रे ॥ शि० गि० स्त०	७२३
६८४	सत्तरजेदी जिन पू० पर्यूषण श्रोय ...	७१४
६८८	नेमनाथजी बारेमाशो ॥ शीयाले खाटू०	७१४
६८९	अपठरा करती आरती जिन आगे ...	७२६
६९०	पहली तो समरुं हो० नेम राजेमती सिझाय	७२६
६९१	गोतमस्वामी पूजा करी ॥ मुक्ति वर्णन सिझाय	७२८
६९२	नेमनाथजीरो सिलोको ... ..	७२९

### ॥ अथ चोढालीया संग्रह ॥

६९३	विजयसेठ विजयासेगणी चोढा० ...	७३१
६९४	इखुकार राजा नृगु प्रोहितरो चो० ...	७३३
६९५	दान शील तप ज्ञाव चोढालीयो ...	७३६

### ॥ अथ ठंद संग्रह ॥

६९६	सेवो वीरनें चित्तमां नित्य धारो० ...	७४३
६९७	नवकार ठंद ॥ वंठित पूरे विविधपर० ...	७४५
६९८	घघरनीसाणी ॥ सुख संपत्ति० ...	७४७

### ॥ दादा गुरुदेव स्तवन संग्रह ॥

७०१	विलाशै रुद्धि समृद्धि० ... ..	७५१
७००	वर लाठ विलाश० श्रीजिनदत्त० ...	७५२
७०१	रिसह जिनेसर० कुशलसूरि० ...	७५३
७०२	आयो सद्गु श्रीसंघ ... ..	७५४

७०३	सदगुरुजी थे सांजवो	...	...	७५५
७०४	दादा चिरंजीवो	...	...	७५६
७०५	गाँव जिनकुशल गन्धर्व	...	...	७५६
७०६	सदाइ मेरे श्रीजिनकुशल गुरु	...	...	७५७
७०७	आयोइ जी समरंता दादो०	...	...	७५७
७०८	जाया नकिमुं पूर रहो रे	...	...	७५८
७०९	पूजो नवि हितसुं कुशल सूरिंद	...	...	७५८
७१०	आज करो रे उगाइ श्रीजिनकुशल	...	...	७५८
७११	मैं निरख्या गुरु महाराज	...	...	७५९
७१२	चरणकी चरणकी वारीजा०	...	...	७५९
७१३	अब मोहि दरशण दीजै कु०...	...	...	७६०
७१४	कुशल गुरु कुशल करो जरपूर	...	...	७६०
७१५	सदगुरु पूजण जावस्यां	...	...	७६०
७१६	श्रीसदगुरुजीलें वीनती रे	...	...	७६१
७१७	सदगुरु दीनदयाल...	...	...	७६१
७१८	सुगुरु मेरी बेनिया पार०	...	...	७६२
७१९	देख्या मैं दरश तिहारा	...	...	७६३
७२०	सदा सदाई कुशल सूरिंद०	...	...	७६३
७२१	जिनकुशल सूरिंद गुरु सदा नमो	...	...	७६४
७२२	अत्रपती आरे पाय नमैं जी	...	...	७६४
७२३	सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी...	...	...	७६४
७२४	सदगुरुके चरण चित लाय२...	...	...	७६५
७२५	होरी खेवो नविक सदगुरुके संग	...	...	७६५
७२६	गुरु पूज रचो रे सुझानी	...	...	७६५
७२७	सदगुरुजीके द्वार मची होरी...	...	...	७६६

करै. जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामका १००० गुणना करै, सो लिखते हैं ॥ १ श्रीरुषज्जाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ( यह ) च्यार नामकूं ४ वेर उलटा, ४ वेर सुलटा गिणै ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणैसैं एक उली होय, ४ उली करणैसैं यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब ऊजमणा करै. नंदीश्वरद्वीपका मंरुल वणावै, पूजा करावै. इत्यादि महोच्चवकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साह मीवञ्चल करै, मंरुलकी विधि एकेक दिलीमें ( १३ ) तैरै २ पद्मानकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसा में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमें १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनकी पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेख, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवै. क्रमसैं एकेक काव्य पढ़के जल चंदनादि अष्ट इ व्यसैं अंगपूजा तथा अग्रपूजा करै ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके मर्हानेमें मिती वैसाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसैं पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुषज्जदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीठे बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसैं इक्षुरससेती जया. उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसैं सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीबारे कोमि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अद्भुतदान २ एसी उदघोषणा ४, देवडुंडुजी वाजित्र ५, एते पांच इय प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

( ४६६ ) ।

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबकों मालूम नई. इस दानके प्रज्ञावर्से श्रेयांसकुमार अक्षयसुखकों प्राप्त जया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आशेसे वस्त्र आभूषण पहरके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पोछे गुरुके मुखसे एकासणादिके पञ्चस्त्राण करके पर्वकी महिमा सुणे अपने घर गुरुको बहिरायके सब कुटुंब समेत जीमें, उर जो मंगली कार्य करणा होय तो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वकों जो जव्यजीव सेवन करते रहेंगे उसोका तपतेज हमेसा बढ़ता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वधिकारः ॥

॥ जेष्ठ कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उचम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने घरमें गंटे. इस शांतिपूजाके कराशेसे मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कन्नी श्रीसंघमें प्राप्त न होय ( अथवा ) किसी आवकके घरमें रोग चला रहता होय तो ( वा ) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव करणा चाहिये. ( इससे ) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वधिकार लिख्यते ॥

॥ आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है. ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, जव्याश्चतुर्मासकर्मनानि ॥ १ ॥ ( अर्थ ) जो जन्माएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥  
 सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥  
 विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥  
 सरस्वती मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥  
 हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरे सरस्वती नमस्कार ॥  
 सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा ।  
 रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥  
 चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।  
 हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकुं गाईहे ॥  
 हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।  
 लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥  
 सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।  
 एसी माता शाता दानी धर्मसीहे घ्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ इ उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ऌ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द  
 ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क । ख ॥ क  
 का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ ङ गृ तृ दृ ष्टृ नृ रृ मृ गृ  
 सृ ह्रं ॥ क्य ख्य ग्य घ्य ज्य ङ्य ट्य छ्य ज्य ट्य व्य एय त्य व्य ध्य  
 न्य प्य ज्य म्य ञ्य ङ्य ष्य स्य ह्य क्ष्य ॥ क्र ग्र ब्र ज्ञ त्र द्र प्र भ्र  
 अ ब्र श्र स्त्र ह्र ॥ क ग्व एव त्व द्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्वं ॥ क्र भ्र प्र  
 ल्ल प्र भ्र श्र ण्य ल्य क्ष्य ॥ कम गम धम ञम एम षम नम शम षम स्म  
 ह्य दम । कं खं गं घं ॥ क र क ग्ग ग्य ङ्ङ । च छ ज्ञ ज्ञ्ज ञ्ज

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

स्वस्तिभ्यो कृष्णवृहस्पतये । पिबेद्राहुस्तुभ्यं स्वस्वरा ॥  
पृथ्वीभृद्वल्युग्रेशात्म । त्रम्यास्तेह्यज्ञमिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥  
अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥  
विद्वत्त्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥  
स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥  
पंक्तिते च गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥  
तस्मात्मूर्खं सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥  
न ह्यत्र जूषणं चंद्रो । नारीणां जूषणं पतिः ॥  
पृथिव्या जूषणं राजा । विद्या सर्वस्य जूषणं ॥ ४ ॥  
माता शत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः ॥  
न शोचते सज्जामध्ये । हंसमध्ये बको यथा ॥ ५ ॥  
लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि तामयेत् ॥  
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥  
वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खशतान्यपि ॥  
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोपि च ॥ ७ ॥  
अविद्यं जीवितं शून्यं । दिशःशून्यास्त्वबांधवा ॥  
पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥  
न च विद्या समोर्बंधु । न च व्याधिसमो रिपुः ॥  
न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च दैवात्परंबलं ॥ ९ ॥  
किं तथा क्रियते धेन्वा । यानसूतेन दुग्धदा ॥



कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान्न ज्ञेयमान् ॥ १० ॥

उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न ज्ञातये ॥

पयःपानज्जङ्गानां । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥

मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥

आत्मवत्सर्वज्जुतानि । विहंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाभ्यायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमाना  
तेषांद्वाद्वान्योऽन्यस्यसवर्णो पूर्वोद्भूतः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्जो-  
नामी एकारादीनिसंध्यकराणि कादीनिव्यञ्जनानि तेवर्गापञ्चपञ्च  
वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शषसश्चघोषाः घोषवन्तोऽन्ये अनुनासिकाः ङ-  
त्रणनमाः अनतस्थाः यल्लवाः ञष्माणः शषसद्वाः अःइतिविसर्ज-  
नीयः कःइतिजिह्वासूलीयः पःइत्युपमानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्व-  
परयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरव्यञ्जनं परवर्णनयेत् अनतिक्रमयन्-  
विश्लेषयेत् लोकोपचारात्प्रवृत्तिरितिः इतिसंधौसूत्रतः प्रथमश्चरण-  
समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अंहतोभगवंतइंद्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥

आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥

श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । स्तत्रयाराधकाः ॥

पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलंकुर्वंतु)

यद्भजो पंचपरमेष्ठिपदहे सो हरेस्तं तुमज्जव्यजीवोक्तं मंगलकरो, के-  
सेकहे पंचपरमेष्ठि (अर्हतोभगवंतइंद्रमहिता) प्रथम परमेष्ठि श्री  
अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोक्तो हरे सो अरिहंत कहीजै.  
फेर श्री अरिहंत केसेकहे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहे फेर अरि-  
हंतमाहाराज केसेकहे जगवंतहे जगशब्दके अनेकार्थ कोपमें चौदे

अर्थहे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इन्द्रा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत जगवंतमेंहे एकतौ सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालकै फेर श्री अरिहंत जगवंत कैसेकहें ( इन्द्रमहिता ) चोसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारेगुणोंसें विराजमानहै सो बारे गुण ऐसेहैं प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग उर पसीना उर मैलरहित बना खसबोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलके फूल जेसी खसबो होतीहे २ लोही उर मांस गजके दुध जेसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृश्य होतीहे अर्थात् चर्म चक़ुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह चार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहे उर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न जये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ जगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहे जिसकी ठाया बैठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके समूह गोमे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे । वीठ नीचा रहे पांखमी ऊपर रहे २ । ( दिव्यध्वनि ) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यंच सब जीव अपणी २ ज्ञापामें यथावस्थित समजै एसा उनोंकों मालम देवेके जगवान हमारी बोलीमेंही उपदेश दे रहेहैं सोही बात सिद्धांतोंमें कहाजीहे ॥ गाथा ॥ एगाइंगिराणेगे । संदेहदेहिणंसमंजित्ता ॥ तिहुअणमणुं-सासंता । अरिहंताहुंतिमेसरणं १ । ३ ॥ आमर ४ जगवानके दोनों तरफ इंद्र चम्बर ढोलता रहै ४ ॥ आसनश्च ५ जगवंतके बैठणेकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासण रहै ५ ॥ जामंरुलं ६ जगवानके पिठामी भामंरुल रहे जिससें जव्यजीव जगवानके तरफ देखसके जगवंतके चारमुख चारुंदिसामें दीखाइदेवे भगवान पूर्वदिशामें मुख करके बैठे उर तीन दिसामें जगवंतकी प्र-

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन् भगवानके अतिशयसें  
 च्यारोंहीदिसामें बारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेजये दि-  
 खाइदेवे ६ ॥ डुंडुजी ४ आकाशमें देव ते देवडुंडुजीवाजित्र वजावे  
 ४ ॥ रातपत्रं ८ जगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन उत्र  
 रहै ८ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे ऐसे अरिहंत देवाधिदेव  
 चोतीस अतिशय विराजमान पैंतीस वचनगुण सोजित एकहजार  
 आठ लक्ष्णालंकृत अठारे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलो-  
 क्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें के-  
 वलज्ञान केवलदर्शनसें लोकालोकका ज्ञाव देखतेजये पृथ्वीमंरुल-  
 पर ज्ञव्यजीवोंके मनोरथ पूरणथके विचरतेहैं ऐसे अनंत गुणसें  
 विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमें सदा मंगल करो १ ॥  
 ( सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता ) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार  
 हुठ केसेकहैं श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों शुद्धध्यानरूप  
 अग्निसें जस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तजये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अ-  
 नंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक  
 ज्ञयादिकसें रहित चवदै राजलोकमें सब जीवोंके मनोगतभाव एकस-  
 मयमें जाणते उर देखतेथके लेकिन् आत्मगुणोंमे मग्न रहेजये ऐसे  
 श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ ( आचार्या-  
 जिनशासनोन्नतिकरा ) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नम-  
 स्कार हुठ केसेकहे श्रीआचार्यमहाराज उत्तीसगुणोंसें विराजमान  
 मुक्तिमार्गके साधक कर्मशास्त्रकेविराधक पंचाचारपालक अबुधजीव-  
 प्रतिबोधक क्लमागुणजंकार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिन-  
 शासनके उन्नतिके करणवाले ऐसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहा-  
 राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ ( पूज्याउपाध्यायका श्रीसि-  
 द्धांतसुपाठका ) चौथे परमेष्ठिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नम-  
 स्कार हुठ केसेकहैं श्रीउपाध्यायमहाराज द्वादशांगी सूत्रार्थके जा-

एकार नयनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेपदाणोवाले २५ गु-  
णोंसे विराजमान ऐसे श्रीगुणाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मं-  
गल करो ४ ॥ ( भुनिवशाःरत्नत्रयाराधकाः ) पंचम परमेष्ठिपदमें  
सुख साधूमुनिराजजी केसेकहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान ? दर्शन ५  
चारित्र ३ इन तीन रत्नोंके आराधक पांचे सुमतेसमता तीने गुप्ते-  
गुप्ता ढक्कायके पीहर कुरकीसंबल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक  
एसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसे सोजित श्रीसंघमें सदा  
मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोके कल्याणार्थ ॥

## ॥ अथविष्णुंजिननाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

१ श्रीकेवलज्ञानीजी	५ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥
३ श्रीसागरजी	४ श्रीमहायसजी
५ श्रीविमलदेवजी	६ श्रीसर्व्वानुभूतिजी
७ श्रीश्रीधरजी	८ श्रीदत्तस्वामीजी
९ श्रीदामोदरजी	१० श्रीसुतेजनाथजी
११ श्रीस्वामीजी	१२ श्रीमुनिसुव्रतजी
१३ श्रीसुमतिनाथजी	१४ श्रीशिवगतिजी
१५ श्रीअस्तागजी	१६ श्रीनमिश्वरजी
१७ श्रीअनिलनाथजी	१८ श्रीयशोधरजी
१९ श्रीकृतार्थजी	२० श्रीजिनेश्वरजी
२१ श्रीशुद्धमतजी	२२ श्रीशिवकरजी
२३ श्रीस्यन्दनजी	२४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी

॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

१ श्रीऋषभदेवजी	२ श्रीअजितनाथजी
३ श्रीसंज्ञवनाथजी	४ श्रीअजिनंदनजी
५ श्रीसुमतिनाथजी	६ श्रीपद्मप्रभूजी

( ८ )

७ श्रीमुपार्धनाथजी	८ श्रीचंद्राप्रभूजी
ए श्रीसुविधनाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयांसजी	११ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी	१४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी	१६ श्रीशान्तिनाथजी
१७ श्रीकुंथुनाथजी	१८ श्रीअरुनाथजी
१९ श्रीमल्लिनाथजी	२० श्रीमुनिमुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी	२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्धनाथजी	२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी	२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीमुपार्धजी	४ श्रीश्वयंप्रभूजी
५ श्रीसर्वानुभूतिजी	६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभूजी	८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोट्टिलप्रभूजी	१० श्रीशतकीर्त्तिदेवजी
११ श्रीसूत्रतनाथजी	१२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कषायदेवजी	१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी	१६ श्रीवित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी	१८ श्रीसंबरनाथजी
१९ श्रीयसोधरजी	२० श्रीविजयनाथजी
२१ श्रीमल्लिप्रभूजी	२२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी	२४ श्रीभद्रकरजी

॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमंधरजी	२ श्रीयुगमंधरजी
३ श्रीबाहूजी	४ श्रीसुबाहूजी
५ श्रीसुजातजी	६ श्रीस्वयंप्रभूजी

( ए )

७ श्रीऋषभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
ए श्रीसूरप्रभूजी	१० श्रीविभलजी
११ श्रीवज्रधरजी	१२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रबाहजी	१४ श्रीजुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रभजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी	१८ श्रीमहाभद्रजी
१९ श्रीदेवयशजी	२० श्रीअजितवीर्यजी

॥ च्यारसांश्वतातीर्थकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव भवंति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनबाखाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी	८ श्रीशीताजी
ए श्रीसुभद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीद्वंदतीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रज्ञावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि वडी२ सतियोंको त्रिकाल२ वंदना ॥

( १० )

॥ ॐ परमेश्वरिणे नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराह ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ एमो  
आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवञ्चायाणं ॥ ४ ॥ एमो लोए सव्वसा  
हूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच एमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥  
॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं इवइ मंगलं ॥ ९ ॥  
इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण के थापनाजीकी थापना  
करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पहिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥  
चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सदहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥  
॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ प  
लावुं ॥ २ ॥ अनुमोडं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥  
॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकर-  
णसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने  
खमा हो के तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इहामि खमासमणो वंदितं जावणिकाए निसीहिआए म  
हणए वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृच्छा ॥

॥ इच्छाकर जगवन् सुहराड, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा  
बाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोगेजी ? स्वामी शाता ठेजी ? इति ॥  
॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे दे-  
वगुरु प्रसाद ॥

॥ पीठें नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अमुठि  
ठमि कहे पीठें खमासमण देकें इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन्  
सामायिक लेवा मुहपत्ती पम्हिलेहुं ? गुरु कहे, पम्हिलेह. पीठें इच्छं  
कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पम्हिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पढिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सर्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥  
मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल  
मुहपत्ती खोलती विरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ द्वष्टिराग ॥ ३ ॥ परि-  
हरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥  
॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान  
॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पम्हिले-  
हण नावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र-  
विराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥  
कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंरुं ॥ १ ॥ वचनदंरुं ॥ २ ॥ काय-  
दंरुं ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पम्हिलेहण जिमणे हाथसैं करणी  
॥ यह पच्चीस बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पच्चीस पढिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या  
॥ ३ ॥ ए तीनुं नीलामे मस्तकें परिहरुं ॥



॥ रुद्धिगौरव ॥ १ ॥ रसगौरव ॥ २ ॥ शांता गौरव ॥ ३ ॥  
ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशब्द ॥ १ ॥ निधाणाशब्द ॥ २ ॥ मित्रादंसण-  
शब्द ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोष जिमणे खंजे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोष मावे खंजे परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन मावे  
हाथे परिहरुं ॥

॥ जय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुःख ॥ ३ ॥ ए तीन  
जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेजकाय ॥ ३ ॥ ए  
तीन मावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाञ्छाकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥ ३ ॥  
ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुद्रपत्ति पन्निसेदशा संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीठें खमा होय कें इच्छामि खमासमणका पाठ कहे कें  
इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ सामायिक संदिस्तावुं ? गुरु कहे  
संदिस्तावेद ॥ पीठें इच्छं कहे कें फेर खमासमण दे कें इच्छा ॥  
जण ॥ सामायिक ठावुं ? गुरु कहे ठाण्ड ॥

॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देइ थोनो जुकी तीन नव-  
कार गणी इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् पसाळ करी सामायिक  
दंरुक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें  
सामाईयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकतुं पञ्चखण्ड ॥

॥ करेमि जंतें सामाईयं, सावळें जोगं पञ्चखण्डामि ॥ जाव  
तियमं पञ्चवातामि ॥ दुविहं ति विदेहं मणेशं वायाए काण्णं,

( १३ )

न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पन्निक्कमामि निंदामि गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठेण खमासमण दे केण इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्  
इरियावहियं पन्निक्कमामि ॥ गुरु कहे पन्निक्कमह. पीठेण इच्छं कही ॥  
इच्छामि पन्निक्कमिणं इरियावहियाएइत्वादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ इरियावहियं पन्निक्कमा  
मि ॥ इच्छं इच्छामि पन्निक्कमिणं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए  
॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणाक्रमणे वीथ्यक्रमणे हरियक्रमणे  
॥ उता उत्तिंग पणग दग मट्ठी मक्कन् संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे  
मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदि  
या पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अजिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टि  
या परियाविया ॥ किवामिया उहविया गणान्न णाणं संकामिया  
जीवियान्न ववरोविया ॥ तस्समिच्छामि उक्कन् ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायञ्चित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं  
॥ विसल्लोकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ शिग्घायणञ्चाए ॥ वामि  
काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नञ्च उससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंजाइएणं  
उरुएणं वायनिसग्गेणं जमखिए पित्तमुञ्चाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचा  
खेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचाखेहिं ॥ सुहुमेहिं दिठिसंचाखेहिं ॥ २ ॥ एव  
माइएहिं आगारेहिं ॥ अज्जग्गे अविराहित ॥ दुक्क मे काउस्सग्गे  
॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं जगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥  
तावकायं गणेषं मोषेषं जाणेषं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इ  
ति ॥ ६ ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सग्ग

करे. पीठें एमो अरिहंताणं कहे कें काउस्तग पारकें मुखसैं प्रगट  
लोगस्त कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्त ॥

॥ लोगस्त उज्जोअगरे ॥ धम्म तिअये जिणे ॥ अरिहंते  
कित्तइस्तं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसअ मज्झिअं च वंदे ॥  
संजव मज्झिणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च  
चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जांत वासु  
पुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥  
कुंशुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वथं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ  
नेमिं ॥ पासं तह वड्ढमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अज्झिअ ॥ वि  
हुय रय मळा पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिअय  
रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्त उ  
त्तमा सिद्धा ॥ आरुग वोहिआनं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥  
चंदेसु निम्मलवरा ॥ आइअेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंजीरा  
॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलोए ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीठें खमासमण देइ इच्छा ॥ जगवन् बैसणो संदि  
स्तावुं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें इच्छं कहे कें वली खमा-  
समण दे कर ॥ इच्छा ॥ जगवन् बैसणो ठाठं ? गुरु कहे  
ठाएह ॥ फेर इच्छं कहे कें खमासमण दे कर इच्छा ॥  
जग ॥ सिद्धाय संदिस्तावुं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें  
इच्छं कहे कें वली खमासमण दे कर इच्छा ॥ जग ॥ सिद्धाय  
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें इच्छा खरे हो कर  
आठ नवकार कह कर सिद्धाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे  
तो खमासमण दे कें इच्छा ॥ जग ॥ पांगरणो संदिस्तावुं ? गुरु  
कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें इच्छं कह कर खमासमण दे कर इच्छा ॥  
जग ॥ पांगरणो पणिग्घाणं ? गुरु कहे पणिग्घाएह ॥ पीठें इच्छं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवन्त अथवा पोसासहित श्रावक  
वांटे तो “वंदामो” ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांटे तो, सि  
खाय करेह, ऐसै कहे ॥ इति प्राजातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा ॥ ज ० ॥ चैत्यवंदन  
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीठें इच्छं कही जयउ सामि जियेउं सामि.  
इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसइ सेचुंजि उज्जति ॥  
॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंरुण ॥ १ ॥ जरुअछेइ  
मुणिसुवय, महुरिपास उह डुरिय खंरुण ॥ अवरविदेहिज तिठ-  
यर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंडुं जिण  
सबेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसउ सत्त-  
रिसउ, जिणवराण विहरंत लप्पई ॥ नवकोमीहिं केवल्लिण, कोमि  
सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोमीहिं  
वरणाण ॥ समणह कोमी सहस्स डई, शुणिज्जइ निच्च विहाण  
॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्खवा उप्पन्न अठ कोमीउ ॥ चउ-  
सय ङायासीया, तिच्छुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोमि सयं,  
पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अठवीस सहस्सा, चउसय अठ-  
सिया पन्निमा ॥ ३ ॥ १ १ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिठं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥  
जाई जिणविंवाई ॥ ताई सवाई वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवन्ताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, ति-

जगराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणां, पुरिसत्तीहाणां, पुरि-  
सवरपुंमरीआणां, पुरिसवरगंधहत्तीणां ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणां, लोग-  
नाहाणां, लोगहिआणां, लोगपईवाणां, लोगपक्कोअगराणां ॥ ४ ॥ अन्न-  
यदयाणां, चख्खुदयाणां ॥ मग्गदयाणां, सरणदयाणां, वोहिदयाणां  
॥ ५ ॥ धम्मदयाणां, धम्मदेसियाणां ॥ धम्मनायगाणां, धम्मसा-  
रहीणां, धम्मवरचान्नरंतचक्कवट्ठीणां ॥ ६ ॥ अप्पनिहय वरणाणं  
दंसण धराणां, विअट्ठ ठउमाणां ॥ ७ ॥ जिणाणां जावयाणां, तिन्नाणां  
तारयाणां, बुद्धाणां बोहयाणां, मुत्ताणां मोअगाणां ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणां  
सव्वदरिसिणां, सिव मयल मरुअ मणंत मरुवय मवावाहं मपुणरा-  
वित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणां संपत्ताणां, नंमो जिणाणां,  
जिअ जयाणां ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ जविस्संति  
पागए काले ॥ संपइअवट्ठमाणा ॥ सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सवाई  
ताइं वंदे ॥ इहसंतो तउ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहू ॥ जरहेरवय महाविदेहे अ ॥  
सव्वेसिं तेसिं पणुअ ॥ तिविहेण तिदंम विरयाणां ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हस्तिस्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवर्नं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसह-  
रविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुल्लिगमंतं  
॥ कंठे धारेइ जो सया मणुअ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डुअ जरा  
जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिअ दूरे मंतो ॥ तुअ पणामो वि बहु-  
फलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुअ दोहगं ॥

॥३॥ तुह सम्मते लदे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्रहिए ॥ पावति  
विग्घेणं ॥ जीवा अयरामरे ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संयुत्तं महायस  
॥ जच्चिप्परनिप्परेण हिअएण ॥ ता देव दिक्ख बोहिं ॥ जवे जवे  
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ हांउ ममं तुह पज्जावन्त जयवां॥  
जवनिव्वेत्तं मग्गा, पुत्तारिआ इव फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चा  
उ ॥ गुरुजणपूआ परत्तकरणां च ॥ सुहगुरुजोगोत्तवय, ए सेवणा  
आज्जव मखंमा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीठें  
खमासमण दे केँ इच्छा ॥ १ ॥ ज ॥ कुसुमिणडुसुमिण राई पाय  
जित्त विसोहणात्तं काउस्तग्ग करुं ? गुरु कहे करेह पीठें इत्तं कह  
कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायजित्त विसोहणात्तं करेमि काउ  
स्तग्ग ॥ अन्नत्त उत्तसिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे केँ तोले नव  
कार अथवा चार लोगस्तका चंदेसु निम्मलयर पर्यंत चिंतन  
कर केँ काउस्तग्ग करे ॥ पीठें एमो अरिहंताणं कह कर काउ  
स्तग्ग पारोकेँ मुखसेँ एक लोगस्तका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें  
गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्तग्गमाहे ॥ सागर  
वरगंजरीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम  
ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि केँ बांदिथे ॥ १ ॥ खमासमण  
देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके बांदिथे ॥ २ ॥ खमासमण देइ  
जंगम युगप्रधान वर्त्तमान जट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले केँ बां  
दिथे ॥ ३ ॥ खमासमण देइ केँ सर्व साधुजीकुं बांदिथे ॥ ४ ॥ इत  
तरे चार खमासमणसेँ पक्कमणां ठावी गोमाळीये बैठ केँ मस्त  
क नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहने दे कर ॥ रुक्मस्तविराइय

॥ इत्यादि पाठ कहे, परंतु इच्छाकारेणसंदिस्तह इच्छं इत्त माफक  
न कहे ॥

॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ उच्चित्तिअ उप्पासिय दुच्चिअ इच्छा  
कारेण संदिस्तह जगवन् इच्छं ॥ तस्स मिच्चामि दुक्कमं ॥ इति  
॥ १८ ॥ सबेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीठें नमुत्तुणं कह कें खना होय कें ॥ करेमि जंते सा  
माइयं सावय्यं जोगं पच्चस्सामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीठें इ  
च्छामि काउस्सग्गं जो मे राइउ ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिगामि ॥

॥ इच्छामि गामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइअरो क  
उ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अक्कपो ॥ अक  
रणिज्जो ॥ उच्चाउ ॥ दुच्चित्तिउ अणायारो ॥ अणिअिअवो ॥ अ  
सावगपाउग्गो ॥ नाणो तह दंसणो चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥  
तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गु  
णवयाणं ॥ चउन्हं सिक्कावयाणं ॥ बारसवियस्स सावगधम्मस्स ॥  
जं खंमिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्चा मि दुक्कमं ॥ इति ॥ इ  
हां देवसियंके ठिकानें राइयं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीठें तस्सउत्तरी ॥ अन्नन्न उससिएणं कह कर चारित्रगु  
द्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी  
पारि कें दर्शन गुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत  
चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना  
सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स  
क्काण वत्तिआए ॥ बोहिलान्न वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्भाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुपेहाए ॥ वद्धमाणी  
गमि काउस्तगं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीठैं अन्नठण कही चार नवकार अथवा एक लोगस्तका  
उस्तग करकें पारकें ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुस्करदी ॥  
यस्त जगवठ करेमि काउस्तगं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो  
लिखते हैं ॥

॥ अथ पुस्करदी ॥

॥ पुस्करदीवठे, धायइसंभे अ जंबुदीवेअ ॥ जरदे रवय  
विदेहे, धम्माइगरे नमंतामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविद्धं, सणस्त  
सुरगणनरिंदमहिअस्त ॥ सीमाधरस्त वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल  
स्त ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्त, कद्धाण पुग्गलवि  
सालसुहावहस्त ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्त, धम्मस्त सार  
मुवल्लघ्न करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेजो पयठ णमो जिणमए, नंदी  
सया संजमे ॥ देयं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्तप्पूअ जावच्चिए ॥  
लोगो जठ पइठिठ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वद्धउ सा  
सठ विजयठ, धम्मुत्तरं वद्धउ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्त ज  
गवठ करेमि काउस्तगं वंदणवसिआएण ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर  
अन्नबूससिएणं कह कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्तका काउ  
स्तग करे, काउस्तगके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे, सो आ  
नें लिखेंगे, पीठैं सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु-  
वगयाणं, नमो सया सबसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं  
देवा पेजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी  
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्त वद्धमाणस्त ॥ सं  
सारसागराठ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिन सेल सिहरे,



दिक्का नाणं निसीहिआ जस्त ॥ तं धम्मचक्खवट्ठिं, अरिठनेमिं न  
भंसांमि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउवीसं  
॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्महिठि समाहिगराणं ॥  
इति ॥ करेमि काउस्सगं ॥ अन्नउण ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र  
वादणां निमित्तें मुहपत्ती पन्निखेहुं ? गुरु कहे पन्निखेह ॥ मुहपत्ती  
पन्निखेहे. पीठें बांदणां हे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उज्जा हुआ आधा नीचा नम कर  
इच्छामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजा-  
णह मे भिउग्गहं. इतना पाठ कह कर जूमि प्रमार्जन करता  
हुआ निसीहि कह कें कठुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संभासा  
प्रमार्जन कर कें उक्करु ब्रेठ के नावे हाथमें मुहपत्ती ले कें नाबे  
कानसैं ले कें जिमणा कान पर्यंत निह्लारु पूंजी, मुहपत्ती आगे  
रख कें तिसके मध्य जागमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो  
कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कठुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि  
कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो जे किलामों  
॥ इत्यादि पाठ कहे. पीठें फेर ॥ जत्ता जे ॥ इत्यादि आवर्त्तन कर  
कें खमा होकें पीठें पगसैं जूमि पूंजता हुआ अवग्रहमें बाहिर  
निकलकें स्वस्थान पर आवे. जहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ  
सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवादणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदितं, जावणिज्जाए निसीहिआए  
॥ अणुजाणह मे भिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं,  
खमणिज्जो जे किलामो ॥ अप्पकिद्धंताणं बहु सुज्जेण जे, दिवसो

वश्कंतो जत्ता जे जवणिऊं च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देव-  
 सिअं वश्कम्मं आवसिआए, पन्निक्कमामि खमासमणाय ॥ देव-  
 सिआए, आसायणाए ॥ तिचीसन्नयराए जं किंचि मिआए, मण-  
 , वयडुक्कणाए कायडुक्कणाए कोहाए, माणाए, मायाए, लो-  
 ज्ञाए, सब्बकलिआए, सब्ब मिच्चोवयाराए, सब्बधम्ममाश्कमणाए ॥  
 आसायणाए जो मे अइआरो कउं, तस्स खमासमणो पन्निक्कमामि ॥  
 निंदामि गरिहामि अप्पायां वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वंइयें  
 आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउं वश्कंतो, तथा  
 चउमासीयें चउमासीउं वश्कंतो, पस्कीयें पस्को वश्कंतो, संवच्च-  
 रीयेसंवच्चरीउं वश्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकरेण संदिस्सइ जगवन् देवसियं आलोउं इअं ॥ आ-  
 लोएमि, जो मेण ॥ इति ॥ १५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीडें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक आलोवे, सो क-  
 हेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय  
 ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख  
 तेजकाय ॥ सात लाख वातकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पति-  
 काय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइं-  
 द्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख  
 देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्थच पंचेंद्रिय ॥ चउदे  
 लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें,  
 मादारे जीवें जे कोइ जीव हणयो होय, हणाय्यो होय, हणतां  
 प्रत्ये जलो जाण्यो होय, ते सबेहुं मन वचन कायार्थे करी मिआ  
 मि डक्कन ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥  
मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया  
॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥  
अज्ञातव्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥  
परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द  
॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय,  
सेवता प्रत्ये जलां जाण्यां होय, ते सब्हे हुं मनै, वचनै, कायार्यै  
करी तस्स मिच्छा मि डुक्कनं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोषी, ठवणी, कवली, नव  
करवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादा  
नोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, ज्ञत  
कथा करी होय, और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, करावुं  
होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायार्यै करके, दि  
वस अतिचार आलोयणे कर के पक्कमणामे आलोउं ॥ तस्स  
मिच्छा मि डुक्कनं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रजातके पक्कमणोमें  
दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीठें सबस्सवि राश्यं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां  
इच्छाकाण ॥ जण ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रा-  
थवित मागे ॥ गुरु कहे पक्कमह ॥ पीठें इच्छं तस्स मिच्छामि  
डुक्कनं कह के संभासा प्रमाज्जन कर के आसन पर बैठे के जि-  
मणा गोमा जंचा रख के भावा गोमा नीचे कर के ऐसें कहे कि  
जगवन्! सूत्र जणुं? तव गुरु कहे जणेह ॥ पीठें इच्छं कहि के तीन  
नवकार अरु तीन बार करेमि जंतै ॥ जण के इच्छामि पक्क  
मिच्छं जो मे राइउ इत्यादि कह कर ॥ तं निदे तंच गरिहामि

५. वंदिता सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीठें खरुा हो कें अष्टुष्टि  
मि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सव सिद्धे, धम्माचरिए अ सवसाहू अ ॥ इच्छामि  
निक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्त ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,  
ते तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे  
च गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे  
आरंजे ॥ कारावणे अ करणे, पन्निक्कमे देवसियं सव्वं ॥ ३ ॥  
वड्ढमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसेण  
तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं  
अणाज्जेणे ॥ अज्जित्ते अ निज्जे, पन्निक्कमेण ॥ ५ ॥ संका  
विणिंजा, पत्तंस तह संखवोकुल्लिंगीसु ॥ सम्मत्तस्त इआरे,  
निक्कमेण ॥ ६ ॥ ढक्काय समारंजे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा  
अत्तछाय परछा, उज्जयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचणहमणुव-  
याणं, गुणवयाणं च तिसह मइयारे ॥ सिस्काणं च चउएहं, पन्नि-  
क्कमेण ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइवाय विरइउं ॥  
आयरिअ मप्पसत्ते, इउ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह वंध ठविजेए,  
उत्तरे जत्त पाण वुजेए ॥ पढमं वयस्त इआरे, पन्निक्कमेण ॥  
१० ॥ बीए अणुवयंमि, परिथुलगअलिअ वयण विरइउं ॥ आया-  
रिअमप्पसत्ते, इउ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्त दारे,  
मोसुवएसे अ कून्लेहे अ ॥ बीयं वयस्त इआरे, पन्निक्कमेण ॥  
१२ ॥ तइए अणुवयंमि, थूलग परदव्वहरण विरइउं ॥ आयरिअ  
मप्पसत्ते, इउ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहरुप्पज्जे, तप्पमिरूवे  
विरूद गमणे अ ॥ कून्तुल कून्माणे, पन्निक्कमेण ॥ १४ ॥ चउजे  
अणुवयंमि, निज्जं परदारगमण विरइउं ॥ आयरिअ मप्पसत्ते, इउ  
पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अशंग वीवाह तिउव

अशुरागे ॥ चउठ वयस्स इआरे, पन्निक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तौ अणुव्वए  
 पे, चमंमि आयरिअ मप्पसत्तंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्त पमायप्पसं  
 गेणं ॥ १७ ॥ धणं धन्न खित्त वट्टू, रूप्प सुवन्ने अ कुविअ परि-  
 माणे ॥ डुपए चउप्पयंमि, पन्निक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परि-  
 माणे, दिसासु उट्टं अहेअ तिरिअं च ॥ वुड्ढित्तइअंतरद्दा, पढमंमि  
 गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ  
 गंधमल्ले अ ॥ उवज्जोग परिज्जोगे, बोयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते  
 पन्निबदे ॥ अपोल डुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुत्थोसहि ज्ञस्सणया,  
 पन्निक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाप्पी, भाप्पी फोप्पी सुवज्जए  
 कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त जल्ल रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥  
 एवं खु जंतपिप्पलणं, कम्मं निज्झंणं च दवदाणं ॥ सरदद तलाव  
 सोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सच्चग्गि मसंल जंतम, तण  
 कठे मंत मूल जेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पन्निक्कमे० ॥ २४ ॥  
 न्हाणू वट्ठण वन्नग, विळेवणे सद्धव रसगंधे ॥ वज्जासण आजरणे,  
 पन्निक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुकुइए, मोहरि अहिगरण जोग अइ-  
 रिन्ते ॥ दंमंमि अणघाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे  
 डुप्पणिहाणे, अणवघाणे तहा सइ विदुणे, ॥ सामाइअ वितहकए,  
 पढमे सिस्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सदे रूवे अ  
 पुगलखेवे ॥ देसावगा सियंमि, बीए सिस्कावए निंदे ॥ २८ ॥  
 संथा रुच्चारविही, पमाय तह चेव ज्ञोयणाज्जोए ॥ पोसह विहि  
 विवरीए, तइए सिस्कावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निस्सिवणे, पि-  
 हिणे ववएस मज्जेरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउठे सिस्कावए  
 निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सअ डहिए सुअ, जामे असंजएस अणुकंपा  
 ॥ राणेशव दोसणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ सादूसु  
 संविज्जागो, न कउ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३३ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ  
 आसंस पन्ने ॥ पंचविहो अइआरो, मा मच्च दुक्क मरणंते ॥ ३३ ॥  
 काएण काइअस्स, पन्निक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसि-  
 अस्स, सब्बस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिस्काणां,  
 रवेसु सत्ता कत्ताय वंमेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो  
 अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्महिंठि जीवो, जइ विहुपावं समायेरे  
 किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निदंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥  
 तं पिहुसपन्निक्कमणं, सप्परिआवं सज्जत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ,  
 चाहिइ सुत्तिस्किउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठ्ठगं, मंत मल  
 विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निविसं ॥ ३८ ॥  
 एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्झिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो,  
 खिप्पं हणइ सुत्तावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ  
 निंदिय गुरुत्तासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ ञ्जुव ञ्जारवहो  
 ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥  
 डस्काण मंत किरिअं, काही अच्चिरेण काळेण ॥ ४१ ॥ आलो-  
 अणा बहुविहा, नयसंज्जरिआ पन्निक्कमणकाळे ॥ मूल गुण उत्तर-  
 गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि  
 पन्नत्तस्स ॥ अप्पुठ्ठिमि आरा, हयाए विरउमि विराइयाए ॥  
 तिविहेण पन्निक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति  
 चेइआइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहु ॥ ४५ ॥ चिर संचिय  
 पाव पणासणीइ, जवसयसइस्स महणाए ॥ चउवीस जिण वि-  
 णिग्गय कइइं, वोळंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता,  
 सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्महिंठि देवा, दिंतु समाहिं च  
 बोहिं च ॥ ४७ ॥ पन्निस्सिद्धाणं करणे, किच्चाणं मकरणे पन्निक्क-  
 मणे ॥ असइहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खा-  
 मेमि सब जीवे, सबे जीवा खमंतु मे ॥ मिच्छीमे सब नूएसु, वेरं

मङ्गं न केणइ ॥ ४ए ॥ एव महं आलोइअ, निदिअ गरहिअ डुगं-  
ठिअं सम्मं ॥ तिविहेण पन्निक्तो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५०  
॥ इति ॥ १ए ॥ इहां प्रजातके पन्निक्कमणमैं देवसिके ठीकाने राइयं  
कदना ॥

॥ पीठैं दो वादणां देकर अवग्रहमांदिअकोज कहे ॥ इच्चा-  
का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अणुठिंमि अग्निंतर ॥ राइयं खामेमि ?  
गुरु कहे खामेह ॥ संभासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, बे  
बांह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामदाअसूं मुखें देई, दक्षिण दाअ  
गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि  
संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अणुठिं ॥

॥ इच्चाकारेण संदिस्सह जगवन् अणुठिंमि अग्निंतर देव-  
सिद्धं खामेमं ॥ इच्चं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं ज्ञे-  
पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर  
जासाए उवरिजासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्झविणय परिहीणं सुदु-  
मंवा बायरं वा ॥ तुप्पे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्चाभि  
डुक्कनं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्चाभि डुक्कनं कहे. पीठैं बे वांदणां देई  
जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसैं अवग्रह बाहिर आय कैं आय-  
रिय उवज्जाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्जाए ॥

॥ आयरिअ उवज्जाए, सीसे साहमीए कुलणो अ ॥ जै  
मे कथा कसाया, सेवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समण  
संघस्स, जगवन् अंजलिं करिअ सीसे ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि  
सबस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासिस्स, ज्ञावन् धम्मो निदिअ  
निअ चित्तो ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

प्रीतिं करेमि जंतो इहामि ठामि काउस्सगं तस्सुजरी० ॥  
 श्रीमहावीर स्वामी ठमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउ-  
 स्सगं अन्नदू० ॥ कहि कें काउस्सग करे, काउस्सगमें श्रीवीर-  
 कृत ठम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा ठ  
 खोगस्सका काउस्सग करे, काउस्सग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ ठठे आवश्यककी मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेह  
 ॥ मुहपत्ती पमिलेही बे वांदणां देई सकल तीर्थनाम लख नम-  
 स्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्वधरा वृत्तम् ॥

॥ सङ्कत्तया देवलोके रविशशिज्जवने, अंतराणां निकाये,  
 नक्षत्राणां निवासे प्रहणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्न-  
 गद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदि-  
 वसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे  
 कुंरुले हस्तिदंते, चक्रारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥  
 शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥  
 श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मते तारके  
 वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमल-  
 गिरिवरे गुर्जरे रोहषाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे हि-  
 तितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे  
 विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च ज्रोटे ॥ श्री०  
 ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलघिनि निषधे मेखले पिण्डले वा,  
 नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ माहाले  
 कोशले वा विगलितसखिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥  
 अंगे वंगे कर्लिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौमे चौमे मुरमे  
 वरतरद्रविमे उद्रियापो च पौन्रे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिन्द्रे द्रविणकवलये



कान्धकुब्जेसुराग्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुरव्या गजपुरमधु-  
 रापत्तने चोक्तायिन्यां, कौशंब्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां  
 च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे जद्विजे ताम्रलिप्त्यां ॥  
 श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीरतीरे,  
 शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने जूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये  
 वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्री-  
 मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाळमलौ जंबुवृक्षे, चोक्ताय्ये चैत्यनंदे  
 रतिकररुचके कौमुदे मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ  
 व्यंतरे स्वर्गलाके, ज्योतिर्लोके जवंति त्रिभुवनवलये यानि चैत्या-  
 लयानि” ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रचीणाः,  
 प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं जक्तिज्ञाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-  
 तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिश्चैः  
 प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥  
 इति ॥ ३२ ॥

पीठे गुरुमुखे पञ्चस्काण करि कै ॥ इच्छामोनि सद्धियं कहि  
 कै गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीठेशमो खमासमणार्ण णमोऽईत्तिस्स ॥ कह कर.  
 परसमय तिमिरतरणि ए तीन गाथा कहीजै सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणि ॥

॥ परसमय तिमिरतरणि, जवसागर वारि तरण वरतरणि  
 ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार  
 विहारकरि, दुर्न्तजावारिणया निकामं ॥ निरन्तरं केवलसत्तमा  
 वो, जवावहं मोहजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ,  
 संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-  
 रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलजरलोत्तालीढलोला-  
 लिंमालां, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलज्जविकारागार

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीदरणे समीरम् ॥  
रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा-  
म सुरदानवमानवेन, चूलाविलोककमलावलिमाहितानि ॥  
रिताञ्जिनतल्लोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि  
न ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराञ्जिरामं, जीवाहिंसा-  
वरखलदरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं,  
वीरागमज्जनिर्विं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल  
रिमला लीढलोलालिमाला, ऊंकारा रावसारा मलदलकमलागार-  
निवासे ॥ गयासंज्ञारसारे वरकमलकरे तारहाराञ्जिरामे, वा-  
हदेहे जवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ काञ्चस्तग्गमहि एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक  
काञ्चस्तग्ग पारी नमोऽर्हस्तिज्ञा० कही ॥ एक गाथा स्तुति  
सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वत्सेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम,  
 ल वरण सुखकंद ॥ अहि लंघण सेवित, पञ्चमादश धरणिंद ॥  
 २ ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिशंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक  
 कहे ॥ दूसरे सब काजस्तगमाहे रक्षा हुआ सुखे ॥ पीठें  
 अरिहंताणं कहि कै काजस्तग पारे ॥ इस तरे आगे पण  
 ॥ पीठें लोगस्त कहे ॥ सबलोए अरिहंत चेईआणं वंदण-

वति० ॥ अन्नदू० ॥ इत्यादि कहि कैं ॥ एक नवकारका काउस्सग  
करी पारि कैं दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयद्वइ, कणयाचल अन्निराम ॥ मानुषोत्तर  
नंदी, रुचक कुंरुल सुखगाम ॥ जुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी  
नाम ॥ वत्तैं ते जिणवर, पुरो मुज मन काम ॥ २ ॥

॥ पीठैं पुस्करवदीवद्धे कहि कैं सुयस्स जगवत्त० वंदण०  
अन्नदू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग पारि कैं ॥ त्रीजी  
स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, वार उपंग ठ ठेद ॥ दस पयन्ना  
द्वारव्या, मूल सूत्र चउत्तेद ॥ जिन आगम पद्दव्य, सस पदारथ  
जुत्त ॥ सांजलि सईहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीठैं सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ कहे कैं वेयावच्चगराणं ॥  
अन्नदू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग करी पारि कैं एमो-  
उईस्सिद्धाणं कहे कैं चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पञ्चमावई देवी, पार्श्व यद्ध परतद्ध ॥ सहु संघनां संकट,  
दूर करेवा दद्ध ॥ समरो जिनज्जक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख  
सुजस समापो, पुत्त कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीठैं नीचा बैठ कैं एमोवूणं ॥ कहि कैं ॥ तीन खमा-  
समणैं पूर्वोक्त रीतैं ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांदि ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें  
मुहपत्ती वेई अट्टाइजेसु कहे हैं, सो लिखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अट्टाइजेसु ॥

॥ अट्टाइजेसु ॥ दीव समुदेसु ॥ पन्नरससु कम्मजूमि० ॥  
जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुञ्जपणिग्गदधारा पंचमद्वयधारा ॥  
अट्टारसहस्स सोलंगधारा ॥ अक्कयायारचरिचा ॥ ते सबे सिरस  
मणसा मन्त्रण वंदामि ॥ इति ॥

( ३१ )

॥ इतना विधि किया पीठें स्थिरता हुवे तो स्वमांसमण  
तीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्तइ जगवन् ॥ चैत्यवंदन करूं  
जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिजुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय  
जय करुणा शांत दांत, जवि जनहितकामी ॥ जय जय ईव नरिंद  
चंद्र, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-  
जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥  
त्रिकरणगुह त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं-  
चिनाम तिष्ठं ॥ नमोब्रूणं जावंति चेष्ट्रां जावंत केवि साहू ॥  
॥ उर एमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुज्यः ॥ तक कहि कै  
सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग बालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतनी अवधार लाल रे ॥  
परम पुरुष परमेस्वर, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥  
केवल ज्ञान दिवाकर, जागे सावि अनंत लाल रे ॥ जासक लो-  
कालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र  
चक्रीसर, सुर नर रहे कर जोर लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा,  
अणहंता इक कोर लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर  
चस्ते, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आ-  
शरो, जब जब देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उच्चारण  
गो तुम्हें, दूर दूरो जब दुःख लाल रे ॥ कहे जिनदर्प मया करी,  
देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३७ ॥

॥ पीठें जयवीरराय० वंदसावतियाए ॥ अन्नबू० कहि

कैं ॥ एक नवकारका काजस्सग करे ॥ पारि कैं नमोऽर्हस्तिद्धा०  
कही ॥ एक शुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंरुणं पुष्पसोवन्न वेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणेहं ॥  
महाणंदलब्धी बहुबुद्धिरायं, सुसैवाम सीमंधरं तिष्ठरायं ॥ १ ॥ इम  
होज श्रिता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो  
लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाजि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरुण ॥ जय जय  
प्रथम जिणंद चंद, जव दुःख विहरण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद,  
वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिपज जिणोसर ॥  
अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुज पद पंकज  
प्रीति धर, निशिदिन नमत कळयाण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिष्ठं०  
॥ एमोत्तुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ एमो-  
ऽर्हस्तिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः तक कहि कैं श्री सिद्धाचल-  
जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेठ्यां रे ॥ धन्य ज्ञाग्य इमारां ॥ विम-  
लाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोठो, कहेतां न आवे  
पारा ॥ रायण रूख समोसर्था स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध०  
॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट  
द्रव्यसैं पूजो जार्वे, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर  
देशाथी हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उक्षरणा  
बिरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ जाव  
जकिसें प्रज्जु गुण गावे, अपना जन्म सधारा ॥ जात्रा करि  
जविजन शुज्ज जार्वे, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥  
संवत अठारे ज्यासी मास आषाढे, वदि आठम जोमवारा ॥

प्रज्जुके चरणा परतापसिंहमें, कमारतन प्रज्जु प्यारा रे ॥ ४० ॥ ५॥

॥ पीठें जयवीरराय० ॥ वंदणावन्तियाए० ॥ अन्नवू० ॥ कहिकें  
एक नवकारकाकाउस्तग करी ॥ पारिकें नमोऽर्हस्ति॥ ॥ कहिकें ॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, रुषजदेव पुंररीक ॥ शुज तपनो  
महिमा, सुणि गुरु मुख निरबीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिगुं  
चैत्यवंदनांक ॥ करियें जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ १ ॥  
इति ॥ ४१ ॥ पीठें फुरसद होवे तो पन्निखेहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्ताह जगवन् ॥ पन्नि-  
खेहण संदिस्ताउं ? गुरु कहे, संदिस्ताएह ॥ बीजे खमासमणें ॥  
॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पन्निखेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥  
पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निखेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणे  
अंग पन्निखेहण संदिस्ताउं ॥ अंगपन्निखेहण करुं, कहीके धोतिर्युं  
कणदोरो पन्निखेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार जगवन् पसाउ  
करी पन्निखेहण पन्निखेहावो जी. एम कही ॥ आपनाचार्य  
पन्निखेह ररेके, अने जो गुर्वादिक आपनाचार्य पन्निखेहे, तो  
पण खमासमण देई आग्या मागे, पीठें खमासमण देई  
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पन्निखेहुं ? गुरु कहे पन्निखेहेह  
॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निखेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इ-  
च्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उहि पन्निखेहण संदिस्ताउं ॥ उही पन्नि-  
खेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पन्निखेहे ॥ पीठें पोषध-  
शाखा प्रमार्जी काजो, विधिगुं परठवी खमासमण देई इरियावही  
पन्निक्खे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोज्जी  
दृष्टिपन्निखेहण तो अवश्य करणी ॥ अवज्जी प्राये एही करते दि-  
खते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीठें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पन्निखेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायवो, पीठें यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आचारो न मोत्तवो ॥ पीठें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊजो अको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमाळीयें बेसी मस्तक नमावो ॥ जयवं दससज्जहो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दससज्जहो ॥

॥ जयवं दससज्जहो, सुदंसणो शूलिज्जह वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया जावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अज्जिगहो नाण माईणं ॥ २ ॥ उज्जमज्जो मूढमणो, कितिय मित्तिं पि संज्जरइ जीवो ॥ जं च न संज्जरामि अहं, मिज्जामि उक्कमं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चित्तिय, मसुहं वायाइ जासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिज्जामि उक्कमं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, धियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधवो, सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥ सामायिक विधे लीधुं विधे कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहू मन कर, वचन कर, कायार्थे करी मिज्जामि उक्कमं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीठें पन्निखेहण करे. इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं मुहराइ पूढे ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें एतें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिठले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पन्डिलेहे, जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपन्डिलेहण करे ॥ पीठें गुरु आगें अथवा आपनाचार्यजी आगें आवी जूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती पन्डिलेहुं ? गुरु कहे पन्डिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पन्डिलेहे ॥ पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक संदिस्ताणं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक ठाणं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार जगवन् ! पसाठ करी सामायिक दंरुक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें सामाश्यं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुज्ञावण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ इरियावहियं पन्डिकमामि ? गुरु कहे पन्डिकमेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ इच्छामि पन्डिकमिडं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसैं इरियावहियं पन्डिकमी ॥ एक लोगस्सका कानस्सग करी, एमो अरिहंताणं कही, कानस्सग पारी मुखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पन्डिलेहि वांदणां देई कहे. इच्छाकार जगवन् ! पसाठ करी पञ्चस्काण करावोजी. पीठें गुरु, दिवस चरिम पञ्चस्काण करावे ॥ गुरु अज्ञावें आपनाचार्य समकें अथवा स्वमुखें, अथवा वेमरा साथमीं मुखें पञ्चस्के ॥ अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पन्डिलेहि पञ्चस्काण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चउबिहार उपवास हुवे, तो पञ्चस्काण करवुं ठे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पन्डिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीठें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥



ज० ॥ सिद्धाय संदिस्तां ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. पीठें इच्छं कही  
वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय करुं ?  
गुरु कहे करेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ ज० थको  
मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठें खमासमण देई  
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणुं संदिस्तां ? गुरु० संदिस्तावेह  
॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बेसणुं ठां ?  
गुरु कहे, ठाएह ॥ पीठें इच्छं कही जो शीत काळादि हुवे तो  
खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पांगरणुं संदिस्तां ?  
गुरु कहे, संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ पांगरणुं पन्निघां ? गुरु कहे पन्निघाएह ॥ पीठें इच्छं  
कही शुभ ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पन्निक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥  
चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीठें इच्छं कही ॥ जय तिहुयण कहे  
॥ जिसमें पक्की तथा चनमासी तथा संवत्तरीके रोज तीस गाथा  
कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पढ़ेलेकी, और दोय गाथा  
पिठामीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं.  
अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धनं तरि, जय  
तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअकरि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलं-  
घियाण चुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुदाइं जिणेस पास थंजणय  
पुरिअ ॥ १ ॥ तइं समरंत लद्धंति ऊत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, थण सुवन्न  
दिरण पुण जणत्तुंजदि रज्जहिं ॥ पिरुद्धि सुक्क असंखसुक्क तुह  
पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कहिं कुण महजिण ॥  
२ ॥ जरज्जार परिजुण वसणहुं सुकुटिण, चक्रुस्कीणखणखुण

निरसल्लिअसूखिण ॥ तद् जिण सरणरसायणेण बह्वु हुंति पुणसव,  
 जय धसंतरि पास मद्दवि सुहुं रोगदरो जव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस  
 मंतंतसिस्सिअ अपवत्तिण, जुवणप्पुअ अणविद्दि सिद्धि सिद्धि तुह  
 नामिण ॥ तुह नामिण अपवत्तिअवि जण होइ पवत्तिअ, तं ति-  
 हुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तअ ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत  
 तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुगखगरिअवग्गविगंजइ ॥  
 उअयसअ अणअ धअ निअरइ दय करि, डुरिअई हरअ सुपासदेव  
 डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाअंजेइ जीमदप्पुअर सुरवर,  
 रक्कस जक्क फण्णिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिअइखुद्द  
 पसुजोइणि जोइअ, इयतिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ  
 ॥ ६ ॥ पअिअ अअ अणअहिअअत्तिअर निअर, रोमंवं चिअचारु-  
 काय किल्लरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल पक्कालिअ  
 कलिमल्लु, सो जुवणत्तयसामि पास मद्दमद्दअ रिअवल्लु ॥ ७ ॥ जय  
 जोइअमणकमलअसलअय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद  
 जुवणत्तयदिअअर ॥ जय मइमेइणि वारिवाइ जयजंतुपिआमइ,  
 अंअणयअिअ पासनाइ नाइत्तणकुणमइ ॥ ८ ॥ बहु विहवसणुअवसणु  
 सुसणु वसिअअपसहि, सुक्कधम्मुकामअकाम नर नियनियसअहि ॥  
 जं ज्जायइ बहु दरिअणअ बहु नाम पसिअअ, सो जोइ अमण  
 कमलअसलसुद्द पास पवअअ ॥ ९ ॥ जयविअल रणअशिरदसण  
 अरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयसविससणुसुसणुगगिरगिरकरुअय ॥  
 तइंसइसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, मद्दविज्जाविसज्जासइ पास  
 अय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइपासविविअसंतनित्तपत्तंतपवत्तिअ,  
 वाइपवाइपवूढरूढ उइदाइसुपुअइय ॥ मसणूहिंमसणसअण पुसअ-  
 प्पाअंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचंद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥  
 तुह कल्लाणमहेसुअंठंकारवपिअिअ, वल्लरमल्लमदल्लअत्तिसुरवरगं-  
 जुअिअ ॥ इल्लुप्फलिअ पवत्तयंति जवणेहिमद्दसव, इय तिहुअण

आर्षादचंद जय पाससुहुअव ॥ १२ ॥ निम्मल केवलं किरणनियं-  
 रविहुरिअ तमपदयर, दंसिअ सबलषयत्तविठरिअ पहाअर ॥ क-  
 लिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणाहअगोयर, तिभिरईं निरुहर  
 पासनाइ जुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त  
 माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्तबोह कंदलदलइरेणि ॥ जायइ-  
 फलअरअरिय हरिय डहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह  
 दिसिपास मईं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवद्धिअल्लूरि-  
 यडहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डग्गइग्ग वारणुं ॥ जय जंतुह-  
 जणएणतुल्लजंणियदियावहु, रम्म धम्म सो जयअ पास जय  
 जंतु पिआमइ ॥ १५ ॥ जूवणारसनिवास दरिअपरदरिसणदेवय,  
 जोइणिपूअणखित्तवाल खुदासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ  
 अविस्संठलचिहंदिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं  
 ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नइयल, फलिणी  
 कंदलदलतमाल निळ्ळुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संस-  
 ग्गअग्गजिअ, जय पच्चस्कजिणेस पास थंअणय पुरठिअ ॥ १७ ॥  
 महमणतरलपमाणनेय वायाविविस्संठु, नियतणुरवि अविणयसहाव  
 आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पमाणदेव कारुणपवत्तअ, इयम-  
 इमाअवहीरपासपालहिंविहिलवंतअ ॥ १८ ॥ किंकिंकिप्पिअणोयकलु-  
 णुकिंकिंवनजंप्पिअ, किं वनचिठिअकिठदेवदीणयमविलंभिअ ॥ का-  
 सुनकियनिप्पल्ललज्जुअहोहिंउहत्तईं, तहविन पत्तताण किंपि पईं  
 पहु परिचत्तईं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिह तुहुं माय वप्प तुहुं  
 मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिअ ताण तुहुं गुरु खेमंकरु  
 ॥ इअं डहअरअरिअवरअ राजलनिअग्गअ, लीणअ तुह कमक-  
 मल सरणजिणपालहिं चंगअ ॥ २० ॥ पईंकिविकयनीरोय-  
 लोयकिविपावियसुहसय, किविमईंमंतमहंतकेवि किविसादियसि-  
 वपय ॥ किवि गंजिअरिअवग्गकेविजसधवल्लिअ जूअल, मईं अवही-

रदिकेणपास सरसागयवञ्चल ॥ ११ ॥ पञ्चवयारनिरीहनाहनिप्पस  
 पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त सम  
 चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुगगत्तविमई पासनिरं-  
 जण ॥ १२ ॥ इत्तं बहुविदुदत्तत्तगत्तुहुं उदनासणपरु, इत्तं  
 सुयणहकरुणिकगण तुहुं निरुकरुणकरु ॥ इत्तंजिण पासअसामि-  
 सालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरदि मई जखंतइय पासन  
 सोदिअ ॥ १३ ॥ जुगाजुग विजागनाहमहुजोअणतुहसम, जव-  
 णवयारसु हावजाव करुणारसत्तम ॥ समविसमह किंण नएइ  
 जुविदाहुसमंतत्त, इय उदबंधव पासनाह मई पाळ शुणंतत्त ॥  
 १४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अणविकिविजुगय, जं जोइयत्तव-  
 यारुकरइत्तवयारसमुक्काय ॥ दीणह दीणनिदीणजेणतुहनाहिण-  
 चत्तत्त, तो जुगगत्तअहमेव पासपाळहिमई चंगत्त ॥ १५ ॥ अहअ-  
 णविजुगयवित्तेसकिविमसहि दीणह, जं पासविजवयारुकरइ  
 तुहनाह समगह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण दुम्ह पसीयह,  
 किं अणुण तंचेव देव मामईअवहीरह ॥ १६ ॥ तुह पण्ण नहु  
 होइ विदल जिणजाणत्त किं पुण, इत्तं उक्कित्त निरुत्तत्तवत्तउक्कुहु  
 उत्तसुयमण ॥ तं मसुत्त निमित्तेण एण एत्तविक्कर लप्पइ, सच्चं जं  
 जुक्कियवसेण किं उंवरु पच्चइ ॥ १७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह  
 मई अप्पपयात्तित्त, किक्कत्त जं नियरूवसरिसुनमुणुंवहुं जंपित्त ॥  
 अणुण ए जिणजगत्तुहसमोविदस्सिणावयात्तत्त, जइअवगिणात्ति  
 तुंहिजअहहकिंहोइसहयात्तत्त ॥ १८ ॥ जइ तुहरूविणाकिणविपेअ  
 पाइणवेळंवित्त, तत्तजाणुंजिणपास तुम्ह इत्तंअंगीकरिअत्त ॥ इयम-  
 हउत्तिअ जं न होइ सातुहत्तहावण, रक्कंतह नियकित्तिणो य जु-  
 क्कइअवहीरण ॥ १९ ॥ एवमहारिदजत्तदेवइयन्हवणामहुत्तत्त, जं  
 अणलिय गुणगदण तुम्ह मुणिजणअणित्ति ॥ इय मई पत्ति-  
 यसुपासनाहत्तंजणायपुरदिअ, इय मुणिवरत्तिरि अत्तयदेव विस्सवह

आणिदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंजनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्त-  
वनम् ॥

पीठे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाज्ञाग जय चितिय  
मुह फलय ॥ जय समठ परमठजाणाय, जय जय गुरु गिरिम  
गुरु ॥ जय उदह सचाण ताणाय, थंजणयधिय पासजिण ॥ ज-  
वियह जीम जवठु, जव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुज्जति संज  
नमोठु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठे शक्रस्तव कह के खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं०  
॥ करेमि काठस्सगं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि पाठ  
कह के काठस्सगमाहे एक नवकार चितवी एक श्रावक काठ-  
स्सग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो  
लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ  
नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु  
मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब काठ-  
स्सगमें रहे थके सुने. पीठे एमो अरिहंताणं कह के काठस्सग  
पारे. इसीतरें आगे पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीठे लोगस्त कह कर सबलोए अरिहंत चेइयाणं वंद-  
णवत्ति० ॥ अन्नबू० ॥ कहि के एक नवकारका काठस्सग करे.  
पारि के उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित जर  
पूरण, अजिनव सुरतरु कंद ॥ जवियणने तारे, प्रवहण सम नि-

शिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमं विशवा वीस ॥ यह दूसरी  
गाथा कहि कैं काउस्तग पारे. पीठैं पुरकरवरदी० वंदणवत्तिआए०  
अन्नबू० कहि कैं, एक नवकारका काउस्तग कर कैं, पारि कैं उक्त  
स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, जारव्या श्रीजगवंत ॥ गणधरने  
गूण्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न  
शके एकंत ॥ समरं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥  
यह गाथा कहि कैं सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नबू० ॥  
कही काउस्तग पारी उक्त स्तुतिकी चोथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट चूरे,  
पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोनी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंये  
गुण गण इम, श्रीजिनलान्न सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन  
स्तुतिः ॥ यह चोथी स्तुति कहि कैं बैठ कैं नमोबूशं कहे, पीठैं एरु  
खमासमण देई कैं श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. प ठैं  
श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमण दे कर श्रीवर्तमान आ-  
चार्यजीका नाम ले कैं मिश्र चोथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र  
इली तरें कह कर गोमालीयें बैठ कैं मस्तक नमावी सबस्तवि  
देवसियण इत्यादि कह कर तस्त मिठामि डुक्कनं कहे, परंतु 'इ-  
ठ्ठाकारेण संदिस्सह इठ्ठं' ए पद न कहे ॥

॥ पीठैं खने हो कर करेमि जंते सामाइयंण ॥ इठ्ठामि ठामि.  
काउस्तगं जो मे देवसिद्धंण ॥ तस्सुत्तरिण ॥ अन्नबूण ॥ इत्यादि  
कहि कैं, आठ नवकारका काउस्तग करे. काउस्तगमांहे आजूना  
चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, एमो अरिहंताणं कही  
काउस्तग पारि कैं प्रगट लोगस्त कहे ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्ज्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पन्विलेहुं ? गुरु कहे पन्विलेहेह. पीठें मुहपत्ती पन्विलेहि कें वांदणां देवे. पीठें अवग्रहमांदिज ज्ञो थको इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसियं आलोउं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीठें इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कहे कें अति-चार आलोवे. पीठें सबस्सवि देवसियं इत्यादिणी मांकांने इच्छा-कारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पन्विकमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीठें इच्छं तस्स मिच्छामि उक्कमं कहि कें संभासा प्रमार्ज्जित जूमियें आसन पर बैठ कें जगवन् ! सूत्र जणुं एसा कहे. तब गुरु कहे जणोह. पीठें इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि जंते जणीने इच्छामि पन्विकमिजं जो मे देवसिउं इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीठें खमा हो कर अणुठिन्मि आरादणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांदिज खमा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अणुठिन्मि अग्गितर देवसियं खामेजं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठें इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीठें विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय जव-धाय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि जंते सामाइयं इच्छामि ठामि काउस्सगं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउ-स्सगं अन्नबू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग करी पारि कें पीठें दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइयाणं ॥ वंदणावत्ति० अन्नबू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुस्करवरदीवळे कहि कें सुयस्स जगवन् ॥ वंदणावत्ति० ॥ अन्नबू०

॥ कहि कैं एक लो-स्तका कान्तस्तग करे, पीवैं पारि कैं सिद्धाणं  
बुद्धाणं कहि कैं देखावज्जगराणं न कहे. पीवैं सुंयदेवयाए  
करेमि कान्तस्तगं अन्नबू० ॥ कही एक नवकारनो कान्तस्तग करे.  
पीवैं गुरुका योग न होवै तो एक श्रावक कान्तस्तग पारिकैं एमो  
अर्हत्सिद्धा० कहि कैं श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु  
कहे, और दूजा सर्व स्तुति सुण कैं कान्तस्तग पारे. अब श्रुतदे  
वताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोन्नवा ॥ श्रुतदेवी  
सदा मद्भ्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीवैं खित्तदेवयाए, करेमि  
कान्तस्तगं ॥ अन्नबू० ॥ कहि कैं, एक नवकार चित्तवी पूर्ववी  
परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताको स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाङ्गां  
साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीवैं खमा हुवा एक नवकार कही, संमासा प्रमार्जि  
उकमूवैठ कैं ठठे आवश्यककी मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे पमिलेदेह.

॥ पीवैं मुहपत्ती पमिलेही विधिगुं दो वांदणां देइ हैं वर-  
कनक कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ हैं वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय  
मोहं ॥ सिचरि सयं जिणाणं, सहामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥  
हैं जवणवय बाण मंतर, जोइसबासविमाण वासीय ॥ जे केवि  
उठदेवा, ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ पञ्चक्राण नहिं लिया  
होय तो करे ॥ सामायिक जोइसजो पम्किमणां, वांदणां, काष्ठ-



स्सग्ग, पञ्चकाण, उ आवश्यक सांधतां कानो, मात्रा, उंओ अ  
धिको अक्कर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायार्थे  
करी मिळामि डुक्कं ॥ इत्तामो अणुसदिं० ॥ कही बैठे. पं ठें गुरु  
एक स्तुति कहा पीठें श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें एमो  
खमासमणाणं ॥ एमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ एमोऽस्तु वर्द्धमानाय०  
इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका एमो खमासमणाणं, कही सं-  
सारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावा.  
समोक्काय, परोक्काय कुंतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या,  
ज्यायः कमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं  
संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, क-  
रोतिथो जैनमुखांबुदोक्ततः ॥ स शुक्रमासोन्नववृष्टि सन्नजो, ददातु  
तुंष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरजिगंधा लीढजृङ्गो कुरङ्गं,  
मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभ्रति ॥ विकच कमलमञ्जैः साऽ  
स्त्वर्चित्यप्रज्ञावा, सकलसुखविधात्री प्राणज्ञाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीठें एमोबूषणं० कहि कें. एक  
श्रावक खमासमण देई कहे:-इत्ताका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्तवन  
जणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इत्ता० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्त-  
वनजणुं स्तवन सांजलुं ? गुरु कहे, जणोह सांजलेह. पीठें आसन  
पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें बनो स्तवन कहे, सो लि-  
खते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ जविकां श्रीजिनबिंब जुंहारो, आतम परम आधारो रे  
॥ ज० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

काई ॥ आगम वाणानि अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज०  
 श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कह्यें किम जाणे  
 ॥ जूला तेह अज्ञानें जरया, नहिं तिहां तत्त्व पिठाणे रे ॥ ज०  
 ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबरु आवक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक  
 ॥ विविधपरें जिन जगति करंता, पास्या धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥  
 श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु जगतें जोतां, होय निश्चय उप-  
 गार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज०  
 ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, ठे बहु जलधि  
 मजार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पास्या विरतिप्रकार रे ॥  
 ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें  
 अधिकार ॥ सूरियाज सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मजार  
 रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या  
 जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोनी, करिये केम अकाज रे  
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन  
 पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, ठे ज्ञाता अंगें रे  
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी  
 चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य जाव बिहुं जेदें कीनी, जीवाजिगम ते  
 साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें,  
 कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम  
 घणो चित्त धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु  
 पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनदाज सुगुरु उपदेशें,  
 श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंता-  
 मणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीवें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व सांधु बांदी,  
 अढाइजोसु कहनां, फेर खमासमणे ॥ इच्छाकाण ॥ सं० ॥ ज० ॥

देवसि पायञ्चित्त विशुद्धि निमित्तं कान्तस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेइ. पीठेइ इच्चं कदि केँ देवसि पायञ्चित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि कान्तस्सग्गं अन्नत्तूण ॥ कदि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कान्तस्सग्ग करे, पारी केँ लोगस्स कहे.

॥ पीठेइ खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खु-  
होवइव उमावणत्तं करेमि कान्तस्सग्गं ॥ अन्नत्तू० ॥ इत्यादि कहा.  
शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कान्तस्सग्ग करे, पारि केँ  
प्रगट लोगस्स कहे. पीठेइ खमासमण देई ॥ सज्जाय संदिस्सत्तं फेर  
खमासमण देई सज्जाय करुं? तीन नवकार गुणीजे. पीठेइ खमा-  
समण देई केँ ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥  
ऐसा कह कर अंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या-  
न्जयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिजिर्जलैः शिव  
फलं ह्रफूर्जेत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनो-  
बांजितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लो शिरोमणिः ॥  
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इ त ॥

॥ पीठेइ नमोवृणंसें लेकेँ जयवीरराय सुधी कहे ॥ पीठेइ  
खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि अंजणयद्विय पास सामिणो०'  
इत्यादि दोथ गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयद्वियपाससामिणो ॥

॥ श्री अंजणयद्वियपाससामिणो सेत तिब्बसामीणं ॥ तिब्ब  
समुन्नय कारणां, सुरासुराणां च सत्त्वैसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणत्तं,  
कान्तस्सग्गं करेमि सत्तोए ॥ जतीए गुण सुद्वयस्स, संघस्स समुन्नय  
निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीधनं ज्ञाना पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काठ-  
स्तगं ॥ पाँठे खेने दो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कहो चार लोग-  
स्तका काठस्तग करि के पाँठे पारी प्रगट लोगस्त कदो के ॥  
श्रीखरतरगञ्ज सिणगारहारजंगम युगप्रधान जट्टारक दादाजी श्री  
जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूनामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि  
काठस्तगं ॥ अन्नदू० कहि के, एक लोगस्तका काठस्तग करे,  
पाँठे प्रगट लोगस्त कह के

॥ श्रीखरतरगञ्ज सिणगारहार जंगमयुग प्रधान जट्टारक दा-  
दाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूनामणिजी आराधवा निमित्तं  
करेमि काठस्तगं ॥ अन्नदू० कहि के एक लोगस्तका काठस्तग  
करे, पाँठे प्रगट लोगस्त कहि बैठ के भावो गोमो उंचो करि के  
खमासमण देई के, इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं जी,  
ऐसे कहि के चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउकसाय ॥

॥ चउकसाय पन्निखूखूण, डुङ्गाय मयण बाण मुसुमूरण  
॥ सरस पियंगु बन्नु गय गामिड, जयउ पास जुवणत्तय सामिड  
॥ १ ॥ जसु तणु कंति करुण्णसिण्ण, सोहइ फणमणि किरण  
खिड्ड ॥ ननव जलहर तन्निखय लंठिय, सो जिणु पासु पयड्य  
वंठिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आ-  
चार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसु-  
पाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैतं परमेश्वरः प्रतिदिनं  
कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पाँठे नमुबूणसें ले के जयवीरराय पर्थत कहि के पस्की,  
चउम्मासी अरु संवत्तरीके रोज तो बनी शांति सुणे, परंतु और

दिनोमें वोटी शांति मुणै, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः  
शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितव-  
चसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते,  
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्ति-  
समन्विताय शस्थाय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय  
॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ ज्वन-  
जनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघना-  
शन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह जूतपिशाच, शाकि-  
नीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोग-  
कृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम्  
॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥  
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि  
च संघस्य, जद्र कळ्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु-  
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ जयानां कृतसिद्धे, निर्दुति निर्वाणजननि !  
सत्त्वानाम् ॥ अजय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥  
९ ॥ जक्तानां जन्तूनां, गुजावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृ-  
ष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां,  
शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कर्त्ति यशो, वर्द्धिनि !  
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सखिलानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज  
रोगरणजयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिज्यः ॥ १२  
॥ अथ रक्षरक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं  
कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जग-  
वति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरुकुरु जनानाम् ॥

( ४९ )

उं मेति नमो नमो ह्रौं, ह्रीं ह्रूं हः यः कः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥  
 एवं यन्नामाकार, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शान्तिं नमतां,  
 नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-  
 विदर्शितः स्तवः शान्तेः ॥ सलिलादिजय विनाशी, शान्त्यादिकरश्च  
 जक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति ज्ञावयति वा  
 यथायोग्यम् ॥ स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥  
 उपसर्गाः कृत्यं याति, विद्यंते विघ्नवद्भयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति,  
 पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण  
 कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ पीठे चौराकका अथवा बीजलीका चादणा पन्ना होय तो  
 इरियावहि० तस्तुत्तरी० अन्नबू० कहि कै, एक लोगस्तका काठ-  
 स्तग करे, पीठे प्रगट लोगस्त कही पूर्वलो परे सामायिक पारे.  
 पीठे एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पञ्चमण  
 विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्जसमगौरी ॥  
 कमले स्थिता जगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-  
 दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु ज्ञानदेवी,  
 शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः  
 साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञूयान्नः सुखदायिनं ॥  
 ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंराजिधं  
 पार्श्वं, सदा ध्यायामि मानसे ॥



॥ अथ छुटक चैत्यवन्दनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवद्भो, पुष्करावर्त्तमेघो, डुरिततिमिरज्जानुः,  
कल्पवृक्षोपमानः ॥ ज्वजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स ज्वतु  
सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनः ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनाहुरितध्वंसी, वंदनादिञ्चितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः  
श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णी गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम्  
॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि ज्ञप्त्या कृष्णं जिनोत्तमम् ॥  
३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन  
वरण शरीर कांपि, अतिशय अज्जिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्व-  
सेन, नरपति कलचंद ॥ मृगलंबन धरं पद कमल, सेवे सुरनरवृंद  
॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंनित आण ॥ एक मनं  
आराधतां, लहिये कोनि कळ्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादव-  
कुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी  
जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे  
सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अज्जिराम ॥  
तास कमा कळ्याण मुनि, निशिदिन नमत कळ्याण ॥ ५ ॥ इति  
श्रीनेमिनाथः

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाद, नमिये मन रंग ॥ नील वरण  
अश्वत्तेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-  
सुत सार ॥ श्रीगोरी पुर स्वामि नाम, जपिये निरधार ॥ त्रिंजु-  
वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जमु वाण ॥ ध्यान धरंतां  
एहनूं, प्रगटे परम कढ्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदधीरू सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा  
मरणादि रूप, जव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात,  
त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिजुवन विख्यात  
॥ अमृतरूपे राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ कृमाप्रमुख कढ्याण  
मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पढिकमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदितु सूत्र पर्यंत दैवसिक पम्किमी ॥ १ ॥  
खमासमण देई देवसी आलोश्यं पम्किंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ पक्षिय मुहपत्ती पम्किलेहुं ? चउमासीएं चउम्मासियं मुह-  
पत्ती, संवत्तरीये संवत्तरी मुहपत्ती पम्किलेहुं ? एम कहे. पीठें गुरु  
कहे, पम्किलेहेह ॥ पीठें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देई, मुहपत्ती  
पम्किलेही, वांदणां देई, तिहां पस्कीमें पस्को वइकंतो ॥ चउमासी  
पम्कि ॥ चउमासीज वइकंतो संवत्तरीमें संवत्तरो वइकंतो. एम  
यथायोगें कहे ॥ पीठें गुरु कहे, पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-  
स्कि ॥ चउमासिक सांवत्तरिक जणजो. ठीक जयणा करजो.  
मधुर स्वरे पम्किमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांमलमें  
सावचेत रदेजो, पीठें सघलाही तद्वत्ति कहे ॥ पीठें कठी ॥  
इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अष्टुठिठि अग्नि-



तर पस्कियं ॥ ३ ॥ स्वामेकं ? गुरु कहे, स्वामेह ॥ पीठें मस्तके  
 अंजलि करतो थको, इच्छं स्वामेमि पस्कियं ॥ ३ ॥ कही, गोमालीयें  
 बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करो, मुहपत्ती  
 मुखें देई ॥ पस्कियें पनरसहुं दिवसाणं पनरसहुं राईणं जं किंचि-  
 अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउहुं मासाणं अ-  
 षड्दुं परकाणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि  
 कहे. संवत्तरीयें डुवाखसहुं मासाणं चउवीसहुं परकाणं तिन्नितय-  
 सत्तिराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु  
 पण मिच्छामि डुक्कं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पा-  
 खियें तीन, चउमासीयें पांच, संवत्तरीयें सात साधुने खमावे ॥  
 ॥ पीठें उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥  
 पस्कियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीठें इच्छं आलोएमि, जो  
 मे पस्किउ ॥ ३ ॥ अइयारोकड, इत्यादि मूत्र जणी ॥ संक्षेपे  
 अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवत्तरी, अतिचार आलोवे, सो  
 लिखते हैं ॥

## ॥ अथ वृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥  
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,  
 दर्शनाचार २, चारित्रार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच  
 विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर,  
 जाणतां अणजाणतां दुओ होई, ते सह मन, वचन, कायाइं करी  
 मिच्छामि डुक्कं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अथ तदुभय, अष्टविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-  
मांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान  
हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-  
कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव  
वांदणे पढिक्कमणे सिध्दाय करतां, पदतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने  
मात्रें अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या,  
भणीनें बोसायों, तपोधन तणे धर्म काजो अण ऊधरे दांडो अण-  
पहिलेही, वसती अणसोधी, असिध्दाई अणोझा कालवेलामाहि  
दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो  
ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा  
सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई,  
पग लागो थूंक लागो ओसासे सूक्यो कनें छातां आहार नोहार  
कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो  
विणसतो उवेख्यो, छती शर्के सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें  
मन्नर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां  
प्रदेष्ट मत्सर अंतराय अपघात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-  
ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्वहणा  
कीधी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितक्यो आपणा जाणपणा  
तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषड्ड जिको अतिचार  
पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते  
सहु मन वचन कायाई करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंखिअ, निषिद्धिगिञ्जा अमूढदिट्ठो अ ॥  
उववूह थिरीकरणे, वञ्जल पभावणे अह ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे  
विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नही,

सधलाइ मत भला छे, एहयी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरो नही. चारित्रिया साधु साधवो तणां मल-मलीन गात्र देखो दुगंछा उपजावो, मिथ्यात्वीतणो पूजा प्रभावना देखो, मूढदृष्टिपणो कीधी, संघमांहे गुणवंततणो अनुपबृंहणा अ-स्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवो. संघमांहे थिरीक-रण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी, देवद्रव्य विनाशितं, विणसंतुं उवेखीउं, छतो शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रते तेन्नीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठवको लागो, मुखतणो बाफ लागी, ठवणारिय हाथयकी पडीओ, पडिलेहवो वीसारयो, नवकरवालोंने पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तोहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविडो होइ नायवो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भा-सासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिस्केवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजलसंधाणपारिढावणोयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूढी परें पाली नहीं ॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे लीवे अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतणें धर्मे श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री सम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—संका कंख विगिन्हा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिनवचन तणो. संदेह कीधी. आकांक्षाः—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाङ्ग हनुमंत इत्येवमादिक  
 ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आ-  
 तेंकें इहलोक परलोकार्थें पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी  
 भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र  
 चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्वा विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र  
 शौख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली वलेव माहीपूनिम अँजो-  
 पडिवो प्रेतवोज गोरत्रीज विणायगचोय नागपांचम झूलणाछठ  
 शोलसातम प्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस व-  
 त्सवारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक,  
 जाग भोग उत्तारणा कीधा, पिंपल पाणो घाल्यां घलाव्यां घर  
 चाहिर कूई तलाव नदी ससुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान  
 दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां  
 थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकिडाः-धर्म-  
 संबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर  
 विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें  
 न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी,  
 कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुआ मिथ्यात्वी तणी  
 प्रभावना देखो प्रशंसा कीधो, प्रीति माडी, दाक्षिणलगे तेहनो धर्म  
 मान्यो ॥ श्रोसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि  
 सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुआ होय, ते सहू मन, वचन,  
 कायाई करी मिळामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह  
 बंध छविछेए, अइभारे भत्तपाण बुझेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें  
 रीशवशें गाढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारे  
 पोड्या, निर्लछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

भाल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या, अणगल पाणी वावरयुं, रुडे गल्युं नहो, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झीलयां लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहतां मूआं, दू-खव्यां, रुडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडी उदेहो घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा बगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इंडां फूटां, अनेरा एकें-द्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रुडे न कीधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृषावाद विस्मणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसा-त्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकातें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चितवो छो. इत्यादिक कष्टुं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या दोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करता मोटकुं झूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोज्या, अधर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेना-  
हृदयपणगे, घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी,  
दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संवल  
दीधुं, संकेत कहुं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधी, नवा पुराणां सरस  
विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल  
माने माप वहेर्यां, दाणचोरी कीधी, साटे लांच लीधी, माता  
पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदो गांठ कीधी, किणहोनें लेखे  
पलेखे भुलव्युं, पढी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत  
विषइओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरि-  
ग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिब्रअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन,  
इत्तरपरिगृहितागमन. विधवा वेर्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोक-  
तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधी, सराग वचन बोल्यां, आठम  
चउदस अनेराई पर्व तिथि तगा नियम भांग्या, घरघरणां कीधां,  
कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गकीडा कीधी,  
पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्रामिलाप कीधी,  
कुस्वप्न लाघां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं, चोथे मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ घण घन्न खित्त  
वबू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव  
परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्खा लगे संक्षेप न कीधी,  
माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधी, परिग्रह परिमाण  
लेई पढ्यो नहीं. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे  
परिमाण व्रतविषइओ० ॥

॥ छठे दिग्गविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परि-  
माणे ॥ ऊर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो

नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आधी मोकली ॥ छठे दिग्व्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहूती पन्नरे, एवं वीश अतिचारा॥ सञ्चिते पडिबद्धे, अपोल दुष्पोलयं च आहारे० सञ्चित तणे नियम लीधे अधिक सञ्चित लीधुं, तथा सञ्चित मली वस्तु अपक्वाहार दुपक्वाहार तुष्टौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पहुंक काकडी भडथां कीधां, सुल्यां धान प्रसुख भक्षण कीधां ॥ सञ्चित दब्ब विगई, पाणह तंबोलवन्न कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, ब्रंभ दिसि प्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंतकायमांहे आदुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची आंबली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रसुखमांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रिहुं दिवसनं दही लीधुं, मधु महुडां माखण माटी वेगण पीलू पीचू पंपोटा पीपी विष हीम करहा घोल वडां अणजाण्यां फल टेंबरुं अथाणुं आमणबोर काचुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिंबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगबगती वेलार्यें व्यालू कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत वाणिज्ये, लस्क वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निछंछणकम्मे, दवगिगदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कर्म, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या, घ्राणी चणा पक्वान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा

कोधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या,  
कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेकं जे कांई बहु सावद्य कठोर  
कर्मादिक समाचर्यु ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कं-  
दप्पे कुकुइए० ॥ कदर्प लगे विटनी परें हास्य कुतूहल मुखादि अंग  
कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगे कुणहोने असंबद्ध वाक्य बोल्या.  
खांडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक  
सज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अ-  
नेरो कांई पापोपदेश दीधो, अंगोल नाहण, दांतण, पगधोअण  
पाणी तेल अधिक आप्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा  
भक्तकथा स्त्रीकथा पराई वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां,  
कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांड  
कूकडा, मिंढा श्रानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगे  
अदेखाई चिंतवो माटो मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या,  
तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल  
गुल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते  
मांहि कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोलो प्रमुख जोव विणठा, सूडा  
प्रमुख जीव क्रीडा हेंतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष  
लगे एकने रुद्धि परिवार वांछी एकने मृत्युहाणि विमासी आठमा  
अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुष्पणि-  
हाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चितव्युं, वचन सावद्य  
बोळ्युं, काय अण पडिलेहुं हलाव्युं, छती वेलाई सामायिक न  
लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, ऊंघ आवी कीधी, बीज  
दीवा तणो उजाहो लागी. कण कपासोया माटो मीठुं नील फूल



हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण पूरुं पारिउं पारुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रते पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्धानुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहिबाहिर थकी कांइ अणावुं, आप कन्हाथी बाहिर मोक्क्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणावुं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रते पांच अतिचार ॥ संथारुवार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोव्यां पडिलेह्यां नही, मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणां न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कखो. परठव्यां पुठें वार व्रण वोसिरामि वोसिरामि न कहुं. पोसहशालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वोसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंध्या, अविधि संथारुं पाथरुं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीघो, सवारो पारोयो, पर्ब तिथि आवी पोसह लीघो नही ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रते पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निस्सवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा व्रते असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धे असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी पराधुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेब्बा, मञ्जरलगे दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साध-  
र्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म क्षेत्रे सीदाता छती शक्ते उद्धर्या नही ॥ बारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥  
इहलोका संसप्पजगे परलोगासंसप्पजगे जीविआसंसप्पजगे मरणा संसप्पजगे कामभोगासंसप्पजगे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछयां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार बारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमू णोयरिया, अणसण कहीये उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठसी मूठसी साङ्गपोरसि पुरिमठ्ट एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पञ्चस्काण पारवां वीसार्या. बेसतां नवकार भण्यो नही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुंपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायञ्चितं विणओ० गुरुक्कने मन सुद्धे आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायञ्चित तप लेखा शुद्ध पुह-  
चाडुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मो प्रते विनय साचव्यो नही; वा-  
चना पृष्ठना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्जाय

कीधी नहीं, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त  
लोगस्स दस वीसनोकाउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतरतप विषइयो ० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरिओ,  
परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायघो वीरि-  
यायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक  
दान शील तप भावना प्रमुख धर्म कृत्यतणे विषे मन वचन  
कायतणुं छटुं बल वीर्य गोपव्युं, रूढां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां,  
बेठां पडिक्कमणुं कोधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो ० ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मेसु ॥  
बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं  
करणे ० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज  
भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधां, नित्यकृत्य देवपूजा  
सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधां, जीवाजीवादि वि-  
चार सहहिया नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी,  
प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह  
५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११,  
कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अर-  
तिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशत्य १८. ए अटारह  
पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें  
श्रावक धर्मे श्री सम्यक्तत्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अतिचार  
मांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां  
अजाणतां हुवो होय ते सह मन वचन कायार्थे करो भिन्नामि दु-  
क्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पीठे सबस्सवि परिक्रिय ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सद्  
 पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउत्थेण पन्निक्कमद्, चउमासे ठठेण  
 पन्निक्कमद्. संवठ्ठरियें अठ्ठेण पन्निक्कमद्. इत्थं तस्स मिठामि डुक्कमं  
 कही. छादशावर्त्त वांदणां देवे. पीठे इच्छाकारेण संदिस्सद् जगवन्,  
 देवसियं आलोड्यं पन्निक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेषां, अणुट्ठिमि  
 अप्पिन्नरपरिक्रियं ॥ २ ॥ खामेज्जं? गुरु कहे खा० ॥ पीठे इत्थं खामेमि  
 परिक्रियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिठामि  
 डुक्कमं देई खमावे, पीठे वे वांदणां देई. जगवन्! देवसियं आलोड्यं  
 पन्निक्कंता परिक्रियं ॥ ३ ॥ पन्निक्कमावद्? गुरु कहे सस्सं पन्निक्कमद्. पीठे  
 इत्थं कही करेमि जंतेसामाड्यं ॥ इच्छामि गामि काउस्सगं जो मे परिक्रुत्तं  
 ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नबू० ॥ कही ॥ काउस्सग करे, गुरु,  
 पाखीसूत्र कहे, ते सांजले, अने गुरुथकी जूडा पन्निक्कमता हुवे, तो  
 एक आवक खमात्तमण देई कहे. जगवन्! सूत्र जणुं? गुरु कहे,  
 जणेह. एसो वचन मनमें धारी ॥ इत्थं कही, जजो थको, हाथ जोमी  
 मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें  
 चिंतवतो वंदितु सूत्र गुणे. बीजा आवक करेमि जं ते० इच्छामि  
 गामि काउस्सग तस्सुत्तरी० अन्नबू० कही काउस्सगमें रह्या  
 सुणे. सूत्रप्रतिं एसो अरेद्धंताणं कही. काउस्सग पारी, जजा  
 थका तीन नवकार गुणी वेसे. पीठे ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि  
 जं ते कही, इच्छामि पन्निक्कमिजं जो मे परिक्रुत्तं ॥ ३ ॥ इत्यादि  
 कही, वंदितु सूत्र गुणे, पन्निक्कमे देवसियं सव्वं ॥ एहने ठिकाणें  
 पन्निक्कमे परिक्रियं, चउत्थमसियं संवठ्ठरियं सव्वं कहे. पीठे ऊठ्ठी, अणु-  
 ट्ठिमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी. खमात्तमण देई इच्छा०  
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं,  
 काउस्सग करुं? गुरु कहे करेह. पीठे इत्थं कही, करेमि जंते

सामा० इच्छामि तामि कान्तस्सगं तस्सु० अन्नत्तू० इत्यादि कही,  
 पाखीयें वार लोगस्स चन्मासियें वीस लोगस्स संवत्तरीयें चालोस  
 लोगस्सनो कान्तस्सग करे, एक नवकार ऊपर, कान्तस्सग करी,  
 पारी लोगस्स कहे. वेसी मुहपत्ती पन्निखेही, वे वांदणां देई इच्छा०  
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अभुत्तिओमि अग्निंतर प-  
 रिकयं ॥ ३ ॥ खामेज्जं ? गुरु कहे खामेह. पीठें इच्छं खामेमि पं-  
 रिकयं ॥ इत्यादि पाठ पूर्व कह्यो. तिम कहे, पीठें इच्छाका० ॥  
 सं०॥ज०॥पाखी॥३॥ खामणां खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर  
 खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त  
 खामणां खामेह, पीठें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं  
 नमावी, तीन नवकार गुणो, इम चार वार कहे, पीठें गुरु कहे  
 निज्जारग पारगाहोह. पीठें श्रावक कहे. इच्छं इच्छामि अणुत्तिं कही,  
 गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आ-  
 धिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा वे  
 हजार सज्जाय करी, एक उपवासनी पेंठें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें  
 दैवसिक जणजो. एम चन्मासे ए सर्व डुगुणो कइणो, संवत्तरीयें  
 त्रिगुणो कइणो. पीठें जिणें तप कीधो हुवे ते पइठियं कहे, न  
 कीधो हुवे ते तद्धत्ति कहे ॥ पीठें वे वांदणां देई, अभुत्तिओमि अ-  
 ग्निंतर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे. पीठें वे वांदणां देई. आय  
 रिय उवप्पाए० तीन गाथा कहे, इम आगे सर्व विधि दैवसिक  
 पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो कान्तस्सग  
 करी स्तुति कहे. पीठें जवण देवयाए करेमि कान्तस्सगं. इत्यादि  
 विधे जवनदेवताको कान्तस्सग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य डुरि-  
 तान्पेषा, करोतु सुखमकयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो कान्तस्सग्ग करे, तथा तीने पव्वे वडा स्तवन  
अजितशान्ति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गद्वर स्तोत्र कहणो, तथा  
पन्निकमणो पूरो हुवा पीठे एक श्रावक गुर्वाङ्गाये, नमोऽर्हस्सि-  
द्धा ० कही, वडी शान्तिका स्तोत्र कहे, बोजा सर्व सुणे, जिणने  
रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति  
पाक्षिकादि तीन पद्धिकमणविधि ॥

॥ अथ दस पञ्चखणविचार लिख्यते ॥

॥ तिदां प्रथम चउदे नियम संजारे, सो इस तरे पञ्चखण  
करे ॥ उग्गए सूरें नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पञ्चखण चउविहंपि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्सण्णान्नोगेणं सदसागारेणं  
महत्तरागारेणं सबसमादिवत्तियागारेणं विगइत्त पञ्चस्काइ. अस्सण्णान्नो-  
गेणं सदसागारेणं लेवालेवणं गिद्धिन्तंसिद्धेणं उस्सिखत्तविवेगेणं  
पमुच्चमस्सिएणं पारिष्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सबसमादिवत्ति-  
यागारेणं देसावगासियं जोगपरिज्जोगं पञ्चस्काइ. अस्सण्णान्नोगेणं  
सदसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमादिवत्तियागारेणं बोसिरइ ॥  
इति नवकारसी पञ्चस्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संजारे नहिं, सो विगइका अर  
देसावगासिकका आगार न पञ्चस्के. निक्केवल नवकारसी आदिक  
पञ्चस्काण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरें नमुक्कार सहियं पञ्चस्काइ ॥ चउविहंपि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न ॥ सद ० बोसिरामि ॥ इति नव-  
कारसी पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुंठसी पञ्चस्कामि, उग्गए सूरें चउविहंपि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अस्सण्ण ॥ सदसा ० ॥ पञ्चस्काणें दिसा  
मोदणं ॥ साहुवयणें सब ० विगइत्त पञ्चस्कामि. इत्यादि पूर्वकी

परें कहणां ॥ इति पोरिसी पञ्चस्काण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साठ पोरसीका पञ्चस्काण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पञ्चस्काइके ठिकाने इहां साठपोरसिं पञ्चस्काइ कहणां ॥ इति साठ पोरसिपञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरें उगए पुरिमठं अयठं वा पञ्चस्काइ, चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० ॥ पढ० ॥ दिसा-  
मो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सब० ॥ विगइउ पञ्चस्काइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमठपञ्चस्काण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ४ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पढ० दिसा० साहु० सब० एकासणं बिआसणं वा पञ्चस्काइ, डुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं आ-  
उट्ठणपसारेणं गुरुअप्पुछाणेणं पारि० मह० सब० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण बिआसण पञ्चस्काण ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पढ० दिसा० साहु० सब० एकासणं एगछाणं पञ्चस्काइ, डुविहं तिविहं चउबिहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं गुरु-  
अप्पुछाणेणं पारिछाव० मह० सब० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलछाणा पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउबिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अस्स० सह० पढ० दिसामो० साहु० सब० आयंबिलं पञ्चस्काइ, अस्स० सह० लेवालेवेणं गि-  
हत्तंसिठेणं उक्किचिविवेणं पारिछा० मह० सब० एकासणं प-  
ञ्चस्काइ, तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह०

सागारिआगारेणं आनट्टणपसारेणं गुरुअप्पुण्णणेषं पारिठा० मह०  
सह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पञ्चख्वाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पढ० दिसा०  
साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पञ्चख्वामि. अस्स० सह० लेवालेवेणं  
गिह्वत्तंसिठेणं उखिखत्तविवेगेणं पमुच्चमखिखएणं पारि० मह० सव्व०  
एकासणं पञ्चख्वाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स०  
सह० सागा० आनट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं  
जोगपरिजोगं पञ्चख्वामि. अस्स० सह० मह० सव्व० वोसिरामि  
॥ इति नीवी पञ्चख्वाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ सूरे उग्गए अन्नत्तं पञ्चख्वामि. चउव्विहंपि आहारं असणं  
पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० मह० सव्व० देसावगासियं  
जोगपरिजोगं पञ्चख्वामि. अस्स० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥  
इति चउव्विहार उपवास पञ्चख्वाण ॥ ९ ॥

॥ सूरे उग्गए अन्नत्तं पञ्चख्वामि. तिविहंपि आहारं असणं  
खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमद्ध  
अवट्ठं वा पञ्चख्वाइ अस्स० सह० पढ० दिसा० साहु० सह  
देसावगासियं जोगपरिजोगं पञ्चख्वामि. अ० स० म० सव्व० वो-  
सरामि ॥ इति तिविहार उपवास पञ्चख्वाण ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं पुरिमद्धं अवट्ठं वा पञ्चस्कामि. उग्गए  
सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह०  
पढ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगढाणं दत्तियं पञ्चख्वामि.  
तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह०  
सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइउ पञ्चख्वामि. इत्यादि पूर्ववत्.  
देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपञ्चख्वाण ॥ १० ॥



॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं  
खाइमं साइमं अस्स० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिव-  
सचरिम पञ्चख्वाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं  
अस्स० सह० मह० सव्व० वोसिरामि, देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति  
दिवसचरिम डुविहार पञ्चख्वाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पञ्चख्वामि अन्न० सह० मह०  
सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पञ्चख्वाण ॥ ए ॥

॥ जवचरिमं पञ्चख्वाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं  
पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार  
॥ ४ ॥ जवचरिम, दो आगारकाजी होय ॥ इति जवचरिम पञ्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंढिसहि मुढिसहि अंगुष्ठसहि प्रमुख अ-  
ज्जिग्रह पञ्चख्वाणकेजी ए चार आगार, अन्न० सह० मह० सव्व०  
वोसिरइ ॥ पांचमो चोळपट्टागारेणं सो साधुको होय ॥ इति अ-  
ज्जिग्रह पञ्चख्वाण ॥

॥ अहणं जंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पञ्चख्वामि  
दव्वउं खिचउं कालउं जावउं दव्वउं देसावगासियं खिचउं उउ  
वा असाववा कालउं मुहुत्तधारणाप्रमाणे जावनियमं पञ्चख्वामि  
जावउं जावगहेणं न गहिज्जामि बलेणं न बलिज्जामि असेण-  
केवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पन्निवज्जइ ता अज्जिग्रह  
असत्तणान्नेगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवनिया-  
गारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पञ्चख्वाण ॥

॥ तथा साधु पञ्चखाण करे, तब देसावगासी नही पञ्चके.  
अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें  
पाणस्तका उ आगार पञ्चके सो दिखावे हैं. पाणस्त लेबारेण वा

अलेखेण वा अन्नेण वा बहुलेण वा ससिन्नेण वा असिन्नेण वा  
वोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चखाण आगार संख्या ॥

॥ दोषेव नमुक्कारो आगार षड्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवस  
पुरमिहे, एगासणंमि अणेव ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्तज्ज, अणेवय आ-  
यंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयज्जाणे, षप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥  
पंच चत्तरो अज्जिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावणो पं-  
चज्ज, इवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पञ्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सद्धियं पञ्चखाइ चत्तविहंपि आहारं ॥  
अर्थः—इहां गुरु कहे पञ्चखाइ. शिष्य कहे पञ्चखाइमि. पञ्चखाइका  
अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसैं सूरज उदय हुआ  
पीछे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पञ्चखाण मुहुर्त्त कहते  
दो घन्टी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पारूं नहीं तहां  
तक चत्तवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो  
च्यार प्रकारका आहार इस मुजब है. असन कहते अन्न, चावल,  
गहूं, मूंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जबकूं आदि  
लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लहू वगेरे सब  
तरेका पकवानं सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राब  
घाट सब पतली ठर नरम वस्तु हींगवेसण सुंफ लूण सेंधवादि  
इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आञ्जण  
जबोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-  
काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखनी नालेर खजूर द्राख सेक्या  
अनाज आंबा केला काकनी अखरोट खारक विदाम वगेरह सब  
जातका मेवा सब जातका फल खाइमं जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच धींवर हरने बहेना आंबला तुलसी कसेला  
 काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविरंग अजमा  
 अजमोद कुलिंजन कबाबचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया  
 कुंजटिआ पांनसुपारी पोद्दकरमूल जवासाकीजरु वावची वांबल-  
 गाल धवगालि खेजनेकीगालि खवरसार यह सब स्वादिम वस्तु  
 जाणाना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कदतेहे नींबकीगालि जरु  
 पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूनेकीगालि चंदन-  
 कीराख रोहिणीकीगालि पीपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया  
 चिरमी कयर बोरकीजरु इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब गो-  
 रुणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो  
 इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे, पञ्चरूखाणका अर्थ जाणे  
 विगर जो पञ्चरूखाण करे सो अंधा पञ्चरूखाणहे इस वास्ते संक्षेप  
 मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे, जिस पञ्चरूखाणमें जितना आगार  
 होय सो रखकर हमारे पञ्चरूखाणहे, अन्नगुणाजोगेणं कहिये अना-  
 जोग टालके किया जो पञ्चरूखाण, अत्यंत जूल जाणें कोइनी  
 चीज जूलके मुंमे मालवी होय लेकिन जाणे बाद तत्काल उसी  
 वखत पीडा नाख देवे तो पञ्चरूखाणमें जंग नही, जर जाणे बाद  
 जकण करे तो पञ्चरूखाण निश्चे जंग होय ॥ १ ॥ पञ्चन्नकालेणं कहते  
 कालकी प्रचन्नता, आकाशमें गर्द ऊरुती होय आकाशमें बहल  
 भाये होय तेसेइ पहारुकीछंट आजावे सूरज नही दीखे तब ज-  
 रमसुं पञ्चरूखाणका वखत पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत  
 जंग नही ॥ २ ॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा जूलकर पूरबकूं पश्चिम  
 जाणकर पञ्चरूखाणका काल पूरा हुये विगर जोजन कर लेवे तो  
 व्रत जंग नही ॥ ३ ॥ सदस्तागारेणं कहतां सदस्तात्कार बहोत उताव  
 लके योगें अथवा अकस्मात् विखोवते तोलते धी वगेरेका गीटा

मूँमें गिर जाय तो व्रत जंग नही ॥४॥ साहूव्यपेणं कहतां साधूके  
 वचनसें उगधामा पोरसीआदिक जरम संयुक्त सुणकर पञ्चस्काणका  
 काल पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत जंग नही ॥५॥ सब  
 समादिवचियागारेणं कहतां पञ्चस्काणका काल पूरा दोषेसें पइली  
 अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी धिरता रहे  
 नही आर्त्तरौद्र ध्यान होय तब उसका रोग मिटाये वास्ते ओषधादिक  
 पण्य देवे वा आप लेवे तो पञ्चस्काण जंग नही ६ मद्दतरागारेणं  
 कहतां पञ्चस्काणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा  
 निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसें वण नही आवे ऐसा जो चैत्य  
 संधादिकका प्रयोजन होषेसें पञ्चस्काणका काल पूरा जये विगर  
 ही जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां  
 गृहस्थ देखतां साधू जोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा  
 हे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पञ्चस्काण कर जोजन  
 करये वेगहे उस वखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब  
 साधू उस ठिकाणेसें उठकर उर ठिकाणे जाकर जोजन करे तो  
 व्रत जंग नही उर गृहस्थकुं इसमें ऐसा आगार हे जिस पुरुषकी  
 निजर लगती होय तो उस पुरुषके आपेसें एकासणेवाला उठकर उर  
 ठिकाणे जाकर जोजन करेतो व्रत जंग नही ॥ ८ ॥ आज्ञापसारेलं  
 कहतां पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणेसें थोमासा आसन  
 चल जाय तो व्रत जंग नही ॥९॥ गुरु अमुगणेणं कहतां आपका गुरु  
 आपेसें तथा आपसें कोइ वना पुरुष आपेसें विनयके वास्ते जोजन  
 करतां एकाशनादिकमें आसन गोन खमा हो जावे तो ज़ी व्रत जंग  
 नही ॥१०॥ पारिवाचियागारेणं कहतां सब पञ्चस्काणमें यह आगार  
 साधुकाहे, जिस आहारके परठणेसें बहुत जीवकी विराधना होती  
 जाणकर गुरु कहे यह आहार परठे मत सरस आहार हे तब

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासें दूसरी वखतजी आ-  
हार करे तो व्रत जंग नहीं ॥ १ ॥ लेवालेवेषण कहतां जोजन कर-  
शेका भाल प्रमुख ज्ञाजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका  
अंसलगाजयाहे उसकूं हाथ वगेरेमें पूव माळा उस परजी किंचित्त्वे  
मालम सालगारहे उसमें आर्यबिलादि व्रतवाला जोजन कर लेवे  
तो व्रत जंग नहीं ॥ २ ॥ उरिक्तविवेगेण कहतां आर्यबिलादि पञ्च-  
रखाणमें नही खाणो योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणें  
योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणोमें आवे तो व्रत जंग  
नहीं लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य तो हाथसें उगाय  
सके नहीं ऐसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणोसें व्रत जंग  
नहीं ॥ ३ ॥ गिहत्थसंसिद्धेण कहतां जोजन पुरखे जिससेती एसी कुं  
रुगी आदि देकर ज्ञाजन विगय प्रमुख द्रव्यसें वेमालम खरनी होय  
अत्यक्त निजरसें कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसें  
जोजन पुरसे तोजी व्रत जंग नहीं १ ४ पडुच्चमुखिषणं कहतां सर्व  
आ लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसें वेमा-  
लम चोपरुणमें आयाहे लेकिन् घृतादिकका स्वाद नही मालम देता  
हे तो नोवो पञ्चरखाणमें उस द्रव्यकूं खाणोमें आवे तो व्रत जंग  
नही उर जो धारविगय लेवे तो व्रत जंग होय ॥ १ ५ ॥ इति पनरे  
पञ्चरखाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्वारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साधूमंगलं केव-  
लिपसात्तो धम्मोमंगलं १ चत्वारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालो-  
गुत्तमा साधूलोगुत्तमा केवलपसात्तो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्वारिसरणं  
पवज्जामि अरिहंतेसरणंपवज्जामि सिद्धेसरणंपवज्जामि साधूसरणंपव-  
ज्जामि केवलपसात्तं धम्मंसरणंपवज्जामि ३ इच्छामि पक्कमिद्धं

पणामसिद्धाए निगामसिद्धाए संथाराजवट्टणाए परियट्टणाए आणंठ-  
 णाए पसारणाए उप्पइयासंघट्टणाए कुइए कक्कराईए ठोए जंजाइए  
 आमोसेससर रक्कामोसे आनलमानलाए सोअणवत्तियाए इण्णोविप्प-  
 रियासिद्धाए दिन्नीविप्परियासिद्धाए मणविप्परिआसियाए पाण-  
 न्णोयणाविप्परिआसिद्धाए जोमेदेवसिद्धं अइयारोक्कं तस्समिद्धामि-  
 ड्ढकमं पन्निक्कमामि गोयरचरिआए जिखायरिआए उग्घामकवाम उ-  
 ग्घामणाए साणावत्तादारा संघट्टणाए मंनोपाहुमिआए वल्लिपाहु-  
 मिआए उवणापाहुमिआए संकिएसइस्सागरे आणोसणाए पाणोस-  
 णाए आणन्णोयणाए पाणन्णोयणाए बीअन्णोयणाए हरियन्णोयणाए  
 पण्णक्कम्मियाए पुराक्कम्मिआए अदिहहमाए दगसंसहहमाए रयसंसह  
 हमाए पारिस्साम्मिआए पारिष्ठावणिआए उंहासणजिस्काए जंज-  
 ग्गमेणं उप्पायणोसणाए अपरिश्रुद्धं पन्निग्गहिअं परिज्जुत्तंवा जंनप-  
 रिठवणिअं तस्समिद्धामिड्ढकमं पन्निक्कमामि चाउक्कालं सिद्धायस्स  
 अकरणयाए उज्जंजकालं जंमोवगरणस्स अप्पमिलेहणाए अप्पमज्झ-  
 णाए उप्पमज्झणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मेदेव-  
 सिद्धं अइआरो कंठं तस्स मिद्धामि ड्ढकमं पन्निक्कमामि एगविहे  
 असंजमे पन्निक्कमामि दोहिं बंधणोहिं रागबंधणेशं दोसबंधणेशं  
 पन्निक्कमामि तिहिं दंनेहिं मणदंनेणं वयदंनेणं कायदंनेणं  
 पन्निक्कमामि तिहिं गुत्तोहिं मणगुत्तोए वयगुत्तोए कायगुत्तोए  
 पन्निक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं मिद्धादं  
 सणसल्लेणं पन्निक्कमामि तिहिं गारवेहिं इण्णोगारवेणं रसगारवेणं  
 सायागारवेणं पन्निक्कमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए  
 दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पन्निक्कमामि चउहिं क-  
 साएहिं कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं  
 पन्निक्कमामि चउहिं ससाहिं आहारससाए जसससाए मेहुणससा

ए परिगृहसप्ताए पन्निक्कमामि चउहिं विगहाहिं इत्थिकहाए जत्त-  
 कहाए देसकहाए रायकहाए पन्निक्कमामि चउहिं जाणेहिं अट्ठेणं  
 जाणेणं रुद्धेणंजाणेणं धम्मेषंजाणेणं सुक्केणंजाणेणं पन्निक्कमामि  
 पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाठ सियाए पारताव-  
 णीआए पाणायवायकिरियाए पन्निक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं  
 सदेणं रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पन्निक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं  
 पाणाइवायाउविरमणं सुसावायाउवेरमणं अदिन्नादाणाउवेरमणं  
 मेहुणाउवेरमणं परिगृहानवेरमणं पन्निक्कमामि पंचहिं समिईहिं  
 इरिआसमिईए ज्ञासासमिईए एसणासमिईए आयाणजंनमत्तनि  
 खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेजज्झसंघाणपारिघवशियासमि-  
 ईए पन्निक्कमामि गहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं आउकाएणं  
 तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पन्निक्कमामि  
 गहिं लेसाहिं किन्हेलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए प-  
 नमलेसाए सुक्कलेसाए पन्निक्कमामि सत्तहिं जयघाणेहिं अगहिं म-  
 यघाणेहिं नवहिं बंज्जेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मो एगारसहिं  
 उवासणपन्निमाहिं बारसहिं जिक्कुपन्निमाहिं तेरसहिं किरियाघा-  
 णेहिं चउहासहिं जूयगामेहिं पस्सरसहिं परमादम्मिणं सोलसएहिं  
 गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अघारसविहे अबंजे इगुणवीसाए ना-  
 यच्चयणेहिं वीसाए असमाहिघाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं बावीसाए  
 परीसहेहिं तेवीसाए सुयगरुज्जयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी-  
 साए ज्ञावणाहिं ठवीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकाळेणं सत्ता  
 वीसाए अणगरगुणेहिं अघावीसाए आयापकप्पेहिं एगुणतीसाए  
 पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअघाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं  
 बत्तीसाए जोगसंगेहिं तितीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय-  
 णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवच्चायाणंआ-

सायशाए साहूणंआ० साहूणीणंआ० सावयाणंआ० सावियाणंआ० दे-  
 वाणंआसाय० देवीणंआ० इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलपन्न-  
 त्तस्सधम्मस्सआ० सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० सव्वपाणजूअजी-  
 वसत्ताणंआ० कालस्सआ० सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा  
 रिअस्सआ० जंवाइइं वच्चामेलिअं हीनस्करिअं अच्चस्करिअं पयदीणं  
 विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुहुदिन्नं, डुहुपनिब्बियं अकालेक-  
 उंसज्जाउं कालेनकउंसज्जाउं असज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-  
 इयं तस्स मिच्चामि डुकमं णमो चउवीसाए तित्थयराणं उतत्ताइ-  
 माहावीरपक्कवसाणाणं इणमेव निग्गंणं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-  
 वलियं पणिपुसं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमगं मुत्तिमगं  
 निज्जाणमगं निव्वाणमगं अवितहमविसंधि सव्वडुरूपहीणमगं  
 इत्थदियाजीवा सिद्धंति बुद्धंति मुच्चंति परिनिवायंति सव्वडुरखाणा-  
 मंतंकरंति तंधम्मं सदहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अ-  
 णुपालेमि तंधम्मं सदहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालितो अणु-  
 पालितो तस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अप्पुट्ठिमि आराहणाए  
 विरउमि विराइणाए अतंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि  
 अबंजं परिआणामि बंजंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं  
 उवसंपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं  
 परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिच्चत्तं परिआणामि सम्मत्तं  
 उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमगं प-  
 रिआणामि मगं उवसंपज्जामि जं संज्जरामि जं च न संज्जरामि जं  
 पणिकमामि जं च न पणिकमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स  
 अइयारस्स पणिकमामि समणोइं संजय विरय पण्हिय पच्चरखाय  
 पावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो मायामोसविवज्जिउं अट्ठाइज्जोसु  
 दीवसमुहेसु पन्नरसकम्मज्जमीसु ॥ जावंतिकेविसाइ, रयहरणगुड



पद्मिगहंधारा ॥ पंचमहद्वयधारा, अष्टार सहस्र सीलंगधारा ॥  
 अस्वयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरस्ता मणस्ता मत्थएणवंदामि ॥  
 स्वामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मित्ति मे सव्व झूएसु,  
 वेरं मच्चं नेकेणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंछियं  
 सम्मं ॥ तिविहेण पम्किंतो, वंदामि जिणेचउवोसं ॥ २ ॥ इतिश्री  
 साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

### ॥ अथ पख्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिब्बंकरे अतिब्बे, अतिब्बसिद्धेय तिब्बसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजि-  
 णेयरिसी, महारिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर,  
 मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणा-  
 भिसुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥  
 खंती युत्ती मुत्ती, अज्जवया महव्वं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं  
 करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवड्डित्तं, महव्वय उ-  
 च्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा  
 पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछट्ठा तंजहा सव्वानं पाणाइ-  
 वायाओ वेरमणं सव्वानं मूसावायाउवेरमणं सव्वानं अदिन्नादाणाउ  
 वेरमणं सव्वानं मेहुणाउवेरमणं सव्वानं परिग्गहाउवेरमणं सव्वानं-  
 राइभोयणाउवेरमणं तत्थ खल्लु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउ-  
 वेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चस्कामि से सुहुभं वा वायरं वा तसं  
 वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा  
 पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं  
 भण्णेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्नंनसमणु  
 जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि  
 से पाणाइवायाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वउ सित्तउ कालउ  
 भावउ दव्वउणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु सित्तउणं पाणा

इवाए सयललोए कालउणं पाणाइवाए दियावा राउवा भावउणं  
पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लि  
पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सत्ताहिद्वियस्स विणयमूलस्स खंती-  
पहाणस्स अहिरससोवस्सियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स  
अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुल्लवीसंयलस्स निरग्गिसरणस्स  
संपल्लालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि-  
त्तील्लख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स  
संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्नाण  
याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-  
गदोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारब-  
गरूयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-  
सोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-  
वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुब्राउ तं निंदामि ग-  
रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-  
ड्डपन्नं संबरेमि सव्वं पाणाइवायं जावजीवाए अणिस्सिउहिं नेव  
सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-  
यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं  
साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खू-  
णीवा संजयविरय पडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा  
परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खल्लु पाणाइवायस्सवेरमणे  
हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सब्बेसिं पाणाणं  
सव्वेसिं भूयाणं सब्बेसिं जोवाणं सब्बेसिं सत्ताणं अदुक्कणयाए अ-  
सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीढणयाए अपरियाव-  
णियाए अणुहवणयाए महत्ते महागुणे महाणभावे महापुरिसाणु-  
त्तिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्ते तं दुक्कययाए कम्मक्कयाए मोहक्क

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिक्कट्टु उवसंपजिच्चाणं विहरामि  
 पढमे भंते महव्वए उवडिन्मि सव्वान् पाणाइवायाञ्चवेरमणं ॥ १ ॥  
 अहावरेदोच्चेभंते महव्वए मुसावायाञ्चवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं  
 पच्चस्कामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइच्चा  
 नेवन्नेहिं मुसंवायाविच्चा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि  
 जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क-  
 रेमि न कारवेमि करंतपि अन्नंसमणुजाणामि तस्स भंते पडि-  
 क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउ-  
 व्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वन् खित्तन् कालन् भावन् दव्वन्णं मुसा-  
 वाए सव्वदव्वेसु खित्तन्णं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालन्णं  
 मुसावाए दियावा राञ्वा भावओणं मुसावाए रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालक्क  
 णस्स सच्चाहिडियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि  
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्का-  
 वित्तियस्स कुक्कीसंबलस्स निरगिसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदो-  
 सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्कणस्स पंचमहव्व-  
 यजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविस्संबाइयस्स संसारपारगामियस्स  
 निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अ-  
 बोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए  
 बालयाए मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाञ्चवग  
 णं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहं  
 वाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा  
 भासिज्जंतो वा पेरेहिं समणुत्ताओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिवि  
 हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संबरेमि अणागयं  
 पच्चस्कामि सव्वं मुसावायं जावजीवाए अणिस्सिन्हिं नेवसयंमुसंवइ

आ नेवन्नेहिं मुसंवायाविच्चा सुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा  
 अरिहंतसखिखयं सिद्धसखिखयं साहूसखियं देवसखियं अप्पसखियं  
 एवं हवइ भिखुवा भिखुणोवा संजयविरयपडिइय पच्चख्खाय पा-  
 चकस्मे दियावा राठवा एगठवा परिसागठवा सुत्तेवा जागरमाणेवा  
 एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए  
 पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स-  
 व्वेसिं सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-  
 याए अपोडणयाए अपरियावणयाए अणुहवणयाए महत्ते महागुणे  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्ते तं दुख्खखयाए  
 कम्मखयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिक्कट्टु उव-  
 संपज्जत्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिठमि सव्वाठ मुसा-  
 वायाओवेरमणं २ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाठवेरमणं  
 सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चख्खामि से गामेवा नगरेवा रत्तेवा अप्पंवा  
 बह्नुवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं अदिन्नं  
 गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंन-  
 समणुजाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं  
 न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावजीवाए  
 तस्स भंते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से  
 अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भा-  
 वओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणद्वारणिच्चेसु दव्वेसु खित्तओणं  
 अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रत्तेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा  
 राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इ-  
 म्मस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिडियस्स वि-  
 णयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स  
 नव वंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुख्खीसंबलस्स

निरग्निसरजस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-  
 व्वियारस्स निव्वित्तोलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंवि-  
 यस्स अविस्वाइयस्स संसारपाग्गामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण  
 फलस्स पुण्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं  
 अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए  
 मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाज्वगएणं पंचेदियवसेट्ठेणं  
 पडिपुन्नभारियाए साचासुक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवगं  
 हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा पेरेहिंसमणुन्ना  
 ओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अं  
 इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चस्कामि सब्बं अदिन्नादा  
 णं जावज्जोवाए अणित्थिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं  
 अदिन्नं गिन्नाविच्चा अदिन्नं गिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा  
 अरिहंतसख्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं  
 एवं हवइ भिस्सूवा भिस्सुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चस्काय पाव  
 कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा  
 णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ  
 णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सब्बेसिं  
 जोवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुखणयाए असोयणयाय अजूरणयाय  
 अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुहवणयाय महब्बे  
 महायुणे महायुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसब्बे तं  
 दुस्सकयाय कम्मस्सकयाय मोहस्सकयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय  
 त्तिकट्ठु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अणुडिओमि स-  
 व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-  
 व्वए मेहुणाओवेरमणं सब्बं भंते मेहुणं पच्चख्खामि से दिव्वा मा-  
 णुसंवा तिरिख्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविच्चा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविद्या मेदुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंवि अ-  
 न्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदाभि गरिहामि ।  
 अप्पाणं वोसिरामि से मेदुणे चउडिहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ  
 कालओ भावओ दव्वओणं मेदुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्त-  
 ओणं मेदुणे उड्डलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मे-  
 दुणे दियावा राओवा भावओणं मेदुणे रागेणवा दोसेणवा जंपि-  
 यमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालखणस्स सच्चा-  
 हिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरत्नसोवन्नियस्स उव-  
 समप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरुखाविच्चियस्स  
 कुख्खीसंबलस्स निरगिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुण-  
 गाहियस्स निव्वचीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिय-  
 स्स अविस्वाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपच्चावसाण-  
 फलस्स पुड्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अ-  
 भिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंद-  
 याए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेदियवसट्टेणं  
 पडिपुन्नमारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा  
 भवग्गहणेसु मेदुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविच्चंतोवा परेहि समणु-  
 न्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का-  
 एणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नसंवरोमि अणागयं पच्चख्खामि सव्वंमेदुणं  
 जावजीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेदुणंसेविद्या नेवन्नेहिमेदुणंसे-  
 वाविज्जा मेदुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसखिख-  
 यं सिद्धसखिखयं साहुसखिखयं देवसखिखयं अप्पसखिखयं एवं हव-  
 इभिरुख्खुवा भिरुख्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चक्कायपावकम्मे दि-  
 यावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एसखलुमेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आशुगामिए पार-  
 गामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजोवाणं सव्वेसिं-  
 सत्ताणं अदुख्खयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए  
 अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुह्वणयाए महत्ते महागुणे  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्ते तंदुख्खयाए  
 कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए चिकट्टु उव-  
 संपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ-  
 मेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं  
 सव्वं भंते परिग्गहं पञ्चख्खामि से अप्पंवा वहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्त-  
 मंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं, परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं  
 परिगिण्हविस्वा परिग्गहं परिगिन्नंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जा-  
 वज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकार-  
 वेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि  
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपस्सत्ते  
 तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सच्चि-  
 ताचित्तमीसेसु दव्वेसु खित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्ने-  
 सुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे  
 अपग्घेवा महग्घेवा रांगेणवा दोसेणंवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स  
 केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स  
 खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नववंभवेरु-  
 त्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुरुख्खीसंबलस्स निररिगि-  
 सरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स  
 निव्विचीलख्खणस्स पंचमहव्वयनुत्तस्स अविस्बाइयस्स संसारपा-  
 र्गामियस्स निव्वाण गमण पञ्चवसाणफलस्स पुर्विअन्नाणयाए अस-  
 वणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किन्धयाए तिगारव-  
 गरुयाए चउक्कसान्धवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-  
 सोक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-  
 हिउवा गाहाविउवा विप्पंतोवा परेहिंसमणुज्जाणं तंनिदामि गरि-  
 हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिदामि पडुप्प-  
 णंसंबरेमि अणागयंपच्चत्कामि सबंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-  
 उहिं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हविच्छा परिग्गहं-  
 परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-  
 सक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिख्खूवा भि-  
 र्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चत्काय पावक्कमे दियावा राउवा  
 एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्स-  
 वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सबेसिं  
 पाणाणं सबेसिंभूयाणं सबेसिंजीवाणं सबेसिंसत्ताणं अदुरुत्तणयाए  
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीइणयाए अपरियाव-  
 णियाए अणुइवणयाए महत्थे महायुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने  
 परमरिसिदेसियपसत्ते तंदुरक्कयाए कम्मक्कयाए बोहिलाभाए सं-  
 सारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए  
 उवडिउमि सबान्धपरिग्गहान्धवेरमणं ५ अहावरेछहे भंते महव्वए रा-  
 इभोयणान्धवेरमणं सबं भंते राईभोयणं पच्चत्कामि सेअसणंवा पाणंवा  
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइभुंजाविच्छा राइभुं-  
 जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं  
 वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंसमणुजाणामि  
 तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-  
 भोयणे चउबिहेपस्सत्ते तंजहा दव्वं खित्तं कालं भावं दव्वंणं  
 राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तंणं राईभोयणे-



समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दियावां रत्तिंवा भावओणं राईभो-  
 यणे तित्तेवा कड्डएवा कसाएवा अंबिलेवा मड्डरेवा लवणेवा रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्-  
 णस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-  
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेरयुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्कावि-  
 त्तियस्स कूस्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदोसस्स  
 गुणगाडियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तोलस्सकणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स  
 असंनिहिसंचिअस्स अविंसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण-  
 गमणपच्चवसाणफलस्स पुब्बिअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अ-  
 णभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बाल्याए  
 मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं  
 पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतैर्ण इहंवा  
 भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुजंतंवा  
 परेहिंसमणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वा-  
 याए काएणं अइयंनिंदामि पड्डपन्नसंबरेमि अणागयं पच्चस्सकामि  
 सव्वंराइ भोयणं जावज्जीवाए अणित्तिओहं नेवसयं राईभु-  
 जिजा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुंजंतेवि अन्नंसमणुजाणाभि  
 तंजहा अरिहंतसत्तिकयं सिद्धसत्त्खियं साहुसत्तिकयं देवसत्तिकयं  
 अप्पसत्तिकयं एवंहवइभिख्खूवा भिख्खुणीवा संजयविरय पडिहय  
 पच्चस्कायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा  
 सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे इएसुहेखमे-  
 निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिपाणाणं सव्वेसि-  
 भूवाणं सव्वेसिजीवाणं सव्वेसिसत्ताणं अदुस्सकणयाए असोयणयाए  
 अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणु-  
 द्ववणयाए महब्बेमहायुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरित्ति-

देसिएपसत्ये तंदुरुस्त्रयाए कम्मस्त्रयाए मोहस्त्रयाए बोहिंलाभाए  
 संसारुत्तराणाए तिकट्टु उवसंपजित्ताणं विहरामि छहे मंते महवए  
 उवट्ठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमगं ॥ ६ ॥ इवेइयाइं पंच-  
 महवयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियठाइं उवसंपजित्ताणंविह-  
 रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे  
 एसबुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्वरागायजाभासा तिव्वदोसातइवेय  
 सुसावायस्सवेरमणे एसबुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-  
 दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसबुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सहा-  
 रुवारासागंधा फासाणंचविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसबुत्ते अइ-  
 क्कमे ॥ ४ ॥ इन्नापुन्नायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे  
 एसबुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-  
 घम्मे पढमंवयमणुरुत्ते विरियामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-  
 णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणघम्मे वीयंवयमणुरुत्ते विरियामो-  
 अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-  
 घम्मे तइयंवयमणुरुत्ते विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-  
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणघम्मे चउत्थंवयमणुरुत्ते विर-  
 यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-  
 णघम्मे पंचमंवयमणुरुत्ते विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-  
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणघम्मे छट्ठंवयमणुरुत्ते विरियामो-  
 राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमण-  
 घम्मे पढमंवयमणुरुत्ते विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-  
 हारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणघम्मे वीयंवयमणुरुत्ते विरियामो-  
 अलियवयणत्तं ॥ १३ ॥ आलियविहारसमित्तं जुत्तोयुत्तोठित्तमणघम्मे  
 तइयंवयमणुरुत्ते विरियामो अदिन्नादाणात्तं ॥ १४ ॥ आलियविहार-  
 सनित्तं जुत्तोयुत्तोठित्तमणघम्मे चउत्थंवयमणुरुत्ते विरियामोमेहु-

णाञ्च ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तोयुत्तोठिञ्चसमणधम्मं पंच-  
 मं वयमणुरस्के विरयामो परिगहाञ्च ॥ १६ ॥ आलियविहारस-  
 मिञ् जुत्तोयुत्तोठिञ्चसमणधम्मं छठ्वयमणुरस्के विरयामोराईभोयणा  
 ञ्च ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तोयुत्तोठिञ्चसमणधम्मं तिविहे-  
 णपडिक्कंतो रस्कामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिञ्चत्तं  
 एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोयुत्तो रस्कामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-  
 वच्चजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रस्कामिमहव्वए-  
 पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइअट्ठरूहाइं परिवच्चंतो-  
 युत्तो रस्कामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तं धम्मं दोन्नियझाणाइं-  
 धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रस्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-  
 नीलाकाञ्च तिन्नियलेसाञ्चअप्पसत्ताञ्च परिवच्चंतोयुत्तो रस्खामि-  
 महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुका तिन्नियलेसाउप्पसत्ताञ्च उव-  
 संपन्नोजुत्तो रस्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविज्ज  
 वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविञ्च रस्खामिमहव्वएपंच  
 ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसत्तातहाकसायाय परिवच्चंतो  
 युत्तो रस्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-  
 संबरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रस्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥  
 पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवच्चंतोयुत्तो रस्कामिम-  
 हव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेदियसंबरणं तहेवपंचविहमेवसच्चायं उवसंप-  
 न्नोजुत्तो रस्कामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायबहिं छप्पिय-  
 भासाञ्चअप्पसत्थाञ्च परिवज्जंतोयुत्तो रस्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥  
 छविहमभ्रित्तियं वज्जंपियछविहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रस्कामि-  
 महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयट्ठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविञ्चंगा परिव-  
 चंतोयुत्तो रस्कामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिण्डेसणपाणेसण उग्गहं-  
 सत्तिकयामहच्चयणा उवसंपन्नोजुत्तो रस्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अष्टमयष्टाणां अष्टयकम्माइतेसिबंघिच परिवर्धंतोयुत्तो रक्खामि  
 महव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अष्टयपवयणमाया दिट्ठाअव्विहनिट्ठिअणेहिं उवसं  
 पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणां संसार-  
 ञ्चायनवविहाजीवा परिवर्धंतोयुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ न  
 वषंभचेरयुत्तो दुनवबिहंभंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिम  
 हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परि  
 वर्जंतोयुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिष्णाणां दस  
 चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥  
 आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविज्जंतो परिवर्जंतोयुत्तो रक्खामि  
 महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंतिदंडविरट्ठं तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो ति  
 विहेण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चैयंमहव्वयउच्चारणं  
 थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइवलंसानं साहणणेपावनिवारणं निकायणा  
 भावविसोही पडागाहरणं निजूहणा राहणा गुणाणं संवरजोणो प  
 सन्नञ्चाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमणे उत्तमणे एससल्लुत्तित्यं  
 कोहिं इरागदोस महणेहिं देसिअं पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय  
 संजमं उवइसिअं तिच्चुक्क सकयंठाणं अणुवगया नमोद्धुते सिद्धबुद्ध  
 मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंस मप्पमेय न  
 मोद्धुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहणं नमोत्थुते भग  
 वत्तं चिक्कट्ठु इच्चेसा सल्लुमहव्वयउच्चारणाकया इत्थामोसुत्तकित्तणं  
 काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भग  
 वंतं तंजहा सामाइयं चउवोसन्नं वंदणयं पडिक्कमणं काउसगो पच्च  
 रक्खाणं सव्वेहिं विएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्ते  
 सगंगे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भ  
 गवंतेहिं पन्नचावा परुवियावा तेभावे सहहामो पत्तियामो रोएमो  
 फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सहहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपखस्स अंतोचउमासीए अंतो  
 संवत्तरस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपालियं  
 तंदुखस्सखाए कम्मस्सखाए मोहस्सखाए बोहिलाभाए संसारुत्ता  
 रणाए तिकट्ठुउवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नप  
 ढियं नपरियट्ठियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेबो  
 रिए संतेपु रिसक्कारपरिकमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरि  
 हामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अणुडेमो अहारिहं तवोकम्मं  
 पायञ्चित्तं पडिविद्यामो तस्स मिञ्चामि दुक्कडं नमो ते सिंखमासमणाणं जे  
 हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं  
 कप्पियाकप्पियं चुलकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं  
 जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद  
 थुत्तं तंदुलवेयालियं चंदाविच्चयं पमायप्पमायं वीयरगसुयं विहार  
 कप्पो चरणविसोही आउरपच्चस्खाणं महापच्चस्खाणं सव्वेहिं पिए  
 यंमि अंगवाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअब्बे सगंगे सन्नि  
 जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं प  
 न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सहहामो प्रत्तियामो रोएमो फासेमो  
 पालेमो अणुपालेमो तेभावे सहहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं  
 अणुपालंतेणं अंतोपखस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुब्बियं अणु  
 पे हयं अणुपालियं तंदुखस्सखाए कम्मस्सखाए मोहस्सखाए बोहि  
 लाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्ठु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोप  
 खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्ठियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपा  
 लियं संतेबले संतेबोरिए संतेपुरिसक्कारपरिकमे तस्स आलोएमो प  
 डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अणुडे  
 मो आहारिहं तवोकम्मं पायञ्चित्तं पडिविद्यामो तस्स मिञ्चामि दुक्कडं न  
 मो ते सिंखमासमणाणं जे हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरद्ययणाई दसाळकप्पोववहारो इसिभासियाई महानिसीहं  
जंबुहोवपन्नत्तो सूरपन्नत्तो चंदपन्नत्तो दोवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमा  
णपविभत्तो महल्लियाविमाणपविभत्तो अंगचूलिया वंगचूलिया वि  
चाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए  
वेलंबरोववाए देविंदोववाए उट्टाणसुए ससुट्टाणसुए नागपरियाव  
ल्लियाळ निरयावल्लियाळ कप्पियाळ कप्पवडिसयाळ पुप्फियाळ पुप्फु  
ल्लियाळ वह्लोदसाळ आसीविसभावणाळ दिठीविसभावणाळ चारणसु  
मिणभावणाळ महासुमिणभावणाळ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयं  
मि अंगबाहिए उकालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ते सग्गंथे सन्निजुत्तीए  
ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवि  
यावा तेभावेसइहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो  
ते भावे सइहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं  
अंतोपरूखस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपा  
लियं तंदुखखल्लयाए कम्मखल्लयाए मोहखल्लयाए बोहिल्लाभाए सं  
सारुत्तारणाए त्तिक्क उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपरूखस्स जंन  
वाइयं नपढियं नपरियट्ठियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते  
बले संतेबीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो  
निंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहंमो अकरणयाए अणुट्ठेमो अहारिहं  
तवोकम्मं पायच्चित्तंपडिवज्जामो तस्स मिट्ठामिडुक्कडं नमोतेसिंखमास  
मणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवाळसंगंगणिपिडंगं भगवंतं तंजहा आयारो  
सूयगडो ठणो समवाळ विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहाळ उवासगद  
साळ अंतगडदसाळ अणुत्तरोववाइअदसाळ पएहावागरणं विवाग  
सुयं दिट्ठिवाळ सुदिट्ठिसुहाळ सव्वेहिं पिएयंमि दुवाळसंगो गणिपिडगे  
भगवंते ससुत्ते सअत्ये सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणा  
वा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

द्वहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सह  
 हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो  
 पखस्स जंवाइयं पदियं परियद्वियं पुंन्नियं अणुपेहियं अणुपालियं तं  
 दुखस्सकयाएकम्मस्सकयाए मोहस्सकयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए  
 त्तिकट्ठु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नपदियं नप  
 रियद्वियं नपुन्नियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिस  
 क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो  
 विसोहेमो अकरणयाए अणुठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिव  
 ज्जामो तस्समिञ्चामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंमंवाइयं दुवाल  
 संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्ठं  
 ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिञ्चामिदुक्कडं ॥ सुय  
 देवयाभगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं  
 सुयसागरेभत्ती ? इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अणुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाठली घनियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमेश्विस्म-  
 रण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पन्नि-  
 लेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशाखायें थाप-  
 नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी,  
 जूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पठें ख-  
 मासमण देई, ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह मुहपत्ती पन्नि-  
 लेहुं ? गुरु कहे, पन्निखेदेह. इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती  
 पन्निखेदे. पीठें उज्जो अई, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ पोसह संदिस्ताळं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इच्छं कही, ख-  
 मासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह गळं ? गुरु कहे

( ए१ )

गण्ड, पीठें इडं कही खमासमण देई ऊजो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-  
च्छकार जगवन् पसाज करी, पोसह दंरुक उच्चरावो ? गुरु कहे उ-  
च्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंते पोसहं ॥ इहांतें ले के अप्पाणं वो-  
सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पञ्चखाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पञ्चस्काण प्रारंभः ॥

॥ करेमि जं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसजं सबजं वा,  
शरीरसक्कार पोसहं, सबजं बंजचेर पोसहं, सबजं अद्यावार पोसहं,  
सबजं चउविदे पोसहे, सावज्जं जोगं पञ्चखामि, जावदिवसं अहो-  
रत्तिं वा पञ्जुवासामि, डुविहं तिबिदेणं मणेशं वायाए काएणं, न  
करेमि न कारवेमि, तस्स जं ते पम्किमामि निंदामि, गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञावण करतो उच्चरे ॥  
पीठें एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक  
मुहपत्ती पम्खेहुं ? गुरु कहे, पम्खेहेह. बीजी खमासमण देई  
मुहपत्ती पम्खेहे. पीठें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्ताजं ?  
सामायिक गाजं ? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊजो थको  
तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंते उच्चरी दोय खमासमणें बे-  
सणो संदिस्ताजं ? बेसणो गाजं ? कही, पीठें दोय खमासमणें सि-  
खाय संदिस्ताजं ? सिखाय करुं ? कही खमासमण देई ऊजो थको,  
आठ नवकारनो सिखाय करे. शीतादि परिसहे दोय खमासमणें,  
पांगरणुं संदिस्ताजं ? पांगरणुं पम्खिधाजं ? कहे. ए सर्व सामायिक-  
विधि पूर्व्व कहेओ ठे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष ठे. पहिलां  
इरियावही पम्किमी ठे, तेमाटे इहां सामायिक दंरुक उच्चरायां  
पीठें इरियावही नही पम्किमीजें ॥ पीठें चैत्यवंदन, जयवीरराय



सूधी करी कुसुमिण डुस्तमिण कानुस्तग्न करे, पीठें पन्निक्कमण-  
 वेलासीम सिद्धाय ध्यान करे. पीठें पूर्वोक्त रीतें पन्निक्कमण करे,  
 पण इतरो विशेष के चारे शुईयें देव वांछा पीठें खमासमण देई  
 कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलें संदिस्ताजं ? गुरु कहे,  
 संदिस्तावेह. पीठें इच्छं कही खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥  
 सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलें करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीठें इच्छं कही,  
 तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र ? , श्रीजपाध्यायजी मिश्र  
 २, श्रीजे सर्वसाधु वांछी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नम-  
 स्कार जणें, जो पन्निखेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं  
 चैत्यवंदनादि करी, सिद्धाय करे. हवे पन्निखेहण वेला पन्निखेहण  
 करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो ते तो पण संतो  
 पै फेर लखीयें तैयें. दोय खमासमणें, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ पन्निखेहण करुं ? कही मुहपत्ती पन्निखेह. पीठें दोय खमा-  
 समणें अंग पन्निखेहण संदिस्ताजं ? अंग पन्निखेहण करुं ?  
 कहे. पीठें गुरुवचनें इच्छं कही. धोतियो कणदोरो पन्निखेही  
 वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इच्छकार जगवन् ! पसाज करी, प-  
 निखेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पन्निखेही स्थापे,  
 अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पन्निखेह, तो पण खमासमण देई  
 उक्त रीतें आग्या मागे. पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं०  
 ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ती पन्निखेहुं ? गुरु कहे, पन्निखेह. पीठें  
 इच्छं कही, मुहपत्ती पन्निखेही दोय खमासमणें ॥ इच्छाका०  
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ उही पन्निखेहण संदिस्ताजं ? गुरु कहे, संदिस्ता  
 वेह. उही पन्निखेहण करुं ? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणदियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे दूरे उच्चारें  
 पासवणें अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे  
 ॥ ४ ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पा-  
 सवणें अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अहि-  
 यासे ॥ ७ ॥ आगाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ८ ॥ आ-  
 गाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पास-  
 वणें अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अहियासे ॥ ११ ॥  
 आगाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उ-  
 च्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पास-  
 वणें अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अणहि-  
 यासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे ॥ १६ ॥  
 अणागाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पास-  
 वणें अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अ-  
 हियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २०  
 ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे  
 आसन्ने पासवणें अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मध्ये पासवणें अ-  
 हियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ २४ ॥ ए  
 अंमिलपन्निहण पाठ कइया ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ अंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम  
 पासे ३, पन्निहेहे ॥ ६ अंमिलां दरवजेके नीतर पासें दहिणें ३,  
 वामें ३ पन्निहेहे ॥ ६ अंमिलां दरवजेके बाहर दोनुं पासें पन्निहेहे  
 ॥ ६ अंमिलां जिहां उच्चार प्रस्त्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ  
 पन्निहेहे ॥ इति २४ अंमिलां पन्निहणविधिः संपूर्णः ॥

पीठें इठं कही, कंवल वस्त्रादि पन्निहेही पोसह शांखा प्र

भार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पम्किमे. इहां आचार दिनकरमें कह्यो ठे. दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्ताउं ? वसती पम्किहेतुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रभार्जे, इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय संदिस्ताउं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीठें इच्छा कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, जणो, गुणो, वखाण सुणो, इम करतां पूर्ण पदुर दिन चढ्यां. उग्याडा पोरिसी अथवा, बहुपम्पिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई. इरियावही पम्किमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पम्किहेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छा कही, मुहपत्ती पम्किहेही पान जोजन पात्र पम्किहेही राखे. पीठें सिधाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्तही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्र स्तवें देववांण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, जूमि प्रभार्जी, पुरुष हुवे तो प्रजुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे. पीठें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छा कही, चैत्यवंदन कहे. पीठें नमोबुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पम्किमे. एक लोगस्तनो काउस्तगकरे. मुखें लोगस्त कहे. संक्राता प्रभार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. “जं किंचि नाम तिष्ठं” इत्यादि कही पीठें नमो बुणं कहे. उजो थई अरिहंत चेईयाणं करेमि काउस्तगं वंदणवची०

अन्नबू० कही, एक नवकारनो काष्ठस्तग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्त० सबलोए अरि० वंदशव० अन्नबू० कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीठें पुरकरवरदी० सुअस्त जग० वंदश० अन्नबू० कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नबू० इ त्यादि कथन पूर्वक चोथी थुईकी गाथा कह कर, बैठकें नमोन्नूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुईयें देव वांदी बेसे ॥ नमोन्नूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीठें स्तवन कहे, पीठें जयवीरराय कही. नमोन्नूणं सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो ठे. तथा चैत्यवंदन बृहज्जाप्यमें एम कह्यो ठे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्र स्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसैं देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही “ जावन्ति चेइयाई ” गाथा जणी खमासमण पूर्वक जा वन्ति के० बीजो गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोन्नूणं कही जयवीरराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीठें निस्तही पूर्वक पोसदशाला मांदि आवी, इरियावही पम्पिक्कमे. पीठें सिद्धाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पञ्चखाण बेला पूर्ण हुवां जल पीणेकू पञ्चस्काण पारे ॥

॥ हवे पञ्चखाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पम्पिक्कमे. फिर एक खमास मण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पञ्चखाण पारवा मुहपत्ती पम्पि खेहुं ? गुरु कहे, पम्पिखेहेह ॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पम्पिखेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

॥ पाणहार अमुक पञ्चख्वाण पारुं ? -गुरु कहे, पुणोवि का यव्वो. पीठें यथाशक्ति कदी, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

॥ पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आचारो न मोत्तव्वो. पीठें तदक्षि कदी, अमुक पञ्चख्वाण चउविहार कथों, एम एक नवकार गुणी पञ्चख्वाण फासियं, पालियं, सोदियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्स मिच्चामि उक्कमं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्खणमात्र सिक्काय करी यथासंजवे अतिथिसंविजाग करी पाणीपीवे॥

॥ तथा उपधानवाही दुवे, तो पोरिसी प्रमुख पञ्चख्वाण पारी आहार करे. पीठे आसण बैठो अकोहीज दिवस चरिम पञ्चख्वावे, पीठें इरियावही पम्किमी चैत्यवंदन करे, ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें ठे ॥ इति पञ्चख्वाण पारशेका विधि ॥

॥ पीठें जो बहिर्जूमि जावणो दुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी अको, निर्जोव अंमिले जई; अणुजाणह जस्सुगहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध अई तीन बार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही पम्किमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ गमणा गमणां आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीठें इच्छं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक देशें जई, संना सा पूंजी, अंमिलो पम्किमेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंमियं, जं विरा हियं, तस्स मिच्चामि उक्कमं, एम कही बेसे. पीठें पम्किमेदण बेला सीम सिक्काय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाठले प्रदुरे इरियावही पम्किमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ पम्किमेदण करुं ? गुरु कहे करेह.

इहं कही दूजे खमासमणो इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला  
 प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह. पीठें इहं कही, मुहपत्ती पन्निखेही  
 दोय खमासमणें अंग पन्निखेहण संदिस्तानं ? अंग पन्निखेहण करुं ?  
 कहे, पीठें गुरु वचनें इहं कही मुहपत्ती पन्निखेही दंभासणो पूंजणी,  
 प्रमुखते प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीठें काजो गुरु करी, उदरी  
 एकांते विखरतो परठवो इरियावही पन्निक्कमी, खमासमण पूर्वक  
 कहे ॥ इच्छाकर जगवन् पत्ताज करी पन्निखेहणो पन्निखेहावोज ॥  
 पीठें स्थापनाचार्य पन्निखेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा आपनाचार्य  
 समीपें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती  
 पन्निखेहुं ? गुरु कहे, पन्निखेहेह. पीठें इहं कही खमासमण देई,  
 मुहपत्ती पन्निखेहे. पीठे दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 ज० सिधाय संदिस्तानं ? सिधाय करुं ? उक्त रीतें कणमात्र सि  
 धाय करी तिबिहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार  
 पञ्चके ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांदणां  
 दोय देई, पञ्चक्राण करे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥  
 सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पन्निखेहण संहिस्तानं ? बोजे ख  
 मासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पन्निखेहुं ?  
 गुरु वचनें इहं कही, दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ बेसणो संदिस्तानं बेसणो ठानं ? कही बेसे, वख कंबलादि प  
 न्निखेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पन्निखेहे. उपवासी तो  
 ठे तेमाटे सर्व पाठो कम्पिटो धोतीयो कणदोरो पन्निखेहे, उपधा  
 नवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवे तो कम्पिट्यादि पन्निखेह्यां. पीठें  
 वख कंबलादि पन्निखेहे. ए विशेष ठे ॥ पीठें कालवेला सीम  
 सिधाय ध्यान करे. पीठें उच्चार प्रश्रवण. ३४ थंमिला पन्निखेहे,  
 जो चउदश हुवे, तो पांखी चउमासो पन्निक्कणो करे, संवजरीधें

संवहरी पन्तिकमणो करे. तिहां देवसी पन्तिकमणो पूर्वे लिख्यो  
ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो  
एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीठे " ठाणो कमणो चंकमणो " इ  
त्यादि पाठ कहे. खुदोवद्व काठस्सग कियां पीठे दोय खमासम  
णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सिधाय संदिस्साजें ? सिधाय करुं ?  
कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिधाय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्तिकादि तीन पन्तिकमणविधि आगे एही पुस्तकमें  
लिख गये हैं. वहासें जान लेनां.

॥ हवे पन्तिकमणो हुवा पीठे साधुको वेयावच्च करी पोरसी  
सीम सिधाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ज  
कहेतो थको, जूमि प्रमार्जे अमिल स्थानकें जई, देहशंका निवारै  
प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. जगवन् ! बहु पन्तिपुत्ता पो  
रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे, पीठे राई  
संधारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संधारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राई संधारा  
मुहपत्ती पन्तिकेहुं ? गुरु कहे, पढिलेहेह. पीठे इच्छं कही, खमास  
मण देई मुहपत्ती पन्तिकेदे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ राई संधारो संदिस्साजें ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०  
॥ ज० राई संधारो ठावुं ? पीठे गुरु वचनें इच्छं कही, चमकसायें  
पन्तिमज्जुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीरराय सूधी  
चैत्यवंदन करे. जूमि प्रमार्जी, संधारो उत्तर पट्टो पाधरे. पीठे  
शरीर प्रमार्जी निस्तही निस्तही एम कही संधारे बेसी, तीन  
नवकार तीन करेमि जंतें छवरी ॥ एमो खमासमणाणं, गोयमा  
ईपां महामुणीणं, 'अणुजाणद जिठिक्का अणुजाणद परम गुरु'

इत्यादि राइ संघारा गाथा जणी, वाम हाथ सिरायें देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवानो फेर तो शरीर संघारो प्रमाजीं फेर, जो देह शंकायें छे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पन्निक्कमे ॥ पीठें जघन्यें पण तीन गाथानी सिखाय करी सोवे ॥ इति राइ संघारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिने पाठिले पदोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पन्निक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्तुमिण काठस्तग्ग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पन्निक्कमे. पीठें दोयखमासमणें सिखाय संविस्तावी आठ नवकार गुणी, पन्निक्कमण वेला सीम सिखाय करे. पन्निक्कमण वेला हुवां पन्निक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष ठे, के राइ आलोयां पीठें संघारा उवणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पन्निक्कमणो करी पन्निक्कमण वेलायें पूर्वोक्त विधें पन्निक्कमण करी, धर्मशाला पूंजी काजो ऊहरी इरियावही पन्निक्कमे. दोय खमासमणें सिखाय संविस्तावी, उपदेशमाला प्रमुख सिखाय करे. पीठें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पन्निक्कमे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मोचवो. पीठें तहत्ति कहे. खमासमण देई अर्थावनत गात्रें उज्जो. थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पन्निक्कमे, पीठें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि कायवो, पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आ-



यारो न मोत्तवो. पीठें तहत्ति कदी खमासमण देई अर्धावनत. गात्रें उजो थको हाथ जोड्यां- मुद्दपत्ती मुखें दिथां थकां तीन न वकार गुणी संमासा पन्निखेदे. गोमालोवें बेसी मस्तक नमावी, “ जयवं दसन्नजदो ” इत्यादि जावनारूप गाथा कहे. पीठें पोसहना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुदारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविज्ञागव्रत साचवण निमित्तें साधु ज्ञानी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु पण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीठें साधुनें जे आहार दीथो, तेहनोदीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीठें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चित अई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पन्निखेदी, कचरो विधिजुं परववी इरियावही पन्निक्कमे. खमासमण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुद्दपत्ती पन्निखेदे, आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पोसहदीज करणो हुवे, तो पोसह दंभक मञ्जरतां जावदिवसं पञ्जुवातामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अष्टपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तिं पञ्जुवातामि एहवो पाठ कहे. पीठें सामाधिक विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिण्डुस्तमिण काजस्सग करी पन्निक्कमणो करी दोष खमासमणें बहुवेळें संदिस्तावे १, अने जो पूर्वें पन्निक्कमणो गुरु साथें करयो हुवे, तो पन्निक्कमणानें अंतें पन्निखेदी शारव्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामाधिक सर्व विधि करी दोष खमासमणें बहुवेळें संदिस्तावे १, तथा जो गुरुसैं जूदो पन्निक्कमणो करयो हुवे, तो गुरुपासैं आवी पोसह सामाधिक सर्व विधि करी, आलोचना खामणादि निमित्तें मुद्दपत्ती पन्निखेदी वे वादणां

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइयं आलोउं ? गुरु कहे, आ-  
 लोएह, पीठें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका०  
 ॥ सं० ज० ॥ अघुठिउमि अघिंतर, राइयं खामेमि ? गुरु कहे  
 खामेह, पीठें सब पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पन्निक्कमणामें न-  
 वकारसी पञ्चख्यो ओ तेमाटे पीठें गुरु साखें पञ्चकाण उपवासनो  
 करे, पीठें दोय खमासमणें बहुवेळं संदिस्तावे ॥ ए तीन प्रका-  
 रका विकटप जाणनां, हवे पन्निखेदण तो पूर्वे करी ठे, तो पण  
 आदेश मागवो, ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ पन्निखेदण संदिस्ताउं ? बीजे खमासमणें पन्निखेदण करुं ?  
 कही मुदपत्ती पन्निखेहे, पीठें इमहीज दोय खमासमणें अंग पन्नि  
 खेदण संदिस्तावी मुदपत्ती पन्निखेहे, पीठें वली खमासमण देई  
 इच्छाकर जगवन् ! पसाठ करी पन्निखेदण पन्निखेदावो जी, एम  
 कहे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उ  
 पधि मुदपत्ति पन्निखेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपन्निखेह्यो राख्यो  
 हुवे, तो पन्निखेहे, नहीं तो वली आसण पन्निखेहे, दोय खमास  
 मणें सिधाय संदिस्तावी उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे, आगें  
 सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है, तिमहीज जाणवी,  
 पण इहां अठ पुहरी पोसह तो पाठली रातें वली सामायिक न  
 लेवे, जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरी पोसह लीथो हुवे, ते पाठले  
 पुहर पञ्चकाण किया, पीठें दोय खमासमणें उही पन्निखेदण सं-  
 दिस्ताउं ? उही पन्निखेदण करुं ? कहे, पण अंमिला पद न कहे,  
 अने अंमिला नहीं पन्निखेहे, यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह अ-  
 दण करणेंमें विशेष विधिही, सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह  
 अदणविधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊचरयो है, पीठें संघ्यानी पन्निखेदण करतां रात्रि पोसहनो जाव थयो, तो पञ्चस्काण कियां पीठें दोय खमासमणें पोसद मुहपत्ती पन्निखेदी तीन नवकार गुणी तीन वार पोसद दंरुक ऊचरे. तिहां जाव रत्ति पञ्जुवासामि एम पाठ ऊचरे, पीठें सामायिक विधि पूर्वे लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊचरयां पीठें दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्तावी, पांग रणो संदिस्तावी, पीठें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उही थंमिलां पन्निखेदण संदिस्ताउं उही थंमिलां पन्निखेदण कहुं? गुरु कहे, करेद. इच्छं कही उपधि पन्निखेदे. आगें सर्व किया पूर्वे लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसद न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो जाव थये, पाठले पहुर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमाजीं हुवे, तो सरथो, नही तो वसती प्रमाजीं, काजो परिठवी सर्व उपगरण पन्निखेदी इरियावही पन्निक्कमे. पीठें चउविहार पञ्चस्काण करी दोय खमासमणें पोसद मुहपत्ती पन्निखेदी दोय खमासमण देई पोसद संदिस्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसद दंरुक ऊचरे. तिहां दिवसेसरत्ति पञ्जुवासामि कहे. संघ्या हुवे, तो रत्ति पञ्जुवासामि कहे. पीठें बिहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पन्निखेदे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि जंतें ऊचरे. दोय खमासमण देई सिधाय संदिस्तावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्तावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्तावे. पीठें बे खमासमण देई, अंग

पन्धिलेहण संदिस्तावी, मुदपत्ती पन्धिलेहे. फेर बे खमासमण वेई, उही अंभिलां पन्धिलेहण संदिस्तावी जो अणपडिलेहो उपगरण हुवे तो पन्धिलेहे. जो सर्व उपगरण पन्धिलेह्यां हुवे, तो पण था नक अन्यता टाळवा ज्ञाणी वली आसण पडिलेही, पडिकमण वे ला सीम सिध्दाय ध्यान करे. पीठें उच्चार प्रश्रवणना १५ अंभिला पडिलेही पडिकमणो करे. तथा पाळो रातें वली सामाधिक न लेवे. इतनां निकेवळ रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकट्य जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेकमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेकमणो चंकमणो आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे सबस्सवि देवसिअ, उच्चित्तिअ, उप्पासिअ, उच्चिठिअ ॥ इच्चाकारेण संदिस्सह, इच्चं तस्स मिच्चा मि उक्कनं ॥ १ ॥ संभाराउवट्ठणकी, आउट्ठणकी, परिअट्ठणकी, पसारणकी, उप्पइयासंघट्ठणकी, अच्चकुविसयकायकी, सबस्स विराइअ, उच्चित्तिअ, उप्पासिअ, उच्चिठिय, इच्चाकारेण संदिस्सह, इच्चं तस्स मिच्चा मि उक्कनं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंशं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाशंदणं केवळन्नाणगेहं ॥ मदानंद लब्धो बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तिठारयं ॥ १ ॥ पुरा तारणा जेह जीवाण जाया, जवस्संति ते सब ज्ञाणा ताया ॥ तहा संपयं जे जिणा वट्ठमाणा, सुहं वित्तु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ उरुत्तार संसार कुट्टार पोयं, कलंका वली पंकपस्काळ

तोपं ॥ मणौवंडियडे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वेदिमो सुमदप्पं  
॥ ३ ॥ विकोले जिणंदाणणंजो जलीणा, कलारूव लावण सोदग्ग  
पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि शिच्चं पि ऊणां, सिरी जारई देहि मे  
सुदनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानकर्म, पंचानुत्तरसीमद्विष्य  
पदवीचश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि  
तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांढनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम्  
॥ १ ॥ ये पंचाश्वरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच  
सुव्रतविधिप्रज्ञापनासाधराः ॥ कृत्वा पंचकृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता  
गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतजृतां तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥  
पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं  
पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाजं गुरुपंचमारतिमिरैश्वेकादशी रोहिणी,  
पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां  
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, ज्ञानानां जविनां गृहेषु ब-  
हुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ द्वारत्न  
पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां जवतु सा सिद्धाधिका त्राधिका  
॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चञ्चवीसे जिनवर, प्रणमं हुं नितभेव ॥ आठम दिन करिये,  
चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीगां  
डुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रभु  
जीना पाय ॥ इंद्राणी अपडर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर  
दीपे मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोच्चव, करता दोडादोड  
॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरे, जाणी लाज अपार ॥ चञ्चमासे रदिया,

गलाधर मुनि परिवार ॥ जविष्यणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध  
साकरणी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पढिक्कमणुं, क  
रिये व्रत पञ्चस्काण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥  
आठ मंगल आये, दिन दिन कोडि कढयाण ॥ जिनसूखसूरि कहे,  
इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म  
व्रतमपमलं केवलमलं ॥ बलकैकादश्यां सदसि लसद्ब्रह्ममहसि,  
क्षितौ कढयाणानां कृपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वैर्ब्रह्मेया  
गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥  
जिनानामप्यापुः क्षणमतिमुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिनां  
एवं यानि प्रणिजगद्गुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तुषामिति च विदि  
तं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुजवेयुर्बहुमुदः, क्षि० ॥ ३ ॥  
सुराः सैद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्कास्त्रि  
लज्जवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तुषां विदधति सुखं विस्मि  
तहृदः, क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ ईईकि धपमप, धुधुमि धोंधों, ब्रसकिधर, धपधोरवं ॥  
दोंदोंकि दों दों, दाग्दि दग्दिदिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेषव ॥  
ऊजिङ्गेकि ज्जेङ्गे, ऊणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर  
शैल शिखरे, जवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेगिनि  
ओगिनि, किटति गिगून्दां धुधुकि धुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण,  
रणकि रोंरों, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ ऊजि ऊँकि ऊँऊँ, ऊणण र  
णरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितक  
लमल, मुकलमीश, महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठेंकि ठेंठें, ठहेंठ ठ

ह्रिक, ठह्रिपट्टा, ताड्यते ॥ तललोकि लोलो, त्रैषि त्रैपिनि, मैपिमैषि  
नि, वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, पुंगि पुंगिनि, धोगिधोगिनि, कल  
रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुञ्चवे ॥ ३ ॥  
पुंदांकि पुंदां, पुषुद्दि पुंदां पुषुद्दि दोदों, अंबरे ॥ चाचपट चचपट,  
रणकि ऐंऐं मणण मेरे, मंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस,  
सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाद्वरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु  
शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी  
जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ समता रस धामी जी ॥  
श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव  
श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज  
पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम,  
नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहिबें, अविचल  
पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति  
प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम बलि, चैत्रक मास  
जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें  
जी ॥ तेर सदस बलि गुणियें गुणपुं, नवपद केरो सारो जी ॥  
इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥  
विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद से  
वक जविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गह्व ना  
यक सदगुरु, श्रीजिनजक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि  
पजणे, श्रीजिनलाज सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद ॥

॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥

॥ बलि बलि हुं ध्यावुं गात्रं जिनवर वीर, जिनपर्व पजु

सण, दारुणां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूँती दिन पंचास,  
 धनिकमण संवहरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर  
 पूजा सत्तर प्रकार, करिये जलें जावें जरिये पुण्य जंमार ॥ वलि  
 चैत्त्व प्रवामें फिरतां लाज अनंत, इम परव पजूसण सहुमें मदि  
 मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकळप  
 सूत्र जिहां सुणतां पाप पुढाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर  
 उरकेव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि सा  
 हम्मीवहल करिये वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शी-  
 लधार ॥ अरुदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध  
 कहे जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्षोजितं, धन  
 सधनश्याम शरीर सुंदर शंख लंठन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन  
 त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर  
 वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदै श्रीआदिजिनवर  
 वीर जिन पावापुरे, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय  
 गिरिवरे ॥ समेतशिखरे वीस जिनवर मुगति पढुता मुनिवरू,  
 चउवीस जिणवर तेह बंदूं सयल संथे सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार  
 अंग उपांग बारे दश पथना जाणिये, ठ ठेद अंथ प्रसन्न अन्ना  
 चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन  
 मत गाइये, एह वृत्ति चूर्णी जाण्य पेंतालीश आगम ध्याइये  
 ॥ ३ ॥ डुहुं दिसें बालक दोय जेइने सदा जवियण सुखकरू,  
 डख हरे अंवा लुंब सुंदर डरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंरुण  
 नेमि जिनवर चरणपंकज सेविये, श्रीसंध सहुनें सदा मंगल करो  
 अंवा देविये ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंरुण श्रीनेमि० ॥



॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, ह्रमापालप्र  
नुदस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे  
तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्र  
भुम् ॥ १ ॥ यज्ञर्जागमनोन्नव व्रतवरज्ञानाक्षरासिद्धयो, संजूयाशु  
सुपर्वसंततिरदो चक्रे महस्तत् कणात् ॥ श्रीमन्नाजिन्नावादिबोरच  
रमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यने  
नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाजिघ,  
स्तत्पञ्चाक्षरायका विरचबांचक्रुस्तरां सृजतः ॥ श्रीमतीर्थसमर्थनै  
कसमये सस्यगृह्णां भूस्पृशां, ज्ञूयान्नावुककारकप्रवचनं चेतश्चम  
त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थज्ञावनपरा सिद्धायिका देव  
ता, चंचक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन  
चङ्गीस्सुमतिनो ज्ञव्यात्मनः प्राप्तिनो, या चक्रेऽवमकष्टदस्तिनिधने  
शार्दूलविक्रीकृतम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरण-  
कमल तसु नामूं सीस । अर्हणिस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पं  
च मेरुपासे ऊलकंता । सोहे वीस महा गजवंता ॥ तिण ऊपर जे  
जिनहर बीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥ २ ॥ गणाहर कहिय  
हुवालस अंग । आनक बीस ज्ञण्या तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे  
आणो रंग । ते नर पाभे सुख अजंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी च  
जवीस । पूरे मुऊ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे ।  
तिहुअण ज न मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदेमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ न  
गरजेसलमेरविभूषणं । नजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरे  
श्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहजंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुख  
कारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जि  
नशासनं । विपुलमंगलकेलिविज्ञासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका ।  
फलति तस्य मनोरथमालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी ।  
जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु  
सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधरां ॥ पंकथ  
बप्पयदेवगणं । सिरिअव्वय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियल्लोचनमंस्ति  
यपायजुआ घणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया ।  
मम हुंति जिनागमसुखतया ॥ २ ॥ पणयंगिमहात्तमरोरहरं । क  
ल्लाणपयोरुहवुद्धिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयात्तकरं । पणमामि जि  
नागममन्दिकरं ॥ ३ ॥ सिरिंदत्तमुज्जलगायलया । सुहज्जाणविणम्मि  
यएगलया ॥ असुरिंदत्तुरेदत्तुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुपोसुत्त  
या ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमात्तमपद धारीजी । प्रथम  
जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिन  
राज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिने  
सर, आत्तमसंपद नूपोजी ॥ १ ॥ पांच नरत्त वलि पांचे एरवत्त,  
पंच विदेह मज्जारोजी । काल अतीत अनन्ता जिनवर, पाम्या सिव  
पद सारोजी ॥ वलिय अनगत काल अनन्ता, आस्थे इषाही प्रका

रोजी । संप्रति काले वीस विदेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ १ ॥  
 अरथे श्रीजिनराज वखाएया, गूण्यां श्रोगणधारोजी । अंग डुवाखस  
 अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय अंग  
 प्रमाणे, जिहां षट्पद्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्यां,  
 तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्रेसरिदे  
 बोजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी द्यो, वंछित नित सेबीजी  
 ॥ कळ्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजि  
 नचंद मुषिंद पसाये, कहे जिनदर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र  
 णमे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सख मन धरी अमंद ।  
 श्रीमूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति  
 शय बलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणि  
 त रुद्रिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक बंडु जिन चोवी  
 स ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन ज्ञाषित सिद्धांत । स्वादादन  
 यादिक हेतुयुक्ति नवि ज्ञांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सह  
 ज्ञाणी । सुणिषे नित ज्ञविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणी  
 साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेबीजे सुखकारी ॥  
 साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पथपे होज्यो  
 जयशकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोज्ञारी ॥

॥ यदंद्दिनमतादेव । देहिनः संति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु  
 वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाजे  
 यजिनादिजिनपति ॥ नौमि यच्चनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःके  
 न्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुणायतो जिनाः । सदर्थतो यच्चयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥  
३ ॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सद्वेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता  
भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । ज्ञय्यान् जनान्नयतु नित्य  
ममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोजारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे ? जैनाः पादा युष्मान् पांतु १ जैनं  
वाक्यं ज्ञूयाद्भूतै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी  
स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूर्ति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन  
त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंठन सात हाथ तनु मान, दि  
नश्च सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वं  
दित पद अरविंद, कामित जरपूरण अजिनव सुरतरुकंद ॥ जवि  
यणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमं विसवा  
वीस ॥ २ ॥ अरथे करि आगम ज्ञाख्या श्रीजगवंत, गणधर ते  
गूण्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके  
एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धाधि  
का देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥  
अहनिसि कर जोमी सेवे सुरनर इंद, जंघे गुणगण इम श्रीजिन  
वाज्र सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाज्जेयं संजवं तं, अजियसुविदयं, नंदणं सुदयद्वा ॥ सु  
प्पासं पञ्चमनाहं, सुविघशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ अेषांसं ध  
र्मशांतिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंघुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं,  
नमिमविन्मिसौ, पंच कट्ठयाण एसु ॥ १ ॥ गम्मे हाणेषु जम्मे,

वय गदणखणे, केवले लोयकाले, पन्नाशिवाणठाणे, पगवण समए,  
 संयुआ जावसारं ॥ देवेहिं दाणवेहिं, जवणवणसए, वितरे किंन  
 रोहिं, तं मझं दिंतु मोस्कं, सयलजिनवरा, पंच कल्लाण एसु ॥१॥ देजं  
 तित्थंकराणं, जमिहअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सवन्नूणं च धासा,  
 अहमविनियमा, जायए सब्बकालं ॥ अन्नपुत्तिएहिं, नियगममहाणं,  
 धीयअंकूरूवं । अवावाहं जिणाणं, जयज पवयणं, पंच कल्लाण एसु  
 ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहत्ता । सवन्नामाणमं  
 बा, वरकमलकरा, रोहिणीवत्तअंबा ॥ पन्नत्ती वत्तपन्नमा, धणइसर  
 णई, खित्तेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गदणसईया, पंच क  
 ल्लाण एसु ॥४॥ इति श्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकव्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंरुण आदिदेव । हूं अहनि स समरूं तास सेव  
 ॥ रायणतल पगलां प्रज्जुतणा । पूजि सफल फल सोदामणा ॥१॥  
 तेवीस तीर्थंकर समवसरथा । विमलाचल ऊपर गुण जरथा ॥ गिरि  
 करुणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोहम  
 सांमी उपदिस्था । जंबुगणधरने मन वस्था ॥ पुंरुगिरि मदिमा  
 जे मांह । ते आगम समरूं मनउत्ताह ॥ ३ ॥ चक्रेसरि गोमुख क  
 वरुयह । मन वंजित पूरण कळपवृक्ष ॥ सिद्धक्षेत्रसिद्धरे सहदेव  
 ता । जणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इति श्रीशत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपदाण । दीक्षा वर केवल  
 ज्ञान अने निरवांण ॥ जसु तीन कळ्याणक मुखकर सुरतरुकंद । तसु  
 जवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अठावय चंपा पावापुर  
 शुज्ज ठाण । आइम बारम जिण चउवीसम जिणज्जाण ॥ अजिता  
 दिक दीसे पुहता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमं अधिक

હુહાસ ॥ ૨ ॥ જિણવર મુખ હૂંતી સુણિ ત્રિપદી તતકાલે । ન  
 ણધારક ગૂંછ્યા દ્વાદશ અંગ વિજાલ ॥ નયઝંગ પદારથ સત્ત્વ  
 નવ તત્ત । જવિયણને તારે સાયર જિમ બોદિત્થ ॥ ૩ ॥ ચક્કેસ  
 રિ અંબા પન્નમાદેવિ પ્રત્યક્ક । શ્રીસંઘ મનોરથ પૂરે બાસુરવૃક્ક ॥ ધ્યા  
 વે મુખ પાવે શ્રીજિનલાજ્જ સરીસ । જિનવર સુપ્રસાદે આસ ફલે  
 સુજગીસ ॥ ૪ ॥ इति नेमजिनस्तुतिः ॥

॥ અથ શ્રીશીતલજિન સ્તુતિઃ ॥

॥ મુખ સમકિતદાયક કામિત સુરતરુકંદ । હઠરથ નૃપ રાં  
 ણી નંદાકેરો નંદ ॥ જહિલપુર સ્વામી ફેને જવના પંદ । ચિત્ત ચો  
 ર્ણે નમિયે શ્રીશીતલજિનચંદ ॥ ૧ ॥ અતીત અનાગત દુઝા દોસ્યે અ  
 નંત । સંપ્રતિ કાલે જે ક્ષેત્ર વિદેહ વિચરંત ॥ ત્રિહું જવણે ઠવણા  
 સાસવ અસાસવ હુંત । તે સગલા ત્રિકરણ પ્રણમું શ્રોઅરેહંત ॥ ૨  
 ॥ કાલિક ઉત્કાલિક અંગ અનંગ પવિઠ । નયઝંગ નિરૂપેયા સ્થા  
 દ્વાદ મિતસિઠ ॥ જવિજન ડપગારી જારી જિન ડપદેશ । શ્રુત  
 અવણે સુણતાં નાસે કોમિ કલેશ ॥ ૩ ॥ બ્રહ્મજઠ્ઠ અસોકા સા  
 સન સુરિ સુવિચાર । સંઘ સાનિધકારી નિરમલ સમકિત ધાર ॥  
 ચિંતા હુલ્લ ચૂરે પૂરે મનહ જગીસ । ધ્યાન તેહનો ધરિયે કદે જિન  
 લાજ્જસૂરિસ ॥ ૪ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ અથ સમવસરણવિચારગર્ભિત સ્તુતિઃ ॥

॥ મિલ ચોવિહ સુરવર વિરચે ત્રિગમો સાર । અઢી ગાઢ  
 ઝેંચો પિહુલો જોયણ પાર ॥ વિચ કનકસિંહાસન પદમાસન મુખ  
 કાર । શ્રીતીરથનાયક વૈસૈ ચોમુખધાર ॥ ૧ ॥ તીન ડત્ર સિરો  
 વર ચામર દોલે રંદ । દેવડંડુજિ વાજે જાજે કુમતિ પંદ ॥ જા  
 મંરુલ પૂંઢે ઝલકે જાણ દિનંદ । તિહુઅણ જન જવિ મન મોદે  
 સયલ જિનંદ ॥ ૨ ॥ इत्य ज्ञाव सुठवणा नाम निक्षेपा ध्यार ।

जिण गणहर ज्ञाख्या सूत्र सिद्धांत मज्जार ॥ जिनवरनी पद्मिमा  
जिन सरखी सुखकार । शुभ्र ज्ञावे वंदो पूजो जग जयकार ॥ १ ॥  
डुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । ज्वल्लेद रुपाणी मीठी  
अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिवूजो ज्वि प्राणी । सुय  
देवि पसार्ये पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेतुंजगिरि नमिये ऋषज्जदेव पुंरुरीक । शुभ्र तपनी म  
हिमा सुषा गुरुमुख निरञ्जीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य  
वंदनीक । करिये जिन आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र  
स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अकृत गिणतीसे चढता तिम  
चालीस ॥ पंचासनी पूजा ज्ञाषइ इम जगदीस । तेहिज नित प्र  
णमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्कनी पूनम चेत्र मास  
शुभ्र वार । विधिलेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोढे  
वैरसलग धरिये ज्ञान उदार । करता नर नारी पामे ज्वनो पार  
॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्रेसरीदेवी से  
विय नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आर्षांद । जंणे  
गणनायक श्रीजिनछाजसूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद  
महिमा ज्ञाणी ज्ञान दिषांद ॥ आसु मधु उज्ज्वल सातमधी नव  
दीस । नव आंबिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरि  
हंत बलि सिद्ध आचारज उवज्ञाय । मुनि दरसन तिम बलि नाण  
चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय दज्जार । सह  
जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ बारस अरुढचीस पण वी  
स सँग वीस सार । सरुसठ इक्कावन सितर पञ्चास प्रकार ॥ इत्य

संख्या काष्ठसग परदक्षा परिणाम । आगम ज्ञापित विधि इम  
कीजे अज्जिराम ॥ ३ ॥ चक्रेसरिदेवी तिम विमलेसर जस्क । श्री  
पावतणीपर पूरे बंठित सुख ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र जवि  
प्राणी । जिनद्वर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अजिनव कामी  
जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ ध्यानक  
बीसे आगम ज्ञप्तिया बीतराग गुण जुक्ताजी । जे नर अंतर आ  
तम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन  
सूरी धिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र  
ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत  
तिष्ठ जूपोजी । ए पद निज जवि जावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो  
जी ॥ २ ॥ दोय सदस गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी ।  
इयज्जावसें विधि परकासे तीर्थकर पद खासोजी ॥ तीजे जव  
वर बीस ध्यानकनी सेव करे जव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे  
निज आत्म आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल  
हे मोटो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गढ जिन आज्ञाधारी पा  
टोधर वरदाईजी ॥ जिन सौजाग्यसूरिंद पसायें हंस सूरिंद गुण  
गावेजी । संघ सकलकं सानिधकारी मन बंठित फल पावेजी ॥  
४ ॥ इति श्रीबीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ बीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज धिवराण । ठवजाय साहु  
नाण दंसण विनय पढाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम  
जिनजाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो बीसे ठाण ॥ १ ॥ ठ  
त्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । बलि काल जघन्ये जिनवर



वीम गंजीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे  
थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक बे वेला जिनवंदन  
त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ कान्तग  
गुण स्तवना पूजा प्रज्ञावना सार । इम शासन वञ्चल करतां न  
वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जस्क  
जस्कणी सुरपती बेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे  
मन रंग । देवचंङ् आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुस्क सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥  
नवपदमांहे मुख्य बखाण्या कृष्णादिक जिनचंदाजी ॥ ज्ञाव धरी  
ने जे ज्ञवि वंदे ठेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो  
पावो सुस्क अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिदंत सिद्ध सूरि उवद्याया सकल  
मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं  
पारीजी ॥ नवमें जव ज्ञवि सिवपद पावे प्रबचन वाणी साखीजी ।  
धीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे ज्ञाखीजी ॥ २ ॥ द्वादस आठ ठीसे  
गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । समस्त इकावन वलि जैती  
सितर पञ्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम  
थी नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंबिल नव  
विहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलचक्र चक्रेसरीदेवी रिध सिध वंठित दाता  
जी । ज्ञानी नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर  
गह्व जिन आझाकारी पाटोधरपद चुक्ताजी । जिन सौजाग्यसूरिंद  
पसाये दंससूरिंद गुण उक्ताजी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंरुन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही  
केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजगि-

રિસિલ્લેરે સમવસરથા સુલકંદ ॥ ૧ ॥ ઇણ વઝવીલીમાં રૂપજ્ઞાદિક  
 જિનરાય । વલ્લિ કાલ અર્તાતે અનંત ચોવીલી યાય ॥ તે સવિ ઇણ  
 ગિરવર આવી ફરસી જાય । હમ જ્ઞાવી કાલે આવસ્યે સવિ મુનિ-  
 રાય ॥ ૨ ॥ શ્રીરૂપજ્ઞના ગણધર પૂંમરીક ગુણવંત । દ્વાદસ અંગ  
 રચના કીધી જેણ મહંત ॥ સવ આગમમાહે સેત્રુંજ મહિમ મહંત  
 । જ્ઞાણી જિન ગણધર સેવો કરિ ધિર ચિત્ત ॥ ૩ ॥ ચક્રેસરિ ગોમુહ  
 કવરુ પમુહ સુર સાર । જસુ સેવા કારણ આપે ઇંડુ ઉદાર ॥ દેવચંડ-  
 ગણિ જ્ઞાણે જીવિજનને આધાર । સવ તીરથમાહે સિદ્ધાચલ સિરદાર  
 ॥ ૪ ॥ ઇતિસેત્રુંજયસ્તુતિ ॥

॥ અથ શ્રીશાંતિનાથ સ્તુતિ ॥

॥ શાંતિ જિનેસર જગ અલલેસર અચેરા ઉદર અવતરિયાજી  
 । વિશ્વસેન નૃપ નંદન જગગુરુ હથળાપુર સુલ કરિયાજી ॥ ઈત  
 ઉપડવ મારિ વિકારી શાંત કરી સંચરિયાજી । જે જીવિ મંગલ  
 કારણ ધ્યાવે તે હુય ગુણગણ દરિયાજી ॥ ૧ ॥ વર્તમાન જિન સવ  
 સુલકારણ અતીત અનાગત વંદોજી । બારે ચક્રી નવ નારાયણ નવ  
 પ્રતિચક્રી આનંદોજી ॥ રામાદિક જે પુરવ સલાકા વંદત પાપ નિકં-  
 દોજી । ઇય નિક્કેપે જિનસમ જાણો કાટે જીવજન્ય વંદોજી ॥ ૨  
 ॥ અંગ ઉપાંગે જિનવર પ્રતિમા શ્રીજિન સરસ્વી જ્ઞાણીજી । ઇય  
 જ્ઞાવ વિહું જેવે પૂજા મહાનિસીધે સાચીજી ॥ વિષય નિવૃત્તી સત્  
 આરંજે વિનય તપી તે જાણોજી । શુભયોગે નહિ આરંજકારી જગ  
 વડ અંગ પ્રમાણોજી ॥ ૩ ॥ આપના સત્યે દેવી નિર્વાણી શ્રીસંધને  
 સુલકારીજી । કારણથી સવ કારજ સીજે જિનવર આજ્ઞા ધારીજી  
 ॥ શ્રીજિનકીર્તિ સૂરીશ્વર ગઢપતિ પાઠક શ્રીકૃદ્ધિસારીજી । સમ-  
 કિતધારી દેવ સદાઈ સુલસંપત્ત દાતારીજી ॥ ૪ ॥ ઇતિશ્રીશાંતિ-  
 નાથજનસ્તુતિઃ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुद्ध बंदो जावे जवियण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसैं धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन वृषजलंगन सुखदायाजी । विजय जली पुखलावड विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते बीस विख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोह मिथ्यात तिभिरज्जर नासन अजिनव सूर समाणीजी ॥ जवोदधि तरणी मोह निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो जविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासणदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचागुली माईजी । विघन विमारण संपत्तिकारण सेवकजन सुखदाईजी ॥ त्रिजुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति सवाईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनदर्ष सदाईजी ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक जाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांगन लांगित वंगित दान सुद्ध । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु बंदो ध्यावो जविजन पद्ध ॥ १ ॥ पुरण पंच महाश्रव रोधक बोधक जय्य उदार । पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेडिय दम सिव पढुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर जवियण उपर सुधिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित जाजत मद पंच वाण

॥ पंचम काल तिमरञ्जरमांहे दीपकसम सेजंत । पांचम तपफलं  
 मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम से-  
 वाकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह जणी  
 सुविचार ॥ श्रीसिद्धाधिकारदेवी अहनिशि आपो मुक्त अमंद । श्री  
 जिनलान्न मुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञान-  
 पंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमल्लि जनमं  
 व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार ।  
 ए पंच कढयाणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक  
 अधिक गुण धार । इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डगुणा  
 दोय अधिक जिनराय । मन सूखे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥  
 २ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास्त । बलि गुणनो गुणिये  
 विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान ।  
 इक चित्त आराधो साथो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर जुवण  
 वण सम्यग् दरसनवंत । जिनचंद सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंध  
 सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कढयाण  
 ॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादशीस्तुति ॥

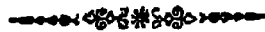
॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिणी तपनो फल  
 ज्ञाख्यो श्रीजगवंत ॥ नरनारी जावे आराधो तप एह । सुख संपत ली-  
 ला लहमी पामे तेह ॥ १ ॥ रुषजादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार ।  
 जिनमुख परकासे बेठी परखदा बार ॥ रोहिणी दिन कीजे रोहिणनो  
 उपवास्त । मन वंछित लीला सुंदर जोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनों  
 बोड्यो लान्न अनंत । विधसुं परमारथ साथे सुधो संत । डखदो

दग तेहनो नाति जाय सब दूर । बलि दिन ५ अंगे बाधे अधिको  
नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौभाग्य  
सदा जे पावे चतुर सुजाण ॥ नित घर ५ महोदधव नित नवला  
सिणागार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ परखी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गड  
चोरासी जेहने आप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चौदस  
कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम ५ संशय  
जाय ॥ १ ॥ चउबीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, क  
छपसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर गम ५  
तुम देखो चउदस पस्की होय, जूला कांड जमो तुम प्राणी साचो  
जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख,  
जविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी जाख ॥ आवश्यक  
सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरबधर इणपर  
बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो  
मन बंछित फल होय, जे जे आझा सूधी पावे ज्ञानो विधन ह  
रेय ॥ सेवक इणपर करे बीनती सूधी समकित पाय, खरतरगड  
मंरुण कुमति विहंरुण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पस्की  
चोदस धुइ संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसवज्जयं, संतिं च पसंतसवगयपावं ॥ जंघ  
गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणारे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल ज्ञावे, तेहं विनलतवनिम्मल सदावे ॥ निरुवम महप्प-  
 ज्ञावे, योसामि सुदिह सप्पावे ॥ १ ॥ गाहा ॥ सब डुक्कप्पसंतीणं,  
 सब पावप्पसंतीणं ॥ सया अजिथ संतीणं, नमो अजिअ संतीणं ॥ २ ॥  
 सिलोगो ॥ अजिथ जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं  
 ॥ तद्द य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥  
 मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अ-  
 जिअं निचिअं च गुणोहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संति  
 महा मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निबुइ कारणयं च नमं  
 सणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ डुक्कवारणं, जइअ विम-  
 ग्गह सुक्ककारणं ॥ अजिअं संतिं च ज्ञावत्तं, अज्जयकरे सरणं पव-  
 ज्ञाहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरद्धिअ, मुवरय ज-  
 रमरणं, सुर असुर गरुड जुयगवई, पयव पणिवइअं ॥ अजिअ म-  
 ह्मविअ, सुनय नय निज्जणमज्जयकरं, सरणमुवसरिअ जुवि दिवि  
 ज, महिअं सयय मुवणमै ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम  
 नित्तम सत्तथरं, अज्जव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संति  
 अरं पणमामि इमुत्तम तिज्जयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं  
 दिसत्त ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावन्निपुव्वपन्निवं च वरहन्नि मज्जय प-  
 सत्त विज्जिन्न संधिअं थिर सरिज्ज वज्जं मयगल लीलायमाण वर गंध-  
 हन्नि पत्ताण पन्थियं संथवारिहं हन्निहत्त वार्हु धंतकणग रुअग नि-  
 रुवहय पिंजरं पवर लक्खणौ वचिअ सौम्म चारु रुवं सुइ सुइम  
 णाज्जिराम परम रमणिज्ज वरदेव उंडुहि निनाय महुरयर सुहगिरं  
 ॥ ९ ॥ वेद्धत्तं ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सबज्जयं ज्ञवो हरिउं ॥  
 पणमामि अहं पयत्तं, पावं पसमेत्त मे ज्ञयवं ॥ १० ॥ रासालुद्ध-  
 त्तं ॥ कुरु जणवय हन्निणात्तर नरीसरो पढमंतत्तं मद्दचक्कव  
 त्तिज्जोए मद्दप्पज्ञावो जो बाहत्तरि परवर सहस्सवर नगर शिगम

जणवय वई बत्तीसारायवर सहस्साणु आयमग्गो चउदस वररयण  
नव महानिहि चउसठि सहस्त पवर कुवईण सुंदर वइ  
चुलसी हय गय रह सय सहस्त सामी उल्लवइगाम कोनि  
सामी आसिज्जो ज्ञारहंमि जयवं ॥ ११ ॥ वेह्म ॥ तं  
संतिं संतियरं, संतिन्नं सब जया ॥ संतिं शुणामि जिणं, संतिं वि  
हेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इस्कागु विदेह नरीसर, नरव  
सदा मुणिवसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहु  
अरया ॥ अजिउत्तम तेअ गुणोहिं महामुणि, अमिय बलाविज्ज  
कुला ॥ पणमामि ते जवज्जय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥  
१३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणाविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम,  
लठ रूव धंत रुप पट्ट सेअ मुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति स  
त्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सबलोअ ज्ञावि  
अ प्पज्जावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमल स  
सिकलाइरेअसोम्मं, वित्तिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणा  
इरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते  
अ सया अजिअं, सारीरे अबले अजिअं ॥ तव संजेमअ अजिअं,  
एस अहं शुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ जूअगपरिंरिंणिअं  
॥ सोम्मगुणोहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणोहिं पावइ  
न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणोहिं पावइ न तं तिअस गणव  
इ, सारगुणोहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥  
तिउवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणशुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं  
॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयण, संतिमहं महा मुणिं सरण मु  
वणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणणणय सिरिरइ अंजलि, रित्ति  
गण संशुअं शिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइ, शुअ म.हिअच्चिअं  
बहुसो ॥ अइ रुगय सरय दिवायर, समहिअ सप्पजं तवसा ॥

गयषांगण वियरण समुद्रं, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १ए ॥ किसलय  
 माला ॥ असुर गरुड परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देव कोमि  
 सयसंशुभं, समणसंघ परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं  
 अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयन्त पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आग  
 यावर विमाण, दिवकणग रह तुरय पदकर सएहिं दुलिअं ॥ स  
 संजमो अरण खुज्जिअ दुलिअ चल कुंमलंगय तिरीर सोहंत मऊ  
 लिमाला ॥ २२ ॥ वेदन्त ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा, वेर विज्जता  
 जति सुज्जता, आयर जूसिअ संजमपिंमिअ, सुहु सुविद्धिअ सबब  
 लोधा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ ज्ञासुर जूसण ज्ञासुरिअंगा,  
 गाय समोणय जत्तिवसागय पंजलिपेसियसोस पणामा ॥ २३ ॥  
 रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया  
 हिणं ॥ पणभिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुद्रा सन्नवणाइतो गया  
 ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहं पि पंजलि, राग दोस जय  
 मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे  
 ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंस बहुगामि  
 णिआहिं ॥ पीण सोणिअण सालणिआहिं, सकल कमल दललो  
 अणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर अणन्नरविणमिय गायल  
 याहिं, मणिकंचण पसिढिलभेहल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वरखिं  
 खिणि नेउर सतिलय वलय विज्जूसणियाहिं, रइकर चउर मणो  
 हर सुंदर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तकरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय  
 वंदिआहिं वंदिआय जस्त ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निमालएहिं  
 मंरुणोमुअप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं  
 चिल्लएहिं संगयं गयाहिं जत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि  
 आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायण ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं  
 जिअमोहं ॥ धुअसवक्खित्तं पयन्त पणामामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥



धुअवादअस्सा।।रासगण ववगणोहिं, तो देव वहुहं पयउ पणमिअ  
 स्सा ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्सा, जत्तिवसागयपिनिअआहिं ॥  
 देव वरउरसा बहुआहिं, सुरवर रउगुण पंनिअआहिं ॥ ३० ॥  
 आसुरयं ॥ वंस तद् तंति ताल मेलिए तिउरकराजिराम सद् मी  
 सएकए अ, सुइसमाणयैअ सुइ सज्ज गीअ पाय जालघंठिआहिं ॥  
 धलय मेइला कलावनेउराजिराम सद् मीसएकए अ देवनट्टिआहिं  
 ॥ हाव जाव विअमप्पगारएहिं नच्चिअण अंग हारएहिं वंदिआय  
 जस्सेतें सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिओअ तव सत्तं संतिकारयं पसंत  
 संव पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायणं ॥  
 उच्च चामर पण्णागजूअ जव मंनिआ, ऊयवर मगर तुरय तिरिव्व  
 सुलंढणा ॥ दीव समुद् मंदरदिसागयसोहिआ, सच्चिअ वसह सी  
 हंसिरिव्वसुलंढणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलका समप्पइण,  
 अदोस उवागुणोहिं जिण ॥ पसायसिण तवेण पुण, तिरिहीं इण  
 रितीहीं जुण ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसवपावया,  
 सबलोअहिअ मूल पावया ॥ संयुआ अजिअ संति पायया, हुंतु  
 मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव वल वि  
 जलं, धुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं,  
 गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मु  
 ण्ण सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउं मे विसायं, कुणउअ परि  
 साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नं  
 दिसेणमज्जिनंदिं ॥ परिताडवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे  
 नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिय, संवउरिए अवस्त  
 अशिअवो ॥ सोअवो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥  
 जो पढइ जोअनिसुणइ, उज्जउं कालंपि अजिअ संतिअयं ॥ न हुं  
 हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इउद परम

पयं, अहवा कितिं सुविन्नमं जुवणे ॥ ता तेलुकुद्धरणे, जिणव  
यणे आथरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृद्धजितशान्तिस्त  
वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशान्तिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक मनस्क निगयपदा दंरुल्लेखंगिणं, वदारूणा  
।इसंत इव पयं निवाणमगावलिं ॥ कुंदिङ्कज दंतकंति मिसन्न  
नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविड इज्ज सोलस जिणे ओसामि खेमकरे  
॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिशिज्जं जलोहिं, खय समय समीरं जो  
जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लंबा लंघए जो पएहिं, अजिअ म  
हव संतिं सो समञ्जे ढणेवं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासज्जत्ति  
प्रेष, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता  
णंतसामञ्जत्तिं, फलहइ लहु सवं वंढिअं णि ढिअं मे ॥ ३ ॥ सय  
लजयहिआणं नाममिच्छेण जाणं, विहरइ लहु डुवा निदोघट्टथं  
॥ नमिरसुर किरीडू गिठ पायारविंदे, समय मज्जिअ संती ते जि  
णिंदे जिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वट्टए देहदित्ती, विलसइ  
जुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमत्तित्ती होइ संसारवित्ती,  
जिणजुअ पयज्जत्ती हीअ चिंतोरुत्तत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं जू  
रिदिबंगहारं, फुरुगणारसज्जावो दारसिंजारसारं ॥ अणमिस्तरमणीज  
हंसणत्ते अज्जीया, इव पुणमणि बंधा कास नट्टेवयारं ॥ ६ ॥  
शुणह अजिअसंती ते कथा सेस संती, कणयरयपसंगा ठज्जए जा  
णिमुत्ती ॥ सरज्जस परिरंजा रंजनिवाणलङ्गी, घणअणघुत्ति णिक्कु  
प्पेकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयज्जंगं वट्टणिच्चं अणिच्चं, सदसद  
णज्जिज्जप्पा लप्पमेगं अणोणं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेत्तिं,  
वयण मवय णिज्जं ते जिणे संज्जरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए  
ताव मोहंययारं, जमइजय मससं तावमिच्चत्तवसं ॥ फुरइ फुरुप

( १३६ )

लंता शंतणाणं सुपूरो, पयम् मज्झिम्भसंती जाण सूरु न जाव ॥९॥  
 अरि करि हरि तिण्हु एहं बु चोरा दिवाही, समर मर मारी रुद्ध  
 खुद्धो वसग्गा ॥ पल्लय मज्झिम्भसंती किच्चये जत्तिजंती, निविमतरत  
 मोहा जत्तरालुंखिअ व ॥ १० ॥ निच्चिअडुरिअदारु दिच्चजाणग्गि  
 जाला, परिगय मिव गोरं, चिंनिअं जाण रुवं ॥ कणय निहसरेहा  
 कंतिचोरं करिज्जा, चिरधिर मिह लब्धिं गाढसंभंजिअव ॥ ११ ॥  
 अरुविनिवन्निआणं पब्बिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण  
 गुत्ति वियाणं ॥ जल्लिअ जलण जाला विंणिआणं च जाणं, जणय  
 लहु संतिं संतिनादा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिस्सं पक्क  
 पाइक्कपुस्सं, सयलपुहवि रज्जं ठक्किअं आण सज्जं ॥ तण मिव पनि  
 लग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवस्सा हुंतु ते मे पसस्सा ॥ १३ ॥  
 णससिक्खणाहिं फुल्लनितुप्पलाहिं, अणन्नरनमिरीहिं मुठ्ठिगिज्जोद  
 रीहिं ॥ लल्लिअ जुअलयाहिं पीण सोणिअणीहिं, सयसुर रमणीहिं  
 वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस किमि जकुट गंठि कासाइसार,  
 खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसण्णो कुब्बिक  
 साइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु  
 उहतासे पस्सिए चाउमासे, जिणवर दुग्गयुत्तं वड्ढरे वा पविच्चं ॥  
 पढइ सुणइ सिद्धा एह जाएइ चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेष धा  
 एह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे  
 सर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कीसर ॥ तिठ्ठंकर सोल  
 सम संति जिणवल्लह संशुअ, कुरु मंगल मम हर सुडरिअमखिवं  
 पि धुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूणामणि किरणरंजिअं मुणि  
 णो ॥ चलणजुअलं महाजय, पणासणं संभवं बुद्धं ॥ १ ॥ समिय

कर चरण नंद मुह, निबुद्ध नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुण्ड महारो  
 गानल, फुलिंग निहृद सवंगा ॥ १ ॥ ते तुह चलणा राहण, स  
 लिखंजलिसेय बुद्धिय ञ्चाया ॥ वण दवदद्धा गिरिपा यव व पत्ता  
 पुणो लब्धि ॥ ३ ॥ उवाय खुश्रिय जलनिहि, उप्पन्न कल्लोल जी  
 सणारावे ॥ संजंत जय विसंतुल, निद्वामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥  
 अविदलिअ जाणवत्ता, खणेष पावंति इब्धिअं कूलं ॥ पास जिण  
 चलण जुअलं, निच्चंविअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुअ  
 वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ मत्तंत मुक्कमिय  
 बहु, जीसरणरव जीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं,  
 निद्वविअ सयल तिहुअणाज्जोअं ॥ जे संजंरंति मणुआ, न कुणइ  
 जलणो जयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत जोग जीसण, फुरिआरुण न  
 यण तरल जीहालं ॥ जगज्जुअं नवजल य, सज्जहं जीसणाथारं  
 ॥ ८ ॥ मत्तंत कीरु सरिसं, दूर परिबुद्ध विसम विस वेगा ॥ तुह  
 नामस्कर फुरुसि द्द, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अरुवीसु जि  
 छ तकर, पुलिंद सदल सहजीमासु ॥ जयविदुर बुद्धकायर, उल्लु  
 रिअ पदिअ सज्जासु ॥ १० ॥ अविदुत्तविद वसारा, तुह नाह प  
 णाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इब्धिं ठाणं  
 ॥ ११ ॥ पल्लिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह  
 कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंजज्जलाज्जोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंज  
 म पठिव, नहमणिमाणिक पन्निअ पन्निमस्स ॥ तुह वयण पहरण  
 धरा, सीहं कुंइपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल वंतमुसलं, दीह  
 करुल्लाल वट्ठि उज्जाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजल  
 हारावं ॥ १४ ॥ जीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति  
 ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुखिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ स  
 मरम्मितिक्क खग्गा, जिग्घाय पविद्ध उडुय कवंधे ॥ कुंतविणिज्जि

न्न करि कल, ह मुक्क सिकार पउरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर  
 रिउ, नरिंद निवहा जमा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण,  
 पासजिण तुह प्पजावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,  
 चोरारि मइंद गय रण जयाइं ॥ पास जिणनाम संकि, तणेण  
 पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा जयहरं, पास जिणिंदस्स संथ  
 वमुआरं ॥ जविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥  
 राय जय जरक रक्कस, कुसुमिण डुस्सजण रिक्क पीमासु ॥ तं  
 जासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो  
 अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणातुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिउ,  
 सयल जुवणच्चिअ चलयो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन् न  
 तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयउ जय तिउं, जमिउ तिउादि वेण वीरेण ॥  
 सम्मं पवत्तिअंन, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय  
 वकिलेसा, निहय कुलेसा पसउ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिउ,  
 स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निहक्कम्म बीआ, बीआपरंमि  
 णिणो गुणसमिअ ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, इणंतु उउाणि तिउ  
 स्स ॥ ३ ॥ आचार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय  
 रिआ तह तिउं, निहय कुतिउं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय  
 गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पमिणीय कए,  
 वणित्तु सबस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाणसाहुणिज्जिअ, सादूणं जणिअ  
 सब सादज्जा ॥ तिउप्पजायगाते, हवंतु परमिणिणो जइणो ॥ ६ ॥  
 जेणाणुगयं नाणं, निव्वाणफलं च चरणमविहवइ ॥ तिउस्स दंसणं  
 तं, मंगलमुवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निउउमो सुअधम्मो, समग  
 जवंगि वग कय सम्मो ॥ गुणमुअिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

( १५९ )

हं दिसत्त ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविअ जवसत्त सिवस  
 र्म्मो ॥ नीसेत्त किलेसहरो, हवत्त सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥  
 गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुहं मइणो कुणंतु तिब्बस्स ॥  
 सिरिवद्धमाण पटुपय, मिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥  
 जियपन्निवस्काजस्का, गोमुह मायंग गयमुह षमुस्का ॥ सिरि  
 बंज्ज संति सद्धिआ, कय मयरस्का सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा  
 पन्निहयन्निबा, सिद्धा सिंघाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्ठा,  
 संति सुरा दिसत्त सुस्काणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उर्दिंतु  
 संघस्स मंगलं विज्जलं ॥ अन्नत्ता सद्धिआन्, विस्सुअ सुयदेवयान  
 समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रस्का, जस्का चन्वीस सासण  
 सुरावि ॥ सुहज्जावा संतावं, तिब्बस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि  
 णपवयणंमि निरया, विरहा कुपहात्त सब हासवे ॥ वेयावच्च गरा  
 विअ, तिब्बस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग,  
 विद्धिअ जव्वाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो  
 सुहं दिसत्त ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पव्वय वासि  
 देव देवीत्त ॥ जिण सासण विआणं, उहाणि सव्वाणि निहणंतु  
 ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासत्थि, त्तालया नवग्गहा सनस्सत्ता ॥  
 जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअह पदरेहिं ॥ १८ ॥ सहका  
 ल कंटएहिं, सविट्ठिवेहेहिं कालवेलाहिं ॥ सबे सब्ब सुहं, दिसंतु  
 सबस्स संघस्स ॥ १९ ॥ जवणवइ वाणमंतर, जोइस वमोणिआ  
 य जे देवा ॥ घरणिंद सक्क सद्धिआ, दलंतु डुरिआइं तिब्बस्स ॥ २०  
 ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गब्बइ पुरजंपणासिअ तमोहं ॥ तंतिब्बस्स ज  
 गवत्त, नमो नमो वद्धमायस्स ॥ २१ ॥ सो जयत्त जिणो वीरो,  
 जस्स ज्जिविसासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपइसासणं कुप, इ नासणं  
 सब जय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उत्तज्जसेण पमुहा, हयजय नि

वहा दिसंतु तिष्ठस्त ॥ सव जिषाणं गणिदा, रिणो णदं वंविअं  
 सव ॥ ३३ ॥ सिरि वद्धमाण तिष्ठा, दिवेष तिष्ठं समप्पिअं जस्त  
 ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसन्त सुदं सयल संघस्त ॥ ३४ ॥ पय  
 इएजदिआ जे, जहाण दिसंतु सयल संघस्त ॥ इयरसुरा विहु स  
 म्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्त ॥ ३५ ॥ इय जो पढइ तिसंजं,  
 डस्तस्यं तस्त नत्ति किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएविठ, सुनिधिअण  
 मुही दोई ॥ ३६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं  
 ॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरद्विअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिज्जणं ॥  
 सुगुरुजण पारतंतं. जवद्विअं शुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्मद्विय  
 मोह जोहा, निहय विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणयंगि वग्ग दाविअ,  
 सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त तोहा, समत्त पर  
 तिष्ठ जणिय संखोहा ॥ पन्निजग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्त  
 सत्तोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्तवाहा, हय डह दाहा सिवंध तरु  
 साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, खीरोदखिणुव अग्गाहा ॥ ४ ॥ सु  
 गुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पव्वज्जा ॥ सिवसुह  
 साहण सज्जा, जयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्जसुहम्म प्पमुहा,  
 गुणगण निवहा सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंजं नामं, नामं  
 न पणासइ जिषाणं ॥ ६ ॥ पन्निवज्जिअ जिण देवो, देवायरिअ डरंत  
 जवहारी ॥ सिरि नेमचंद सूरि, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥  
 सिरि वद्धमाण सूरि, पयमीकय सूरि मंत माहप्पो ॥ पन्निहय कसाय  
 पत्तरो, सरय ससंकुव सुहजणत्त ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, ण  
 पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर तिद्धसिद्धं, तज्जाणत्त पणय  
 मुगुणजणत्त ॥ ९ ॥ पुरत्तं डल्लह महिव, ल्लहस्त अणहिल्ल वारुए  
 पयसं ॥ मुक्कावि आरिज्जणं, सीहेणव दवत्तिंगि ग्या ॥ १० ॥ ६

( १३१ )

समञ्चरेय निसिवि, प्फुरंतु सञ्चंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरेशव सूरि  
जियो, सरेण हयमहिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्त पत्त किन्ती, पय  
मिअ गुत्ती पसंत सुहसुत्ती ॥ पदय परवाइ दिन्ती, जिणचंद जई  
सरो मंती ॥ १२ ॥ पयमिअ नवंग सुत्तठ, रयणुक्कोसो पणासिअ  
पडसो ॥ जवज्जीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥  
॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणबंधु रोधणिअं  
॥ सिरि अजयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय  
सावय संतासो, हरि व सारंग जग्ग संदेहो ॥ गय समय दप्प द  
लणो, आसाइअ पवर कवरसो ॥ १५ ॥ जीमजव काणसमिअ,  
दंसिअगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुत्त, सूरि जिणव  
ल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरठिअ सञ्चरणो, चउरणुत्तंग प्पहाण  
सञ्चरणो ॥ अस्सममयराय महणो, उट्टमुहो सइइ जस्स करो ॥  
॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावत्तठ जत्त  
॥ गुरुगिरि गरुत्त सरहिब, सूरि जिणवल्लहो होत्ता ॥ १८ ॥ जुग  
पवरागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया जव्वा ॥ जेण जिणवल्ल  
हेणं, गुरुणा तं सब्बा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअ पवर पवयण, सि  
रोमणी वूढ डुव्वद खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व सइइ सत्ताणता  
णकरो ॥ २० ॥ सञ्चरिआण महीणं, सुगुरुणं पारतंत मुव्वइइ ॥  
जयइ जियइ जिणदत्त सूरि, सिरि निलत्त पणाय मुणितिलत्त ॥  
२१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंजयनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीपष्ठमस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरत्त विग्घं, जिणवीराणाणु गामि संघस्स ॥  
सिरि पासजियो थंजण, पुरठिउ निठिआनिहो ॥ १ ॥ गोयम सु  
हम्म पमुहा, गणवइणो विहिअ जव सत्तमुहा ॥ सिरि वद्धमाण  
जिणति, व सुञ्चयंते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे, जिण



वेयावच्च कारिणो संति ॥ अरुहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघसंति  
 करा ॥ १ ॥ सिरि अंजणय छिअ पा, ससामि पयपन्नम पणय पा  
 णीणं ॥ निहलिअ डुरिअ विंदो, धरणिंदो हरउ डुरिआइं ॥ ४ ॥  
 गोमुहपमुक्क जस्का, पणिहय पणिक्क पक्क लस्का ते ॥ कयसुगु  
 णा संघ रस्का, हवंतु संपत्त सिवसुस्का ॥ ५ ॥ अप्पणिचक्का पमुहा,  
 जिण सासण देवयाउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु  
 संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासच्चउर, पुरहिउ वद्धमाण  
 जिण ज्ञत्तो ॥ सिरि वंज संति जस्को, रक्कउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥  
 खित्तिगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया ताउ ॥ निवुइ पुर प  
 हियाणं, जव्वाण कुणंतु सुस्काणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विदि  
 पहरि उज्जिण कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सब्बहा इ  
 रउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिब्बवइ वद्धमाणो, ज्योसरो संगउ सुसंघेण  
 ॥ जिणचंदो जयदेवो, रक्कउ जिणवल्हहा पडुमं ॥ १० ॥ सो  
 जयउ वद्धमाणो, ज्योसरो षोस रुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा जय  
 देवा, पडुणो जिणवल्हहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्ह पाए,  
 जयदेव पडुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणोसरव, द्दमाण तिब्बस्स  
 बुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मत्तंति कुणंति जेय कारंति ॥  
 मणसा वयसा वज्जसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्त  
 गणो नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय वायपए,  
 नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठे स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसइ  
 रविसनिष्सासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ जवेजवे  
 पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्त  
 वनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रज्ञाणा, मुद्योतकं दलितपापत  
मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं जवजले  
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, उ  
द्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्लङ्घितयचित्तरुदरैः, स्तो  
त्र्यै किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्दुम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विना  
पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिविंगतत्रपोऽहम् ॥ बा  
लं विहाय जलसंस्थितमिडुर्बिब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा  
ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद् शशांकरांताम्, कस्ते क  
मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को  
वा तरेतुमलमंभुनिधिं जुजाज्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भ  
क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी  
र्यमविचार्य मृगोमृगेंद्रं, नाच्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्  
॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वन्नक्तिरेव सुखरीकुरुते  
बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मथौ मधुरं विरौति, तच्चारुचात्र  
लिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन जवसंततिसंनिबद्धं,  
पापं कृषात्कथमुपैति शरीरज्ञाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी  
खमशेषमाशु, सूर्याशुजिह्ममिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति  
नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारज्यते तनुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥  
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदर्बिंडः  
॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि  
जगतां धुरितानि हन्ति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रज्ञैव,  
पद्माकरेषु जलजानि विकाशज्जांजि ॥ ९ ॥ नात्यज्जुतं जुवन  
जुषयज्जून नाथ, जूनैर्गुणैर्जुवि जवंतमज्जिष्ठवंतः ॥ तुल्यं जवंति  
जवतो ननु तेन किं वा, जूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा ज्वंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति  
जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं  
जलनिधेरशितुं क श्चेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिज्जिः परमाणु  
जिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामञ्जृत ॥ तावन्त एव खलु तेऽप्य  
णवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं क  
ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगद्वितयोपमानम् ॥ विं  
कलंकमलिनं क निशाकरस्य, यद्वासरे ज्वति पांडुफलाशकृष्णम्  
॥ १३ ॥ संपूर्णमंरुलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव  
लंघयन्ति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति  
संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाजि,  
नीतिं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पान्तकालमरुता चलि  
ताचलेन, किं मंदरादिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमव  
र्तिरपवाज्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगन्नयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गन्धो न  
जातु मरुतां चलित्ताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः  
॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगन्धः, स्पष्टीकरोषि सदृसा  
युगपज्जगन्ति ॥ नांजोधरोदरनिरुद्धमहाप्रज्ञावः, सूर्यातिशायिमहि  
मासि मुनींश्च लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहाधकारं,  
गन्धं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमन  
रूपकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकविंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु  
शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेऽदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ नि  
ष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जैवज्जाननैः  
॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विज्ञाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिह  
रादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु  
काचशकले किरणाकलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव  
दृष्ट्वा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन ज्वता नृ

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ज्ञवांतरेपि ॥ ११ ॥ स्त्री  
 णां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी  
 प्रसूना ॥ सर्वा दिशो दधति ज्ञानि सदस्त्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन  
 यति स्फुरदंशुजालम् ॥ १२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस,  
 मादित्यवर्षाममलं तनसः परस्तात् ॥ त्वामेव सन्ध्यापलज्य जयंति  
 मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीर्द्विधाः ॥ १३ ॥ त्वामव्ययं वि  
 ज्ञुमर्चित्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणामीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगेश्वरं  
 विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ १४ ॥  
 बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि ज्ञुवनत्रयशंक  
 रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव जग  
 वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ १५ ॥ तुज्यं नमस्त्रिजुवनार्चिहराय नाथ,  
 तुज्यं नमः क्लिततलामलज्जुषणाय ॥ तुज्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व  
 राय, तुज्यं नमोजिनज्जबोदधिषोषणाय ॥ १६ ॥ को विस्मयो  
 ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥  
 द्वेभैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो  
 ऽसि ॥ १७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माज्जाति रूपममलं  
 ज्वतो नितान्तम् ॥ स्पष्टोत्सृष्टिकरणमस्ततमोवितानं, विंबं रवेरिव  
 पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ १८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि  
 भ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ विंबं वियद्विलसदंशुलताविता  
 नं, तुंगोदयाद्दिशिरस्तीव सहस्ररश्मेः ॥ १९ ॥ कुंदावदातचलचाम  
 रचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छांकशु  
 चिनिर्जरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंजम् ॥ २० ॥ उग्र  
 तयं तव विज्जातिशशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रता  
 पम् ॥ मुक्तामलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयन्निजगतः परमेश्वर  
 त्वम् ॥ २१ ॥ उन्निद्धेमन्वपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूख

शिखाजिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेद् धत्तः, पद्यानि त  
 त्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३१ ॥ इत्थं यथा तव विजृतिरजृज्जिने  
 इ, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रज्ञा दिनकृतः प्रह  
 तांधकारा, तादृकुतोग्रहणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३२ ॥ श्र्येत  
 न्मदाविलविलोककपोलमूल, मत्तभ्रमदभ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ  
 रावताभ्रमिन्नमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा जयं जवति नो जवदाश्रिता  
 नाम् ॥ ३४ ॥ जिन्नेजकुंजगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकर  
 जूषितजूमिन्नागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति  
 क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,  
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु  
 खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं  
 समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फलिनमुत्कण्ठमापतंतम् ॥ आक्राम  
 ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः  
 ॥ ३७ ॥ वल्गुचतुरंगजगर्जितजीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि नू  
 पतीनाम् ॥ उद्यद्देवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु  
 जिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रजिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावता  
 रतरणातुरयोधंजीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्ज्ञपजेयपक्ता, स्ववत्पाद  
 पंकजवनाश्रयिणो लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अंजोनिधौ क्लृप्ततजीषणन  
 क्रचक्र, पाठीनपीठजयदोह्वणधामवाग्नौ ॥ रंगतरंगशिखरस्थितया  
 नपात्रा, स्वासं विहाय जवतः स्मरणाद्वज्जन्ति ॥ ४० ॥ उद्धूतजी  
 षणजलोदरज्जरज्जुमाः, शोच्यां दशामुपगताच्युतजीविताशाः ॥  
 स्ववत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या जवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः  
 ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगरकोटिनिघृ  
 ष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विग  
 तबंधजया जवंति ॥ ४२ ॥ मत्तधिपेदमृगराजदवान्लादि, संग्राम

वारिधिमहोदरबन्धनोष्ठम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति जयं जियेव,  
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्वजं तव जिनेन्द्र  
गुणैर्निबद्धां, जक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो  
य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४  
॥ इति जक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशान्तिर्लिख्यते ॥

॥ ओ ओ जग्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वं मेतत्, ये या  
त्रायां त्रिभुवनगुरोराहतां जक्किन्नाजः ॥ तेषां शान्तिर्भवतु जवताम  
ईडादिप्रज्ञावा, दारोग्यश्रोष्ट्र तेमतिकरी क्लेशविध्वंसदेतुः ॥ १ ॥  
ओ ओ जग्यलोका इह हि जरतैरावतविदेहसंज्ञवानां, समस्तती  
र्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः  
सुधोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेडैः सह समागत्य सविन  
यमईन्द्रद्वारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाङ्गिग्रे, विहितजन्माजिषेकः,  
शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन  
गतस्त पंथाः ॥ इति जग्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं वि  
धाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं  
इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहः ॥ ॐ पुण्याहं १, ग्रीयं  
तां २, जगवन्तोऽहन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रै  
लोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥  
ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विम  
ल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०,  
स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग  
१५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जि  
नेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्वन्दन २३, संप्रति २४,  
एते अतीत.

## ॥ चतुर्विंशतितिर्थकराः ॥

॥ ॐ श्रीरुषज १, अजित २, संजव ३, अजिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रज ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रज ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंभ १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रज ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोष्टिल ९, शत कीर्ति १०, सुवत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, जंङ्कर २४.

॥ एते ज्ञावितीर्थकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा ज्ञ वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु र कंतु बो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, हृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, ज्ञानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंज १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्थ ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रज्ञावती १९, पद्मा

( १३ए )

२०, वज्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तु बुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, जृ कुटि २१, गोमेष २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, डुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, जृकुटि ८, सुतारका ९, अ शोका १०, मानवी ११, चंदा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणा १६, बला १७, धारिणी १८, धरणाप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सि द्धायिका २४, एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्ति, कान्ति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयन्ति ते जिनेन्द्रः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंगला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वस्वमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोध्या १३, अब्रुसा १४, मानसी १५, महामानसी १६, एताः षोडशविद्यादेव्यो र कंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रज्ञृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रम णसंयस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ अद्याश्चंभूमूर्त्ति गारकबुधवृहस्पतिशुक्रशनिश्चरराहुकेतुसहिताःसलोकपादाःसोमयम वरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत



विश्वं जवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबन्धिबंधु  
 वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो जवंतु ॥ अस्मिंश्च जूमं  
 मले आर्यतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस  
 र्गव्याधिदुःखदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्जवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिश्च  
 द्विद्विमाङ्गल्योत्सवाः जवंतु ॥ सदाप्राङ्मूर्तानि दुरितानि पापा  
 नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा जवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना  
 म्नाय, नमः शान्तिविधाधिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्य  
 र्चिताङ्गये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे  
 गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ न  
 न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्,  
 नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा  
 जसन्निवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेष्वांतिम् ॥ ४ ॥  
 श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्जवतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्जवतु, श्रीराज  
 सन्निवेशानां शान्तिर्जवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्जवतु, ॐ स्वाहा  
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनामाय स्वाहा ॥ एषा शान्तिः प्रतिष्ठा  
 यात्रास्नात्रावसानेषु, शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू  
 पवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपाठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचि  
 धनुः पुष्पवस्त्रश्चंदनाञ्जणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां  
 कंठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति  
 ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गार्धंति च मंगलानि ॥ स्तो  
 त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कढ्याणञ्जाजोहि जिनाजिषेके ॥ १  
 ॥ अहं तिष्ठयरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह  
 शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसमं जवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु  
 सर्वजगतः, परहितनिरता जवंतु जूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं,  
 सर्वत्र सुखी जवंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः कथं यान्ति, विद्यंते वि

अवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हन्नयो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेन्द्रो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येन्द्रो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेन्द्रो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुन्द्रो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पञ्च नमस्कारः, सर्व पापहृयंकरः ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं जवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ क मखप्रज्ञसूरींशे, ज्ञाषते जिनपंजरम् ॥ ३ ॥ एकजन्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोज्ञलिपितं सर्वं, फलं स लज्जते ध्रुवं ॥ ४ ॥ जू शय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोज्जविवर्जितः ॥ देवताये पवित्रात्मा, श्रमसात्सर्वजने फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्तिं, सिद्धं चकुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वा र्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनक्षेत्री, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वांशां श्रीजिनो रक्ते, दाक्षेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणांशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवि त् ॥ ९ ॥ पश्चिमांशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थं कृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं जगवानर्हं, ज्ञाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्तं तु सकलं कुलं ॥ ११ ॥ शृङ्गो मस्तकं रक्ते, दजितोपि बिलोचने ॥ संज्ञ वः कर्णयुगलं, नासिकां चाग्निनंदनः ॥ १२ ॥ उष्ट्रौ श्रीसुमती र केतु, दंतान्पद्मप्रज्ञो विजुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रज्ञो विजुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरकेतु, हृदयं श्रीसुशोतलः ॥ श्रे

( १४२ )

यांसो वादुयुगलं, वासुगूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्ते,  
वनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोऽपुदरास्थीनि, श्रीशान्तिर्नाजिममलं  
॥ १५ ॥ श्रोकुंशुर्गुह्यकं रक्ते, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिह्वरूपृष्ठिं  
शं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्तेत्, श्रीनेमि  
भरणद्वयं ॥ श्रोपाश्वर्चनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥  
पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्तेदशेषपापेभ्यो, वी  
तरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंक  
टे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, जूतप्रेतजयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे  
प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपी  
डिते ॥ २० ॥ नाकिनी शाकिनीयस्ते, महाग्रहणार्दिते ॥ नद्युक्ता  
रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुन्वाय, यः  
स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लज्जते सुखसंपदं ॥ २२ ॥  
जिनपंजरनामेदं, यः स्मरंत्यनुवासरं ॥ कमलप्रज्जराजेंद्र, श्रियं स  
लज्जते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुन्वाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेत  
ज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सःकमलप्रज्जराख्यां, लक्ष्मीं मनोवाञ्छित  
पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपद्मोद्यवरेण्यगङ्गे, देवप्रज्ञाचार्यपदाब्जहं  
सः ॥ वादींश्चूनामशिरेषजैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रज्जराख्यः  
॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

**॥ अथ स्तोत्रोमैस्तोत्रलिखणा ॥**

॥ अथ वडानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कल्पन्तरुं अयाण चिंतय मणजितरिं, किं चिंतामणि  
कामधेनु आरादो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसांतर लंघय,  
रयणरासि कारणा किसे साधर उल्लंघय ॥ चवदे पूरब सार युग लद्ध  
ए नवकार, सयल काज मदियल सरे डुत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ के

बलि ज्ञासिय रीत जिके नवकार आराहै, जोगवि सुख अणंत  
 अंत परम प्यसाहै ॥ इण जाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु  
 परि, इण जाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो  
 जपे अर्चित चिंतामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि  
 नियगेह ॥ १ ॥ निय सिर ऊपर जाण मज्ञ चिंतवै कमल नर,  
 कंचणामय अठदल सहित तिहां माहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अ  
 रिहंतदेव पञ्चमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पदरेवि पढम पय  
 चित्ते नियमणि ॥ निवारय चञ्च गइ गमय पामिय सासय सुख,  
 अरिहंत जाणे तुम लहो जिम अजरामर मुख ॥ ३ ॥ पनर जे  
 य तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे, राते विदुमतणे वन्ननिय सो  
 हग साहे ॥ राती धोती पहर जपै सिद्धिदिं पुढे दिसि, सयल लोय  
 तिह नरहि होइ ततखिलसैंवसि ॥ मूलमंत्र वशोकरण अवर स  
 हू जगधंद, मणमूली उग्रय करे बुद्धि होणजाचंव ॥ ४ ॥ दक्षिण  
 दिसि पंखनी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित  
 उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणो लाज ऊपर जे ध्यावे, पदरे  
 पीलावत्थ तेह मन बंठिय पावै ॥ इण जाणे नव निधि हुवेए  
 रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पावखी चामर उच्च सिर  
 जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवजाय सीस पाढंता पञ्चिम, आराहिजे  
 अंग पुढ धारंत मणोरम ॥ पञ्चिम दिसि पंखनीय कमल ऊपर सु  
 हजाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रखे  
 विडुर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विषा जे जपे तिहां फल  
 सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु उत्तर विज्ञाग सामला वइछा, जि  
 ण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिह ॥ मण वयण काएहिं  
 जपे जे एके जाणै, पंचवन्न तिहां नाण जाण गुण एह पमाणे ॥  
 अनंत चौबीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो पद दिसिअ  
 गणोहिं, सब पावप्पणासणो पद जपनेरोहिं ॥ वायव दिसि जाएह  
 मंगलाणं च सबेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पणतिं ॥ चिहुं दि  
 सि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु  
 जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रज्ञाव धरणिंद हुठ  
 पायालह सामी, समलोकुपर उपन्न जिल्ल सुर लोयह गामी ॥  
 संबल कंबल बे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव षो  
 नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन बंढिय करे जोगी लियो मता  
 ण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ ठीके बैगे  
 चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्ठि हुई फूल माल नवकारह  
 नामी ॥ बाठरू आचारंत बाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही  
 उयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सबे सरे इरत परत  
 विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर  
 धारु संकट टले राजा वसि होवे, तिठंकर सो होइ लाख गुण वि  
 धिसुं जोवे ॥ साइण डाइण जूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि  
 व्याधि ग्रहतणी पीरुते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सबे  
 नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय जाण करंत ॥  
 ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण  
 उठमन्त्र एह गुण पार न जाणुं ॥ जिम सत्तुंजय तिठराठ महिमा  
 उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिठंकर  
 गणहर पणिय चवदह पूरब सार, इण गुण अंत न को कहे गुण  
 गिरुठ नवकार ॥ १२ ॥ अरु संपय नव पय सहित इणसठ लहु  
 अरकर, गुरु अरकर सत्तैव इह जाणो परमरकर ॥ गुरु जिण बल्लह  
 सूरि ज्ञे सिव सुखह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु दुक्क  
 निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवैइक चित्त, पंच

तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारा-  
 मंमलमंमितः ॥ १३ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥  
 नमामि विंबमाईत्यं, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अह्यं निर्मलं  
 शांतं, बहुलं जाड्यतोद्धितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतर-  
 घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभ्रं स्फीतं, सात्त्विकं राजसंमतं ॥ तामसं-  
 विरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं  
 विरसं परं ॥ परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णी द्विवर्णी च,  
 त्रिवर्णी तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णी महावर्णी, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥  
 सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्धूतं त्रांतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं  
 बोतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥  
 ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्द्धदारुण्यस्तु-  
 वर्णीतः, सरेफो विंडुमंमितः ॥ तूर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-  
 माहितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषजाद्यां जिनो-  
 त्तमाः ॥ वर्यैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, व्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥  
 नादश्चक्षुसमाकक्षो, बिंडुतीलसमप्रज्ञः ॥ कलाकृषसमासांतः, स्वर्णाजः  
 सर्वतो मुखः ॥ २२ ॥ शिरसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥  
 वर्णानुसारसंलीनं, तर्धकृन्मंमलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रज्ञपुष्पदंतौ,  
 नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ विंडुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसंचमौ  
 ॥ २४ ॥ पद्मप्रज्ञवासुपुण्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ सिरिई स्थिति-  
 संलीनौ, पार्श्वमल्लोजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्व, हर-  
 स्थाने नियोजिताः ॥ मायावीजाकरं प्राप्ता, श्रुतुर्विशतिरर्हतां ॥ २६ ॥  
 गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविर्वर्जिताः ॥ सर्वदा सर्वकालेश्च, ते जंवंतु  
 जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यज्ञकं, तस्य चक्रस्य या विज्ञा ॥  
 तयाद्यादितसर्वाङ्ग, मामांदिनस्तुलाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य यं  
 मामांदिनस्तुराकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मामांदिनस्तुलाकिनी ॥ ३० ॥

देव० मामां हिनस्तु काकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामां हिनस्तु-  
 शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामां हिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देव०  
 मामां हिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामां हिसंतु पक्षगा ॥ ३५ ॥  
 देवदे० मामां हिनस्तु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामां हिसंतुराक्षसा  
 ॥ ३७ ॥ देवदे० मामां हिसंतु वह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामां हिसं-  
 तु सिंहाकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामां हिसंतु दुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०  
 मामां हिसंतु जूमिषा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुञ्जा, तस्या या  
 ज्ञुविलब्धयः ॥ तान्निरञ्ज्यद्यतज्योति, रहं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥  
 पातालिवासिनो देवा, देवाञ्जूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे  
 रहंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥  
 ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरहंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाञ्जुत-  
 वेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेऽप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रजा-  
 वतः ॥ ४५ ॥ ङँही श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंकी सरस्वती,  
 ज्ञयां वा विजया नित्यां, क्लृप्ता जितामदङ्गा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-  
 बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौंडी, कला  
 काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तते या जग-  
 त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कार्तिं कीर्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो  
 गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीरुषिमंरुलस्तव ॥ ज्ञापितस्तीर्थ, जगत्-  
 त्राणकृतेनयः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले बन्धौ, जले डुगें गजे हरौ  
 ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यत्र-  
 ष्टा निजं राज्यं, पदत्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीत्रष्टा निजां लक्ष्मीं,  
 प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ ज्ञार्थार्थी लज्जते ज्ञार्थी, पुत्रार्थी लज्जते  
 सुतं ॥ वित्तार्थी लज्जते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे  
 रूपे पटे कांस्थे, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः,  
 गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ जूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुग्धि वा

जुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वज्ञीतिविनाशकं ॥५४॥ जूतैः प्रे  
 तैर्ग्रहैर्द्वैतैः, पिशाचैर्मुञ्जलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्देहै, मुच्यते नात्र  
 संशयः ॥ ५५ ॥ जूर्जुवः स्वस्वपीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥  
 तैःस्तुतैर्वदितैर्दृष्टै, र्थत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्यं महा  
 स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या  
 पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्नादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥  
 अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं  
 प्रातः, र्थे पठति दिने दिने ॥ तेषां न व्याघयो देहे, प्रज्वंति न चापदः ॥  
 ५९ ॥ अष्टमासावधि यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे  
 तन्महातेजो, जिनविंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते बिंबे,  
 ज्ञवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥  
 ६१ ॥ विश्ववन्द्यो ज्ञवेध्याता, कळयाणानि च सोश्रुते ॥ गत्वा  
 स्थानं परं सोपि, ज्ञूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा  
 स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणज्जापात्, लज्जते पदमु-  
 त्तमं ॥ ६३ ॥ इति रुषि मंथल स्तोत्रं ॥ केपकश्लोकनिराकृत्य  
 मूलयंत्रकळयानुसारेण लिखितं गणि । श्रीकृष्णकळयाणोपाध्यायै  
 तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्त्रे तस्यैव ना  
 मानि । मौक्तिसौदाजिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः । निर्वि  
 कल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥  
 २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः ॥ निर्जयो निरहं  
 कारो । निर्विकारोऽपि निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शांतः । नि  
 ज्ञयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्म्मो निष्कलप्र  
 च्छुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशङ्क



प्रतिमश्लेष, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो ।  
 नैष्ठिकः शब्दवर्जितः ॥ अनिद्यो महत्पूतात्मा । जगत् शिखरशेखरः ॥६॥  
 निःशब्दो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोऽपि योगात् शुभं  
 प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरौ अमरः सिद्ध । अर्चितः अ-  
 कृत्यो विष्णुः ॥ अमूर्त्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥ ८ ॥  
 अनिद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो जवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथः,  
 बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान  
 लोचनः ॥ अठेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशाल्यविवर्जितः ॥ १० ॥  
 अजेयसर्वतो जडः । निष्कषायो ज्ञवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ॥  
 वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजानंद । अवाङ्मानस  
 गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत  
 विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्मवर्जितो महात्मानः ।  
 लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरः शंभुः । विश्ववेदी  
 पितामहः ॥ सर्वज्ञूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनं-  
 दरूपचैतन्यो । जगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्य-  
 क्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥  
 गौरवादित्रयादूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अजयः प्राप्तकैव-  
 ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र-  
 दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स-  
 र्वेशः सतसुखावासः । जिनेशो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्पूतपरम  
 ज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोजगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्य-  
 कारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो  
 सुवर्नाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं  
 विसुक्तो मुक्तिवल्लभः ॥ योगीशो नादिसंसिद्धः । निरीहो ज्ञानगोच-  
 रः ॥ २१ ॥ सदाशिवां चतुर्वक्त्रः । सत्सौख्यस्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्र

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्ठमूर्तिकः ॥ ११ ॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः ।  
 सर्वपापविवर्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वजुतहितकरः ॥ १२ ॥  
 स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानन्द ।  
 चैतन्यश्चैत्यवैजवः ॥ १४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह  
 तांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ १५ ॥ महा  
 देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाज्ञावो महादर्शः । म  
 हामुक्तिप्रदायकः ॥ १६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा  
 शमकः ॥ महर्द्विको महावीर्यो । महान्तिकपदस्थितः ॥ १७ ॥ महा  
 पूज्यो महाबन्धो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुण्यो ।  
 महामहिम अच्युतः ॥ १८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोध । एकानेकवि  
 निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ २० ॥ महासूरो  
 महार्थीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाह  
 द्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मांरो मारविहंसो । निष्कामो विषयाच्यु  
 तः ॥ जगवंतामहाघ्रांतो । शान्तिकल्याणकारकः ॥ ३१ ॥ परमात्मा  
 परंज्योतिः । परमेष्ठी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानन्द । परंपरमश्रा  
 त्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ ना  
 कृतिं नाहरो वर्णी । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त  
 जसंबोधः । संसारबेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्मजित्  
 धर्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोधसत्सु जगद्बन्धो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥  
 स्वयंजूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विजवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो  
 महातातः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपर्णो । देवदेवेश  
 नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो जवविध्वंसी । योगिनी ज्ञानगोचरः ॥  
 जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् जव्यसं  
 बन्धः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र  
 काशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्जो जगत्स्वामी । इन्द्रबन्धः सुरर्चितः ॥ नि

अपंचो निरातङ्गो ॥ निःशेषकेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक  
संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र  
शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः ॥  
ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीज्ञ  
स्वाधुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्नः पारम्ये परमविभुषस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणानाम  
पि गुणगुरौर्गुणमनलम् ॥ नलम्भं लम्भं त्वाधिपमिह नयैस्सर्वकथनं  
। नुवन्निः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागमृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रातः स्तोतुं  
किल निरवकाशोप्यहमिहो । द्यतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोश्चावच  
वचः । गृणीयां सह्यं तत्तनुजुव इवेष्टार्थप्रतिज्ञूपदोपास्ते पार्थास्तन  
यजनयिष्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकांशामासूनोधुतनिधनमूनोयवसु  
ना । सुनामन्नोडुनो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोज्ञानो नु  
वनजवने नो वृषज्जरं । व्यधांमोद्वादेनोरयमथनतेनोत्कटविपत् ॥ ३ ॥  
सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । जगन्नय्यारामेमरकुरुहवामे  
यजिनपाः ॥ इतोऽग्राक्तग्रामे शितरसमकामेषुविजयो । त्वमर्काली  
ज्ञामे दुरमदजघामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चितरमपारे  
जुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ धुतारेकेतारे  
क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे द्विद्वारे जवदहनवारे कुरुकपां  
॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्तरान  
हिमिषुनमाराव्ययविजो ॥ ज्वलच्चस्योदारात्विषधरकुमाराधिपतिता  
। मनुक्रीशागारावतुजिनमहाराजसज्जवान् ॥ ६ ॥ दिशश्चीमान्दे  
वव्रजविहितसेवः कुशलता, लताजोतेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥  
तमाज्ञाज्ञोमेवः परिकरिहरेवत्सलसदा, सदानंदकेवल्यचलपदमेवस्तु  
तिरुते ॥ ७ ॥ कजन्माहंकायंकिरवगणदंकीर्तिधवलं, कुबेरेज्यं

कूहाव्रततिपरशुकेतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरं  
 दवानंकंकहोपमसुरमरालंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगात्रं  
 जचकुशकदात्रंसुहृदयै रहोरात्रंछात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रज्ञो पवित्रं  
 सच्चित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्मित्रंस्तुतपुरुषवित्रंसरणकम्  
 ॥ ९ ॥ वदान्यस्वच्छन्दंद्दृगुदकजवैः पीतममलै रिहावन्यांध्रन्याः सं  
 फलजनपुस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्वाइवतुसदसव्यक्तिविकला ज  
 वारण्येष्टन्तकथमपिजवंत्वंनददृसुः ॥ १० ॥ नजानेहनेतः कुमततिमर  
 प्रावृतदृशां गतिस्मीदृक्षाणादरहरजवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य  
 ज्जिमतफलोत्सर्जनपरां त्वदारव्यांनोर्चितामणिमिवज्जन्तेस्तविधयः  
 ॥ ११ ॥ त्वमेवेशोदानींमधिवितनुतात्कामपिरुपां जवास्ताघोदस्व  
 चलनिपतितं प्रोद्धतराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर  
 णः शरण्योसिश्चेयान्प्रज्जुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयत्वंधीरत्वां  
 घरितकनकाहार्यमहिमा हिमालोप्रान्त्याब्धि प्रतिज्जटगज्जोरत्ववि  
 दितः दितःप्रत्यूहालिः शुज्जमत जगत्यावनजिना जिनाशीनश्रीरः  
 कुमतिबसुधासीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविभ्रद्दोधंपरमपुरुषः सिद्धिन  
 गरीं गरीयः साम्नःज्यंगणधरमहामात्रमहितः दितः कर्तुंकर्माष्टकहि  
 पुबलंज्जयमहा माहतीर्थेशश्रीजरमतुलमासः पृथुमहाः ॥ १४ ॥  
 महाराज स्तुत्योडुरिततरुसिन्दुरतिलको लकोनः पालाकः सकलज्ज  
 विनांमोदशमनः मनस्यश्रान्तं भेवरसरसिकादम्बइवसन् वसज्जजी  
 यात्पार्श्वप्रज्जुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीजोलोकोत्तरपद  
 मुपेतःसकलवि । ह्रवित्रंदोषालोयवसलवनेप्राप्तविज्जवः जवध्वस्त्यै  
 नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुणं  
 गणैः ॥ १६ ॥ पद्यचतुष्कंसिंहावलोकवंधुरम् ॥ ज्वन्तंसद्योग प्रथि  
 तपदवीचारिनिवहा अजस्वंविश्रामंप्रलिदधतिविश्वेश्वरसमे इदंस्थाने  
 यन्तिप्रसृमरसितोस्त्रंखलुखगाः कलावन्तंकिंनश्रुतमतसदाचारनि

रताः ॥ १४ ॥ अनन्तेतोदोषान्तकजुरुप्रकाशोधतमसं हरस्त्रोक्कुर्व  
 न्नमलकमलोद्वासमयकम् प्रबोधं व्यातन्व निततः करतः पंकदलनो ज  
 गच्चक्रुः पार्श्वोर्दिशतुकुशलं मे समयजूः ॥ १५ ॥ नितान्तं सन्तापं स  
 मतनुमतां च न्नमृतगुः कलान्निःसंपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो  
 षेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरश्चा वताक्षामापुत्रः सपदि विपदस्तार  
 कपतिः १६ स्फुरंत्यासिंदुरं निजतनुरुचाचारुप्रकृतिः महीजन्मा तद्वा  
 स्यं प्रजृतिदुःखाग्निजलदः बुधो बोधस्फूर्तिदददविरंतराजतनयो ह  
 यातो तोलोकेतनुजवनमाप्नोति बलवान् ॥ २० ॥ धरादिव्येशानः शु  
 ज्जगुरुविज्जगौरकरणः सदापायाधैमासुरगुरुरपायाङ्गिनपतिः स्थिरः  
 स्फारश्चोकस्तुतिसमुचितो ज्ञानुतनयः स्तमो विघ्नध्वंसी नकुशलकरः  
 केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठोऽथेन्यस्त्रिदसविसरं ज्योवरतया सि  
 लोके शोनूनं त्रिजगदवनात्वं कमलजः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकमलज  
 न्माधिवसना चतुर्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योऽस्युपदिशन् ॥ २२ ॥  
 प्रतीतो दैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्परार्ध्यश्रीयोगात्कमलनेत्रोऽसौ  
 सिन्नगबन् ननाकश्चिद्भिश्चातिशयज्जरवित्तस्त्रिजुवने जवाद्दहो गीतः  
 परमपुरुषो तोहरिद्वयैः ॥ २३ ॥ मदेशानोसित्वं त्रिजुवनजनैकाधि  
 पतया शिवः शश्वन्मृणां परमपददानैकसुविधेः अस्ति त्वं सर्वज्ञः सकल  
 जगदधौ धकलना न्नशूलीनोचोग्रेन च पशुपतिर्ज्ञो विषमदृक् ॥ २४ ॥  
 अवाप्तः श्रेयः श्रीप्रवितरणलोलावदलिता द्वितया अक्रोशी रुद्रमहि  
 मसारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसन्नः कृतकुमतज्जन्मः सुमनसां हिताया  
 शेषाणां सुकृतपदवीं त्वं कथयन् ॥ २५ ॥ जिनेन्द्राद्वारां बहु विपदम  
 त्रं धृतमरं कलत्रं येनात्र कसहरिहरादिः सुरगणः सकर्षानाकसर्षामित  
 चरितताधूर्त्तनिबद्ध प्रतारी सदोषः मित्तसततरोषः स्थितिदत्तः ॥ २६ ॥  
 समग्रामग्रामप्रजवज्रयदो बोधरहितः सरुग्जव्यद्वेषी पुरुडुरितकृत्मा  
 नकलितः पुरामोहान्नूतश्चिरमिदसद्वाहो नमदितः सदेवोऽप्राप्यत्वं कथ

भपिसमासादिमथकाः ॥ २७ ॥ प्रजोर्किंवाभैतैरन्निमतविधानेजसतै-  
 रपासोपास्यस्तंखलुजिनवरेण्योनवरतम् मनोक्षिर्मेत्त्वत्यहनजयुगले  
 सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिप्रणयकरूपाभिष्टुहृशा ॥ २८ ॥ अदब्रंद  
 स्रांसिन् इविषज्ररमडीसदृशं विहायेनाप्रत्नंधरसिकिलरत्नत्रयमहो  
 दधत्सौवर्णानामुपरिनिक्षिप्तानाक्रमयुगं पुनर्निर्लोचनानांधुरिसुमतिमद्भि-  
 स्त्वमुदितः ॥ २९ ॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्न्यंसुवरेण त्रयी  
 मध्यं मेघोदधिधरणावास्तोष्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिज  
 ह्मांशिदधत् कुतस्तेनैराग्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चक्षं  
 प्राज्यंराज्यंविदितविज्रवापास्यलषतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्च  
 रतरम् कतेनिर्गैथत्वंप्रशमरसचाद्वेस्त्यमुमतांमहश्चित्रंचित्तेजनयतित  
 वेदंतुचरितं ॥ ३१ ॥ निकामार्थोत्सृष्ट्या ततवनदद्वृष्ट्यातिशयितं जगद्वा  
 रिद्यार्षिं स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्धयाध्यायन्तस्तवचरणायु  
 ग्मं सुधादया नतर्थं स्वैष्टासैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग  
 त्येकाधाराहितनरककारानिलयतः समुद्धर्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिकि  
 ल तवत्रातर्ज्जन्माजनिजननमुख्याकगणाहत् जवेवेशस्तोर्धोपिचनिश  
 पमानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अद्दीशस्तेशस्तक्रमणावरिवस्यस्यसुमना  
 मनाय्यस्येज्जकोयदिश्वदनुगंमद्यसनितं नितम्बिन्यान्वीतः सपदिकुश  
 तेतंस्वपसमं समाङ्गल्येवाथप्रजवतिनकः स्वाभिरुपया ॥ ३४ ॥ प्र  
 लापायाहुद्धास्तवगुणगणान्जान्तिविशदा खिलोकीजूजानेसुरपयमणे  
 ज्ञानवश्व रसज्ञानांकोट्याप्यमलधिषणोनव्यधिषणो नतानीष्टसख्या  
 तुमदपरार्थतुसरदां ॥ ३५ ॥ नमस्तुर्न्यंसंतुत्यतनुतटिनीतारणातरे  
 नमस्तुर्न्यंजीमामयसमददन्ताबलहरे नमस्तुर्न्यंसूक्तातिमधुरिमदासी  
 कृतसुधा समुद्रायामुद्भूयदवसिततुर्न्यंजिननमः ॥ ३६ ॥ पादेयाद्  
 महिमालयायसुमनः सन्दोदशुश्रूषितां ह्रिद्वद्वायकलिञ्जिदेजगवते  
 प्रव्यावलीहेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदन्नामित्रायविश्वत्रयी मित्राय

( १६५ )

क्षणदोदयायसततश्रीपार्श्वतुङ्गनमः ॥ ३४ ॥ सार्द्धलविक्रीभितं  
 वन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्रमा भ्रननिर्जिततारकराजगणः कृतल  
 क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारवहे ॥ ३५ ॥ तोटकवन्द ॥  
 जवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थये  
 हम् वितरविततबोधयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुषरम्यंत्वामचिन्त्य  
 स्वरूपम् ॥ ३६ ॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा  
 दप्रसादसन्तृषणधुनाग्रदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती  
 प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ३७ ॥ स्तोत्रकट्टुरुनामगर्भैवसंततिलका  
 वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रभुस्तवः ॥ अर्हाय्येषुस्तम्बेरमशशिमितेहायन  
 यरे नजोमासकृष्णोगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु  
 नाथाद्यामुनिना स्तवोवासासूनोरचितलिखितोमोदभरतः ॥ १ ॥  
 इतिश्री पार्श्वप्रजोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

॥ अथ चैत्यवन्दनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवन्दन ॥

॥ सिद्धो विज्ञाङ् चक्री नमि विनमि ॥ मुष्णी पुंरुरीठ मु  
 निर्दो । वाली पङ्कुन्न संबो नरहसग मुष्णी सेलगो पंथगोय ॥ रामो  
 कोमी पंच इविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणोगे विम  
 लगिरिमहं तिष्ठमेयं नमामि ॥ १ ॥ इति सिद्धाचल चैत्यवन्दनं ॥ सिवं ॥

॥ अथ श्रीथंभणापार्श्वनाथ चैत्यवन्दन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंजणपुर ठाम ॥ सुरतरु सम  
 सिरि पास सांम, राजे अजिरांम ॥ १ ॥ विबुधेसर सिरि अजय  
 देव संववियाणं दिव्य थुङ्ग जलसिरिय नील वल्ल, फल पल्लव मं  
 म्रिय ॥ २ ॥ सुर नर सुह कुसुमावलीए, सिवफल दायक जांण ॥  
 आराहठ जदि एग मण, पावो पद कळयांण ॥ ३ ॥ ।

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमांश, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला  
कात दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति  
वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लाख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥  
पूर्व विदेह विराजता ए, पुंनरीकनी ज्ञांश ॥ प्रभु द्यो दरसन सं  
पदा, कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरब दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर नित्त । तीरथ सिख  
र समेतको । चाहुं दरसंण चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रभु ।  
बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुढता सु  
जगीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर बांण ॥  
जविजन जेटो जगतसुं । तीरथ करण कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाज । समरुं सुखकारी ॥ ज्ञावी  
जिनवर जरद्विखित्त । मंण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्ण सुदेह  
मांन । थिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर सिरि वर्द्धमांन । जिनराज  
समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जांण ॥  
ज्ञावी जिनवर जेटिये । कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवासा वामाक्षे सकलमुज्जयः कालघटना । द्विधा ज्ञूतं  
रूपं जगदज्ञेयं जवतिय ॥ तर्द्धतर्मत्रं मे स्मरहरमयं सेंडुममलं  
निराकारं शस्वक्कप नरपते सिन्धुतु सते ॥ १ ॥ अविरलशब्धनोधा  
। प्रह्वालितसकलज्ञूतलकलंकाः ॥ मुनिजिरुपासित्तरणा । सर  
स्वती हरतु मे डुरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥



॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं स्वर्गलोपानं  
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनैः शृणां । साधूनां वंदनेन  
च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । विद्महेस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अथ प्रह्ला-  
दितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोऽहं सर्वपापेभ्यो । जिनैः  
तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ इत्था जेह सुखकृणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर  
पूज्या नहीं, ते परधर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो,  
सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनैसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥  
॥ २ ॥ जीवना जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा  
नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे वागमें,  
बेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंडमा, त्यूं सोजे महाराज ॥ ४ ॥  
जगमें तीरथ दो वना, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि रुषन्न समो  
सरथा, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो  
मन रही लोछाय ॥ ज्यूं महदीके पातमे, लाखी लखी न जाय  
॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज  
हु न वावरे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांइ पंखियां,  
वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच जरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार  
॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ रुद्धि बुद्धि  
गोहे दीजिये, दिन२ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेशरियानाथके,  
केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लारुले, वसे पहामा बीच ॥ १० ॥  
इस रागको नाम कढ्याण हे, प्रभुजीको नाम कढ्याण ॥ सकल  
सज्जा कढ्याण हे, जब प्रगटी राग कढ्याण ॥ ११ ॥ सोरठ राग  
सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं रात गलंतरी, त्यूं त्यूं  
मीठी आय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोरियो, लाखों ऊपर कोर ॥  
मरती बेला मानवी, लियो कंदोरो तोर ॥ १३ ॥

( १६५ )

दया गुणारी बेलनी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव  
मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु बेलनी, रोपी  
आद जिनंद ॥ आवक कुल मंमन जई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत  
संत आत्म गुण नूप ॥ आचारज उवझाय साधु समतारस धाम,  
जिन जाखित सिद्धांत सुद्ध अनुजव अजिरांम ॥ १ ॥ बोधबीज  
गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद  
अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परजव आषांद जगमांदि प्रसिद्धो, चिंतामणि  
सम जास जोग बहु पुन्ये लक्षो ॥ तिहुअण सार अपार एह महि  
मा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संजारो ॥ ३ ॥ सिद्ध  
चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कड्याणनिधि  
प्रगटे चेतन नूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिथीका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुखो एक  
जगगुरु मुज आशाविशाराम ॥ पूरव विदेहें विजय जली पुष्कला  
वई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥  
धन ते लोक सुखे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण  
धरे जिहां जिनवर जाण ॥ धन ते जविजन जे रहे प्रजु ताहरे  
परसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु  
मुखें प्रजु सुजस तुम्हीणो सांजल कान, मिलवाने उलसे मन मा  
हरं धरं एक ध्यान ॥ जगति जुगति करवानी ठे मुज सधली  
जोर, पण प्रजु लग पडूंजीजें तेह नहि पग दोर ॥ ३ ॥ आमा  
रूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुजथी अवराये प्रजुजी  
एटली दूर ॥ आंखरुली उलजो करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

रुखी पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटरुखी वहतो  
 कोई न मिले सेंगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ  
 ॥ जाणूं शशहर साथे कहुं संदेशा जेह, पण अलगो अई ऊपरि  
 वामे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें प्रभुजी तुमथी एथ अवाय,  
 तो इण जरतना वासी नविजन पावन आय ॥ साहिबनी तो सुन  
 जर सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारूप फल प्रति जोय  
 ॥ ६ ॥ अलगो हुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना  
 आवे हियमे खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं ठे माहरो आत  
 मराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचे  
 दिलथी मुऊशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोपरि  
 महिर अवेह ॥ दूसम काल तणो दुःख टालो दीन दयाल, पाखो  
 बिरुद संजाखो निज सेवकशुं कपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग  
 थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर ठतां नवि आय  
 निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसे ठे दूर, राजमहिरनी रीतें  
 सकलने जाणो हजूर ॥ ९ ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वा  
 मि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजें  
 एक पलक जो थाये प्रभु तुज संग, लाज उदयजिन चंड लहे नित  
 प्रेम अन्नंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुह  
 जगते जणुं ॥ जेटवा पायकमल जाव हियमे घणो, करिय सुप  
 साय जे वोनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुहशुं कूरु अरिहंत शुं राखियें,  
 जिस्थो अठे तिस्थो कर जोमि करि जांखियें ॥ अति सबल मुऊ  
 हिये मोह माया घणी, एक मन जगति किम करूं त्रिजवन धणी  
 ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगमे, रीश चटको चढे

लोभ वयरी नेने ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम  
 अरिहंत तूं हीवने नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियने  
 अनेरो धरूं, मूढ मन रीजवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत  
 जाणो जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥  
 कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहूं, मन तणी वात अरिहंत कि  
 णने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुख  
 करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं,  
 धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो  
 नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्न सही ॥ ६ ॥ घण कणाय माय  
 पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो वोढ्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो  
 जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तुह्न समोवरु नहिं अवर वा  
 ढ्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांजळुं, बारवर  
 परषदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय उल्लसुं,  
 किम करूं गम पुंडरगिरि वेगळुं ॥ ८ ॥ ज्ञोळिमा जगति तूं चित्त  
 हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेदने नामें मन  
 वयण तन उल्लसे, दूरथी दूकमा जेम हियने वसे ॥ ९ ॥ जल  
 जलो एणि संसार सहु ए अढे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पठे  
 ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त  
 आरति टखे ॥ १० ॥ साम सोढामणा नाम मन गहगहे, तेदशुं  
 नेह जे वात तुह्न जी कहे ॥ तुह्न पय जेटवाअति छणो टखवळुं,  
 पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी  
 आज्ञा कागल करूं, क्षीरसागर तणां दूध खनिया जरूं ॥ तुह्न मि  
 लवा तणा सामि संदेशमा, इंद पण लखिय न शके अढे एवमा ॥  
 १२ ॥ आपणे रंग जरि वात मुख जेटली, उपजे सामि न कहाय  
 मुख तेदली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, खान ने कोन प्रभु

( १६८ )

पूर सवि माहारा ॥ १३ ॥ पुढ जवि मोह वश नेह हुवे जेहने,  
समरिये एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल जम  
रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंततुं  
ध्यान दियने वस्युं, बापहुं पाप दिव रहिय करशे किस्थुं ॥ गम  
जिम गरुवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके  
रही ॥ १५ ॥ पाप में कळ सावळ सहु परिहरी, सामि सीमंधरा  
तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहिये प्रजु पालशुं, दुःख जं  
रार संसार जय टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही,  
एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवनी मारी जगति जाणी  
करी, आपजो बापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ एम रुद्रिवृद्धि,  
समृद्धि कारण, डरित वारण, सुख करो ॥ उवजाय वर श्री, जक्ति  
जाजें, धुणयो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी  
सामि, मया घणी ॥ कर जोनि वलि वलि, वीनवुं प्रजु, पूर आ  
शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्णा ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप  
जणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल  
न्यान दिणंद ॥ त्रिगने गद्गह्यो ए, जवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥  
न्यान वहुं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए,  
साचो सर्वह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविद्यास, लोकालोक प्र  
काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणो किस्थुं ए ॥ ४ ॥ अधिक  
आराधक जाण, जगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतुं, ए, किरिया  
देशतु ए ॥ न्यानी श्वासोद्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही  
ए, कोरु बरस कही ए ॥ ५ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोळ्या

( १६९ )

सूत्र मंजार ॥ किरिया ठे सही ए, पण पाठें कही ए ॥ ७ ॥  
किरिया सहित जो न्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरु  
ए, शांख हूधें ज़रयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मंजार, पांचमि अकर  
सार ॥ जगवंत ज़ांखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ९ ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांजलो, जिम पामो जवपारो रे ॥  
अग्रिदंत इम उपदिशे, जवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥  
मिगसर माद फागुण जला, जेठ आषाढ वैशाखो रे ॥ इण षट  
मासैं लीजियें, शुजविन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जु  
हारी देहरे, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगंति  
हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ बे कर जोनी जावशुं, गुरु मुख  
करो उपवासो रे ॥ पांचमि पम्किमणो करो, पढो पंमिंत गुरु  
पासो रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन  
आरंज टाखो रे ॥ पांचमि स्तवन शुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पा  
खो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी  
रे ॥ पांच बरस पांच भासनी, पांचमि करो शुज दृष्टि रे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उल्लाखानी देशी ॥

॥ दिव जवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारू रे  
बारू धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य  
जोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लाखो ॥ सोहिलो वलिय धन  
पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी  
कीजियें काष्ठसंगरली ॥ त्रण ज्ञान दरिसेण चरण टीकी देइ  
पुस्तक पूजियें, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥  
१ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति वीटांगणां, पांच पूठां रे  
मखमल सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच

मजीसणा, वासकूपा रे कांवी वारू वतरणां ॥ उल्लाखो ॥  
 वतरणां वारू वलीह कमली पांच फिलमिल अति जली, स्थाप  
 नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती परुपाठली ॥ पटसूत्र पाटी पंच  
 कोथल पंच नवकरवालिथां, इण परें श्रावक करे पांचम छजमणुं  
 जजवालिथां ॥ १ ॥ ढाल ॥ वलि वेहेरे रे स्नात्र महोत्सव कीजि  
 ये, घर सारू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल  
 ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लाखो ॥  
 जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश जृंगार ए, आरति मङ्गलधा  
 ल दीवो धूपथाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखन अंगलू  
 हणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए  
 ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमानियें रात्रि जोगे  
 रे गीत रसाल गवामीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें,  
 ज्ञान दरिणारे उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लाखो ॥ साधियें मारग  
 एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक मांहे ज्ञान  
 वंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासतां सुख जे  
 लहे, जे करे पांचमी तप अखंरित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥  
 कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणोसरो ॥ में  
 शुणयो श्री अरिहंत जगवंत, अतुल बल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री  
 जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय  
 सुंदर, जगति जाव, प्रशंसियो ॥ ५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्त  
 वन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥  
 पहिलुं ज्ञान ने पठें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥  
 ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान बखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २॥  
 मति अगवीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ठ असंख्य प्रकार रे ॥  
 दोय जेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥  
 चंड सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान  
 समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ  
 प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण  
 पासुं, ज्ञाननो पंचमो जेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल बिराजे, गाजे गोमती पास ॥  
 सेवा सारे जेदनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोजागी  
 साहिब मेरा बे, अरिहा सुग्यानी पास जिपांदा बे ॥ ए आंकषी ॥  
 सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें  
 पेखतां मानुं, नव नवि ठबिय देखाय ॥ २ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥  
 जव डुःख जंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी  
 गुण ताहारा माहारां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥  
 दूरअफी हुं आयो दहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिने  
 नहिं साहिबा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु  
 मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हस्ते  
 रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥  
 किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें  
 तुं वसे साहिब, शिवसुखनोही ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ मा  
 ता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणा  
 रसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत  
 रेशें बावीशें, वदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन जले जावशुं,  
 मारी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी



विघ्ननिवारी, परंजपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारीता, मोरी त  
फलं फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फळ्यो जी, कवण कनक फल खाय  
॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल  
जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्या जी, हियमुं  
हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खर  
खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लही जी, कुण छे रांक मनाय  
॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न ठेते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाय ॥  
कुण सुरतरुथी ठठिनें जी, बावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव  
अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज जवो  
जवें जी, तुंदिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बैठा जगवंत, घरम प्रकाशे श्रीअरिदंत ॥  
बारे परषदा बैठी जुनी, मागशिर शुदि इग्यारश वनी ॥ १ ॥ म  
खिनाथना तीन कळ्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर  
दीक्षा लीधी रूवनी ॥ मा० ॥ २ ॥ नभिने ऊपनुं केवलज्ञान,  
पांच कळ्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवनी ॥ मा०  
॥ ३ ॥ पांच जरत ऐरवत इमहीज, पांच कळ्याणिक हुवे तिम  
हीज, पंचासनी संख्या परगनी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत  
गणतां एम, दोढशें कळ्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ ठे ए तिथि  
जेवनी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाज अ  
नंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखनी ॥ मा० ॥  
६ ॥ मौनपणें रक्षा श्रीमखि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ  
॥ मौन तणी परि व्रत इम पनी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो

लीजियें, चोविदार विधिंशुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घरी  
 ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक  
 उब्हास ॥ ए तिथि मोक्ष तणी पावनी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं  
 कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसग  
 गुरु पाये पनी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे छात्र करीजें वली, पोष्टी  
 पूजीजें मन रली ॥ सुगतिपुरी कीजें दूरनी ॥ मा० ॥ ११ ॥  
 मौन इग्यारस अहोदुर्ग, आराध्यां सुख लहियें सर्व ॥ व्रत पञ्च  
 रक्षाश करो आखनी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसज शोल इक्याश। समे,  
 कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो व्याहनी ॥ मा०  
 ॥ १३ ॥ इति अष्टादश वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

### ॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाठं त्रिजुवनके स्वामी  
 ॥ संतहि संत जपे सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥  
 सांत जपीने कीजै कांमा, सोइ कांम हुवै अजिरामा ॥ शांति ज  
 पी परदेश सिधावै, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्जणकी  
 प्रजु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति  
 तणा गुण गावै, रुद्धि अर्चिंती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रजु  
 शांति सुहाई, ता नरकूं कुळ आरति नांही ॥ जों कबु वंगै सोही  
 पूरै, दाखिइ दोष मिछ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति  
 प्रकासी, घट२ के जीतर प्रजु वासी ॥ स्वामि सरूप कहाय नबि  
 जावै, कहितां मो मन अचरज आवै ॥ ५ ॥ नार दिया सबही ह  
 थियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारितजी शिवसुं रंग राचै,  
 राज तज्या पिण साहिब साचै ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहोजै देवा,  
 कायर कुंशु न एक ह्योवा ॥ रुद्धि सहू प्रजु पास लहीजै, त्रिका  
 हारी नांम कहीजै ॥ ७ ॥ निंदक पूजक हे सम ज्ञायक, पिण

सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तज्जी परिग्रह जए जग नायक, नाम  
 अतीत सबै विध लायक ॥ ८ ॥ सन्नु मित्र सम चित्त गिणीजै,  
 नांम देव अरिहंत जणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहाँजै, सेवक  
 जांण महा पद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंजीरा, दूषण  
 नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण  
 न रहै प्रजु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रजुजी सब देखै,  
 पिण सुपनो कबहु नवि पेलै ॥ रीस विना बाबीस परीसह, सैया  
 जीती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मांन विना जग आंण मनवै, मा  
 या विना सबसुं मन लावै ॥ लोज विना गुणरास ग्रहीजै, जिहु  
 जये त्रिगुणो सेवीजै ॥ १२ ॥ निग्रंथपणै सिर बज्र धरावै, नांम  
 जती पिण चमर दुलावै ॥ अजय दांन दाता सुखकारण, आगे  
 चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल जणीजै, कर्म  
 सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ आपै, लब्ध घणी  
 देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत कहाँवै, नां कसही  
 कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको बिरुद्ध धरावै, पिण सोवन पंकज  
 पगडावै ॥ १५ ॥ तजि आरंज निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं  
 साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेन नही निगुणा  
 संग वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अइजुन कहिये, तेरे गुणांको पार  
 न लहिये ॥ तुं प्रजु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक  
 तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकनणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन  
 दयाला ॥ तुं सरणागत राखण धीरा, तुं प्रजु तारक बै वरुवीरा  
 ॥ १८ ॥ तुम जेसैं वरुजागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स  
 बायो ॥ कर जोनी प्रजु वीनहुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं  
 ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, जवसायरथी पार उतारो  
 ॥ श्रीदयशापुर मंरुण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायै, श्रीगुणसागरके मन प्रायै ॥  
जे जर नारी इक चित गावै, मन वंछित फल निश्चै पावै ॥ २१ ॥  
इति श्रीशान्तिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासो आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ दाल ॥ बिलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जयर जिण पास जगत्र धणी, सोजा ताहरी संसार  
सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस धणी, करवा सेवा तुम चरण  
तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पमे जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै  
॥ आसातना चउरासी टालै, साश्वता सुख तेहिज संजालै ॥ २ ॥  
जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाळी जूये रमै ॥ धनुषादि  
कला सीखण हूकै, कुरखो तंबोल जखे झूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय बनी  
खघनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रु  
धिर क्रिया, चांदोनी नाखै चांमनियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये  
कावो, खावे घांणी फुली खावो ॥ सूवे वेसामण बिसरावै, अज  
गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखै,  
नख गाल वपुषना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, बिह  
चन अपणो कर धन धरणो ॥ ६ ॥ वैसै पग ऊपर पग चढिया, आपै  
गणो ठमै दुंदुषियां ॥ सूकवै कप्परु पप्परु वनियां, नासीय द्विपै  
नृप जय पनियां ॥ ७ ॥ शोके रोवै विकथा ज कहै, इहां संख्या  
वैतालीस जहै ॥ इधियार घने ने पशु बांधै, तापै नांणो परखै रां  
धै ॥ ८ ॥ जांजी निस्तही जिनगृह पेसे, धरै ठत्र ने मंगपमें  
वेसै ॥ पहिरै वस्त्र अने पनहो, चामर वीजै मन ठाम नही ॥ ९ ॥  
तनु तैल सचित्त फल फूल जियै, जूषण तज आप कुरूप धियै ॥  
दरसणथी सिर अंजली न धरै, इगसानै उत्तरासंग न करे ॥ १० ॥

भोगो सिरपेच मोरु जोमै, दमिये रमने वेसे होमै ॥ सयणासुं  
 जुदार करे मुजरो, करे जंरु चेष्टा कहै वचन बुरो ॥ ११ ॥ धरे ध  
 रणो जगमे उल्लंघो, सिर गूँथै बांधे पालंठी ॥ पसारे पग पहरे चावनि  
 यां, पग ऊटक दिरावै डुखनियां ॥ १२ ॥ करदम छूँदै मैथुन मंनै,  
 जू आवलि अँठ तिहां बंनै ॥ उघामे गुऊ करै वयदा, काढे व्या-  
 पार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरै, अँघोले  
 पीवा ठाम जरै ॥ दूषण जिनजवनमें ए दाख्या, देववंदनजाखमें  
 जे जाख्या ॥ १४ ॥ सुझानी आवग सगति बत्तां, आसातन टालै  
 वारसता, परमाद वसै कोई थायै, आलोयां पाप सहू जायै ॥ १५ ॥  
 तंबोल ने जोजन पांन जूआ, मल मूत्र सयन स्त्री जोग हुआ ॥  
 नूषण पनहो ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर माँहि वसै ॥ १६ ॥  
 इव्यत ने जावत दोय पूजा, एहनाहिज जेद कहा दूजा ॥ सेवा  
 प्रभुनी मन शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥  
 कलश ॥ इम जव्य प्राणी जाव आंणो, दिवेही शुद्ध वातना ॥  
 जिनबिंब अरचै परी वरजै, चोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थ  
 कर अरजै, नमें जेहने केवली ॥ उवजाय श्री प्रनसीह बंदे, जैन  
 शासन ते बली ॥ १८ ॥ इति श्री चोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमं रुपज जिनेसर पाय, धनुष पांचसै उंची काय ॥ बी.  
 जो अजित जिन मुऊ मन वसै, मांन धनुष साढाचारसै ॥ १ ॥  
 तीजो संजव सुख दातार, उंची काय धनुष सो व्यार ॥ अजिनं  
 दन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम  
 सुमतिनाथ जगवांन, धनुष तीनसो देही मांन ॥ पदम प्रभू प्रै  
 मन आस, देह धनुष दोयसे पञ्चास ॥ ३ ॥ साभि सुपारस सत्तम  
 होय, देह प्रमांश धनुष सो दोय ॥ चंद्राप्रभु जिन मुज मन वसै, देह

प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, उंच प्र  
माण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमै जग सबे, देह प्रमाण ध  
नुष जसु निवै ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांत नमूं उल्लासी, उंच प्रमाण धनुष  
तनु असी ॥ वात्सपूज्य धारम जिन चंद, मान धनुष सितर सुख  
कंद ॥ ६ ॥ विमल २ गुणकर गंजोर, साठ धनुष जसु मान सरीर  
॥ अनंत ज्ञान अनंत प्रकाश, देह प्रमाण धनुष पञ्चास ॥ ७ ॥  
पनरम धरमनाथ जगदीस, मान धनुष जसु पैंतालीस ॥ शांति  
करण शोलम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोजंति ॥ ८ ॥  
सतरम कुंथु जिन जगदाधार, मान धनुष पैंतीस उदार ॥ अर अ  
गरम दीनदयाल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ९ ॥ महि  
नाथ जिन जगणीसमो, मान पञ्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम  
मुनिसुव्रत अरिहंत, वीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥ इक्की  
सम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम  
श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपै जांश दिशंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री  
पारसनाथ, नील वरण सोहे नव हाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री  
वीर, सात हाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो  
वीस, प्रशमै प्रह शम धरिय जगीस ॥ तां घर रुद्धि सिद्धि उठ  
रंग, रंग विनय प्रशमै मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन  
देहमान स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ रुषजदेव प्रणमूं जिनराय, लाख चोरासो पूरब आय ॥ बी  
जो अजित जसु सूत्रे साख, आठ बहुतर पूरब लाख ॥ १ ॥ ती  
र्थकर संजव तीसरो, आठ लाख पूरब साठरो ॥ अजिनंदन पूरै  
मन आस, आठ लाख पूरब पञ्चास ॥ २ ॥ लुमतिनाथ पंचम  
जगदीस, आठ लाख पूरब चालीस ॥ श्री पद्मप्रभूनी ए अित

जाण, लाख तीस पूरब परिमाण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरब  
 वीस, दस लख पूरब चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लख पूरब दोय,  
 इक लख पूरब शीतल धित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी  
 लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो,  
 वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लख साठ वरीस,  
 वरस अनंत तणो लख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिशंद,  
 लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस्र धिति पद्याणवै,  
 श्री कुंथुनाथ तणी संजवै ॥ सहस्र चोरासी अर जिनतणी, मल्लि  
 सहस्र पचावन जणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनि सु  
 व्रत परमाज्ज उदार ॥ वीस सहस्र नमिजिन धित जणी, वरस स  
 हस्र नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस  
 बहुत्तर वीरजिणंद ॥ रुषजतणा तेरे अवतार, सात चंड शंती-  
 सर बार ॥ ९ ॥ सुव्रत जव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्ता-  
 वीस ॥ त्रिहुंश जव सतरे जगदीस, सगला जव एकसो अमृतीस  
 ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन, गणधर चवदेसै बावन्न ॥  
 सहुने मुनि लख अठावीस, सहस्र ऊपरै अमृतालीस ॥ ११ ॥ लाख  
 चमाल ढयाल हजार, धरुधिक सहु साधवो सो ज्यार ॥ आवक  
 लाख पचावन धुरै, अमृतालीस सहस्र ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोनि  
 आवका सुजगीस, लाख पांच सहस्र अमृतीस ॥ ए संघ चतुर्विध  
 सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमै हित घणो ॥ १३ ॥ इति श्री  
 चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ दाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं,  
 पञ्चणसु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लिखै निसतारं, आपण सफल

हुवै अवतारं, पामीजै जव पारं ॥ १ ॥ रूपज अजित संजव अ-  
जिनंदन, सुमति पदमप्रजु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंड-  
प्रजु ने सुविध शांतल जिन श्रेयांत, वासपूज्य जिन सुरमणि,  
विमल गुणेंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-  
थुनाथ अर मल्लि सुदंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए  
जिन चोवीस ॥ जग वल्ल जगगुरु जगदीस, प्रणामीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपनगज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम जरत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो  
उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्कीस, ठगो  
कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संजूमि सनाथ ॥  
५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय  
तांम, बारम ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र जरत  
सिषागार ॥ मघवा सनतकुमार, पोढ़ता सरग मऊार ॥ ७ ॥ स-  
जूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ अया सिवगामो, ते  
प्रणमुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जांण, द्विपृष्ट दूसरो, तीजो स्वयंप्रजु जा-  
णिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमांणिये  
ए ॥ ९ ॥ ठगो पुरुष पुंरुरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नांमे  
आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊठो ए  
पिया नमुं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला  
पांच ठगो गया ए ॥ सातमो पंचमी नैर, चोथी आठमो, नवमो  
तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें जइ, सुप्रजु सुदर्शन,  
आनंद नंदन शुज मती ए ॥ रामचंड बलजइ, बलदेव ए नव,  
आठ अया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलजइ ब्रह्म देवलोक,



काल जलपणी, जास्यै सिव कृष्ण सासनै ए ॥ अथवा निपुलाक  
नाम, तीर्थकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत ज्ञणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणै प्रभु रहतां काल सुखै गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नै तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंज वलय  
प्रह्लाद, रावण जरासिंधु जिंसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव तरकै  
गति गामिया ए, ते पिण जावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नै कुंभु अरि एह जव एकही, चक्रधर तीर्थकर दोय  
पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत जव जूजूआ, देह तिणंसार  
पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव बलीय बलदेव कैरा  
पिता, एकहिज आय नव एण लेखै बता ॥ तीन चक्रधर तणा  
मिलिय बरै टळ्या, एम त्रैसठना तात इकावन मिळ्या ॥ १६ ॥  
तीन चक्रवर्त्तणी टाळ बीजे इसै, माय सहुनी अई साठ लेखे इसै  
॥ एह नररयणनो ध्यान नित जे धरे, तेह सुरपद लही मोह  
पदवी वरै ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम शुण्या तीर्थकर चक्रीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासु-  
देव सुसेव जेहनी करै सुरनर सेव ए ॥ त्रैसठ शलाका पुरुष जन्म  
जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो  
मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रैसठ शलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला  
धर्म निवारणो, जय जंजण जगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुज मन के  
खट अति घणो, सो दिन सफल गिणोस ॥ स्वामी श्री रिसदेसर,  
जब नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरछ विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरव निज्याणूं वारं ॥  
 श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥  
 इण गिरचंनमासे रद्धा, शिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामें  
 शिव सुख सांभता, गणधर श्री पुंररीक ॥ पुंरगिरि तिण कारणें;  
 जंगति केंरो निरजीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू;  
 विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुज शिवर समोसरया, जे गरुआ गुणवंत ॥  
 श्री० ॥ ६ ॥ आवज्जा मुनिवर सुक, सहस्र परिवार ॥ पंथग  
 वयणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांमव पांच  
 महांबळो, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सोधा सिद्धाचळै, सुर नर  
 करै वंखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा इण मंगरै, मुनिवर कोमा-  
 कोमि ॥ पाजे चढंता सांज्रै, ते प्रणमूं करजोमि ॥ श्री० ॥ ९ ॥  
 जे वेधेण प्रतिबूजवो, ते दरबाजै जोय ॥ गोमुख यह कवम मिळी,  
 सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर  
 सेवक तासे ॥ रोजेसमुझ गुण गावतां, अविचल लोल बिलास  
 श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचळ स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरवानी ॥

श्री सिद्धाचल मंमण स्वामी रे; जग जीवन अंतरजामी  
 रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनामी, यात्रोमा जात्रा निनाणूं करिये रे ॥ १ ॥  
 श्रीकृष्ण जिनेसर राया रे, जिहां पूरव निनाणूं आया रे, प्रभु  
 समोसरया सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चेत्रो पूनम दिन वखासो रे,  
 पांच कोमिसुं पुंररीक जाणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या०  
 ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, बे बे कोमिसुं साधु संघाते  
 रे, एतो पोढता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने  
 तोमी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोमी रे, ते वंदो बे कर जोमां

॥ या ० ॥ ५ ॥ इम जरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु धि  
 थाटे रे, पांम्या सुगति तशो ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोष सदस  
 मुनी परवारे रे, थावचा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेलग अणगार  
 ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा बहु यादववंसे रे,  
 ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांमव इण गिर  
 आया रे, सीधा नव नारद रुषिराया रे, वलो संव प्रजून कदाय  
 ॥ या० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते  
 रे, इम ज्ञाप्यो श्रीजगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ उज्जल गिर सम नही  
 कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या०  
 ॥ ११ ॥ एकादारी ने सचित्त पहारो रे, पदचारी ने जूमि संथारो  
 रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम ठहरी जे नर  
 पाले रे, बहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण जय टाले  
 ॥ या० ॥ १३ ॥ धनश ते नर ने नारी रे, जेटे विमलाचल इक  
 तारी रे, जइये तेहतशी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंड  
 सूरि सुपसाये रे, जिनदर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण  
 गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपदं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेव स्तवनं ॥

ऋषज जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतनी अवधारो रे।  
 जगना तारु ॥ मुऊ तारो जो कृपानिध स्वांमी, जग जसवार  
 प्रगट ठे ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥  
 निज गुण जोका पर गुण लोसा, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज० ॥  
 अविनासी अविचल अविकारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज०  
 ॥ १ ॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणो निसुणी, हुं तुम चरणो आयोरे ॥  
 ज० ॥ तुम रीजावण देते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥  
 मु० ॥ काल अनंत गहो ऐकेंइ, तरु साधारण पांमी रे ॥ ज० ॥

चरस संख्याता बलि विकलेंडी, वेष धरया डुख धामी रे ॥ ज०  
 ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंडीपणो  
 धारयो रे ॥ ज० ॥ चौवीसे दंरुक मांदि जमियो, अब तो हूं पिण  
 हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ जव नाटक नित करतो नव नव,  
 हूं तुज आगल नाच्यो रे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिखो,  
 निरखी तुजने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुज नाटक  
 देखी रीज्या, तो मन वंजित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीज्या  
 तो मुज जाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥  
 लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं डुखना नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता  
 सेती सुंम जखेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥  
 तुज सरिषा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥  
 तो मुज करमतणी गति अवली, दोसन कोइ तुमारो रे ॥ ज० ॥ ए ॥  
 मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥  
 ज० ॥ सुगुण सेवकना वंजित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥  
 ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अठारै गुणतालीसै, ज्येष्ठ सुदी सोमवारो रे ॥  
 ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन जेटया, वीकानेर मजारो रे ॥ ज०  
 ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन रुषजदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोनी हो कहूं मननी वात  
 ॥ बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिजुवन तात ॥ वी०  
 ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं जम्यो, जव मांहे हो स्वामीसमुझ म  
 जार ॥ डुक्क अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥  
 वी० ॥ २ ॥ पर जगगारी तूं प्रज्जू, डुख जंजे हो जग दीनदयाल  
 ॥ तिण तोरे चरणे हूं आवियो, सामी मुजने हो निज नयण निहांछ  
 ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊधरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वांम ॥ हुंतो परम जक्त ताहरो, तिण तारो हो नही दीलतो  
 कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूज्या, जिण कीधा हो तुज  
 ने उपसर्ग ॥ मंक दियो चंरुकोसिये, तें दीधो हो तसु आगमो सर्ग  
 ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोळ्या हो तोरा  
 अबरणवाद ॥ ते वलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूकी सुप्र  
 साद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण वै इंडजालियो, इम कहतो हो आ  
 यो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजी  
 र ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उआप्या ताहरा, ते जगज्यो हो तुज साय  
 जमाळ ॥ तेहनें पिण पनरे जवे, शिवगामी हो तें कीधो रूपाल  
 ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमचो रिष जेरम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी  
 पाल ॥ तिरती मूकी काबळी ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाळ ॥  
 वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर रुषि दूहव्यो, चित चूको हो चारित्यो  
 अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा जंमार ॥ वी०  
 ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूकी हो संजमनो जार ॥  
 नंदिषेण पिण ऊयरयो, सुर प्रदवी हो दीधो अति सार ॥ वी० ॥  
 ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चौवीस ॥ ते  
 पिण आडकुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥  
 १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह  
 ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी०  
 ॥ १३ ॥ विरज नही नही आखनी, नही पोसो हो नही आदर दीख  
 ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामो आप सरीख ॥ वी०  
 ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊयरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥  
 सार करो दिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरनी वाते ॥ वी०  
 ॥ १५ ॥ सूधो संजम नहि पलै, नही तेहवो हो मुज दरसण  
 ज्ञान ॥ पिण आधार ठै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यान

बी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जेवि हो सम विखमी.  
 वाम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंजित  
 काम ॥ बी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो डख  
 जायै दूर ॥ तुम नांमे वंजित फलै, तुम नांमे हो मुऊ आनंद पूर  
 ॥ बी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंरुन, तीर्थकर  
 चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंद लंठन, सेवतां सुरतरु समो ॥  
 जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निखो, वाचनाचारज  
 समयसुंदर ॥ संघुण्यो त्रिजुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा  
 चीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ दाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ प्राप्त जिनसर, एह करुं अरदास जी ॥ ता  
 एण तरण विरुद तुऊ सांजलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥  
 इण संसार समुद्र अथागै, जमियो जवजल मांदिजी ॥ गिल गिचिया  
 जिम आयो गिरुतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं  
 ज्ञानी तोपिण तुऊ आगै, वीतक कहिये बात जी ॥ चोवीसे दंरु  
 क हूं जमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न  
 रकतणो इक दंरुक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावर नें  
 तीन विकलेंडी ॥ उगणीस गिणती आंण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचें  
 डी तीर्थच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी  
 नें वैमाशिक, इम दंरुक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंडी तीर्थच  
 अने नर, परयाप्ता जे होय जी, ए चोविह देवांमें ऊपजै, इम देवां  
 गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आठलैं नर तिरि, निहचै  
 देव न थाय जी ॥ निज आठलैं सम के उठै, पिण अधिके नवि  
 जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ जवनपती के व्यंतर ताई, समूर्जिम तीर्थच

जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरज्ज सुकृत संच जी ॥ पू० ॥  
 ॥ ८ ॥ आउ संख्यातै जे गरज्ज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बादर  
 पृथ्वी नैं बलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ९ ॥ पर्यासा  
 इण पांचे ठामे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण  
 आगै, अधिकांई कहुं देव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगधकी  
 मांमी सुर, एकेंडी नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला,  
 मानवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव जमै संसार॥ दोय गति  
 नैं दोय आगत जांणियै, बलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ सं-  
 ख्याते आयु परजापता, पंचेंडी तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहि-  
 ज बे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरक लग  
 जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ॥ शुद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी  
 लगे, सींह प्रमुख चोषीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सीमा सा  
 पणी, ठठि लग खी जाय ॥ सातमिये माणस के माठलो ॥ ऊप  
 जै गरज्ज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकधकी आवे बिहुं दंरुके,  
 तिरयंच के नर थाय ॥ तेपिण गरज्ज ने परयापता ॥ संख्याती  
 जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरथा, जे  
 फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्टे जांगे करते कहूँ, पिण निश्चै नही को  
 य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्ति हुवै, बीजी हरि  
 बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थकर पद लहै ॥ चोषीकेवल एव ॥ न० ॥  
 ॥ १८ ॥ पंचम नरकनो सरबविरति लहै, ठठि देसविरत्त ॥ सातमी  
 नरकनो समकितहीज लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करम परीक्षा करण कुमर चलयो रे ॥ ए देसी ॥

॥ मानव गति विन मुगति हुवै नही रे, एहनो इम अधिकार

॥आञ्ज संख्यातै नर सहु दंरुके रे, आवी लहै अवतार॥मः०॥१०॥  
 तेज वाञ्ज दंरुक बे तजी रे, दीजा जे बाबीस ॥ तिहांथी आया आयै  
 मानवी रे, सुख दुख कर्म सरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असं  
 खी आञ्जै रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरने मनुष्य हुवे  
 नही रे, अरिहंत जारुयो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव  
 तथा वली रे, चक्रवर्त्त ने अरिहंत ॥ सरग नरगना आया ए हुवै रे,  
 नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥ २३ ॥ चोविह देव अकी चवि ऊप  
 जै रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थकर ए हुवै रे, वैमानिकथी  
 वेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

दिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव जमें  
 इण पर जव मांहे करम विशेष ॥ आञ्ज संख्यातो जे नर तिर्यंच  
 विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण  
 तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कहा पहली तिण कारण न कहूं  
 देव ॥ पंचेंदी तिर्यंच संख्यातै आऊलै जेह, ते मरी चिहुंगतिमां  
 जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंदी आठ  
 कहावे, तिहांथी आञ्ज संख्याता नर तिरयंचमें आवे ॥ विकल चवी  
 लहै सरखविरति पिण मुगति न पावै, तेज वाञ्जथी आयो तेहनें  
 समकित नावै ॥ २७ ॥ नारक वरजनिं सगलाही जीव संसार,  
 पृथ्वी आञ्ज वनस्पतीमांहि लहै अवतार ॥ ए तीनें इहांथी चवि  
 आवै दसे ठाने, थावर विकल िरो नरमांहे उतपत पामै ॥ २८ ॥  
 पृथ्वीकाय आद देई दस दंरुके एह, तेज वाञ्ज मांहे आवी ऊपजै  
 तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेज वाञ्ज बे जावै, विकलेंदी ते  
 दसमांहि जावै पूगही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादितयो मिथ्यात्वी  
 जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रहियो काल अनंत ॥ पुढवी



पाणी अग्नि अने चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तां  
जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेईडी तेईडी अने चौरिंदी मजारै, संख्याता  
वरसां लगै जमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ जव लगि तां नर  
तिरयंचमें रहियो, हिव मांनवजव लहिनें साधुनें वेषमें रहियो  
॥ ३१ ॥ राग द्वेष बूटे नही किम हुवै बूटकबार, पिण बै माह्रै  
मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्ध अ-  
रिहत लाधो, हिव संसार घणो जमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥  
तूं मन वंजित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो में  
नवनिध सिद्ध पांमो ॥ अवर न कांइ इहू इण जव तूंहिज देव,  
सूधै मन इक होज्यो जवर ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥  
संवत सतर जगणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद  
समान वाचक, विजय हरष सुतीस ए ॥ श्री पातना गुण एम  
गावै, धरमसी सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्री चोवीस दंरुक् स्तवनीं ॥

॥ अथ इरियावही मिळामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ भ्रष्ट प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि  
मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पम्किमी जिम इरियावही, श्री  
वीरनी रे वाणी तदत्त कर सरदही ॥ उल्लाखो ॥ सरदही वांणी  
मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिळामिदुक्कर तणी संख्या,  
कहिसुं जिम कहे केवली ॥ नू दग जलण तिम वाठ, वणसइ  
विगल पण इंडी तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, डुर ते क-  
रिवा जणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुनवि दग रे वाठ तेज वणस्तइ, पण  
आवर रे बादर सुद्धम दसे आई ॥ प्रत्येकज रे वणस्तइ इग्यारह

अथा, बावीसि रे पञ्चतम अपञ्चतया ॥ उल्लाखो ॥ पञ्चतम अपञ्च-  
तम वखाण्या, विगल तिय ठह जाल ए ॥ जल थल खचर जुयंग  
डुइ, पण इंडिय तिरि अरुयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुरुवी,  
नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद जेदे करी जाणो, पञ्चतम अ-  
पञ्चतम जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया,  
किल्लविषिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंजिय दस रे नव  
लोगंतिक जांणियै, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणियै ॥ उल्लाखो ॥  
वखाणियै दस विध जुवनपतिना, तार रवि सशि रिसिगहा ॥ चर  
धिर दसै विध जोइसी सुर, वखाण्या जिनवर जिहां ॥ बारह  
विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीविके नव जण्या ॥ पञ्चतम अपञ्चतम  
अठाणूं, अधिक सत संख्या गिएयां ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचजरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर जूमिका ए ॥ खेत्र  
ए पनरह करम जूमि जाणोयै असि कसि मसिहि आजीविका ए ॥  
हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरणवत सहीए ॥ मेरुपिण  
पाखती चारि ५ खेत्र दस कुरु अकरम जूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिम-  
गिर सिद्धरीय दाढ चीयारि लवण समुद्रमांदि विस्तरीए ॥ सात  
२ अंतर दोय पालै दीप ढप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसै जेद डुइ  
आगला जांणी मणुय पञ्चतम अपञ्चतयाए ॥ एक सौ एक समुद्धिम  
जेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देशी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवसदू ठे एह अजिहय आदिक दस  
गुणित करीजै तेह ॥ पणसहस ठसै वलि त्रीस अधिकते जाशि ॥  
ते रागै दोसै डुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ दुइ सहस इग्यारह डुइ-  
सय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो दितनर आण ॥ मन-

( १८० )

वच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सात-  
असी निःसंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किइ ॥  
इकलकख सहसइग तिसय चाखीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत  
वर्त्तमान वलिकाल जे अइयविराधना तिणि त्रिगुण संज्ञाल ॥ ८ ॥  
तीन लाख सहस च्यार बेसै अधिक तेथाय ॥ अरिहंत प्रमुख वढ  
साखै उगुण ज्ञाय ॥ इम लाख अठारह वलि सहस चउवीस ॥  
इकसो बीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपदनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिछामि डुक्कर्मदेई जविक तरया जवजल नि  
धिकेई ॥ तरै अठै वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लखमी  
वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम  
करि निरमल ॥ सें मुखजाबै वीर जिणेतार ॥ सूत्रकरि गूणै ते शु-  
तधर ॥ ११ ॥ इम पन्निक्कमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीत केव  
ल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै ॥ मानव जनम  
सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुईकरो ॥  
तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उवजाय लहमी  
किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लल्लिवल्लज तवन करि  
इम संघुण्यो ज्ञावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिछामि डुक्कर्म  
संख्या स्तवन ॥

॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराजा ॥ वस्तु-  
तत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी  
संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्त जंग रचना विना, बंधन

बेसे वात ॥ ३ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपशे गम ॥  
 पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह  
 गज, ग्रही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिला  
 अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नये करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥  
 धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नही किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रूप रे ॥  
 नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अजंग अनूपरे ॥ ६ ॥  
 ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥  
 कालै ऊपजै विषसे कालै, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥  
 कालै गर्ज भैर जग वनिता ॥ कालै जनमे पूत रे ॥ कालै बोलै  
 कालै चालै, कालै जालै घरसूत रे ॥ ८ ॥ कालै दूधधकी दही थायै,  
 कालै फल परपाक रे ॥ विविध पदार्थ काल उपावै, अंत करे बे  
 चाक रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिनचछवीसै बार चक्रवै, वासुदेव बलवंत  
 रे ॥ कालै कविलत कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥  
 ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी आरा, ठै ठै जूजूये ज्ञाते रे,  
 षट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ जिन २ दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री०॥  
 कालै बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुद्धपणे दुष्ट  
 बलिष्ठ दुर्बल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तब स्वज्ञाववादी वदे जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वज्ञावे  
 नीपजे जी, विणसै तिमज निस्तंक ॥ १३ ॥ सुविवेक विचारी जुओ  
 ३ वस्तु स्वज्ञाव ॥ ए आंकणी ॥ ठते योग यौवनवतीजी, बांजलि  
 न जणै बाल ॥ मूढ नही महिला मुखै जी, करतल ऊगै न बाल  
 ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण सज्ञाव नवि संपजै जी, किमह पदार्थ कोय ॥

अंग न लागै नीबनै जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ मोरपंख  
 कुण चीतरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी,  
 सुंदर नयण कुरंग ॥ १६ ॥ सु० ॥ काटा बोर वंबूलना जी, कुणें अशि-  
 याखा कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध ॥  
 ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकै नित वसै जी, मणि हरै विस  
 ततकाल, परबत धिर चल बायरो जी, ऊरध अगननी जाल ॥ १८ ॥  
 ॥ सु० ॥ मङ्ग तुंब जलमां तिरै जी, बूनै काग पाहाण ॥ पंख जाति  
 गयणो फिरै जी ॥ इण परै सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय  
 सुंघी उपशमै जी, हरमे करै विरेच ॥ सीजै नही कण कांगमो जी ॥  
 सकल स्वप्नाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी,  
 भुंयमां थायै पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वप्नाव  
 प्रमाण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो सशि सीयलो जी, ज्ञव्यादिक  
 बहु ज्ञाव ॥ ठए इव्य आपायशा जी, न तजै कोइ सुजाव ॥  
 ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ एदेसी ॥

काल किसुं करै बापमो रे, वस्तु स्वप्नाव अकळ ॥ जौ न  
 होय जवतव्यता जी, तो किम सीजै कळा रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म  
 करो मन जंजाल, ए तो ज्ञावी ज्ञाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए  
 आकणी ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जी, कोनि यतन करै कोय ॥  
 अणज्जावी होये नही जी, ज्ञावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥  
 आबै मोर वसंतमां जी, मालै केइ लाख ॥ खरधा केइ खासटी  
 जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ वाजल जिम जव  
 तव्यता जी, जिण जिण दिसे उजाय ॥ परवत मन मानसतणो जी,  
 तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसै पिण चिंतव्य  
 जी, आबी मिलै ततकाल ॥ वरसां सोनुं चिंतव्यो जी, नियत कर

वितराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुन्नूमिते जी, समुद्र  
 पन्थी विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणाजी, नयण हरे गोवाल रे ॥  
 प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहो कोयल करै जी, किम राखीसर रे प्राण ॥  
 आदेसी सर ताकियो जी, ऊपर जमें सीचाण रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥  
 आदेसी भागे नस्यो जी, बाण लग्यो सीचाण ॥ कोकूहो ऊनी  
 गयो जी, कोउ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सख इण्य  
 संग्राममां जी, रात पन्था जीवत ॥ मंदिरमाहि मानवी जो,  
 राख्याही न रहैत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ ढोल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ९ देशी ॥

काल स्वप्नाव नियत मति रुनी, करम करे ते थाय ॥  
 करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव ज्वंतरे जाय ॥ ३२ ॥  
 चेतन चेतज्यो रे करम न ठूटै कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें  
 राम बस्या बनवासै, सीता पामी आल ॥ कर्म लंकापति रावणनुं,  
 राज्य थयो वितराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्म कीनी कर्म कुंजर ॥  
 कर्म नर गुणवंत ॥ कर्म रोग सोग डुल पीनित, जनम जायै  
 विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्म बरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे  
 अन्न ॥ कर्म जिननें जोउ निमा रै, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥  
 ॥ चे० ॥ कर्म एक सुखपाले बैसै, सेवक सैवै पाव ॥ एक हय  
 गय चढ्या चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम  
 मानी अंधतणी पर, जग हीनै हाहूतो ॥ कर्म वली ते लहै  
 सकल फल, सुखनर सैज सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके  
 कीधो उद्यम ॥ करंभीयो करकोले ॥ माहि घणा दिवसनो भूखो,  
 नाग रह्यो नमनोलै ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूषक तसु  
 सुखमां, दीयै आपणूं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पधारया,  
 कर्म मर्म जोवो एह ॥ चे० ॥ ३९ ॥

( १९४ )

॥ ढाल ६ भी ॥ तो चढियो घन मान गजै ॥ ए देखी ॥

दिव उद्यमवादी ज्ञाणे ए, ए ज्यारै असमत्त तो ॥ सकल  
पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरत्त तो ॥ ४० ॥ उद्यम  
करतां मानवी ए, स्युं नवि सीजै काज तो ॥ रामें रथशायर तणी  
ए, लीधो लंकाराज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरे ए, जेहमां  
सत्त्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिउ पैसंता जोय  
तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल माहिषी तेल तो ॥  
उद्यमशी उंची चढै ए, जोवो एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम  
करतां इक समें ए, जेह न सीजै काज तो ॥ ते फिर उद्यमशी  
हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि ऊर्यां विना  
ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पमै कोलियो ए, मुखमां द्वेपे  
जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म  
तो ॥ उद्यमशी दूरे टलै ए, जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र  
हार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंज तो ॥ उद्यमशी खट मासमां  
ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपैश् सरवर जरै ए, कां  
करे ३ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल  
तो ॥ ४८ ॥ उद्यमशी जलबिंडुउ ए, करे पादाणमां गम तो ॥  
उद्यमशी विद्या ज्ञाणै ए, उद्यम जोनै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिडी किहां राखी ॥ ए देखी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरखे आवै ॥ अमिय  
रसै जिन वयण सुणीनै, आणंद अंग न मावै रे ॥ ५० ॥ प्राणी  
समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥  
॥ प्रा० ॥ ते मिछ्या मति जाणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकली ॥ ए  
पाचे समवाय मिछ्यां विन, कोइ काज न सीजै ॥ अंगुल जोनै

कवल तणी पर, जे बूजै ते रजै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी  
कोइ एकने, एहमां दिवै वमाई ॥ पिण सेना मिल सकल रांगणा,  
जीते सुजट लमाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावै,  
काल क्रमें वणाई ॥ जवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन  
घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम जोकादिक, जाग्य सबल  
सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उत्तपत जोवो विचारी  
रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे दलु कर्म अईनें, निगोदथकी नीक-  
लियो ॥ पुण्ये मनुज जवादिक पांमी, सद्गुरुनें जई मिलियो रे  
प्रा० ॥ ५५ ॥ जवथितनो परपाक अथो तब, पंमित वीर्य उल्ल-  
सियो ॥ जव्य स्वजावै शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे  
॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गा  
वो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्वाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक सुगति दायक, वीर जिनवर संश्रुण्यो  
॥ संघ सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय  
देव सुरिंद पटधर, विजयप्रज्ञ सुशिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक  
सीस इण पर, वित्त कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च स  
मवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ चंवणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार,  
आणी जाव अपार ॥ चवदै गुण धानक सुविचार, कंदिस्थुं सूत्र  
अरथ मन धार, पांमे जिम जव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिश्रयात कह्यो  
गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंशो, तीजो मिश्र वखाणूं ॥ चो  
थो अविरत नाम कहाणो, देशविरति पंचम परमांशो, बघो प्रमत्त



( १९६ )

पिठाणूं ॥ २ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अढम अपुरव करण  
कहीजै, अनिवृत्ति नांम नवम्म ॥ सुखम लोअ दसम सुविचार,  
उपज्ञांत मोह नांम इग्यार, खीणमोह बारम्म ॥ ३ ॥ तेरम  
सयोगी गुणघांम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम  
विचार ॥ कुगुरु कुदेव कुधम्म वखाणै, ए लक्षणा मिथ्या गुणगणै,  
तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ सकल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पद थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती  
ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय  
मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प धर्मे, संत  
सी नाम मिथ्यात चोथो ज्ञाणै ॥ ६ ॥ समज नही काय निज  
बंध रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अ  
नंत अज्ञान्यने, करिय अनादि धिति अंतसुजान्यने ॥ ७ ॥ जेम  
नर खीर घृत खंन जिमने वमे, सरस रस पाय बलि स्वाद केहवो  
गमे ॥ चौथ पंचम ठहै ठाण चढने पने, कृपाहि कषाय वस आय  
पहलै अमै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षट आवली, सहोय  
सासादने धित इसी सांजली ॥ दिव इहां मिश्र गुणवाण तीजो  
कहै, जेह उत्कृष्ट अंतरमदुरत लहै ॥ ९ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी ताम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकितो, कैतो सादि  
मिथ्यामती ए ॥ ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर  
दहणा बेऊं ठती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणाखय मांदि, मरणा लहै  
नही, आठ बंधनपनै नवो ए ॥ कै तो लहै मिथ्यातकै समकि-  
त लहै, मति सरखी गति परजवैए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान,  
बुद्धय करी लहै, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अविरत

गुणगण, तेज्रीस सागर, साधिक धिति एहनी जणी ए ॥ १२ ॥  
 दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै वरै ए ॥  
 सहु जिन वचन प्रमांश, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै  
 ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल अरधतां, उत्कृष्टा जव  
 में रहै ए ॥ केइएक जेदी गंठि, अंतरमदुरते, चढते गुण शिवपद  
 लहै ए ॥ १४ ॥ ब्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या  
 मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उप  
 शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते दय कीध, ते नर  
 दायकी, तिणहिज जव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ,  
 तातें तिहां थकी, तीजै चोथे जव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ दाळ ॥ ४ ॥ इण पुर कंवल कोइ न छेसी ॥ ए देसी ॥

पंचम देसविरति गुणगण, प्रगटै चोकनी प्रस्थाख्यान ॥ जेषा  
 तजैवा वीस अजक, पांभ्यो आवकपणो प्रत्यक्त ॥ १७ ॥ गुण  
 इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारै व्रत संजारै ॥ पूजादिक षट्  
 कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्च रौड ध्यान द्वै  
 मंद, आयो मध्य धरम आशंद ॥ आठ वरस ऊशी पुवकोरु, पंचम  
 गुणगणो धित जोरु ॥ १९ ॥ दिव आगे साते गुणगान, इक २  
 अंतरमदुरत मान ॥ पंच प्रमाद वसै जिण गाम, तेण प्रमत्त ठहो  
 गुणधाम ॥ २० ॥ धिवरकलप जिनकलप आचार, साधै षट् आव-  
 स्यक सार ॥ उद्यत चोथा ब्यार कषाय, तेण प्रमत्त गुणगण  
 कहाय ॥ २१ ॥ रुयो राखै चित्त समाधै, धरम ध्यान एकांत  
 आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासै, अपरमत्त सतन  
 गुण जासै ॥ २२ ॥

॥ दाळ ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर जहै दोष पंखिया ॥ ए देसी ॥

पहिले अंसे अठम गुणगणातणें, आरंजे दोष श्रेण संख्येपै

ति गणें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवै उपशमी, कपकश्रेणि  
 कायक प्रकृति दस कय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम  
 अपूरब गुण लहै, अठम नाम अपूरब करण तिणें कहै ॥ सुख  
 ध्याननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणाम अद्भिग ध्याने  
 धरै ॥ २४ ॥ द्वि अतिवृत्त करण नवमो गुण जांणियै, जिहां जाव  
 धिरूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मान ने माया संजलैषा हणें,  
 उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम  
 लोभ कांइक शिव अजिखखै, ते सुखम संपराय दसम पंक्ति अलै ॥  
 संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण गेम  
 सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै किणही  
 परै, तो थायै अहंमिइ अवर गति नादरै ॥ च्यार बार समश्रेणि  
 करै संसारमें, एक जेवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥  
 चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पनै, मोह उदय उत्कृष्ट अरथ  
 पुदगल रनै ॥ कपकश्रेणि इग्यारम गुणगणो नही, दशमथकी  
 बारम्म चढै ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ एक दिन कोइ मागंथ आयो पुरंदर पास ॥ एदेसी ॥

खीणमोह नामे गुणगणो बारम जाण, मोह खपायो नेमो  
 आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात,  
 द्वि आगे तेरम गुणध्यान तणी कहै वात ॥ २९ ॥ धात्तीय चोकनी  
 कय गई रदीय अघातीय एम, प्रकृति पिण्यासी जेहने जूना कप्पम  
 जेम ॥ वरसण ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान  
 प्रगट आयो विचरै श्रीजगवंत ॥ ३० ॥ देखै लोक अलोकनी गानी  
 परगट वात, महिमावंत अढरै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे  
 कणी कही इक पूरबकोनि, उत्कृष्ट तेरम गुणगणें ए धिति जोनि  
 ॥ ३१ ॥ कर सेवेसी करण निरुध्या मन वच काय, तेण अयोगी

अंत समय सहु प्रकृति खषाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊंचरता जेहनो  
मांन, पंचम गति पांमें सिचपद चउदम गुणधान ॥ ३२ ॥ त्रोजे  
चारमें तेरमें मांहे न मरै कोय, पहिलो बीजो चोथो परजव साथे  
होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लाजै पहिला ज्यार, धुरला पांच  
तिरी मांहे मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर वाहन मेरु मंरुण, सुमति जिण सुपसाजलै ॥  
गुणछाण चवद विचार वरणयो, जेद आगमनें जलै ॥ संवत सतैरैसै  
ठत्तीसै, आवण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध,  
कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदै गुणछाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवजाय ॥ साधु  
सकल प्रणमी करी, प्रणामी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव  
तत्वनी, गाथा ज्ञाता रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधै, कहिस्युं  
सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निज  
बेंध मोह ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल वयासी बलि बायाल,  
सत्तावन बारै चौ नव क्रम जेदनी माल ॥ १ ॥ इग छु ति चौविह  
पलविह छविह जीव कहाय, चेतन अस थावर वेदै गई करयो  
काय ॥ एगेही सुखम बादर ए बोय जिय गण, तन्नि असन्नि-  
पशिंदी वि ति चौरिंदी आण ॥ २ ॥ ए सग पज्जता अपज्जता चवदै  
होय, अनुक्रम जीव गण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण दंमण  
चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए वरु लक्षण लक्षत जीव इच्छ  
इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जती तीन, तासोसास

ज्ञाषा मन धरु ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगेंदी पंच पञ्जती  
 विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें धरु पञ्जती होय ॥ ४ ॥ ईद्रिय  
 पांच उत्तास आठ बल ए दस प्राण, च्यार ठ सांत आठ एगेंदी  
 विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंदी नें नव दस क्रम आय, प्राणाधी  
 जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनूना  
 त्रिणश जेद, काल दसम इग आगास पुगल च्यार विठेद ॥ खंघा दस  
 पणस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुगल नज्ज काल ए पांच  
 न जीव ॥ ६ ॥ चलण सहाई धम्मेश्वर संठाण अधम्म, अवगाहें पूरण  
 गलणें नज्ज पुगल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दीह पख मास नें  
 साख पढ्योपम सागर उत्तप्पणी सप्पणी काल ॥ ७ ॥ धरु इग दो सग  
 सग सग धरु इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र  
 कहाय ॥ तीन सात वलि सात तोन कतासें माण, केवलनाणी  
 ज्ञणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोथ मणु सुर दुग्ग  
 पंचिंदि ज्ञाय, पांच शरीर आदि प्रति सरीर उवंग कहाय ॥ आदि  
 संघेण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उत्तास तेम वलि आ  
 तप ने उज्जोय ॥ ९ ॥ सुजखगइ निम्माणत सादि दशु नीमाल,  
 सुर नर तिरि आठ तिष्ठंकर पुण्य वयाल ॥ तस बांदर पञ्जत प  
 तेय थिरं सुज सोय ॥ सुजग सुतर आइळ जलें तस दसको होय  
 ॥ १० ॥ नार्णतराय दस कनव बीजा नोचअसाय, मिथ्थ थावर  
 दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च दुग एगेंदी वि ति  
 चौरिंदी तेय, कूखगई उपघा अपसत्थ वस चौ जेय ॥ ११ ॥ पद  
 मं संघयण विना संघेण तेम संठाण, एम बयासी प्रकृति पाप त  
 तनी ए जाण ॥ थावर सुदम अपळ सादारण अधिरै गेय, असुज  
 दुजग दू सरणा इळ अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय  
 ईदि कसाय अवय तिम जोग बायालीस सेव पचीस क्रिया संजो

न ॥ काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरं  
 प्रकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय भिन्नादंसल वची  
 तेम,, अपञ्चखाणकी दिठ पुठ पाहुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवशि  
 य ने सत्थि सहत्थै जेह, आझापनकी वेयारण अणजोगा तेह ॥  
 १४ ॥ अणव केख पञ्चयना उवउंगी समुदाय, प्रेम देष इरियाव  
 ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म जाव  
 ण चारित्त, पणतिग बाबीस दस वारै पण संबर तत्त ॥ १५ ॥ इ  
 रिया ज्ञाषा एषणा सुमतीना जेह होष, आदान जंरु उच्चार नि  
 र्केवण पांचे जोय ॥ मनशुत्ती वयशुत्ती कायशुत्ती त्रिण जांण, हिं  
 व आगे बाबीस परिसह कहूँ हित आण ॥ १६ ॥ जूख पिपासा  
 सीत उंसन मोसा निरवत्थ, अरति जोषा चरित्रा नैबिद्या सिक्का  
 सत्त ॥ अक्कोसवहजायण अलान्न रोग त्रिण फास, मय सक्कार य  
 न्ना अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मइव अज्जव मुत्ती तव  
 संजम सम्म, सत्थं सौच अकिंचन बंजरचरज इ धम्म ॥ पढम अ  
 नित्य असरणि संसार एग अनत्त, असुचि आश्रव संबर निज्जर ज  
 वि जावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुजाव बोध डुरलज्ज इग्यारमगाम,  
 धरम साधक अरिहंत ए वारै जावना जाव ॥ सापायक डेदोप  
 स्थापन बीजो सोय, परिहार विश्रुद सूखम संपराय चउत्थो जोय  
 ॥ १९ ॥ तिम अइस्काय चरित्त सरब जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु  
 विधि आचरणे के जिय पांम्या सिद्ध ॥ वारै बिध निज्जर तत्त्व बंध  
 ना च्यार प्रकार, प्रकृति विई अनुज्ञाग प्रदेस जेई निरधार ॥ २० ॥  
 अणतण उणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सख्खीनता  
 बाहिर तप वरु ज्ञाग ॥ पायडित्त विनय वेयावच्च तेम सिज्जाय,  
 ध्यान काउसंग अर्ज्यंतर तप वरु विध आय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु  
 ज्ञाव काल अवधारण अित निरवंच, अनुज्ञागै रस तेम प्रसेवे इल

नो संव ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य वलि तेम, निगम चित्र  
 कर कुंजकार जंमारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना ज्ञाप्या  
 जे जे ज्ञाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सज्ञाव ॥ इम संसेप  
 विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्युं हिव मोख  
 तत्त ॥ २३ ॥ संत पदै परूपण इव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल  
 पांचमो ठो अंतर जाण ॥ ज्ञाग सातमो ज्ञाव आठ तिम अलप  
 बहुत्त ॥ ए नव जेदे ज्ञावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक  
 पदवी ठै जे पदेअविनाज्ञाव, व्योम कुसुम तिम सत्तिक मृंग जिम  
 नदीय अज्ञाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मगण छार, विवरण  
 कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै क्षायक सत्री  
 असत्री येसन्नि, अणहारी आहारी अणहारी ऊपन्न द्रव्य प्रमाणे सिद्ध  
 जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम ज्ञाग एग सिद्ध होय अणंत ॥  
 २६ ॥ फरसन क्षेत्रधी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सावि अनंती  
 धित जिन आगमधी सुविदीत ॥ प्रतिपातां ज्ञावै नहि सिद्धां अं  
 तर जोय, सरव जीवधी ज्ञाग अनंतम सद् सद् होय ॥ २७ ॥  
 दंशण नाण जेहने बे ते क्षायक ज्ञाव, जीवत जेहने वलि परणाम  
 क ज्ञाव समाव ॥ सद्गुणी थोमा वेद नपुंसकधी जे सिद्ध, तेहधी  
 धीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणो जीवादिक  
 नव तत्त तत्त सम्मत्त, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव  
 जिनेसर मुखधी ज्ञाप्या वयण जहत्त, ए बुद्धी जेहने मन संमत  
 निश्चल तत्त ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अ  
 र्द्ध पुगल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उत्तप्यणिय अणंते इग  
 पुगल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तद्गुण वयण प्रगट्ट ॥ ३०  
 ॥ इम नव तत्त जेद पमिजेदै विवरण कीध, आवक आग्रह कीन  
 सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गुण सुज सदन प्रकास नदी उपमान,

श्रीजिनलान्नचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक  
करिवर सिद्धे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वरसाखानी पमिसाख ॥  
ग्यानसार ते पमिसाखानी सूखम माख, ए नव पद नव रयणे  
विनाणें गूंथी माख ॥ ३२ ॥ संवडर निश्चय नय विगई प्रवचन  
माय, परम सिद्धि पद वामं गतें ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन  
ससि वार मेरु तिथ परन कीध, व्यार कथा तजि तत्वकथा ज्ञज  
नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्त्व ज्ञाषागर्जित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ रुषजादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥  
दंरुक रचनायें तडुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंरुक  
प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें  
अणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आठ तेठ वलि, वाठ वणस्सइ काय ॥ बि  
ति चौरिंदी गप्पधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस  
वेमाशिया, ए दंरुक चोवीस ॥ एदना द्वार कडूं दिवै, गणनाये  
ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेशरनी ॥ ए देशी ॥

सररीर उगाइण संघयणेंलणा संठाण, कोदाई लेसिंदिय दो  
समुग्घाय प्रमाण ॥ दिढी दंसण नाण जोग तिम बलि उवयोग,  
उपपात वलि चवण ठिई पज्जति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार  
सन्नि गई आगयवेय, वार गाहा डुगनो ए अरथ कह्यो संक्षेव ॥  
दिव तेवीस दारनो रहिल समय अनुसार, अलप रुची तुं तेदथो  
कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ देसी सूरती महीनाची ॥

चौ गप्पर तिरि वाळ कायें व्यार सररीर, मनुष्य सें पांच  
दंरुक इगवीस रद्दा ति सररीर ॥ धावर व्यारनें जघन्य उक्कोसे देइ



प्रमाण, जाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरबनो  
 जेधन्य स्वप्नावक अंगुल जाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने  
 विक्कात ॥ सुरनो सात हाथ गण्य तिरि वणस्सय काय, जोयण  
 सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेईदि तिगात्र  
 बेईदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंडी देह उंचै आकार ॥ आरंज  
 कालै वैक्रिय देहनो ए परिमाण, जाग एक इग अंगुलनो संख्या-  
 तम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख,  
 नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ साप्तावकथी डुगणो नारक  
 वैक्रिय काय, एक मडूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥  
 सुरनें पक्क एक उक्कोसविठवण काल, विगल संघयणो आवर सुर  
 नारकनी माल ॥ गण्य नर तिरनें षरु विगलनें ठेवळ एक, सरष  
 जीवनें च्यार दसेससाये लेष ॥ ५ ॥ नर तिरनें षरु सुरनें सम-  
 चौरंस संठाण, हुंरुग इग नारग विगलेंडी सूत्र प्रमाण, नाणाविह  
 धयसूर्मरुनी चंड आकार, वणसइ वाळ तेळ नू बुदबुद अप्पा-  
 कार ॥ ६ ॥ सहनें च्यार कसाय गण्य षरु नर तिरि दोय, वेमा-  
 णिय नारग तेज वाळ विगल त्रिक होय ॥ जोयति तेळ लेसा सेत  
 रह्या ने च्यार, दार इंडियनो सुगम तेहनो स्थु विसतार ॥ ७ ॥  
 समुदघात सग नरनें पण गण्य तिरि देव, नरग वायुनें च्यार  
 सेसनें तीनुं जेव ॥ दिढी दोय विगलमें आवरने भिख्यात, सेसने  
 तीन दिढि जिम प्रवचनमें विक्कात ॥ ८ ॥ आवर बि ति ने एक अव-  
 स्कू दंसण होय, चौरिंडी ते चस्कू अचस्कू दंसण होय ॥ मनुजनें  
 च्यार सेस दंरुगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर  
 नारगनें लीन ॥ ९ ॥ आवर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण,  
 गण्य मणुनें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें  
 तेरे जोग, मनुजने ५ रे च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाङ्मयायने पाच तीन आवर संयोग, मनुजने बार नरग तिर देवने  
 नव उपयोग ॥ विगल डुगै पण बरु चौरिंड़ी आवर तीन, उववाय  
 इग चवण दार दोनुं सम कीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या  
 चवण पपात, गझय तिरि विकलेंडी नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ  
 अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत  
 तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस उक्किं,  
 वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊने जिह ॥ नर तिर तीन पढ्य  
 सुर नारग अयर तेतीस, व्यंतर पढ्य अधिक लख वरष पढ्य  
 जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें  
 ऊणा दोय पढ्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणवास  
 दिवस उम्मास ॥ अंतमुहुत्तजइनें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥  
 नुवनपती नारग व्यंतर दस बरस हजार, पढ्य तेना अमंस वेमा-  
 णिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें षट आवरनें च्यार ॥ विग-  
 लनें पंच पङ्कती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरब जीवनें होय ठए  
 दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मजार,  
 दीह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पणसा  
 सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गझय मणुजनें दीह कालकी सन्ना  
 होय, केइक आचारज कहे दिठिवायथी दोय ॥ निच्चय पङ्कता पं-  
 चिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां मोहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥  
 संखानपङ्कत पंचेदी तिरि नर तेम, पङ्कता नू दग पचेय वणस्सई  
 जेम ॥ ए सरबेमें निश्चै सुरनी आगति हुंति, पङ्कत संख गझय  
 तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वरल्या नर तिर  
 उपजै न हुवे सेस, नू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजै असेस ॥  
 पुढवाई दस पयमें नू आऊ वणजंति, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ  
 उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊलो गमण पुढवी पद नवमें हुंत, पुढ-

चाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति  
 मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊथी मराने जीव मनुज नवि थाय  
 ॥ २० ॥ धीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनों वेद, आवर विगल  
 नारकनें एक नपुंसक जेद ॥ पञ्जत्ता मणु बादर अगन वेमाशिक  
 तेम जवख नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एमा ॥ २१ ॥ बेइंड़ी तेइंड़ी  
 पृथ्वी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥  
 हे जिन ए सहु ज्ञावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिषतां  
 किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंरुगमें ते गति  
 संयोग, लाथो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण  
 दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत  
 प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी  
 तुह दरसनानो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक  
 दंशाण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥  
 खरतर गड जट्टारक श्रीजिनखाज सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहनो  
 पद अरविंद ॥ २५ ॥ मकरंदे लोनो ग्यानसार तमु सीस, तेण तव्या  
 तेवीस द्वार दंरुग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम  
 चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ आवक  
 आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अछम चौमासो कर जैपुर नगर  
 मजार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंरुग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्जित स्तवनं ॥

॥ डुहा ॥ जुवन प्रदीपक वीर नभि, किंचित् जीव सरूप ॥  
 कदस्थुं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ दाल १ ली ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव डु जेद, सत्ता जिनै सिद्ध अनं-  
 तै रूप अजेदा ॥ संसारी आवर इग तिम त्रस दोष प्रकार, नु अप वाह

तैल वण स्तई थावर धारा ॥ १ ॥ फिटक रयण मणि विङ्गम दिंगुल वलि  
 हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी  
 अरपोढो पालेवो पाषाण ॥ जोमल तूरी ठस जूमि पादण जे खाण  
 ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विवेद ॥ जूमि आकास  
 ठस हिम करग आऊना जेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं  
 अर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पादण जेम ॥ ३ ॥  
 अंगारा जाला जोजर तिम जलकापात, असणि कणग विद्युतादिक  
 अग्नि जीव विहात ॥ उग्रामगजकलिका मंरुल वलि मुख वात,  
 सुद्ध गुंज तिम घण तणु बाऊ जेदे हात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय  
 वणस्सई जीव डु जेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कं  
 दा अंकुर कूपल फूलण बलि जंबाल, जूफोमा अइत्तिय सरवे जे फ  
 ल वाले ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालंको साग, गुपत  
 सिरा सांधा गांठा जांजे सम जाग ॥ काटी माल जूमिमें रोप्यां पल्ल  
 व थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरी रे  
 एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल ढाल फल मूल काठ बीजै जिय एक ॥  
 वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमु  
 हुचै आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिढी निजर न होय, लोका  
 लोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय ॥ कवमी संख गंमोला लहिगा  
 लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विहात ॥ ८ ॥ माय बा  
 हाक्रम पौरादिक वेइंड़ी होय, गोमी माकण जूआ कीमा कीमी दोय  
 ॥ दीपक ईली धीवेलो गोगीमा जात, चरम जू कागादहिया गोवर  
 ऊम उतपात ॥ ९ ॥ धनकीमा जिम चोरकीमा गोवालो तेह, ईली  
 कंथुक इङ्गोप तेइंड़ी एह ॥ बीवू ढंकण जमरा जमरी ईंड़ी च्यार,  
 तीमा माखी मांस मञ्जर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवरमोला मांक  
 मिय पतंग इत्यादिक जेद, नारक तिरि मणु देव पंचेइी च्यार विवेद ॥

धम्मा वेसा सेला अंजने रिण क्कात, मधा माधवई नारग ए नाने  
 सात ॥११॥ जलचारी अलचारी नजचारी तिरयंच, मञ्ज कञ्ज सुस-  
 मार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय उरपरि जुजपरि साप जुचारी  
 तेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय ॥१२॥ खेचर चरम  
 रोम पंखी चमचेरु कपोत, मनुजलोकथो बाहिर समुग विगय पंख  
 होत ॥ सरबे जल अल खचर समुञ्जम गङ्गय दोय, कम्म अकम्म जूमि  
 अंतर देवा मणु जोय ॥१३॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अह,  
 जोइस पंच वेमाणिय डुविहासु ते दिठ ॥ पनरे जेदे सिद्ध कहा ए  
 जीव प्रकार, तनु मानादिक द्वि एहनो कहिसुं अधिकार ॥१४॥ देह  
 आउखो एक सरीरे धितनो मान, प्रांश जेहने जेता तिम वलि योन  
 प्रमाण ॥ अंगुल जाग असंख सहु एगिंदी काय, जोयण सहस साधिक  
 पचेय वणस्सई काय ॥१५॥ वि तिचउरेंडो अनुक्रम उक्किदेह ऊंचास,  
 बारै जोयण तीन गाउ इग जोयण जास ॥ सच्चमना नेरइया धणु  
 सय पंच प्रमाण, तेहसी अरध २ ऊशा अनुक्रम रयणाण ॥१६॥ जो  
 यण सहस गङ्गधर मञ्ज उरगनो देह, गाउ धणुअ पुहत्त जूचारी पं  
 खी जेह खेचर नव धणु उरग जुयंग जोयण नव होय, नव गाऊ  
 परिमाण समुञ्जम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खरु गाउ ऊंचास चउप्प  
 य गङ्गय मांण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमाण ॥ जुवन  
 व्यंतर जेइस वेमाणिय ईसाणंत, सात हाथ उक्कोस ऊंचपणै तणु  
 हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेइ परु ब्रह्म छांत ५ पांच, शुक्र स  
 हस्त्रारे उक्कोस च्यार कर बांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हाथें  
 तीन, नवग्रैवेयक दोय पंचाणुतर इग लीन ॥ १९ ॥ बावीस सात तीन  
 दस वरस सहस्सें आय जू आऊ वाऊ वसती दिन तेऊकाय ॥ बार  
 वरस गुणचास दिवस तिम वलि उम्मास, अनुक्रम बेइंडी तेइंडी  
 चौरिंडी रास ॥ २० ॥ सुर नारग तेतीस अयर उक्कोसें आय, चौपय

तिरिख मनुजनौ तीन पढ्योपम थाय ॥ जलचर उरपर सुजपर  
 उक्तासे पुढकोमि, पंखनि इग जाग असंख्य पढ्यनो जोम ॥ २१ ॥  
 सरब सूखम साधारण समूहम मणुं जेह, जेहन्न उक्तासे अंतमुहुत्त  
 नियम थिति तेह, इम उगाहण आख्यो संखेपै अधिकार, जे वलि  
 इत्थ वितेस वितेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य असंख्यो सहु  
 एगिंई आपणी काय, उपजै चवै अनंत साधारण वशस्सई काय ॥  
 संख्याता संवहर विगल आपणी देह, सात आठ जव पंचेई तिरि  
 मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकणी उदवरती जीव नरक नवि जाय,  
 देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंदिय सासोसास आठ  
 बल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ इग डु ति चौरिंइय जाण  
 ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेई दस नव अनुक्रम जोय, प्राणथक।  
 जेवि प्रयोग जिय मरणे होय ॥ जोम सायर संसार अपार अनंती  
 चार, जमियो जीव धरम विन जोण असीने च्यार ॥ २५ ॥ सग सग  
 सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद  
 लाख सूत्रे लाख ॥ जू अप तेउ बाऊ वणयत्तेय साधार, बि ति चौ  
 पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आय न  
 पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत जंग जिन आगम थित  
 विहात ॥ रोग न सोग न जोग जोग नही नारी लिंग, नहीब नपु-  
 सक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज  
 ए च्यार अनंत, सिद्ध अया तेहथी सिद्धतै सिद्ध कहंत ॥ इम ए  
 जीवविचार गाथायो जाषारूप श्रावक, आयहथी में कीनो सुगम  
 सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गढ जटारक श्री जिनलाज सूरीस,  
 रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस  
 वारण ससिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर  
 मजार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्षित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥  
प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थीकर आवे  
तिहां, त्रिगमो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहुं  
अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकित्ती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥  
सूर्य देख दरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर बलाणी राणी बेलणा ॥ २ ॥ देसी ॥

आप अरिहंत जलै आविया जी, गावै अपठरह गंधर्व ॥  
समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहुं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥  
जुवनपति वीस इंदै मिढ्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस उ  
दस वेमाणिय जुरुधा जी, चौसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥  
पवन सुर पूंज परमारजै जी, जूमि योजन सम जान ॥ मेघकुमार  
रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिन्काव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर  
सुज धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर दिव वेगसूं  
जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण  
उरध मुखै जी, वरषए जाणु प्रमाण ॥ जवणवइ देव त्रिगमो जलो  
जी, करय ते सुणउ सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-  
तणो जी, सोवन कांगरै सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी,  
कनकनो वीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरे जी,  
रचय वेमाणि सुरराज ॥ जलो त्रीजो गढ जीतरे जी, जिहां विराजै  
जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ जीत नंची धणु पांचसै जी, सवा-  
तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास  
धणु ध्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावनी  
वोस हजार ॥ थाक अम नहिय चढतां थकां जी, एक कर उच्च  
विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीधकी जी, उच्च

रहे त्रिगद आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसै जी, नगर  
आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं ९ दिस तिहां जी,  
नीजमणि मोर निरमांश ॥ डसय धणु मध्य मणि पीठका जी,  
उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां  
चिहुं दिसे जी, मोतीये जाकज्जमाळ ॥ सम विच कूण ईसाणमें  
जी, देवहंदो सुविस्ताळ ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवडुंडुजि नाद उपदिसे  
जो, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्म जिम आइ सिर ऊपरे जी,  
गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ बाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुढ दिसि आसणे आय वेसे पदू, सुर कृत चौमुख रूप देखे सहू  
॥ दीपे असोक तस बारगुण देहधी, देखि हरखे सहू मोर जिम  
मेहधी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण डत्र सुविस्ताळ ए, रूप चि  
हुं ९ दिसे चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वांण श्री जिनतणा,  
जगवंत उपदितै बार परषद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग  
निकूलै करी, गणधर साधची तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतषी जु  
वणनी वितरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवांण ऊजो सुणे ॥ त्रिहंत  
णा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणिय नर नारि ईसाण ए  
॥ बारह परखदा मद मन्त्र ठोरु ए, जूख त्रिस विसरै सुणै कर जोरु  
ए ॥ १९ ॥ पूढ जामंरुल तेज प्रकास ए जोगण सहस ध्वज जं  
च आकास ए, ऊलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहू  
वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ बाह्या वहिज सहू धरिय पहिले  
गढे, दोय पगचार नर नार उंचा चढे ॥ जिनतणी वाणि सुणि  
जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥  
पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अव  
तारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांदिरो प्रौढ



माहे वसैं ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणिये, विदिसि  
चौ कूष दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए,  
स्नान पाने वपुं निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप  
राजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंबरु पुरुष खट्ग अ  
र्धिं माळे ए, रजतगढ प्रौलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो  
त्रिगम्हो नहुयपुर जिण आम ए, देव महर्दिके रचै तिण गंम ए ॥  
करण बारवार नही कारणा कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही  
होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी रुद्धि दीठी जियै, तेह थ  
धन धन अवतार पायो तियै ॥ पास अरदास सुणी वंजित पूरज्यो,  
हिव मुज ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै रुद्धि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सर-  
वहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी ॥ प्रकरण सिद्धंत  
गुरु परंपर सुणी सहु अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म  
वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवन ॥

॥ अथ श्री कृष्णभेदेवजी सुण २ सैत्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ दाल ॥ पाटोवरजी पाटियै पधारो ॥ ए देखी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, हूं  
तो अरज करूं सिरनांमी ॥ कृपानिध विनती अवधारो, जवसाथर  
पार उतारो, निज सेवक वान वधारो ॥ क० ॥ १ ॥ प्रजु भूरति  
मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जानं वारी हुं वार हजारो  
क० ॥ २ ॥ हिव किसिथ विमासण कीजै, मुज ऊपर महिर धरीजै,  
दिल रंजन दरसन दीजै ॥ क० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया,  
जवरेना पातिक टलिया, प्रजु जो मुजसै सुख मिलिया ॥ क० ॥  
॥ ४ ॥ समरघा संकट टलि जावै, नव नव नित भंगल आवै, मुज

आतम पुन्य जरावै ॥ क० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजै, केसर  
चंदन चरबीजै, दिन धन तेह गिणीजै ॥ क० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस  
सरस लहि तोरो, अति हरषित हुबो चित मोरो, जिम दीदा चंद  
चकोरो ॥ क० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचम आरै, वीस माहा जय  
संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ क० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांभि  
सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर कोई, वाधै संपत शोजन सवाई ॥  
॥ क० ॥ ९ ॥ नाजिराय कुलंबर चंदा, जव जन मन नयण आनंदा,  
जलगै सुर असुर सुरिंदा ॥ क० ॥ १० ॥ जयकारी रिषज जिनंदा,  
प्रह सम घर परम आषंदा, वंदे श्रीजिन जक्ति सूरिंदा ॥ क० ॥ ११ ॥  
इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ बाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिखो ए, गवनीपुर मंरुण गुण निखो  
ए, तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वंजित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥  
नयरी नांम वषारसी ए, सुरनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी  
बै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु  
घर नार'ए तसु गुणादि न लबै पार ए ॥ तास उयर अवतार ए,  
तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन'तिण निसि लह्या ए,  
अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूबै जूपतिनें कह्या ए,  
करजोनि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ बाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मनै हरख्यो ॥ बीजै  
वृषज ऊदार, घरणी जिण धरयो जार ॥ ५ ॥ तीजै सिंद प्रधान,  
जसु बल कोय न माना ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुरसेवी  
॥ ६ ॥ पांचमै पुष्पनी भाला, पंच वरण सुविशाला ॥ उठै दीगो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो  
 अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥  
 नवमें पूरण कूँज, जरियो निरमल अंज ॥ देखि सरोवर दसमें,  
 मनह'थयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि  
 इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥  
 तेरम रतननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें  
 ए दीधो, पातिक धूमधी नीगो ॥ ११ ॥ सुपन कहा सुविचार, हरख्यो  
 जूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, आस्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत  
 तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण,  
 आबी मंदिर ऊचि ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयल  
 ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते वर  
 पहुता आपसै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ दाल ३ ॥

दिव जनम्या जगगुरुजगत्र थयो जयकार, खिण इक नारकिये  
 पायो सुख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध,  
 कर थानक पोहती बंजित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोस  
 इंड मिली तिहां आवै, लेइ निज जत्तै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ क  
 री जनम महोछव जननी पासै ठावै, तिहांधी सुर सब मिल ही  
 प नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार,  
 घरइ गाईजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार,  
 तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन२कला  
 करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजितरूप जिसो देविंद ॥ गुणकला  
 विचक्षण विद्यातपो निधान, जोवनवय आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥

( ११५ )

॥ ढाल ४ ॥

कुमारपदै प्रभु रक्षतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग  
संजम लेवा समै ए ॥ तब लोकांतिक देव जणावै अवसरू ए, देह  
संवञ्चरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ १० ॥ स्वामी संजम लेय  
इंद्रादिक सब मिळ्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदळ्या  
ए, पांभीय केवलज्ञान सुरै महिमा करी ए, आपीय चौविह संघ  
मुगति रमणी वरी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गौमीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह  
परलोग सुवञ्चित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवनीपुर जावै,  
चोर धाम संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ १२ ॥ धरणराय  
पठमावइ जास वहे सिर आण, सांमल वरण सुसोजित नव कर  
काय प्रमाण ॥ कळपवृक्ष चिंतामणि कामगवी सम तोलै, श्री गुण-  
शेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ १३ ॥ इति श्री गोमी पार्श्व-  
जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु  
अजिथ जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर  
प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यजंमार जरेसु ए,  
भानव जव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोरुहि लाख पचास ए, सागर  
जिनसासण ज्ञास ए, रिसइ जिनेसर वंस ए, उवज्जाय सरोवर  
इंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां  
गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, बिहुं रमयति पासा सार ए  
॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ उयर  
वस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी जननी आस ए ॥ ५ ॥ बिहुं जण

मन आंशंदियो ए, सुत नांम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण  
 सयल उठाह ए, क्रम२ वाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस  
 तणी ए, गति सुखलित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति बाले  
 गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो सं  
 सार ए, बलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए,  
 लंढन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो  
 ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधै सब काज ए, प्रभु  
 पालै पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ दिव हअणापुर गाम ए, विश्व  
 सेन नरेश्वर नांम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे बेव  
 ए ॥ १० ॥ चवदह सुपने परवरयो ए, अचिरा उरै सुत अवत  
 रह्यो ए ॥ मानव देव वखाणियो ए, चक्रीसर जिणवर जांशियो  
 ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिस नांम दियो श्रीशान्त ए  
 ॥ जिन गुण कुण जांयै कही ए, त्रिहुं नुवणे तसु उपम नही ए  
 ॥ १२ ॥ नयण सलूखो हिरण्यो ए, वन सिंहे बीहै एकलो ए ॥  
 नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गी  
 तहि राग सु रंग ए, पिण पन्नौ लोक कुरंग ए ॥ तो उलंग्यो स  
 सि संक ए ॥ तिस पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग  
 अति खलजळ्यो ए, जय जंजण सांमि सांजळ्यो ए ॥ आणंदियो  
 मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंढन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति  
 परणो घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल बल आ  
 यण जोगवे ए, पीय राज जली पर जोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर त  
 णो मंरुल समे ए, पंजास सदस वरसां गमे ए ॥ तो तेजै दिणध  
 र जिसो ए, ऊपन्नो चक्रयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी जरह उ  
 खंरु ए, वरतावी आण अखंरु ए ॥ चवद-रयण नव निहि सही  
 ए, वसु सोख सदस जखै अही ए ॥ १८ ॥ सदस बहुतर पुर

( ३१.७. )

वरा ए, बत्तीस मौनबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोरु ए, छिन्न  
वे नमै बे कर जोरु ए ॥ १९ ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लाख  
चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, बत्तीस  
सहस नाटिक रमें ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला  
वण्य लोला जरी ए ॥ जंगम सोदग देहरी ए, एसी चौसठ सह  
स अंतेऊरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र  
यण जंमार ए ॥ ते कहिवा कुण जाण ए, वपुषपुरे पुण्य प्रमांश  
ए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस  
सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगील ए ॥ २३ ॥ इण पर बिहुं  
तीर्थकरा ए, विर पाखिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए  
सार ए, बिहुं लोधो संजम जार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर  
ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन ज्ञाण  
समाण ए, बिहुं पांथ्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोरु-  
हिमहि ए, बिहुं चौतीसै अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं ठाण  
ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरी ए,  
बिहुं आगलि इंद अंतेउरी ए ॥ टिंगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि  
गुण गावै सुरबहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर ठत्र चमर विमल, बिहुं  
मग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग  
न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं जवयार जुवन जरी ए, बिहुं  
सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं जंजी जव फंद ए, बिहुं उदयो  
परमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जाणें चिंतामण सुर  
तरु समो ए ॥ शुणि अति संज विहाण ए, तिहां इह परजव नवि  
हांस ए ॥ ३० ॥ बिहुं उज्जव मंगल करण, बिहुं संघ सयल डुरिय  
हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज जुवण  
रयण ॥ ३१ ॥ इम जगते ज्ञोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण सुय जणि ए ॥ सरण बिहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमस्संवण  
उवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजळो रे ॥ ए देशी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान  
क्रिया जिण उपविसी जी, सब सुख तणो उपाय ॥ जविक जन  
धर श्रीजिन उपदेस, बूटे कर्म कलेस ॥ ज० ॥ आंकणी ॥ पम्पिलेहण  
मुहपत्ती तणी जी, ज्ञाखी ठै पचवीस ॥ तिहां ए ज्ञाव विचारिये  
जी, इम ज्ञाखै जगदीस ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये  
जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पम्पिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी  
पुष्टि ॥ ज० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रणी जी, मोहनी तीननो  
त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥  
ज० ॥ सीष बधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव  
अखोमा आदरो जी, नव पखोमा गमाउ ॥ ५ ॥ ज० ॥ देवतत्व  
गुरुतत्वसुं जी, धर्मतत्व अह सार ॥ कुशुरु कुदेव कुधर्मनो जी,  
तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ ज० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी,  
संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अव-  
धार ॥ ज० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति गृहीने  
शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जाणनें जी, नीने दंरु विशुद्ध ॥ ज० ॥ ८ ॥  
पम्पिलेहण पचवीस ए जी, मुहपत्तीनी सार ॥ दिव पम्पिलेहण  
अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ ज० ॥ ९ ॥ हास्य अरति  
रति धोयनें जी, सुद्ध करो वांम वाह ॥ तज जय शोक डुगंठना  
जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ ज० ॥ धुरली लेस्या तीन  
ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि  
मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ ज० ॥ काढ सख्य तीन उरथनी जी, मा

या नियाण मिळयात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करा  
 घात ॥ १५ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विराधना जी, चरणा त्रिन्दे सुद्ध  
 होय ॥ ए पन्निखेइण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १६ ॥ ज० ॥  
 इम पन्निखेइण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै  
 करै जी, पांमैं सुख अनेक ॥ १७ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जिन-  
 वरतणा मुखथी, अरथ गणघर सांजली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहा-  
 णी, सुणो जविण मन रली ॥ जवझाय वर श्रीलङ्किरीत, मुख-  
 थकी ए संप्रदी ॥ मुंहपती पन्निखेइण तणी विध, लङ्किरीत गणि  
 कही ॥ इति श्रीमुहपती पन्निखेइण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोचन स्तवन लिख्यते ॥

॥ बाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देखी ॥

ए घन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उपगार  
 थायै घणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लहिय समकित  
 अमें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान घर तप जप खप  
 करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागे जिके गुरुमुख  
 आलोइयै, जीव निमल हुवै बख जिम घोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे  
 तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरथ ते धारणा ॥ कियही  
 कारण बसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजियै ॥ ३ ॥  
 कीजीये जेह कंदर्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरौ ॥  
 कूदतां प्रवृत्तां होय दिंसा जिहां, दर्प इया नांम करि दोष तीजो  
 तिहां ॥ ४ ॥ विषसतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चौथौ आकु-  
 टिया दोष ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एकथी,  
 दोष घर प्रायश्चित्त लेह विवेकथी ॥ ५ ॥



॥ ठाळ २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागष आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्यानना उपगरश-  
तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमठ एकासणो आंबिल  
उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताई तास ॥ ६ ॥ ए  
जो खंरित आयै अथवा किहांई गमाय ॥ तो बलि नवा करायां  
दोष सहू मिट जाय ॥ आपना अणपनिलेह्यां परिमढनो तपवार,  
गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार  
तिहां पुरमठ जघन्य, एकासण आंबिल अछम चिहुं जेदे मन्न ॥  
आशातन गुरु देवनी सादमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी  
आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंज विणास्यां चोथ  
प्रसिद्ध, वि ति चउरेंडी प्रसायां एकासणथी वृद्ध ॥ बंधु बि ति चौरें-  
डिय हण्यां वि ति चउ उपवास, संकल्पादि चिहुं विधि डगुणा  
डगुण प्रकास ॥ ९ ॥ उद्देही कुलियावना कीनी नगरा जंग, बहुत  
जलोयां मूक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमि पातन  
आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता होय उपवास विवेक ॥ १० ॥  
संकल्पादिक एक पंचेंडी उपड्व होय, दोइ त्रिण आठ दसै उपवासै  
आलोयण जोइ, बहु पंचेंडी उपड्व षठ अठमें दस बीस ॥ चिहुं  
प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंडीनें लकमी  
प्रमुखै कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें षठ विचार ॥ साथ  
समहें लोक समहें राज समह, कुमा आल दियां डड चौथरु षठ  
प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस दंभायां तेम मरायां बीस, इक लल  
असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग  
इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास  
॥ १३ ॥ सूआवमना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन  
कीधां बहु असर्ताने पोस ॥ करीय डवाळत बार हजार गुणो मव-

कार, मित्राशुक्ल देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बेकर जोडी ताम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पञ्चखाण, विण दीधां वांदणा, पन्तिकमणां  
विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै जणया, इ  
कश् आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंतसीनें एकत्र, निबी आंबिल, जां  
गै आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण  
नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास जंग उपवास, आंबिल ऊप  
रां, अधिको दंरु वखाणिये ए ॥ पाचम आठम आदि, जंग कियां  
वली, फिर अही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग,  
चूल्है घरटियै, दीधै अछम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी  
बुरी, आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री  
जोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परझेइ  
चीतव्या, उपवास एक२-जुजूआ ए ॥ १९ ॥ पनेर करमांदान,  
नियम करी जंग, मद्य मांस माखण जख्या ए ॥ आलोयण उ  
पवास, संकप्पादिक, चिहुं जेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोढ्या  
मिरखावाद, अदत्तां दान त्युं, जघन्य एकासण जाणायै ए ॥ अति  
उत्कृष्टी एण, जाण आलोयण, उपवास दस२आंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ गुण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत जागे अतीचार, जघन्य ठढ आलोयण धार ॥  
मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥  
परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमाहे जंग ॥ चार सिद्धा  
व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी  
नववामि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फस्त  
हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधुअने आवक  
पोतोध, एकेही सच्चिन् संधेदे कीध ॥ बीसर जोले सच्चित जलप्री

ध, दंरु एकासण आंखिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोयां विण लूह्यां  
पात्रै, एकासण तिम पुरिमद्ध मात्रै ॥ गइ मुहपत्तो आंखिल सातो,  
तिम लुवै अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार ठीमो राखै, अत  
पञ्चखांण करै पट् साखै ॥ दोषे मिच्छामिडुकरु दाखै, आलोयण  
खेतां अजिजाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता  
नावै पार ॥ तोपिण संकेषे तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि  
स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने  
विधि पांमी ॥ जीतकळप ठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयनें ॥ ए  
कांत पूवै गुरु वतावै, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एइ करती  
तेह तिरसी, धरमवंततणै धुरै ॥ ए तवन श्रीभ्रमसिंहं कीधो, चौ  
पने फल वथी पुरै ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, साश्वता चोमुख सोहे रे ॥ रूप  
ज्ञानन चंडानन वारिषेण, वर्द्धमान मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥  
आठमो द्वीप नंदीसर अदन्तुत, बलयाकार विराजै रे ॥ तेदनेमध्य  
चिहुं दिस सोजित, अंजन गिरिवर ठाजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयख  
सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अजिरामा रे ॥ मूलै प्रथुल सहस  
दस जोयण, उवरि सहस कर ॥ ३ ॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद  
प्रचूना, अति उचंग उदारा रे ॥ साधू जंघा विद्याचारण, वांदि वि  
विध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यै इकसो चोवीस, बिंब संख्या  
सब दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो ज्ञविजन जगते, सुध आगम कर सा  
खी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणै सहु जोयण बहुतर, सो जोयण  
आयामा रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रचूप्रासाद सुवामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रज्जुनी, विविध रतनमई काया  
 रे ॥ जिन कड्याणक उज्जव करवा, सुरपति जेके आया रे ॥ नं०  
 ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उवैरे, चोमुख ध्यार विसाला रे ॥  
 चावइ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चो  
 सठ सहस जोयण उज्जै, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दि  
 सि सोल सहस अधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥  
 ९ ॥ वावइ नैं अंतर विदसैं, रतिकर परवत रूमारे ॥ दोय २ संख्या  
 जगदीसै, कहा नही ए कूमा रे ॥ नं० ॥ १० ॥ जोयण सहस मानदस  
 ऊंचा, दस २ सहस विस्तारारे ॥ ऊल्लरिसम संगण जगत गुरु, नि  
 श्चय ए निरधारया रे ॥ नं० ॥ ११ ॥ तेइ ऊपर प्रासाद सतोरण,  
 अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपरिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिन  
 राज बखणै रे ॥ नं० ॥ १२ ॥ इम प्रासाद प्रज्जुना बावन, नंदीसर  
 वर दीपे रे ॥ इय जाव विधि पूजा करतां, मोइ महा जम जायें  
 रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जोवाजिगमें जा  
 णो रे ॥ इम अधिकार वै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आणो रे ॥  
 नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुजव इहा  
 ध्यावो रे ॥ ध्यावो जिम पावो परमात्म, जैनचंड गुण गावो  
 रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाई द्वोपै वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंडु मनसुध विहरमाण जिणोसर वीत, द्वीप अढीमें विचरै  
 जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारै तारै कर उपगार, किय २ ठामे  
 कुण २ जिन कहस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पैतालीस लक्ष योजन मानुषकोत्र  
 प्रमाण, बलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुझै सोइ  
 द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमाज्जुमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥  
 पहिलो जंबूद्वीप समै विच आल आकार, छांबो पिहुलो इक लख

जोयणने विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नामें मेर, तिणथी  
 दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षिण दिसि  
 एह ज़रत सुज क्षेत्र, पांचसे उबीस जोयण ठ कलां तेहनो क्षेत्र ॥  
 उत्तरखंरुमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण चिहु करमांजूमी गए  
 अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस ठसे चोरासी जोयण जाण,  
 च्यार कला ए महाविदेह विखंज वखाण ॥ बावीससै तेरे जोयण  
 एक विजय पदुलाण, एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहने गण ॥  
 ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरब पश्चिम, दोय विजाग, सोलै ५ विजय  
 तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोषे आरे तारै श्रीअरिदंत,  
 एहवे महाविदेह करमजूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरब विदेह विजय  
 पुष्कलावतो आठमी ठांम, पुंरुरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंय-  
 स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नाम, पश्चिम विदेह  
 बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वडविजय  
 बलि पूरब विदेह, नयर सुलीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥  
 नखिनावर्त चोवीसमी पश्चिम विदेह वखाण, बीतसोका नगरी  
 तिहां चोथो सुबाहु सुजाण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप  
 मजार, महाविदेह सुदरसन मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा  
 गढ जेम गिरिंद, खाई रूपै दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो द्वीप ए, धन ५ धातकी खंरु ॥ पिहुको चिहुं  
 लख जोयणो, मंरुल रूपे मंरु ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय ज़रत दोय  
 एरवत, दोय बलि महाविदेह ॥ करमजूमि खट ठै जिहां, जण-  
 हिज नामें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरब पश्चिम धातकी, खंरु गिणीजै  
 दोय, विजयमेरु पूरब दिसै, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥  
 इक २ मेरुने अंतरे, करमजूमि तीन २ ॥ निज २ मेरुथी मांरिने,

लेखो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो,  
 उठो स्वयंप्रभु ईस ॥ रुषजानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस  
 ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आवमो, ए च्यारे जिनराय ॥  
 पूरब धातकी खंरुमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली  
 बिहुं जिननी परे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नामे अनुक्रमे,  
 विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो  
 देव विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥  
 दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंझानन जिन, पञ्चम धातकी माहि ॥ विचैरे  
 च्यारुं जिणवरा, अचलमेरु उठाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी  
 खंरु ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-  
 दधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींठ्यो चूनी जेम विचाल ए ॥  
 सोलह लख जोयण विसतार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥  
 उलालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनै आधै पगै ॥ विच पञ्चो  
 परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहा लगै ॥ तिण आधिकर अठ लाख  
 योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमजूमी ठ ए कहीजै, धात-  
 की खंरु जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधै पुष्करनें पूरब दिसै, मंदिर  
 नामे मेरु तिहां वसै ॥ पञ्चिम विजुमाली मेर ए, इहां किय इतरो  
 नामे फेर ए ॥ २० ॥ फेर ए इतरो इहां नामे, अवर ठामे को नही ॥  
 एक २ मेरे तीन तीने, करमजूमि तिहां कहो ॥ इम जरत एरवत  
 माहाविदेहे, नाम सरखो हेत ए ॥ तिणहोज नामे विजय सगली,  
 सासता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंरु तिम पुष्कर  
 सही, इहां क्षेत्रानी रचना विधकही ॥ बार २ कहनां ए विसतार ए,  
 पहिला पर लेख्यो सुविचार ए ॥ २० ॥ सुविचार वाकी तेह सगलो,

नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पश्चिम जेहनी ते, तेह तिमहीज  
 अनुक्रमें ॥ श्रीचंडबाहु जुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थकरा, पूरवे पुष्कर  
 अरथ माहे, सरंबा जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेनवंदू जिन  
 सैतैरैमो, श्रीमहाजड अछारम निम नमो ॥ देवजला उगणीसम  
 देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ ३० ॥ जिण च्यार पुष्कर  
 अरंध माहे, कहा पश्चिम जाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि पिहुं  
 दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौराली पूरब लाख बरसा, आठ इक  
 २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरणा सुहामणो  
 ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ए ॥ दिव अरुहै  
 जेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहै, पांचे  
 जरते जिम पांचे लहै ॥ ३० ॥ जिण लहै पांचे तेम पांचे,  
 एरवत मिळ दस हुवा ॥ इक १ विदेहे बत्तीस विजया,  
 तिहा पिण ठै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोनि  
 नवसय केवली, नव सहस कोनी अवर मुनिवर, वंदियै नित ते  
 वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां जरते एरवतें आज ए, पंचम आरै  
 नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसै जिन  
 गुणगेह ए ॥ ३० ॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसयां चोतीस  
 ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आज्ञे  
 तारण तरण विचरै, केवली दोय कोन ए ॥ दोय सहस कोनी सुसाधु  
 बीजा, नमुं बे कर जोरु ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा  
 जूमी क्षेत्र प्रमाण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह ज्ञाख्या वीस विहरमाण  
 ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सत्तर गुणतीसै समै, सुखविजयहरख  
 जिनंद सानिध नेह धरि ध्रमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप  
 स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खरुं ३ आधोपुष्करद्वीप एवं  
 ४ द्वीपसै ५ जरत ५ एरवत ५ महाविदेह १ ५ कर्नजूर्मांमै विच-

रता साश्वता २० बिहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीमाज्जाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र ज्ञानी ऊ  
महेज्यो, तुम्हे नरजव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथा  
मांहे ठाजे, आबू मारूमै देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे ला  
गो, जंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास  
कहावै, निरखंता भ्रिपति न थावे रे ॥ जा० ॥ एतो रुंगरियानो राजा,  
एहनी ठै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ गह रुतु वास वणायो,  
एतो चंपला अंबला ठायो रे ॥ जा० ॥ सरवर ऊरणा जाजा, जिहां  
तिहां वनवेढ्या आजा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जार अढोरे वशराई,  
एतो इहांहिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फू  
लमानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर जूमि विसाला, देवल  
दीठा रलिवाला रे ॥ जा० ॥ बिमलमंत्री वरदाई, चकेसरि देवी सहा  
ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवारु वंस वदीतो, जिणइलपति साहि जो  
तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेष करायो, पाइण आरास मंढायो रे ॥ जा०  
॥ ६ ॥ जीषीर कोरखी जेरयो, दल माखण जेम जेकरयो रे जा०  
॥ नवीर ज्ञांति वणाई, जिहां तिहां कोरखिया जिणाई रे ॥ जा०  
॥ ७ ॥ उत्तरे पाइण जेतो, जोखीजे पाइण तेतो रे ॥ जा० ॥  
आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥  
जगसिख कोर सोनइया, इय लागत करि जस लीया रे ॥ जा०  
॥ करजोनीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥  
पुठै चढिया हाथी, मंढाणा पति साह सार्थी रे ॥ जा० ॥ इणदेवल  
समवर कोई, जूमंरुल मांदि न होई रे जा० ॥ १० ॥ बलि ति  
ण वंस विगताला, वस्तुपाल अनै तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमो  
रुहि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते



हवो जिणहर पासै, बार क्रोमनी लागति जासै रे ॥ जा० ॥ देरा  
 एी जेठाणी, आखानी अजब कहाणी रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ इहां देव  
 ल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस  
 वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल  
 वामो दीगो, ते तो लागै नयणै मीगोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल  
 पासै, लोक जेवै घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गात्र आ  
 गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा  
 च्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते  
 धातो, जिंगमिग रही दिनने रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसै चम्मा  
 लौ, जिण बिंवनो ज्ञाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली  
 ज्ञोम सोजागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६  
 ॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा०  
 ॥ १७ ॥ इण हुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन ज्ञावी रे ॥  
 जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥  
 ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥  
 जा० ॥ साहमी वल्ल कीज्यो, जातमलीनो जसलीजो रे ॥ जा०  
 ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥  
 जा० ॥ सुणिये ठै जे कोई, अहिनांणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥  
 ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥  
 जा० ॥ ए तीरथ समतोलै, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥  
 २१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिषज्ज्ञानन ब्रधमान, चंझानन जिन, वारिषेण नामे जि  
 षा ए॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिजुवन सासता, प्रणमुं बिब सोदा-  
 मणा ए॥ २ ॥ चेइहर सग कोरि, लाख बहुत्तर, चेइय प्रतिमा

( १२९ )

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोनि, साठ लाख सुंदर,  
 लुवनपती मांदि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद,  
 चौरासी लाख, सहस गिन्नू ने सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ दाढ ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ५ ॥ चाल ॥

दिवै नवग्रीवैकै पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा  
 सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अरुत्रीस सह  
 स सत साठ अठै गुण षाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंमल रुचक  
 वखाण, चउष्ट चेईहर साठ सबे त्रिहुं गण ॥ इकसो चोवीसै गुण  
 प्रतिमा चिहुं नाम, च्यारसै चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥  
 नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरु वन अस्सी दस कु  
 रु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार २ इखुकार, असो अति  
 सुंदर वक्क सकार मजार ॥ ८ ॥

॥ दाढ ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी इह सुजगीस ॥ कंचन गिर  
 वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत्त दीरघ वैताढय, वीस सत  
 रसो आढय ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥  
 जंबू प्रमुख दस रुक्क, इग्यारैसै सत्तर सुक्क ॥ कुंन त्रणसय असी  
 ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ दाढ ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं,  
 वीस सो ए अंक गुणियै रे, तीर्थकर प्रतिमा शुणियै ॥ १२ ॥ त्रिण लाख  
 सहस बलि ज्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरबावै सब  
 मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोनि सत्तावन  
 लस्का रे, दोयसै निव्यासी कयरुक्का ॥ दिव प्रतिमा ग्यान कहीजै

( १३० )

रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै बेतालीस कोनी रे,  
अम्वन लख अधिके जोनी ॥ ठत्तीस सदस अधिक कहीवै रे,  
प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ बाळ ॥ ६ मी ॥

जोइस बिंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥  
पायकमल तेहना नित प्रणामियै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥  
विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजै प्र-  
तिमा चोविह देवता, वलिध विद्याधर जपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥  
जिनप्रतिमा बोली जिन सारणी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥  
जविषणने जवसायर तारवा, प्रवदण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥  
जीवाजिगम प्रमुख मांदि ज्ञाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥  
सांजलतां जणतां सुख संपदा, हियमै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुण्या जिनवर तणा, चिहुं  
नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज  
समयसुंदर गुण जणै अजिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयल्यो  
सदा मुज परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब  
संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥  
प्रज्जुजी विराजै रे सूरत बिंदै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥  
जगदितकारी रे जिनजी अवतरथा रे, श्रीदृढरथ नृप गेह ॥ श्रीवड  
सोहे रे लांढन सुंदरू रे ॥ कनक वर्ण प्रज्जु देह ॥ २ ॥ ज० ॥  
विषय निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घना-  
घन जिम भ्रम वरसता रे, विचरथा त्रिजुवन ज्ञाण ॥ ज० ॥ ३ ॥

चदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, न्यार अघांती कर्म ॥ दूर  
निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥  
संप्रति कालै रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन  
लहियै रे प्रभु सुप्रसादश्री रे, मन वांगित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥  
श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, छकृत दूर पुलाय ॥ इंडिय निग्रह  
सुग्रह संपजै रे, समकित पिण दृढ आय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसक-  
रुना मुखशी सांजछवा रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे  
निज चित्तमें थरवा रे, नेनी सुत जाईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य  
कराव्युं रे सुंदर लोजतो रे, मनथर अधिक जलास ॥ शीतल प्रभुनो  
रे बिंब झराबियो रे, सदसफला बलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस  
अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मजार ॥ उज्जल द्वादशी दि-  
वसे आपियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी  
सहु मेले जया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन ते-  
हनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाज सूरि-  
श्वर दीपता रे, श्रीखरतर गढ जाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन  
थुण्या रे, विबुध कृमा कट्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल  
जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हारै हूं तो भरवा गइयी तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हारै मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरणा प्रीत जो, जीवरुखो  
ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हारै मुंने आस्यै कोइयक  
समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातरुखी तव आस्यै महारी सबि बगे रे  
लो ॥ १ ॥ हारै कोइ दुर्जननो जंजेरयो माहरो नाथ जो, उल-  
वस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हारै मारे स्वामी सरि-  
खो कुण वै डनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्था

करी रे लो ॥ ३ ॥ हारे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध  
जो, गली रे सी करवी तेहथी गोठमी रे लो ॥ हारे कांड़ फूवूं खाई  
ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतमी रे लो  
॥ ३ ॥ हारे प्रभु अंतरजांमी जीवत प्राणाधार जो, बायो रे नवि  
जाण्यो कलियुग वायरो रे लो ॥ हारे मोरा लायक नायक जगत  
वञ्जल जगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥  
हारे प्रभु लागी मुऊने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रक्षांथी  
होइ उजोगलो रे लो ॥ हारे कुण जाणें अंतरगतिनी विण माहा-  
राज जो, देजे रे हसी बोलो ठंमी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हारे तारे  
मुखनें मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखरुली अशियाली का-  
मणगारीयूं रे लो ॥ हारे मारे नयणा लंपट जोवे स्थिर २ तुज जो,  
राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा  
ते पिण जांशज्यो करीनें इजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जावं  
वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो,  
गिरुआ थइ मन आंणो ऊलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरै रलियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोहूं  
रे ॥ उत्तंग तोरण देहरूं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥  
रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंरुप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा  
च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरु नही  
संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल,  
मांरुयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहारया जोंयरा रे लाल, सूतां  
ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो  
देस मेवारु ॥ म० ॥ लख नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धनो  
पोरवारु ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

( ૨૩૩ )

સેતાં સુખુ ધાય ॥ મ૦ ॥ પાંચ પ્રાસાદ બીજા વહી રે લાલ,  
જોતાં પાતિક જાય ॥ મ૦ ॥ ૫ ॥ રા૦ ॥ આજ કુતારથ હું થયો  
રે લાલ, આજ થયો આશંદ ॥ મ૦ ॥ યાત્રા કરી જિનવરતણી રે  
લાલ, દૂર ગયું હુલ દંદ ॥ મ૦ ॥ ૬ ॥ રા૦ ॥ સંવત સોલ ઊય-  
તરે રે લાલ, મિગસિર માસ મઝાર ॥ મ૦ ॥ રાણપુરે યાત્રા કરી રે  
લાલ, સમયસુંદર સુલકાર ॥ મ૦ ॥ ૭ ॥ રા૦ ॥ ઇતિ શ્રી  
રાણપુરા સ્તવનં ॥

॥ અથ દર્શનદ્વાર શ્રોઆદિજિન સ્તવનં ॥

સમકિત દ્વાર યુગ્ગરે પૈસતાં જી, પાપ પમલ ગયાં દૂર રે ॥  
મોહન મારુદેવીનો લામલો જી, દેગે મીઠો આનંદ પૂર રે ॥ સ૦ ॥  
॥ ૧ ॥ આયુ વરજિત સાતે કર્મની જી, સાગર કોમાકોમી હીણ  
રે ॥ સ્થિતી પદમ કરણે કરી જીવેને જી, બીરજ અપૂરવનો ઘર  
લીધ રે ॥ ૨ ॥ સ૦ ॥ ઝુંગલ ઝાંગી આદિ કષાયની જી, મિથ્યાત  
મોહની સાંકલ સાથ રે ॥ બાર કઠાના તમ સંબેગના જી, અનુજવ  
ઝવેને બેઠો નાથ રે ॥ ૩ ॥ સ૦ ॥ તોરણ બાંધૂ જીવદયા તણું  
જી, સાધિયો પૂરો સરઘા રૂપ રે ॥ ઘુપઘટી પ્રજુગુણ અનુમોદના  
જી, દિગુણ મંગલ આઠ અનૂપ રે ॥ ૪ ॥ સ૦ ॥ સંવર પાણી શ્રંગ  
પલાલને જી, કેશર ચંદન ઉત્તમ ધ્યાન રે ॥ આતમ ગુણ રુચી  
મૃગમદ મહમદે જી, પંચાચાર કુશમ પરધાન રે ॥ ૫ ॥ સ૦ ॥  
જાવપૂજાને પાવત આતમાં જી, પૂજો પરમેસર પૂન્ય પવિત્ર રે ॥  
કારણ જોગે કારજ નીપજે જી, ક્રમા વિજય જિન આગમ રીત રે  
॥ ૬ ॥ સ૦ ॥ ઇતિ શ્રી આદીસર જિન સ્તવનં ॥

॥ અથ શ્રીઆદીસર જિન સ્તવન ॥

આદિ જિનેસર અરજ સુણીજે, મોહન મહિર ધરીજે રે ॥  
દિલરંજન પ્રજુ દરસણ દીજે, મ્હારો મનમો રીજે રે ॥ આ૦ ॥ ૧ ॥

प्रभु दरसन लहिवो जग डुरलज, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥  
 जे दरसन विन किरिया पावै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥ आ० ॥ २ ॥  
 नय एकति दरसन आपै, पिंन जरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति  
 आलापै, ते जूला जव आपे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्या-  
 द्वादनै संगे, जे ग्रहे आत्म जमंगे रे ॥ आनंदघन उपजै तसु अंगै,  
 सिद्धमणने रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जव कोमाकोमीमें जमतां, तुज  
 दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहेरे सनमुख, आज जखे  
 हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महरि लहरिनो लटकौ, जो  
 जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदनुत, आतम गुण  
 उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, श्यामी द-  
 सण दीजै रे ॥ लाजउदय जिनचंद लहीने, संगला कारज सीजै  
 रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं ॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुज अनंत अपार ॥ ते सांजलतां  
 ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥  
 तारज्यो दीनदयाल, अ० ॥ ता० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जे-  
 हनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्ता तनय  
 प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० ॥ २ ॥ कार्य सिद्धि कर्ता वसु रे, लहि का-  
 रण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिळ्या रे, दोय निमित्तम जोग  
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ३ ॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिंद नि-  
 हाल ॥ तिम प्रभु जकै जवि लहे रे, आतम शक्ति संजाल ॥  
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ४ ॥ कारण पद कर्तापणो रे, करिआरोप अजेका निज  
 पद अर्थी प्रभुपकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥  
 अदवा परमात्म प्रभू रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसो रे,

अमल अखंन अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोहित सुख ब्रम  
 टट्यो रे, ज्ञास्यो अव्याबाध ॥ समरथो अजिजाखीपणो रे, कर्ता  
 साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ आदकता स्वामित्वता रे,  
 व्यापक ज्ञोक्ता ज्ञाव ॥ कारणाता कारज दसारे, सकल अहं निज  
 ज्ञाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा ज्ञासन रमणाता रे, दानादिक परिणा  
 म ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता०  
 ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंड  
 सुख सागर रे, ज्ञावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री  
 अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोनी वीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूरु  
 कपट मूंकी करी जी, वात कहूं आप वोत ॥ १ ॥ रुपानाथ सु  
 ऊ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तूं समरथ त्रिजुवन घणी जी,  
 सुऊने डुत्तर तार ॥ क० ॥ २ ॥ जवसायर जमतां थकां जी,  
 दीठां डुख अनंत ॥ जगसंयोगे जेटियो जी, जयजंजण जगवंत  
 ॥ क० ॥ ३ ॥ जे डुख जांजे आपणा जी, तेहनें कहिये डुख ॥  
 परडुख जंजण तूं सुण्यो जी, सेवगने द्यो सुख ॥ क० ॥ ४ ॥ आलोयण  
 लीठां पलैं जी, जीव रखे संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह  
 सुण्यो अधिकार ॥ क० ॥ ५ ॥ दूषमकालै दोहिलो जी, सूधो गुरु  
 संयोग ॥ परमास्थ पीबै नही जी, गरुप्रवाही लोक ॥ क० ॥ ६ ॥  
 तिण तुज आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज ॥ माय  
 बाप आगल बोखतां जी, बालक केही लाज ॥ क० ॥ ७ ॥ जि  
 न भ्रमं सहू कहैं जी, थापै अपणी जी वात ॥ सामाचार  
 जुइ जुइ जी, शंसय परुधां मिथ्यात ॥ क० ॥ ८ ॥ जाण  
 अजाणपणे करी जी, बोद्ध्या उन्सूत्र बोख ॥ रतने काग



ज्ञानावता जी, हारथो जनम निटोल ॥ क० ॥ ए ॥ जग-  
 वंत ज्ञाण्यो ते किदा जी, किहां मुज करणी एह ॥ गज पाखर  
 खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ क० ॥ १० ॥ आप  
 परंपुं आकरो जी, जांणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो  
 जी, मासाहस दृष्टांत ॥ क० ॥ ११ ॥ काल अनंत में लह्या जी,  
 तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पानिया जी, किहां जइ करूं  
 पुकार ॥ क० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-  
 विहार ॥ धीरज जीव धरै नही जी, पोते बहु संसार ॥ क० ॥ १३ ॥  
 सदज पळ्यो मुज आकरो जी, न गर्में जूंनी वात ॥ परनिंदा क-  
 रता अकांजो, जायै दिन नै रात ॥ क० ॥ १४ ॥ किरिया करतां  
 दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पखै धंदे पळ्यो जी,  
 नरकै करसी रीव ॥ क० ॥ १५ ॥ अणहूता गुण को कहे जी, तो  
 हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख जली दियै जो, तो मन आणूं  
 रीस ॥ क० ॥ १६ ॥ वादजणी विद्या जणी जी, पररंजण उपदेश  
 ॥ मन संवेग धरथो नही जी, किम संसार तरेस ॥ क० ॥ १७ ॥  
 सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक  
 मनमांहे ऊपजै जी, मुज मरकट वैराग ॥ क० ॥ १८ ॥ त्रिविध  
 २ कर उच्चरूं जी, जगवंत तुम्ह हजर ॥ वार २ ज्ञाजू बली जी,  
 बूटकवारो दूर ॥ क० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा  
 आरंज कोनि ॥ जयणा न करी जीवनी जो, देवदया पर गेन  
 ॥ क० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्या अनरग्य दंन ॥  
 कूरु कपट बहु केलवी जी, व्रत काधा सत खंन ॥ क० ॥ २१ ॥  
 अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण लाग घणा  
 जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ क० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नही  
 जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विटंबन सी कहूं जी, ते तूं जांणे

सरूप ॥ क० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको  
 लोभ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो जी, न चढी संजम सोज ॥ क० ॥  
 ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीजोजन दोष ॥ में मन  
 मूक्यो माहरो जी, न धरयो धरम संतोष ॥ क० ॥ २५ ॥ इख जव  
 परजव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिठामिडुक्कनं  
 जी, जगवंत तोरी साख ॥ क० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कहा  
 जी, प्रगट अगरे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगस २ माइ  
 बाप ॥ क० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार है एतलो जी, सरदहया है शुद्ध ॥  
 जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ क० ॥ २८ ॥  
 रिषनेदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया  
 आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥ क० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-  
 धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिठामिडुक्कनं जी, देतां  
 दूर पुलाय ॥ क० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब  
 तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, जव २ ताहरी सेव ॥ क० ॥ ३१ ॥  
 ॥ कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण जेव्या नाजिनंदन जिन तणा,  
 करजोमि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य  
 जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद  
 सुसीस वाचक समयसुंदर गणि जणें ॥ ३५ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदधनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री ऋषज देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमार चलयो रे ॥ ए चारु ॥

ऋषज जिनेसर प्रीतम माहरो रे, उर न चाहूं रे कंत ॥  
 रीज्यो साहिब संग न परिहरे रे, जागे सादि अनंत ॥ क० ॥ १ ॥  
 प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

संगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ३० ॥ १ ॥  
 कोइ कंत कारख काष्ट जकषा करें रे, मिलासुं कंतने धाय ॥ ए  
 मेलो नवि कहियै संजवे रे, मेलो वाम न छांय ॥ ३० ॥ ३ ॥ कोइ  
 पति रंजन अति थणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति  
 रंजन में नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ३० ॥ ४ ॥  
 कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥  
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विद्यास ॥ ३० ॥ ५ ॥  
 चित प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंमित एह ॥ कपट रहित  
 अई आतम अरपणा रे, आनंदधन पद रेह ॥ ३० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

## ॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ माई मन मोहं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चार ॥

पंथमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥  
 जे तैं जीत्या रे तेणो हुं जीतियो रे, पुरुष किस्थुं मुऊ नाम ॥ पं० ॥  
 ॥१॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, जूजो सयल संसार ॥ जेणें  
 नयणो करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥  
 पुरुष परंपर अनुजव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे  
 रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही गाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क  
 विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अजिमते वस्तु वस्तुगते  
 कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य  
 नयणातणो रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे,  
 वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं  
 रे, ए आस्था अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणव्यो रे,  
 आनंदधन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संजव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रेजू जेद ॥ सेवन  
सेवन कारण पहली जूमिका रे, अजय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥  
जय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक जाव ॥ त्वेद  
प्रवृत्ति हो करतां आकिये रे, दोष अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥  
चरमावर्त्त हो चरम करण तया रे, जव परणति परिपाका ॥ दोष टले  
बली हृष्टी खुले जली रे, प्रापति प्रवचन बाका ॥ सं० ॥ ३ ॥ परिचय  
पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेन ॥ ग्रंथ अध्यातम अ  
वण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण  
जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विषा  
कारज साधिये रे, ए जिनमत जनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ सुगुं सु  
गम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित् ते  
वक याचना रे, आनंदयन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसियै, दरसन डुल्लेज देव ॥  
॥ मत २ जेदे रे जो जइ पूबिये ॥ सहु आपै अहमेव ॥ अजि०  
॥ १ ॥ सामान्ये करी दरसन दोहलूं, निरणय सकल विशेष ॥  
मदमें धेरयो रे ग्रंथो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥  
२ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति डुरगम नय वाद ॥  
आगम वादे हो गुंरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥  
३ ॥ घाती डूंगर आमा अतिघणा, तुज दरसन जगनाथ ॥ धी  
ठाइ करी मारण संचरूं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिस्त  
ण २ रटतो जो फिरूं, तो रणरोज समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम ज्ञाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे  
हो मरण जीवन तपो, सीजे जो दरसन आज ॥ दरसन उर्ध्व  
ज सुलज रुपायकी, आनंदघन मादाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि  
कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांशिये, परि तरपण सु  
विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत  
मा, बहिरातम धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर  
मातम अविच्छेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक य  
ह्यो, बहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर र  
ह्यो, अंतर आतम रूपा ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण  
पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिशय गुण गण मणि  
आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा  
तमतज अंतर आतमा, रूप सुग्यानी अइ धिर ज्ञावा ॥ परमातमनू हो  
आतम ज्ञाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५ ॥ आ  
तम अरपण वस्तु विचारतां, जरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम  
पदारथ संपति संपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी मन मो  
हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी०  
॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥  
दानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २  
॥ परदुःख वेदन इच्छा करुणा, तीक्ष्ण परदुःख रीजे रे ॥ उदासी

नता उन्नय विलक्षण, एक ठामे केम सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ  
न्नयदान ते मल कय करुणा, तीक्ष्णता गुण जावे रे ॥ प्रेरण,  
विशु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥  
शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निग्रयता संयोगे रे ॥ योगी जोगीवक्ता  
मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥, इत्यादिक बहु जं  
ग त्रिजंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,  
आनंदधन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्रो कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनमो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज  
तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रज  
नी वासर वसती ऊजर, गयण पायाले जाया ॥ सांप खायने मुखमुं  
थोथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा  
अजिलाषी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अन्यासे ॥ वयरीमुं कांइ एदवुं  
चित्ते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम  
धरनें हाथे, नावे किय विध आं० ॥ किहां कयो जो इठकरी इठकूं,  
तो व्यालतशी पर बांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो ठग कहूं तो  
ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांइ ने सहुषी अ  
लंगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते  
कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंमित जन समजावे,  
समजै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाणुं ए  
लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वार्ते समरथ ठै नर,  
एदने कोई न जेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स  
गलूं सधयुं, एद वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं,  
ए कहि वात ठे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनहुं डुराराध्य ते

( २४३ )

बंस आणुं, ते आगमयी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरो आणो,  
तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पढिकमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ कुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेटियै, जवना संखित पाप परा सब  
मेटियै ॥ मन घर जाव अनंत चरण युग सेवतां, अणदूते एक  
कोरि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यान धरूं प्रभु दूरअकी में ताहरो,  
जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ जव २ तुमहीज देव  
चरण हूं सिर धरूं, जवसाथरणी तार अरज आहीज करूं ॥ २ ॥  
जुख त्रिषा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम जार त  
णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना मांमतणी आसत घणी,  
एहिज वै आधार जगतगुरु अम्ह जणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसण विषा स्वामं  
जवोदधि हूं फिरयो, सहोया डुस्क अनेक न कारज को सरयो ॥  
मिलिया हिव प्रभु मुज सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत  
जस दीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति दरी, सैन्यां  
कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रखण जिम दीपतो,  
जयवंतो जिणचंद सखल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ कुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन जुवन सिरताज ॥ आगेलाख,  
नगर ब्रह्मानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल  
सुगुण निधान ॥ आगेलाख, वामासुत वरुजागीयाजी ॥ २ ॥ सेव-  
कनी संजाल, करिय खरी ततकाख ॥ आगेलाख, संकट सहु प्रभुं  
परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रयव्यो आनंद पूर ॥  
आगेलाख, वाट विषमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

( ३४३ )

बीता सहु विलबाद ॥ आठेलाख, मन वंठित मुऊ सहु फट्या जी  
॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप, मिलिया गो प्रजु आप ॥ आठेलाख,  
देज्यो दरिस्ताण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस कमा-  
कट्याण ॥ आठेलाख, बाचक इम बीनती करै जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादासी रे ॥ वाप्तासुत वरदाय,  
निरमल नांणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रजु अंग, निरुपम निरुद्धा रे ॥  
तीन कमल मुऊ संग, आतम हस्त्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख,  
चंद लजाणू रे ॥ गगन जमे नितदीप्त, इम मन आंणू रे ॥ ३ ॥  
सुरमसि ज्युं सुखकार, नयण बिराजै रे ॥ हृदयकमल सुवेद्यात,  
आल ज्युं गाजै रे ॥ ४ ॥ प्रजु कर चरण बिलोक, पंकज हास्यो रे ॥  
ततखिण निज संवात, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार,  
श्रीजिन राया रे ॥ साधै पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रजु-  
गुण अनुभव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाढ्यो पातिक पंक, आतम संगे रे  
॥ ७ ॥ वरस अठार चोतीस, बदि वैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम होत,  
सहु संव साखै रे ॥ नगर महेवा मांदि, पास जुडारया रे ॥ श्री  
जिनचंद मुषिंद, वंठित सारया रे ॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुऊ बीनती गोमीचा, अलवेसर अवधार हो गोमी  
चाराय ॥ प्रगट थई पातालश्री गोमीचा, सेवक जिन साधार हो  
गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई कृतावली, गो० ॥ दरसण देखण  
काज हो ॥ गो० ॥ पांणीनखमे पातली, गो० ॥ दो दरसण महा-  
राज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो  
वै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो कृमदी, गो० ॥ संप्रति क-  
रवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवको, गो० ॥ सगली



( २४३ )

आति सदीव हो, गो० ॥ छंची नीची वातमें, गो० ॥ ये मति धाखो  
जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीगं ते  
न सुहाय हों ॥ गो० ॥ इक दीगं मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीगं  
उल्लाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ काखै बाळ्दै माहरे, गो० ॥  
कीधी खरी सजीरु हो ॥ गो० ॥ वरसण देवानी नकी, गो० ॥  
पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं  
करै, गो० ॥ राखी चिहुं माहि लाज हो ॥ गो० ॥ बलि अवसर  
संजाराज्यो, गो० ॥ इम जंयै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ५ मुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे ॥ अश्व-  
सेन वामाजीके नंदन, त्रिजुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण  
गिरवा गोमीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ जव अ-  
टवी वन घन विच जमतं, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥  
दीनदयाल दया कर दीजै, अनुजव गुण अजिरांमी रे ॥ चरणकमल  
सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन जाय ॥ प्या० ॥ अश्वसेन  
वामाजीके नंदन, देख्यां बिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें  
महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मन-  
मोहन निरख्यो, नाथ गोमीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेव-  
गकी येही अरज हे, जवडख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप ॥ सवाई प्रज्जू  
जी, प्यारी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन  
बांदवा, चित्तुमें लागी वै चूंप ॥ सवाईप्रज्जूजी ॥ १ ॥ अशिया-

ली प्रजू आंखनी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां०  
 ॥ नयण सलूषे जी निरखतां, ऊपजै अधिक उद्धास ॥  
 स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा  
 निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीधो, दिख  
 रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांशियै, सो  
 य घनी सुप्रमाण ॥ स० ॥ जगतवञ्जल जल जेठियै, जिनवर चतुरसु-  
 जाण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगद जयो, श्रीचिं  
 तामणिपास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंडनी, अविचल पुरो जी  
 आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

### ॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम  
 विन देख्यां एक घनी न रहाय, म्दारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे  
 अमारा हीयनलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास भियै निर  
 धार ॥ म्दारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि०  
 ॥ चंद चकोरा जलघर नैं जिम मोर ॥ म्दारा जि० ॥ २ ॥ नयण  
 तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीधोजिम तिम करि  
 नैं चोर ॥ म्दारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥  
 आपो जवर चरणकमलनी सेव ॥ म्दारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरी-  
 नैं आवे जे तुझ पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास  
 म्दाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी आबै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांशि-  
 ने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्दारा जि० ॥ ४ ॥ राखेज्यो मुऊ ऊ-  
 पर निवर सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांषी ठिटक न देख्यो ठेह ॥  
 म्दारा जि० ॥ खरतर गङ्गपति श्रीजिनलाज सूरिंद रे, जि० ॥ तासु  
 पसार्यै पजर्यै अनोपमचंद ॥ म्दारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रजुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने  
 मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं ठे प्रजुजी म्हारो अंतर  
 जामी, पूरव पून्यै थारी सेवा में पांमी राज ॥ साहिब में तो तु-  
 जनें जाण्यो ठे साचो, कदिय न दिखमांहे अणुं हुं काचो राज  
 ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिखमुं राज करीय सगाई, सुगण प्रजु  
 जीस्युं वधज्यो प्रीन सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रजुजी ताद-  
 रो दिखमांहे वसियो, रात दिवस थारा गुणानो वूं रसियो राज ॥  
 सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रजुजी चाकर वूं खासो, कदिय न मेवूं  
 प्रजुजी पवजर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी मद्दरे राज मोटा क-  
 हीजे, लाहो लाखीशो प्रजुजी संगे लहोजे राज ॥ सु० ॥ ३ ॥  
 पिंजर तो फिरती राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिखमांहे  
 रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगे हूं चोख मजीठ रंगाणो, नदिय विसरस्युं  
 प्रजुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये  
 जी लागूं मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजि-  
 नचंड सदा साधारो, तारक प्रजुजी थे जवजल तारो राज ॥ सु०  
 ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीग  
 आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रजु, तिम२ वाधे प्रीत ॥  
 तन मन मारा ठलसै कांइ, रूनी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥ १ ॥ नयण  
 कमलदल पांखनी प्रजु, मुखनो पूनमचंद ॥ दीपशीखासी नासिका  
 कांइ, दीगं परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ काने कुंमल जिगमिगे प्रजु,  
 कंठे नवसर हार ॥ चंपकली सोहे जली कांइ, मुखमै ज्योत अपार  
 ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं ठे जगनो वाखदो प्रजु, थारे सेवग कोरु ॥ म्हादे

( २४७ )

सूहिज साहिबो कोइ, बंदू बे कर जोरु, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज  
मनोरथ सब फलपा, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तथा  
काइ, सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसण वहिलो दीजै ॥ दीजै  
२ जी माहाराज, कारज सगला सीजै ॥ ए आंरणी ॥ मुज मन  
जमरतणी पर मोह्यो, गोमायो नवि बूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण,  
ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगधकां पिण हूं प्रभु तुमने,  
नहिय विसारुं दिखसुं ॥ रात दिवस एहवी मन बरतै, जाणूं जइ  
मिळुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरब पुन्यधकी में पायो, ए अवसर  
आजूषो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिब सहज सखूषो  
॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग ठै बहला, मो सरिषा लख ग्याने,  
माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाषे ॥ जि० ॥ ४ ॥  
आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही जाखूं ॥ असृत जेम  
खही तुज गुणरस, तारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन  
ए मुझनी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर माखानें  
गिषतां, कहो कुष मति उपजावै ॥ जि० ॥ ६ ॥ जगतपणै किंचित  
गुण जाखूं, हूं सहारी मति सारु ॥ निरुपमा अनुपम तुज गुण  
लायक, त्रिजुवन जीवन सारु ॥ जि० ॥ ७ ॥ बरस अहार बली  
इकताले, मिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे,  
थात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं,  
मेलो तिहां मंमायो ॥ लाज उदय जिनचंदने प्रभुजी, बांध्यो प्रेम  
सवायो ॥ जि० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पलक्षमें ॥

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करूं बिनमें ॥ तूं० ॥ १ ॥ का  
हूको मन तरुणीसैं राख्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रजु  
तुमहीसे राख्यो, ज्युं चात्रक चित्त धनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर  
तेरी गति जांलौ, अलख निरंजन बिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर  
तूंदी, साहिब तीन जुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोहनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ ज्ञाव  
दयासागर प्रजु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रजु सिद्ध  
अया, संघ सकल आधारो रे, हिवइण जरतमां ॥ कुण करशे उप-  
गारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे  
संघ ॥ साथे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥  
मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अग्रनाथ ॥ वीर विहूणा  
जीवना रे, आकुल व्याकुल आयो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय  
बेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे,  
ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्दामक जवत्समुझनो रे,  
जव अटवी सबवाह ॥ ते परमेसरविण भिड्यां रे, किम बाधे उत्साहो  
रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर अकां पण श्रुत तथो रे, हुंतो परम आधार ॥  
हमणां श्रुत आधार ठे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥  
इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ घ्यावो सेवो जवि-  
जना रे, जिनपनिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचा-  
रिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ जव जव आगम संगथी रे, देव-  
चंद्र पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय रुषज समोत्तरा, जला गुण जरया रे ॥ सिद्धा  
साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगें

( ३४९ )

गया रे ॥ नेमीसेर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो,  
गिरिसेहरो रे ॥ जरतें जराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आवु चौमुख अति  
जत्रो, त्रिभुवन तिखो रे ॥ विमल वसई वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥  
समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश  
॥ ती० ॥ नयरो चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवा-  
सुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरो, रुद्धें जरी रे ॥ मुक्ति  
गया महावोर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥  
अरिदंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज चंदीयें, चिर नंदीयें  
रे ॥ अरिदंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो  
रे ॥ फलोधी घंजण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अ-  
मीऊरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो,  
जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाकुलाई जादवो;  
शोनी स्तेवो रे ॥ अंवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां,  
बावन जलां रे ॥ रुचक कुंमल चारु चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती  
अशाश्वती, प्रतिमा ठती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ  
जात्रा फल तिहां, होजो मुऊ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चाखो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धा-  
चलगिरि जईए बहेनी, विमलाचलगिरि जईए रे ॥ आ० ॥ सुश-  
बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिर्नइ इम जांखी ॥ जरतादिक  
नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणा गि-  
रिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख  
ढोभीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि स-  
न्मुख पगलां जरतां, आतम शुद्ध सुजायें ॥ कोमि जवारां पातक  
कीधां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ साततो तीरथ ए शेरु

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन जुवनमें इषा गिरि तौले, बीजो कोइ  
न दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजमशुं नेह धरीने, आगे ठलग क-  
रस्यां ॥ अद्भुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस्त पीस्यां रे ॥  
॥ आ० ॥ ५ ॥ पुढप सुगंधा खेइ पचरेगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ प  
हिरावी प्रभु कंठे लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥  
गहिर स्वरे जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करिये ॥ मन गमती  
अमती विच जेतां, जवस्त.यर निरंतरिये रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूर्व  
नवाणूं वार प्रथम जिन, रागण कूंखे आया ॥ ए तीरथ शुभ्र जावै  
फरसी, करिये निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाज उदे ए गिरि  
वर लहिये, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा दित वत्सल;  
प्रेम घणे वित्त आसी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण पात्र ॥  
मुनि जे झानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनु  
मोदना, करतो जीरणसेठ ॥ आवक अच्युत गति लहे, नवअवेका  
हेठ ॥ २ ॥ इत चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशा  
लापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इ  
ग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेतालापुर बाहिरे जी, आव्या  
श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, जले में जेव्या श्री  
जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे ज्ञाग्य अनोपम माय  
॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो ठे देहरो जी, तिहां प्रभु कानसग ली  
थ ॥ पञ्चस्काण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥  
जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले आवकधर्म ॥ आकारे तिण ठल  
ख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठे उपवा  
सीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,

ते ह्य देस्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चित्तवे जी, हो  
 सी सफल मुज आस ॥ पद मास गिणतां थकां जी, पूरी थइ चो  
 मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आदारनी जी, जीरण कीधी तइ  
 यार ॥ प्रजूनो मारण देखतो जी, बेगो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥  
 घर आवे ठे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रजुजी कांन  
 पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीठे करस्युं  
 पारणो जी, हूं प्रजूनो पनिजाज ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय  
 विन वरते आज ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवतर ऊठ्या गोचरी जी, श्री  
 तिहारप्रपुन ॥ वेसाखापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत ॥ ज० ॥  
 १० ॥ मिश्यात्वी ज्ञाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेनी प्रते  
 इम कहे जी, कांइक तिका देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू जरने वा  
 कला जी, प्रजूनो आंगी दीध ॥ नीरानी तेही किया जी, तिहां प्र  
 जू पारणो कीव ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडुजि जी, जै बो  
 ले कर जेनि ॥ हेम वृष्टि दुइ तिहां जी, साढोबारे कोमि ॥  
 ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे म्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥  
 लोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ कीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा  
 दिक सहूए कहे जी, धनइ पूरणतेठ ॥ ठंची करणी तेंकरी जी,  
 अवर सहू तुज देव ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तबे जी, वा  
 जित डुंडुजिनाद ॥ अन्धत्र कियो प्रजु पारणो जी, मनमें थयो  
 विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अजागियो जी, मेरे न आया  
 साम ॥ कळपवृक्ष किम पांमोये जी, मारुमंरुल ठाम ॥ ज० ॥  
 १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांदि ॥ निर  
 धन जिमर चित्तवे जी, निमर निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा  
 मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास  
 संतानिया जी, तिहां मुनि केवलघार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेसाखापुर



राजियो जी, लोकांस्थुं आणंद ॥ राय प्रश्न पूछे इस्थों जी, सुगुरु  
चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अठें जी, जीव पु  
न्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥  
२१ ॥ राय कहे किय कारणो जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो  
जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे  
केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न  
कोइ प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण बारमें जी, जीरण  
घाढ्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज०  
॥ २४ ॥ घरी एक सुर डुंडुजि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहि-  
तो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठाम ॥ ज० ॥ २५ ॥  
राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुकुनगरमें आ  
पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दियो सु-  
पात्रने जी, तें निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी,  
जीरण जिम फल आय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना  
जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे म  
नि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोचन जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥  
॥ द्विवे राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांणपणो ३  
ग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते मुऊ मिठांमिडकनं ॥ १ ॥ अ  
रिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु  
॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख त  
कायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चव-  
दे लाख साधार ॥ वि ति चउरेंडी जीवना, वे वे लाख विचार ॥  
ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यच नारकी, चारश् प्रकाशी ॥ चवदे लाख  
मनुष्यना, प लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणजव परजव ते

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध करबोसके, डुरगति दातार ॥ ते०  
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोळ्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादा  
 नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो, की  
 थो क्रोध विशेष ॥ मान माथा लोन्न मै कीया, वलि राग ने द्वेष  
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूना कलंक ॥ नि  
 द्या कीधो पारकी, रति अरति निस्तंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चामी की  
 धी चोतरे, कीधो श्रापणमोसो ॥ कृगुरु कुदेव कुधर्मनो, जलो आं  
 णयो जरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खादकीने जव जे किया, जीवना  
 वध घात ॥ चिमीसार जव चिमकला, मारया दिन ने रात ॥ ते०  
 ॥ ११ ॥ माढीगर जव माढला, जालया जलवास ॥ धीवर जील कोली  
 जवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने जवे, पढी  
 मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥  
 १३ ॥ कोटवालजवमें किया, आकाराकर दंम ॥ वंदीवान मराविया,  
 कोरमा बनी दंम ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने जवे, दीधा नार  
 क्री डुक्क ॥ वेदन जेदन वेदना, तामना, अति तिक्क ॥ ते० ॥ १५  
 ॥ कुंजारने जव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीजव तिल पि  
 लिया, पापे पेट जराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने जव हल ख  
 रुचा, फाळ्या पृथ्वी पेट ॥ सूराने दान किया घृणा, दीधा बलध  
 चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने जव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल  
 पत्र फूल फूलना, लाग पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही  
 आंगमी, जरया अधिका जार ॥ पोठी छंट कोमा पञ्चा, दया ना  
 वी खिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ बीपाने जव बेतरयो, कीधा रांगणपास  
 ॥ अगनि आरंज किया घृणा, धातुरवाद अज्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर  
 पणे रणजूंजतां, मारया माणस वृंद ॥ मदिरा मांत माखण जरया,  
 खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खास खिपाई धातुनी, पाणा

( ५५४ )

छलं च्या ॥ आरंज कीधा अतिघणा, पोते पाप ते संख्या ॥ ते० ॥ २२ ॥  
 अंगारकर्म किया वली, धरमें दव दीधा ॥ सूत लेख वोतरागना,  
 कूमा कोसज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिछी जव ऊंर गिळ्या, मि  
 छोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे जवे, में जूं लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥  
 ज्ञानजूजातणे जवे, एकेडी जीव, ज्वार चिणाग हुंसे किया, पारुता  
 रोव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांरुण पीसण गारना, आरंज अनेक ॥ रांरुण  
 इंधण अगनिना, कीया पाप जेदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकृषा व्धार  
 कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमाकिया, रोदनवि  
 खवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, जत जेइने ज्ञाग,  
 मूल अने उत्तरतणा, मुज दूषण जागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विहू  
 सिंदह चीतरा, सिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे जवे, हिंसा  
 कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवने दूषण घणा, वलि गरज  
 गलाया ॥ जीवाणी ढोळ्या घणा, शीलव्रत जंजाया ॥ ते० ॥ ३० ॥  
 जव अनंत जमतां थकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध श कर वो-  
 सरूं, तिपासुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणजव परजव इण परे,  
 कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध श कर वोसरूं, कर्क जनम पवित्र ॥  
 ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेरानी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर  
 कहे पापयी, बूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इति आलोच्य सित्ताय सं० ॥  
 ॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विक्रात ॥ पासतणा गुण  
 गावतां, मुज मुख बलज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणदिलपुरे, अह  
 म्मदावादे पास ॥ गोनी ० धणी जागतो, सद्धनी पुरे आस ॥ २ ॥  
 शुज वेला शुज दिन घनी, महुरत एक संभाष ॥ प्रतिमा तीने  
 पासनी, अई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

( ३५५ )

॥ दाल ॥ १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥  
 धरा कण कंचण मणि भाणक दे, गोमतीनो धणी जाचो जी ॥ गु० ॥  
 ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हुंती जी ॥  
 अश्वनी जूमे अश्वनी पीमा, अश्वनी बाल विगूती जी ॥ गु० ॥ ५ ॥  
 जागंतो जह्म जेहने कहिये, सुदणो तुरकने आपे जी ॥ पास जि  
 नेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुज संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रहळ  
 णीने परगट करजे, मेधागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे उगो  
 मले जे, टक्का पांचसे लेजे जी ॥ ७ ॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मा  
 रीस मुरसिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्रधन हयगय हाथी,  
 खाब घणी घर जास्ये जी ॥ ८ ॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुजने मिल  
 स्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढ्या, वस्तु  
 वदे तस पोठी जी ॥ ९ ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

ममसुं बिहृतो तुरकनो, माने वचन प्रमाण ॥ बीबीने सुह  
 णातणो, संजलावे सदिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वना  
 देव हे कोइ ॥ अब सताब परगट करो, नहिर मारे सोयं ॥ ११ ॥  
 पाठलीरात परोमिये, पदली बांधे पाज ॥ सुदणामांहे सेठने, संज  
 लावे यक्षराज ॥ १२ ॥

॥ दाल २ ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहूने सुदणो जी ॥ पास  
 तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूयो जी ॥ ए० ॥ १३ ॥  
 पांचसे टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी  
 पहुंचाडे धानक, प्रतिमा गुण संजारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुजने  
 होसी बहु फलदायक, जाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणामे तेहना  
 पाया, प्रहळणीने गुणजे जी ॥ ए० ॥ १५ ॥ सुदणो देहने सुर चाढ्यो,

( २५६ )

आपणो आनक पदुतो जी ॥ पाटणमांहे सारअवाहु, दीने तुरकने  
जोतो जो ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जानो दीगे गोठी, चोखा तिल  
क निलाने जी ॥ संकेत पदुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लामे  
जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुऊ घर प्रतिमा तुज्जे आपूं, श्रीपास जिने  
सर केरी जी ॥ पांचले टक्का जो मुऊ आपे, तो मोक्ष न मांगू फेरी  
जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, आनक पदुतो रंगे जी,  
केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० ॥ १९ ॥ गादी  
रुनी रुनी कीधी, ते मांदि प्रतिमा राखे जी ॥ असुकम आव्या  
पारकरमांहे, श्रीसंधने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उज्जव दिन  
अधिका आये, सत्तर जेइ सनात्रो जी ॥ ठांमरना दरसण करवा,  
आवे लोक प्रजातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो जंग ॥ जतन कळ  
प्रतिमातणो, तीरथ अढे अजंग ॥ २२ ॥ सुदणो आपे सेठने, थल,  
अटवी ऊजाम ॥ महिमा आस्ये अतिधणी, प्रतिमा तिहां पदुचाम ॥  
॥ २३ ॥ कुशल कैम तिहां अढे, तुज्जे मुज्जे जांण, सेंका ठोनी  
काम कर, करतो म करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ दाळ ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, बहाण एक वृषैज जोतरे ॥ पार  
करथी परियाणो करे, इक थल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बारे कोश  
आथां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनइ विमासण थइ,  
पास जवन मंमावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम कळं प्रयाण, कुट  
को कोइ न दीसे बहाण ॥ देवळ पास जिनेसर सरतणो, मंमाण कि  
म घरथे वियो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंव रहस्ये किहा, सिंहावटो  
किम आवे इहां ॥ चिंतातुर अथो निइ जहे, यकराज आवी इम

( ३५३ )

कहे ॥ २८ ॥ गूढली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहा ॥  
 स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पादणतणी जलटस्ये खांण ॥ २९ ॥  
 श्रीफल सजल तिहां किय जुठ, अमृत जल नितरिस्थे कूठ ॥ खां  
 राकूआनो इह सदनंण, जूमि पळ्यो ठे नीलो ठाण ॥ ३० ॥ सिं  
 लावटो सीरोही वसें, कोढ परान्नवियो किसभित्ते ॥ तिहांयकी तूं  
 इहां आणजे, सत्य वचन मांदरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन  
 थिर आपियो, शिलाचंटोने सुदणो दियो ॥ रोग गमानं ने पूरूं आस,  
 पासतणो मंने आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांदि मांन्यो ते वेण, हेम  
 वरण देखाज्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ दुआ, सिलावटेने गया  
 तेमवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे स्त्रीरखान घृत चूरमो ॥  
 घने घाट करे कोरणी, लगन जले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंज थं  
 कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंरुप रलियामणो  
 रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीयायो पुरो प्राशाइ, स्वर्ग  
 संमो मंने आवास ॥ दिवस विचारी ईमो घळ्यो, ततखिण देवल  
 ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ गुज लगन गुज वेला वास, पद्मासण वेठा  
 श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समान, एकलमल वगने रहे वान ॥  
 ॥ ३७ ॥ दातं पुराणी में सांजली, तवनमांदि सूधी सांकली ॥  
 गोठीतणा गोतरिया अठे, यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विमोक्षण जंझ जंग, तेहनो अकलं सरूप ॥ प्रीत करे  
 श्रीसंघने, देखाने निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरठ गौमीपांस जिन ॥ आपे  
 अरथ जंझार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥  
 नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असंवार, मारग चूकां मानवी,  
 वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

( ૪૫૮ )

॥ શાલ ૪ ॥

વરણ અઢારતણો લહે જોગ, વિઘન નિવોરે ટાલે રોગ ॥ ૪૧ ॥ નિર  
વિત્ર અઢ સમરે જે જાપ, ટાલે સગલા પાપ સંતાપ ॥ ૪૨ ॥ નિર  
ધનને ઘર ધનનો સૂત, આપે અપુત્રિયાને પૂત ॥ કાયરને સૂરાપણો  
ધરે, પાર ઝતારે લઢી વરે ॥ ૪૩ ॥ દોઝાગીને દે સોઝાગ ॥ ૪૪ ॥  
વિઢૂણાને આપે પાગ ॥ ઠાંમ નહીં તેહને થે ઠાંમ ॥ મમ વંઝિત પૂરે  
અઝિરાંમ ॥ ૪૫ ॥ નિરધારાને થે આધાર, ઝવસાયર કતારે પાર ॥  
આરતિયાની આરત જંગ, ધરે ધ્યાન તે લહે સુરંગ ॥ ૪૬ ॥ સમરણાં  
સાદ દિયે જઠરાજ, જેહના મોટા અઢે દિવાજ ॥ બુદ્ધિહીનને બુદ્ધિ  
પ્રકાશ ॥ ગૂંગાને થે વચન વિલાસ ॥ ૪૭ ॥ હુલિયાને સુલનો વા  
તાર, જયજંજણ રંજણ અવતાર ॥ બંધન તૂટે બેનીતણા, શ્રીપાર્શ્વ  
નામ અઢાર સમરણા ॥ ૪૮ ॥

॥ દશ ॥

શ્રીપાર્શ્વ નામ અઢાર જપે, વિશ્વાનર વિકરાલ ॥ હસ્તિયુદ  
દૂરે ટલે, હુલ્લ સીંહ સિયાલ ॥ ૪૯ ॥ ચૌરતણા જય ચૂકવે, વિષ  
અમૃત ઝનકાર ॥ વિષધરના વિષ કતારે, સંગ્રામે જય જયકાર ॥ ૫૦ ॥  
રોગ શોગ દાલિહ હુલ, દોહગ દૂર પૂલાય ॥ પરમેસર શ્રીપાસનો, મ-  
હિમા મંત્ર જપાય ॥ ૫૦ ॥

॥ શાલ ૫ ॥ ચાલ કહલાની ॥

ઝંજતતૂ ૨ ઝંજ ઝપશમ ધરી, ઝું ઝીં શ્રી શ્રીપાર્શ્વ અઢાર જ  
પંતે ॥ ઝૂતને પ્રેત ઝોટિંગ વિંતર સુરા, ઝપશમે વાર ઝકવીસ ઘણંતે  
॥ ૫૧ ॥ ઝું ૦ ॥ હુલ્લ રોગ શોગા જરા ઝંતરા, તાવ ઇકંતરા હ  
ઝપંતે ॥ ગર્જબંધન ત્રણં સર્પ વિઢૂ વિષં, ચાલિકા ચાલ મેવાઝલતે  
॥ ૫૨ ॥ ઝું ૦ ॥ સાફળી માફળી રોહણી રંકણી, ફોટકા મોટકા  
વોષ હુંતે ॥ દાઢ કંઢરતણી કોલ નોલાં તણી ॥ શ્વાન સિયાલ વિ-

( ३५ए )

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ० ॥ धरणेश पद्मावती समर सोजावती, वाट  
आघाट अटवी अटते ॥ लखमी लोंढो भिले सुजस वेला वले ॥  
सयल आस्या फले मन हसते ॥ ५४ ॥ ॐ० ॥ अष्ट मदाजय हरे  
कानपीना टले ॥ उत्तरे शूल शीतल जणंते ॥ वदत वर श्रीतसुं  
प्रीतविमल प्रजु, श्रीपास जिण नांम अजिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति  
श्रीगोदीपार्थ जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्खिं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं  
संति, जस्त धम्मे सयामयो ॥ १ ॥ जहा डम्मस्त पुप्फेसु, जमरो  
आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेश्च अप्पयं ॥ २ ॥  
एव मेए समस्सा वुत्ता, जे खोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु,  
दाणज्जे सखेरया ॥ ३ ॥ वयं च वि चिं लभामो ॥ नहि कोइ उव  
हम्मइ ॥ अहागमे सुरियंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार  
समा बुद्धा, जे जवंति अणित्तिया ॥ नाणापिं रयादिता, तेण वुच्चं  
ति साहुणोत्तिवेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगळ्यं, सर्व कळयाण  
कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणं जैनं, जयति साशनं ॥ १ ॥ मंगलं जगवान्बी  
रो, मंगलं गौतम प्रजु ॥ मंगलं स्थलज्जज्ञा, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेश्वि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म  
रक्षा करं वज्र, पंजरा जस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥  
शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सब सिद्धाणं, मुखे मुखपटवरं ॥ २ ॥  
॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उव  
झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दंडं ॥ ३ ॥ ॐ नमो खोए सब साहुणं,  
मोचके पादयो सुजे ॥ एतो पंच नमोकारो, शिला वज्रमई तले  
॥ ४ ॥ सब पावप्पणासणो, वप्रो उज्जमयोवहि ॥ मंगलान् व स-



बेसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वादांतं पदं ज्ञेयं, पदमं,  
 हवइ संगलं ॥ वप्रो परिवज्जमयं, विधाने देहरकणे ॥ ६ ॥ महा,  
 प्रजावात् रक्षेयं, कुडोपड्व नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता  
 पूर्वसूरिजिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टी पदे सदा ॥ तस्य  
 नस्यान्नयं व्याधि, राधि आपि कदाचनः ॥ ॥८॥ इति आत्मरक्षा०  
 स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ ( छंद )

॥ सुखकारण ज्ञवियण समरे निज नवकार ज्ञानशासन  
 आगम चवदे पूरब सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कदितां न लहुं  
 पार, सुरतरु जिम चितित वंढितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव  
 मानव सेव करे कर जोर, ज्ञयमंरुल विचरे तारे ज्ञवियण कोरि  
 ॥ सुरवंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिं  
 जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे जेदे सिद्ध अया जगवंत, पंचमि  
 गति पुढता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक  
 जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गङ्गा  
 थुरंधर सुंदर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण बत्तीसे शोम  
 ॥ श्रुत जाण शिरोमण सागर जेम गंजीर, तीजे पद नमिये आ  
 चारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र जणावे सार,  
 तप विष संयोगे ज्ञाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुता ते क  
 हिये भवज्ञाय, चोखे पद नमिये अहनिश तेदना पाय ॥ ५ ॥ पं  
 चाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार  
 ॥ त्रस थावर पीढर लोकमाहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमुं परमा  
 रथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण माइख जूत वेताल,  
 सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरयां संकट दूर ट  
 खे ततकाल, जंवे जिण गुण इम सुरवर तीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ ( छंद )

॥ शैवो पास संखेसरो मन सुद्धे, नमूं नाथ निधे करी एक  
बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो भो, अहो जग्य लोको जुला  
कां जमो भो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो भो, पद्या पाश  
मे जूतमाने जजो भो ॥ सुरधैनु बंझी अजाने अजो भो, महापंथ  
मूकी कुपंथे ब्रजो भो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे,  
अहे कोण राजाजने हस्ति साटे ॥ सुरकुम कृपामने आक वावे,  
महामूढ ते आकुला अंत पाषे ॥ ३ ॥ किहां काकरोते जे किहां मेरु,  
शृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥ किहां विश्वनाथ किहां अन्य  
देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती  
प्राणनाथ, सहू जीवने करे सह सनाथ ॥ महातत्व जाणी सदा  
जेह ध्यावे, तेहना दुक्क दालिह दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पांमी मानुषोने  
वृथा व्यु गमो भो, कुशीले करी देहने कां दमो भो, नहि मुक्ति  
वासं विना वितरांग ॥ जजो जगवंतं तजो दृष्टिदरांग ॥ ६ ॥ उदय  
रत्न ज्ञाखे सदा हेत आणी, दयाज्ञाव कीजे मोहि दास जाणी  
॥ मोरे आज मोतीअमे मेह बूढा, प्रभु पास संखेसरो आप तूढा  
॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेश्वर केरो शीश, गौतम नाम जपो निश वीश  
॥ जो कीजे गौतमनो ध्यान, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥  
गौतम नामे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नामे  
नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे बैरी विरुद्धा वंकरा,  
तसनाने नावे हुंकरा ॥ जूत प्रेत नवि मंमे प्राण, ते गौतम  
ना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निरमल काय, गौतम नामे  
वापे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिसगार, गौतम नामे जयशकार

॥ ४ ॥ शाल दाख सदा घृत घोख, मनवंछित कप्परु तंबोल ॥  
 धरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौ-  
 तम उदयो अविचल ज्ञाण, गौतम नाम जपो जगजाण ॥ मोटा  
 मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल  
 घोरानी जोरु, बाळुं विलसे वंछित कोरि ॥ महियल मनि मोटा  
 राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक ठले, उत्तम  
 सरसी संगत मिले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे बाधेवान  
 ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण ठे बहू ॥ कहे ला-  
 वण्य समय कर जोरि, गौतम तूठा संपत कोरि ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये  
 ए ॥ प्रजात ऊठी मंगलीक काजे शोखे शती नाम लीजिये ए ॥ १ ॥  
 बालकुमारी जगदितकारी, ब्राह्मी जरतनी बहिनरी ए ॥ घट २  
 व्यापक अकररूपे शोल शती माहि जे वरी ए ॥ २ ॥ बाहुबल  
 जंगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नामे रुषज सुता ए ॥ अंग स्व  
 रूपी त्रिभुवनमांहे, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला  
 बालपणेशी शीलवती शुद्ध आविका ए, उरुदना बाकला वीर प्रति-  
 लाज्या, केवल लहि व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूआ धारणी  
 नंदन राजेमती नेम वल्लजा ए, योवन वेशें कामने जीती, शंजम  
 लेइ देव डल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांरुव नारी, हुपदा नाम  
 वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणि  
 ये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंडिका ए,  
 शीथल सलूणी राम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौश-  
 बिक ठामे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर ध-  
 रणी मृगावती नामे सुरजुवने जज्ञ गजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, मुखनो जोतां पाप  
 पुलाये नाम लेतां मन छल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनी का  
 मण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जांणे धीज करता अनल  
 शीतल थयो शीलपी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणो बांधो कू  
 वाथकी जल काढियो ए, कलंक छतारवा शतिय सुजडा चंपा बार  
 उघामियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद  
 गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये बलिहारी तसु नांमनी ए  
 ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांरवरायनी कूता नांमे कामनी ए, पांरव  
 माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शील  
 वती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जप  
 ता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी  
 नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पनियां शीलज राख्यो,  
 त्रिजुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता,  
 पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विधाता कामित दाता, शोलमी  
 शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र ठे साखी, उदयरत्न  
 जाणे मुदा ए ॥ प्रह ऊठीने जे नर जणसे, ते लहिये सुख संपदा ए ॥ १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ हृषीकूख  
 रत्नहीर, विश्वजूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अ  
 चतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जज्ञ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग ॥  
 करत धरत ठात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत  
 प्रजु आये चंग, वाणी गुण सप्त जंग ॥ वर्द्धमान जित अनंग, शंशय  
 तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रेखा ॥  
 वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय  
 अंग बार, स्वना कृत अति अपार, बोधन जग जीव सार, जये गुरु

( ३६४ )

गणेशधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरमे  
लीन ॥ मुनि मन जल चरण मीन, कुंदन युति सारी ॥ ज० ॥ ६ ॥  
सिद्धियोग नंद चंद, कार्तिक शित संध वृंद ॥ फूलत घर कल्प  
कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणी इन्द्रजुति  
जगधणी ॥ कुशल निधान सुख जणी, पाठक रुदितारी ज० ॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे ठे जी मुनिवर जेस ॥ म्हांने हाथ  
लकनिया कांधे कंबलिंया, शिर शीजित तनु केश म्हां ॥ १ ॥  
चोलपट्ट चादर पांगरणी, उज्जल रहत हमेश ॥ म्हां ॥ २ ॥ ज  
यणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां ॥ ३ ॥ धि  
वरकलप जिनमुडांधारी ॥ कांठत कर्म कलेश ॥ म्हां ॥ ४ ॥  
देवपदेश जविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां ॥ ५ ॥  
करतरामरुदितार बंदना, निरखत एसो जेस ॥ म्हां ॥ ६ ॥ इति पद ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राम नाटक ॥

॥ जबसे सरंधी श्रुद्ध जई, मन अरिहंत रघ्याते हे ॥ अरि  
हंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय  
२ जय २ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत  
उधारण, सुरनर चरण लुजाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ़ स्वाते,  
अपठर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवडंडजि नाद बजाते हे, धर्म के  
ते हे सुख देते हे ॥ जविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मनमें  
खाते हे ॥ रामउदार कहे रुदितार, तू आधार प्रजु मोहे तार ॥ ज०

॥ अथ श्री आर्विक करणीनी सप्ताय ॥

॥ चोपाड ॥ आवक तुं छे परजात, चार घडी ले पावली  
रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेस पामे जव सायर पार ॥ १ ॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म, कवण अ  
 मारो ठे व्यवसाय, एवं चितवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामाधिक ले  
 जे मन शुद्ध, धर्मनी हेम धरजे बुध ॥ पन्तिकमणुं करे रयणी तणु,  
 पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्त करे पञ्चस्काण सूधि पाले  
 जिननी आण ॥ जणजे गणजे स्तवन सज्ञाय, जिणहुंती निस्तारो  
 आय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम  
 ॥ वेहरे जाइ जुहारे देव, इव्यजावशी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषाले  
 गुरु वंदन जाय, सुणो दखाण सदा चित लाय ॥ निर्दूषण सूजंतो  
 आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साइस्मिीवस्सल करजे घणां,  
 सगणस मद्दोटा साइस्मीतणां ॥ डःखीया हीणा दीना देखि, क  
 रजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, मद्दोटाशुं  
 म करे अजिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखनी, धर्म न मूकीश ए  
 के घनी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, जुंग अधिकानो परिहार ॥  
 म जरिशकेनी कूनी साख, कूना जनशुं कथन म जांख ॥ ९ ॥  
 अनंतकाय कहिये बज्रीश, अजह्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते जहण  
 नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो  
 जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुं  
 ली, मधु धावनी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण  
 पास, दूषण घणां कद्यां ठे तास ॥ पाणी गलजे वेवे वार, अणगल  
 पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक ठंढी  
 करजे पुण्य ॥ गणा इंधण चूजे जोय, वावरजे जिम पाप  
 न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर  
 म धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे  
 ॥ १४ ॥ कद्यां पझरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं  
 म लेजे अनरथ दंरु, मिश्या मेल म जरजे पिंन ॥ १५ ॥ समकि

तं शुद्ध हैने राखजे, बोल विचारीने जाखजे ॥ पांच तिथि म करो  
आरंभ, पाखो शीयल तजो मन वंज ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध  
ने बहिं, ऊधामा मत मंखो सही ॥ उत्तम ठाम खरचो वित्त, पर  
उपगार करो शुद्धवित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे बोविहार;  
चारे आहार तणो परिहार । दिवस तथां आलोए पाप, जिम जां  
जो सघला संताप ॥ १८ ॥ संव्याये आवश्यक साचवे, जिनवर च  
रण शरण जव जवे ॥ चरे शरण करी दृढ होय, सागारी अण  
सण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुने जा  
यवा ॥ समेतशिखर आबू फिरनार, जेटीश हुं धन धन अवतार ॥  
॥ २० ॥ आवकनी करणी ठे एह, इथी धाये जवनो ठेह ॥ आवे  
कर्म पने पातळां, पाप तणा दुःखा ॥ २१ ॥ वारु बहिंये  
अमर विमान, अलुक्रमे प.मे शिवरधाम ॥ कहे जिनदर्श घणंसत  
नेह, करणी दुःखहरणी ठे एह ॥ २२ ॥ इति आवकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिघोसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि प  
जशिसुं सामी साल गायम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणो एकंद कर  
वि निसुणहु जो जविद्या, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह  
गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिजरहस्वित्त खोशी तल मंण, मगददे  
स सेणियनरेस रिजदल बलखंण ॥ धणवर शुद्ध गाम नाम जि  
हां गुणगणसज्जा, विष्ण वसे वसुज्जु तज तसु पुदवी जज्जा ॥ २ ॥  
ताणपुत्त सिरिइंद जूय जूचलयपतिखो, चवदद जिज्जा विवदरुव ना  
री रस बुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, ता  
त हाथ सुप्रमाणदेह रुवहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण  
जणवि पंकजलपानिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास जमानिय  
॥ रुवहि मयण अन्नं करवि मेढ्यो निरधानिय, धीरम मेरु गंजी

र तिंधु चंगम चयचामिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रुव जास जण  
 जंणे किंचिय, एकाकी किल ज्ञीत इठ गुण मेढ्या संचिय ॥ अह  
 वा निच्चयपुव जम्म जिणवर इण अंचिय, रंजा पत्तमा गवरि गंग  
 रतिहां विधि वंचय ॥ ५ ॥ नय बुध नय रर कविय कोय जसु  
 आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र बात्र हीने परवरियो ॥ करय  
 निरंतर यइ करम मिळयामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण,  
 वंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव जरह वासंमि  
 खोणीतल मंरुण, मगह देस लेखिय नरेसर, वरगुहरगाम तिहां,  
 विप्प वसे वमजूइ, तसु पुहवि जळा, सयलगुणगणरूवनिहा  
 ण, ताणपुत्त विळा निळा, गोयम अतिही सुजाण ॥ ७ ॥ जास ॥ चर  
 म जिनेसर केवळनाणी, चौवेहसंय पइछ जाणी ॥ पाव्वा पुर सामी  
 संपचो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण  
 तिहां किजें, जिण वीठे मिळयामत वीजे ॥ त्रिजुवनगुरु तिंहास  
 सन बेठा, ततखिण मांढ विंगत पइछ ॥ ९ ॥ क्रोध मानमाया म  
 वपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डंडुजि आगासैं वाजी,  
 धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा,  
 चउसठ ईंज मागे सेवा ॥ चामर बत्र तिरोवरि सोहे, रुवहि जि  
 नवर जग सह मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसजर वरवरसंता, जोज  
 नवाशि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर  
 किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलदलकंता, गयण  
 विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंचजूइ मन चिंते, सुर आवे अम  
 यइ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंकु जिम ते वडिता; समवसरण पुढता  
 गइगडिता ॥ तो अजिमानें गोयम जंणे, इण अवसर कोपें तणु  
 कंणे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कां  
 नोले ॥ मो आगल कोइ जाण जणीजें, मेरुं अवर किम जंणम दी



जे ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर  
 महिय, पचनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण  
 बहु सुख कारण ॥ जिणवर जग ठज्जोय करे, तेजहि कर दिन  
 कार सिंहासण सामी ठव्यो, हुठ तो जयजयकार ॥ १६ ॥ ज्ञास  
 ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंदजूय जूयदेव तो ॥ हुंकारो कर सं  
 चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन जूमि समोसरण, पे  
 खवि प्रथमारंज ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज तो ॥  
 १७ ॥ मणिमय तोरणदंन ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरवि  
 वर्जितजंगुण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर,  
 इंड इंडणी राय तो ॥ चित्त चमकिय चित्तव ए, सेवंतां प्रभु पाय  
 तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाले  
 तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंड जाल तो ॥ तो बोला  
 वइ त्रिजग गुरु, इंडजूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे,  
 फेरे वेदपण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, जगतहिं ना  
 म्यो सीस तो ॥ पंच सर्वासूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो  
 ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिजूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आज्ञासं  
 करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररण, आप्या वीर  
 इग्यार तो ॥ तो उपदेसे जुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ बिहुं ठपवां  
 सें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जय  
 कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंडजूइ इंडजूइ चढियो बहुमान  
 हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पढुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि स  
 वे, चरमनाह फेरे फुरंततो ॥ बोधबीज सज्जायमनें, गोयम जवहि  
 विरत्त ॥ दिक्क लेई सिक्का सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ ज्ञास  
 ॥ आज हुठ सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य जरो ॥ दीठा गोमय  
 सामि, जो नियनयणें असिय ऊरो ॥ समवसरण मऊर, जे जे

संता ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूजे मुनि पवरो ॥२३॥  
 जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कर्ने अणहुंत, गो  
 यम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरुं जक्ति, सामी गोयम ऊपनिय  
 ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग जरे ॥ २४ ॥ जो अष्टा  
 पद सेल, वंदे चढ चढवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम  
 सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर  
 संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥२५॥ त  
 पसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ  
 काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुठ ए अजिमान, तापस  
 जो मन चितवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर कि  
 रण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निष्पन्न, दंरु कलस ध्वज वरु सहिय ॥  
 पेखवि परमाणंद, जिणहर जरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्र  
 माण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब ॥ पणमवि मन उद्धास, गो  
 यम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजुं  
 जकदेव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंररीक, कंररीक अध्ययन जणी ॥  
 चलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साध,  
 चाले जिम जूषाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांर घृत आण, अमीय  
 वृठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचस  
 थां शुज जाव, उज्जव जरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, क  
 चल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण  
 प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे ज  
 णवि पीयूष, गाजंती धन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी  
 हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण  
 पन्नरेसें, उपन्न परिरिय, हरिडुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग  
 गुरु त्रयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम जणे,

गोयम म करिस खेव, ठेह जाय आपण सहरी, होस्या तुल्ला वेव  
 ॥ ३१ ॥ जास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम ठल्ल  
 सिय ॥ विहरियो ए जरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठव  
 तो ए कणय पञ्मेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नय  
 णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि,  
 देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर  
 मपए ॥ बलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥  
 तो मुनि ए मनविखवाद, नादजेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इस  
 समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टाखियो ए ॥ जाण तो ए तिहु  
 अण नाह, लोक विवहार न पाखियो ए ॥ अतिजलो ए कीधलो  
 सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चितव्यो ए बालक जेम, अदवा  
 केरें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतहिं जोजें  
 जोलव्यो ए ॥ आपणो ए जंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥  
 साचो ए ए बीतराग, नेह न हेजें टाखियो ए ॥ तिणसमे ए गो  
 यम चित्त, राग त्रैरागे वाखियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो ठल्लड,  
 रहितो रागे साहियो ए ॥ केवल ए नाण गुप्पन्न, गोयम सहिज  
 जमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे  
 ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, जविया जव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥  
 ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पञ्चास, गिहवासें सं  
 वसिय तीसवरससंजम विजूलिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस  
 तिहुअण नमसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, वाणवइ वरसाज, सामी  
 गोयम गुणनिखो, होसे सिवपुर ठाज ॥ ३७ ॥ जास ॥ जिम सह  
 कारें कोयल ठहुके, जिम कुसुमावन परिमल मढके, जिमचंदन सो  
 गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिरघां लहके, जिम कणयाचल ते जें ऊ  
 लके, तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हैसा, जिम सुरतरुवर कणायय तेंसा, जिम महुरर राजीववनें ॥ जिम  
 रयखायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गु  
 रु केल घवे ॥ ३९ ॥ धूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महि  
 मा जिम जगमहे, धूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गि  
 रिवर राजे, नर वइ धर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि प  
 वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम  
 उत्तम मुख मधुरी ज्ञाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जू  
 मीपती ज्ञुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधे  
 गद्गह्यो ए ॥ ४१ ॥ पितामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे  
 वंढिय काज, कामकुंज सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन  
 कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सांमी गोयम अणुसरी ए ॥  
 ॥ ४२ ॥ पणवस्कर पहिलो पन्नणी जें, माया बीजो श्रवण सुणीजें ॥  
 श्रीमिति सोज्ज संजवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पदू  
 उवझायं शणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां  
 काय करीजें, देस देसांतर काय जमी जें, कवण काज आयास क  
 रो ॥ प्रह ठळी गोयम समरीजें, काज समगल ततखिण सीजे,  
 नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें,  
 गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं  
 भंगल ए पन्नणीजें, परव महोत्तव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि क  
 ळयाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरें धरियो, धन्य  
 पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीक्षियो ए ॥  
 विनयवंत विद्या जंमार, तसु गुण पुढवी न लझइ पार, बरु जिम  
 साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास जणीजें, चडविह संघ  
 रलियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कळयाण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन  
 ठमो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेस

षो ए ॥ तिहां ठेठी गुरु देशना देशी, जविक जीवना काज सरेसी,  
नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो-  
रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रजाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ चूख्यां जोजन  
संपजे, कुरखा करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तथा नं-  
कार ॥ जे गुरु गोतम समरिये, मनबंधित दातार ॥ २ ॥ पुं-  
रुरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊगीने प्रणमता,  
चवदेसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिलमंगुणकलियं, सुविशियं सबलहि स-  
पसं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसांमि ॥ ४ ॥ सर्वो-  
रिष्टप्रणाशाय, सर्वान्निष्ठार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्व-  
मिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दहा ॥

॥ श्रीरिसदेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास ज-  
णूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखरुंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हु-  
आ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज माहातम कियो, शिवदैत्य हजूर  
॥ २ ॥ वीर जिशंद सप्रवसरधा, सेत्रुंज ऊगर जेम ॥ इंदादिक आ-  
गल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिखो,  
नही ठे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताळमें, तेरथ सगला जोय  
॥ ४ ॥ नामे नव निध संपजे, दीग डुरित पुलाय ॥ जेटता जव-  
जय टवे, सेवंता सुख आय ॥ ५ ॥ जंबू नामे द्वीप ए, दक्षिण-  
जरत मऊर ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां ठे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ बाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुंजो ने श्रीपुंरुरीक, सिद्धकेश कहुं तहतकी ॥ विम-  
लाचंदने करुं प्रणाम, ए सेत्रुंजैना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरि

( २७३ )

ने महागिरि पुन्यरोस, श्रीपदपर्वत इन्द्रकास ॥ महातीरथ प्रखे  
सुखकांम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिर्लो  
तिण कीजे नक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगंम ॥ ए० ॥ ३ ॥ प  
रुवीपीठ सुज्ज् केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम  
कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नांम, जपेज बे  
ठा अपने ठांम ॥ सैत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर जगवंत  
इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमाण ॥ पिहुलो  
मूल उंचपण, उबीस जोयण जाण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जाणवो, बीजे  
अरे विस्ताळ ॥ बीस जोयण उंचो कह्यो, मुज वंदना त्रिकाल ॥  
२ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोळ जोयण  
उंचो सही, ध्यान धरूं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण,  
चोथे अरे मजार, उंचो दस जोयण अचळ, नित प्रणामे नर नार ॥  
४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूलतणै विसतार ॥ दो जोयण उंचो  
अठे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ ठे अरे, पिहुलो पर  
बत एह ॥ उंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थकर, अनंत सीधा इण ठांम रे ॥  
अनंत वली सिज्जस्ये इण ठामे, तिण करूं नित प्रणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुं  
जसाधू अनंता सीधा, सीज्जसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज ती  
रथ नही जेव्यो, तेगरजावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि  
आठमने दिवसे, रुषजदेव सुखकार रे ॥ रायणरुंख समोसरया  
स्वामी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ जरतपुत्र चैत्री पुनम  
दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोन्हीसुं पुंरुरीक सीधा, ति

रा पुनरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमिराजा विद्याधर,  
 बै बै कोनी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिस  
 प्रणमुं परजात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्रमास वदि चौदसने दिन, न  
 मीपुत्री चउलठि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सी  
 था एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा, झावन ने  
 वारिखिल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोनी  
 मुनिसुं निसल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांनव इण गिर सी  
 धा, नव नारद रुषिराय रे ॥ संब प्रऊन्न गया इहां मुगते, आवू क  
 र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विनो तेवित तीर्थकर, समवस  
 रथा गिरिभृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थकर बेहूं, रह्या चोमासे सुरंग  
 रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सदस साधु परिवार संघाते, आववांसुत साध  
 रे ॥ पांचसैं साधुसुं सेखग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाधरे ॥ से०  
 ॥ १० ॥ असंख्याता मुनिसैत्रुंज सीधा, जरतेसरने पाठ रे ॥ रा  
 म अने जरतादिक सीधा, मुकितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥  
 जाखि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोनि रे ॥ साधु अन  
 ता सैत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोनि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ दाल मीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सैत्रुंजना कहूं सोल उक्षर, ते सुणज्यो सहुको सुविचार  
 ॥ सुणतां आणंद अंग न माय, जनमरुना पातिक जाय ॥ १ ॥ रु  
 षभदेव अयोध्यापुरी, समवसरथा स्वामी हित करी ॥ जरत गयो  
 चंदयाने काज, थे उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमहि मोटा  
 अरिहंत देव, चोसठ ईड करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कहाय,  
 जेहने प्रणमें जिनवराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, जर  
 त सुणीने मन गहंगह्यो ॥ जरत कहे ते किम पांमिये, प्रजु कहे ते  
 अंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ जरत कहे संघवीपद मुऊ, थे आपे

हूं अंगज तुल्य ॥ इंद्रे आण्या अकृतवात्, प्रभु आपे संघवीपद ता  
 स ॥ ५ ॥ इंद्रे तिण वेला ततकाळ, जरत सुजडा बिडुने माल ॥  
 पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष  
 जदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रखी ॥ जरते गणधर  
 घर तेनिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू  
 की सहु देस, जरत तेमायो संघ असेसं ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी,  
 प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिवली, सं  
 घ चलायो सेत्रुंज जणी ॥ गणधर बाढूबल केवली, मुनिवर कौन  
 साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तनी सघली रुद्रि, जरते साथे ली  
 धीसिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नाथे पार  
 ॥ १० ॥ जरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥  
 संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे  
 निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण ठांमे  
 रही महोच्चव कियो, जरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ  
 सेत्रुंजा ऊपर चढ्यो, फरसंता पातिक ऊरु पढ्यो ॥ केवलंग्यानी  
 पगला तिहा, प्रणम्यां रायणरुंख ठे जिहां ॥ १३ ॥ केवलंग्यानी  
 छात्र निमित्त, ईशानेंद्र आली सुपवित्र ॥ नदी सेत्रुंजे सोदामणी,  
 जरते दीगी कौतुक जणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंद्रे  
 बलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरी, जरत करायो गुरि  
 सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उचंग, रत्नतणी प्रतिमा मन  
 रंग ॥ जरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोदामणी ॥ १६ ॥  
 मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रखी ॥ ब्राह्मी सुंदरि  
 प्रमुख प्राशाद, जरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक  
 प्रतिमा प्राशाद, जरते करायो गुरु सुप्रशाद ॥ जरततणो पहिलो  
 उद्धार, सगलोही जाये संसार ॥ १८ ॥



ढाल चोथी ॥ राग सिंधुडो, आसावरी ॥

॥ ऋततणो पाट आठमे, दंरवीरज थयो रायो जी ॥ ऋ-  
ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज  
उद्धार सांजलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा  
वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपात-  
णो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलगो बिंब जंमारीयो, पडिमदि-  
सि तिण बारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सफल  
कियो अवतारो जी ॥ दंरवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥  
से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंरवीरजथी जिवारो जी,  
इशानेंड करावियो ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा  
देवलोकनो धणी, माहेंड नाम उद्धारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करा  
वियो, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी,  
ब्रह्मेंड समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचमो  
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपती इंडनो कियो, ए षष्ठो उद्धारो  
जी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥  
अजिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइंड करा  
वियो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंडप्रभु स्वामीनो  
पोतरो, चंडशेखर नाम मढ्दारो जी ॥ चंड्यशराय करावियो, ए  
नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना,  
शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो  
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वां  
मी बारो जी ॥ श्रीरामचंड करावियो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥  
से० ॥ १२ ॥ पांरुव कहे अमे पापिया, किम बूटां मोरी मायो  
जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से०  
॥ १३ ॥ पांचे पांरुव संघ करी, सेत्रुंज जेख्यो अपारो जी, काष्ट चै

स्य विंव लेप्पना, ए वारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी  
 पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी,  
 थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अघोतर सो वरसां गया,  
 विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवान जावरु करावियो, ए तेरमो  
 उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत वार तिमोतरे; श्रीमाखी सुविचां  
 रो जी, वाह्मवे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥  
 से० ॥ संवत तेरे इकोतरे; देतलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह  
 करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स  
 त्यासिये, बैसाख बदि शुभ वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो,  
 ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए  
 वरतेवे उद्धारो जी ॥ नित२कीजे वंदना, पांमीजे जवपारो जी ॥ २० ॥ से०

॥ दूहा ॥

॥ वखि-सेत्रुंज महातम कहूं, सांजलो जिम ठे तेम ॥ सूरि  
 घनेतर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्श-  
 नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेव मानता, लाज दुवे तह-  
 तीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमांख  
 समो खहे, पढ्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो  
 नीपावे कोय ॥ जीखौंदार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥  
 तिर ऊपर नागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्चनी स्त्री अई,  
 शिवसुख पांमे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उप  
 वास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती  
 परब मोटो कह्यो, जिहां सीया दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक ह  
 त्या, पापयी नाखे ठोरु ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक जशी, जो  
 जन पून्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पमिलाज नां, अधिको तेहथी देख ८

॥ दाल पांचमी ॥

॥ सेतुंज गया पाप बूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप  
जप कीजे तिहां रही, तीर्थकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जि  
ण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुं  
ज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चोरी  
करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सैतुंज चढी, एक करे  
उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी ॥ चोरी  
कीधी जेषो जी ॥ सात दिवस पुरिमद्ध करे, तो बूटे गिरि एणो  
जी ॥ ४ ॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरया नर नारो  
जी ॥ आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥  
से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते जेटे सिद्धकेत्रो जी ॥ सेतुंज  
तलदटी साधुने, पमिलाजे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राजरण  
जियो हरया, ते बूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह  
छठी बहू वेळो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुद्ध  
थाये एमो जी ॥ अधिको डव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो  
जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय जैस घोमा मही, गज अह चोरणहारो  
जी ॥ ये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥  
पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नामो जी ॥ बूटे उम्मासी  
तप कियां, सामायक तिण गमो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परि  
ब्राजका, सधव अधव गुरुनारो जी ॥ व्रत जाजे तेहने कह्यो, उ  
म्मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक रुषि,  
एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, बूटे तप कर  
तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ दाल छठी ॥

॥ संप्रति कावे सोलमो ए, ए वरते ठे उद्धार ॥ सेतुंज यात्रा

करे ए, सफल करे अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ ठेढरी पालता चाखिये  
 ए, सेतुंज कैरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मि  
 ळ्या बहु धाट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पैखिये ए, वलि संचा  
 नी बावि ॥ तिहां विसरांमो छीजिये ए, बनने चोंतरे आवि ॥ ३ ॥  
 से० ॥ पालीताणे पाजनी ए, चढिये ऊठ परजात ॥ सेतुंजनदिय  
 सोहामणी ए, दूरयकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये दिंगलाजने हने  
 ए, कलिकुंरु नमिये पास ॥ बारीमांहे पैसीये ए, आंणी अंग  
 उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीदूक मनोदरु ए, गज चढी मरुदेवी  
 भाय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥  
 ॥ ६ ॥ वेंस पोरवाने परगमो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघ  
 ची करावियो ए, चौमुख सूख उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा  
 चरचिये ए, जमतीमांहे जला बिंब ॥ पांचे पांरुव पूजिये ए, अदभुत  
 आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, बिंब जुहारुं  
 अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टाळूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ९ ॥  
 धरमंडुवारमांहे नीसरूं ए, कुगति करूं अतिदूर ॥ आठं आदिनाथ  
 देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनाथक प्रणमुं मुदा  
 ए, आदिनाथ जगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, जमतीमांहे जमंत  
 ॥ ११ ॥ से० ॥ सेतुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कल  
 श अगेतर तो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥  
 प्रथम आदीसर आगले ए, पुंनरीक गणधार ॥ रायण तख पग  
 ला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ १३ ॥ से० ॥ रायण तख प  
 गला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजी जूमि बि  
 बावली ए, पुंनरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंरु नि  
 दाखिये ए, अति जली उलकाजोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध  
 शिला ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर वा

ज उतरूं, ए, सिद्धवरुं विसराम ॥ चैत्यप्रवाम इण पर करी ए, सी  
 था वंगित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफळ  
 कियो अवतार ॥ कुसल केमसुं आवियो ए, संघ सद्दू परवार ॥ से०  
 ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोदामणो ए, सांजलज्यो सद्दू कोय ॥ घर  
 बेगं, जणे जावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संव  
 त सोल वयासिये ए, आवण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजत  
 णो ए, नगर नागोर मजार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गड्ड खरतर  
 तणो ए, श्रीजिनचंद सूरिस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल  
 चंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जाणिये ए, सम  
 यसुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवमो ए, सुसतां आणंद था  
 य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दृष्टा ॥

॥ वादी बीस जिनेसर, रचस्युं रास रसाख ॥ तीरथ शि  
 खरसमेतनी, महिमा वनी विशाख ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले,  
 प्रगळ्यो शिखरसमेत ॥ कोनाकोनी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥  
 २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्यां पाप पुत्राय ॥ जविजन जे  
 टो जावसुं, ज्युं सुख संपद आय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी,  
 कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवंतना, तिम ए ती  
 रथ होय ॥ ४ ॥

॥ दारु १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब  
 जग होय ॥ बीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरी  
 ने रहा ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली, तिहां जितरात्रु

भरेसर बली ॥ विजयाराणीने सुत जाण, अजितकुमर सहु गुण  
नी खाण ॥२॥ जसु इंझादिक सेवा करे, इंझाणी अति उठव धरे ॥  
तीर्थकरनी पदवी छेदी, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु  
क्रम इम जोगवतां जोग, पुन्य प्रसाद मिळ्यो सहु जोग ॥ अवस  
र वे संवत्सर दान, संजम खीने आप सुजाण ॥४॥ कर्म खपावो  
प्राप्त्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधान ॥ विचरे पुढवीमंन्यमांदि,  
अन्यजीव प्रतिबोधन साहि ॥५॥ सिंदसेनादिक गणधर जया, पं  
चाशे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरचा, आवक  
आवकणी सहु करया ॥६॥ तीस लाख बलि तीस हजार, साधव  
थां जाणो सुविचार ॥ आवक सहस्र अष्टाशुं सही, दोय लाख  
संख्या गढगही ॥७॥ पांच लाख पैताळीस हजार, आवकणी सं  
ख्या सुविचार ॥ बहुतर लाख पूरबनो आय, कंचनवरण सरीर  
सुहाय ॥८॥ साढीच्यारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गं  
जरीर ॥ गज लांगन प्रजुजीने जाण, अमृत सम जसु मीठी वाण  
॥९॥ अनुक्रम प्रजुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत  
सहस्र मुनिवरने परिवार, भासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥  
चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इथे ॥ झूचर खेच  
र किन्नर सुरी, इंझादिकसहु उठव करी ॥११॥ थाप्पो तीरथ मोटो  
मही, अठाइ महोठव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते  
अविषण अक्षयसुख चरे ॥ १२ ॥

॥ वृहा ॥

॥ श्रीसंजव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण ॥ शिखरसमे  
त सुहामणो, प्रगळ्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥ सुगण सनेही सांजन श्रीसीमधर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावळीनगरी जरी धन संपद बहु शोक, जैतारि नृप  
३६

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी भीठी बाणी गुणनी खी  
 ण, जेहनै सुत श्रीसंजव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण  
 सररी मनीहर प्रभुनो जाण, लंघन अश्वतथो सोहे प्रभुनो परधा  
 न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष ध्यारसे उच्च  
 पथै प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर  
 होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख  
 श्रमणी बली ऊपर सहस बचीस, भूमंरुख विचरे प्रभु श्रीसंजव  
 जगदीस ॥३॥ तीन लाख बलि सहस त्रयाणुं आवकलोक, षट  
 लख सहस बचीस आवकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक्ष अरु ड  
 रितोदेवी सानिधकार, विचरंता प्रभु सकल संघमें जयशंकार ॥४॥  
 सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी सिखरसमेत, एक मास संखेखण  
 कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण,  
 तीरंथ महिमा महियल मोटी बड्य सुजाण ॥५॥

॥ बुरा ॥

॥ अजिनंदन जिन बंदिये, पायो पद निरवांण ॥ शिखरस-  
 मेत सोहामणो, जेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ बाल ब्रिजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमथरो ॥ ए देखी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम जली, संबर राजा सोहे  
 मन रखी ॥ सिद्धार्थी राणी प्रभु तसु नंद ए, अजिनंदन जिन प्रग  
 टया चंद ए ॥ उल्लाखो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष सादी  
 तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंघन ते नित वसे ॥  
 पूर्व लाख पंचास आयु, गणधर एकसो सोल ए ॥ तीन लाख मुनि  
 उलाख आर्या, सहस त्रिसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अक्यासी  
 दो लाख आदनी, संख्या चौ लाख सत्ताबीसनी ॥ आवकहयारी संख्या  
 जाण ए, नायकयक्ष कालिका गण ए ॥ उल्लाखो ॥ षण ए शिखरस

मत ऊपर मास एक संलेखणा, इक सदस साधू परवरया प्रजु  
 मुक्ति पहुँचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमं  
 गला, श्रीसुमति जिनवर जए नंदन सदा होत सुमंगला ॥३॥ चाल ॥  
 सोवन वर्ष धनुष तसु तीनसे, लंढन क्रोंच सोहै सुजगे हसै ॥  
 पूरब लाख पव्यासी आठ ए, इकसौ गणधर गुणगण ज्ञाउ ए ॥  
 उल्लाखो ॥ ज्ञाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहै सदस बीस प्रमणां  
 ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी आवक दोय लक्ष जाण ए ॥  
 संख्या इक्यासी सदस ऊपर आवका इम आणिये, पण लाख  
 सोले सदस तुंवरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात  
 संख्या सदस साधु सुमंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रजु मुक्ति  
 पुहुता चंग ए ॥३॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनुष तात  
 सुलीमा मात ए, पदम प्रजु तसु अंगज नाथ ए, लंढन कमलत  
 यो सुज हाथ ए ॥ उल्लाखो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाई  
 सै त, कहौ, तीन लाख पूरब शित कहावै एकसौ गणधर लहो ॥  
 लख तीन तीस हजार साधू बीस सदस लख च्यार ए, साधवी  
 दोय खल सदस बिहतर आवक संख्या सार ए ॥४॥ चाल ॥ पांच  
 लाख बलि पांच हजार ए, आवकएयारी संख्या सार ए ॥ कुसम  
 देव श्यामादेवी कहौ, लाखवरण तन प्रजु सोहै सही ॥ उल्लाखो  
 ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आवसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास सं  
 लेखन प्रजुनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रजुजी मुक्ति पहुता,  
 गिर शिखर महिमा जई, ॥ तसु चरण पंकज बालवंदे हृदय आनं  
 द गदजही ॥ ५ ॥

॥ दुरा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आरास ॥ जविजन ब्रह्म  
 रसु सेवतां, पांमे वंगित काम ॥ १ ॥



॥ हॉल चौथी ॥ श्रीसीमंघर साहिब ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोजता, राजा तात प्रतिष्ठ लाखे ॥ दे  
की पृथ्वी मात जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ठ लाखे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व  
जिनंद जी, बीस पूरव लख आयु लाखे ॥ धनुष दोयसे देहनो, कं  
चनवरण मुहाय लाखे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कहा, सा  
धू त्रिण लाख होय लाखे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस सा  
धवियां जोय लाखे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्षनी, आवक  
संख्या आय लाखे ॥ च्यार लाख वली त्रेशवै, सहस आवकणी  
जाय लाखे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मातंगयक शांतासुरी, पांचसे मुनि पर  
व र लाखे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार ला  
खे ॥ ५ ॥ श्री० ॥ नगर चंडपुर इण परे, राजा तात महस लाखे ॥  
देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंडाप्रभु वेस लाखे ॥ ६ ॥ श्रीचंडाप्रभु  
वंदिये, चंडवरण तनु जेह लाखे ॥ लंछन चंडतणो जलो, धनुष  
दोहसे देह लाखे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ जविककमल प्रतिबोधना, सेवे  
मुरं नर यक लाखे ॥ दस लाख पूरव आग्रंखो, तेणवे गणधर  
दह लाखे ॥ श्रीचं० ॥ ८ ॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि अ  
मणी तीन लक्ष लाखे ॥ असी सहस संका कही, आवक वलि  
दोय लक्ष लाखे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, आ  
विका चंड लक्ष धार लाखे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजी  
नो परिवार लाखे ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव जूकुटीसुरी, स  
हस साधु परिवार लाखे ॥ संलेखन इक मासनी, पुढता  
मुक्ति मज्जार लाखे ॥ ११ ॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥

॥ जंय श्रीसुबिद्ध जिनेसरु, जंगपति दीनदयाल ॥ समे  
हशिखर मुगते गया, जविजनके प्रतिपाल ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिजो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा  
मातां सुत, जए सुविध सुज जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु  
सत, धनुष एक परिमाण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रज्जुनो आयु  
सुजाण ॥ २ ॥ अक्खासी संख्या जए, गणघर परम प्रधान ॥ ल  
ख दो मुनि विंशति सदस, इक लख भ्रमणी जाण ॥ ३ ॥ दोय  
लक्ष आवक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौ लख सदस,  
आवकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सा  
निघकार ॥ सदस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥  
मास संलेखण कर प्रज्जु, मुक्ति गए इह गेर ॥ तीरथ महिमा म  
हियलै, प्रगटी च्यारुं उर ॥ ६ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, दिव सु  
णज्यो अधिकार ॥ जइलपुर द्दरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥  
७ ॥ लंबन सुज श्रीवडनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेत्र  
धनुष, मान सरीर अमंद ॥ ८ ॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रज्जुनो आयु  
प्रमाण ॥ इक्खासी गणघर कह्या, मुनि इक लाख सुजाण ॥ ९ ॥  
एक लाख चालीस सदस, भ्रमणी संख्या उर ॥ सदस तथासी  
दोय लख, आवक संख्या जोर ॥ १० ॥ सदस अठावन लक्ष चौ,  
आवकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानि  
घकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेत सदस एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति  
गए प्रज्जु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

॥ ढाल छठी ॥ धनर संगति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेत्तर तात जी, कं  
चनवरण श्रेयांस प्रज्जुजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो  
रे नमो श्रीत्रिज्जुवन राजा, खरुग लंबन प्रज्जु पायजी ॥ धनुष अस्त्री

देहमांन चौरासी, लाख वरसमो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर  
 बहुतर सदस चौरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सद-  
 स वलि सदस गुण्यासी, श्रावक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥  
 अरुतालीस सदस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी ॥ ज  
 क अमर सुरी मांनवी जाणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥  
 न० ॥ सदस मुनीसरनै परिवारै, प्रज्जुजी सिखस्तमेत जी ॥ मा-  
 स संलेखण कर प्रज्जु पोहता, सुकिमदल सुख हेत जी ॥ न० ॥  
 ५ ॥ दिव कंपिलपुर तात जूपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्या  
 मादेवी अंगज कपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सू-  
 कर लंढन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख व-  
 डरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सदस  
 मुनि अरु सय इक लख, श्रमणी श्रावक जाण जी ॥ आठ सदस  
 दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ ४  
 एमुख सुरवर विदिता देवी, प्रज्जुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार  
 साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ ९ ॥ नगरी नाम  
 अयोध्या नरवर, सिंहासेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत  
 जायो, प्रज्जुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंढन श्येन सो-  
 वन सम काया, धनुष पचास प्रमाण जी ॥ तीस लाख वडरनो  
 आयु, गणधर पचवीस आण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ बासठ सदस  
 मुनीसर सोहे, बासठ श्रमणी हजार जी ॥ ठ हजार लाख दोय  
 श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख व-  
 लि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघके  
 सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनि  
 वरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि-  
 कपर, पुहता पद निरवाण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दृष्ट ॥

॥ असे धर्म जियेसरू, पुढता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत  
गिरिंद पर, नमोश् जगज्जाण ॥१॥

॥ दाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ १॥ देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, जानुराय सुजाण ॥ राणी  
सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिने  
सर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंगन सुखकार  
॥२॥ ज० ॥ चौतीस गणधर मुनि कहा जी, चौसठ सदस प्रमां  
या ॥ अमणी बासठ सदसस्थूं जी, आवक दोय लक्ष मानं ॥ ३ ॥  
ज० ॥ चार सदस वलि ऊपरं जी, चौ लख एक हजार ॥  
आवकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥  
किन्नर सुर यत्ना सुरी जी, एक सदस परिवार ॥ समेतसिखर मुं  
गते गया जी, बांदू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ दयशापुर विश्वसेनना  
जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन  
जयशकारा ॥ जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥ मृग लांगन सोवन  
समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वंश इक लाखनो जी, ठ  
चीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ बासठ सदस मूनि ठसै जी, इगसठ  
अमणी हजार ॥ दोय लाख आवक कहा जी, ऊपर नेऊ हजार  
॥ ८ ॥ ज० ॥ सदस त्रयाणूं आविका जी, तीन लाख परिवार ॥  
गरुडयक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥ ९ ॥ नवसै मु  
नि परवार स्थूं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमणकर मुगतिमें  
जी, पुढता निजपद हेत ॥ ज० ॥ १० ॥ असें दयशापुर जलो  
जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंशुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन त  
नु श्रीमात ॥ जगतपति कुंशु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ गग  
लंगन पैतीसनो जी, धनुष देहनो मानं ॥ सदस पंचाणव वरस

( १०८ )

नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥११॥ ज० ॥पैंतीस गणधर दीपता  
जी, साठ सहस मुनि जान ॥ ठसै साठ सहस वली जी, अमणी  
संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्षनो जी, आव  
क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, आविका सं  
ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी ब  
ला गंधर्व॥कुंजनाथ मुगते गया जी, माख संखेखण सर्व ॥ज०॥१५॥  
॥ हरा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्थुं अब अधिकार ॥ श्री  
ता सुणज्यो प्रेम धर, आस्थै लाज अपार ॥ १ ॥

॥ दाल आमी ॥ देसी विछियानी ॥ हारे लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरू॥५॥देवी ॥

॥हारे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या  
चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंददेवीना नंद रे लाला

॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंठन नंदावर्तनो, तीस धनुषदेहीनो मान रे  
लाला॥कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला॥

॥२॥श्रीअ०॥ इक लाख आवक ऊधरे, वलि संख्या अधिकी जाण रे  
लाला ॥सहस बहुतर ताननी लक्ष आविका संख्या आंशेरे लाला ॥

श्रीअ० ॥३॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परचार  
रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रभु, कर मास संखेखण सा

ररे ॥ श्रीअ० ॥४॥ मिथिलानगर प्रजावती, मात पिता श्री  
कुंज राय रे लाला ॥ लंठन कलस प्रचीसनो, वपु धनुष सोवन

सम काधरे लाला ॥ श्रीमद्विनाथ जिनेसरू ॥५॥ सहस पचा  
वन वर्षनी, अित गणधर अछाबीस रे लाला ॥ जविक कमल प्रति

बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ ला  
लीस सहस मूनेसरू, अमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस

त्रयासी लक्षनी, आवकनी संख्या सार रे लाला ॥ ८ ॥ श्री म०॥

( ५८६ )

आविका सिचर सदसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लावा ॥ सदसः  
मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संखेखण धार रे लावा ॥ श्रीम० ॥ १६ ॥  
राजमही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लावा ॥ श्यामव  
रण तनु शोभता, जे कपिल लंगन विख्यात रे, लावा ॥ श्रीमुनिसुव्रत  
स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वबर तीस हजार  
रे लावा ॥ अष्टादश गणधर थाया, तीस सदस मुनिसर सार रे  
लावा ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ अमणी सदस पचवीसनी, संख्या ब  
हुतर हजार रे लावा ॥ एक लक्ष ऊपरि आविका, तीन लक्ष प  
चास हजार रे लावा ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी जली,  
नरदत्ता सानिधकार रे लावा ॥ सदस मुनि परवारसे, गए मुक्ति  
मंदल सुख सार रे लावा ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा  
मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लावा ॥ नीलकमल लंगन  
कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साण रे लावा ॥ श्रीनमिनाथ, जिने  
सरु ॥ १४ ॥ दस हजार वरततणो, गणधर सिचर परिमाण रे  
लावा ॥ वीस इकतालीस सदस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण  
रे लावा ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ एक लख सिचर सदसनी, तीन ल  
क्ष सदस बलि होय रे लावा ॥ आवक संख्या आविका, अनक्रम  
करि संख्या जोय रे लावा ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता जूमंखे,  
आया सिखर समेत मज्जार रे लावा ॥ जूकुटी यक्ष गंधारी सुरी,  
इक सदस मुनि परवार रे लावा ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमेस्तर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि  
रोमणि सदसफण, जगजीवन जंगतात ॥ १ ॥

॥ दाक नवमी ॥ आदर जीव हयागुण आदर ॥ ५ देवी ॥

॥ जय१ परम पुरुष पुरुषोत्तम; पारस पारसनाथ जी ॥

सौवरियां साहिब जगनाथक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥  
जय शिखर समेत सिरिभिषि, श्रीसौवरिया पास जी ॥ ध्यावे  
सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंजित आस जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ कांसी दे  
सं चपारसी नगरी, श्रीअश्वसेन मरिद जी, वामामाता जगविख्या  
तो, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय ० ॥ पन्नग लंठन नील  
वरण ठवि, देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आयु इसो चरस प्रमाणे,  
गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सदस मुनिवर  
अरु अमणी, कही अमृतीस हजार जी ॥ भूमरुख विचरे जवि  
जनक, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सदस लाख इ  
क आवक, गुणबालीस हजार जी ॥ तीन लाख आवकणी सं  
ख्या, पार्श्वयंक सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ बीस जिनसर मुगते  
पुहता, महिमा यइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगव्यो जग  
में, मुक्तितपो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ बदरी पाले जे नर  
जावे, जेठे सिखर गिरिद जी ॥ ते नर ममवंजित फल पावे, ए सु  
रतठनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करे जक्ति, सं  
धेपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पामी, जेहनो  
सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परजव सुरनर संपद पामे, जा  
आ करे गढ़गाट जी ॥ साधमी वछल मुनिजक्ति, पूजा उठव था  
ट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूकर पर चरण प्रभूना, पूजा जविज  
न जाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उ  
ठाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां  
नवनिध आय जी ॥ तिण ए जविजन जाव धरनि, सुणज्यो म  
न धिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गडपति महिमाधारी,  
कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौभाग्य सूरेश्वर, अमृत  
वर्धन सुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसायें रास रच्यो ए, अ

मृतसमुदने सीत जी ॥ वाद्यवंद निज मति अनुसारे, स्तोषो विष्णु  
घ जगीत जी ॥ १४ ॥ अ० ॥ संवत उगणोत्तै सितमोत्तर, सुदि  
वैशाख सुदाख जी ॥ रात अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगल  
माख जी ॥ १५ ॥ अ० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रात संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ दाल १ ॥

रुषज प्रमुख जिन पाययुग प्रणमू, सिवमुख वायक मनह  
उल्लास ॥ पुंनरीक श्रीगौतम आदिक, गणेश्वर गुरु मन कमल वि  
कास ॥ १ ॥ प्रह सम सूधा साधु नमु नित, ज्ञावै अमण सुगुरु  
जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालू, परमानंद सुमति विकसं  
त ॥ २ ॥ प्र० ॥ जगत महामुनि प्रथम चक्रीतर, बाढूबल उप  
शम जंकार ॥ सूर्यस्तादिक आठ मुनितर, पांभ्यो विमलाचल ज  
बपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रुषजवंत जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोटो  
लाख असंख, श्रीतेजुजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूकी कं  
ख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्ति, साधु महा  
बल संजम सींह ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम रुषोत्तर न-  
वम अवीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ठ वसुंदर, श्रीमखि  
नाथ पूरबजव नित्र ॥ पटुंता परम रुषोत्तर शिवपुर, पाली श्रीजि  
न आंश पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंडु विष्णुकुमार लवधि निधि, सौं  
दक सूरिया सीत तय पंच ॥ कार्तिकसेठ मुसाधु कीर्तिधर, अम  
ण सुकोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडवंत अक्षोभसु ता  
गर, प्रमुख आठ अलगार प्रधान ॥ श्रीरदनेमि नेमजिन बंधव,  
निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने  
जवयाली, पुरतसेण वारितेन प्रजुन्न ॥ संव अने अनिरुद्ध रुषोत्तर,  
सत्यनेमि ददनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमार अनीकजसादिक  
षट मुनि, गुणगुरु श्रीगजसुकमाख ॥ दंडण रुषि श्रीधावका



सुत, सहस्र साधु संजतसु कृपाळ ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ दाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस्र भ्रमणसुं मुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलन मुनि  
वरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंरुगरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥  
उल्लाखो ॥ संपद करो समदम रिषीतर साधु सारण सोह ए, अं  
तर प्रकासे तिमर नासे, जविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुद्ध प्रबुद्ध  
नारद मुनि प्रमुख पैताळ ए, दमदंत महाशुषि कुंजवारे साधु नमुं  
त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषजवत रतनत्रय मुणी, स,  
मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांरुव प्रणमुं मुनिपती, केसपएसी  
बोधक जिनमती ॥ उल्लाखो ॥ जिनमती वालक पूत्र मेहल शिवर  
आणंद रत्तिकयो, अणगार कासव धर्म ज्ञाख्यो सोधि सिवपुर स  
त्तिकयो ॥ कालासवेसी पूत्र आतम अरण साधक उपसमई, श्रीपुं  
रुकी महामुनीतर प्रणमिये शुभ संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंड  
वलकलची रीकेवली, श्री अयमचो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू  
डुमई नमि निगया, निज देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लाखो ॥ श्री  
जुवा ए वृषजादि देखी थया वरु वहरागिया, संजमसिरि जज मो  
हनिडा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा न्यार सिद्धा सिद्ध थया  
एकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३  
॥ चाल ॥ खंतै कुल्लुमारसु ध्याइये, लोहजा मुनि चरणे लय ला  
इये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम सुख जयंती सादूणी  
॥ उल्लाखो ॥ सादूणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया  
॥ श्रीभ्रमणजइ सुजइ सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठय  
तीस सुव्रत, साधुसुवत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत मोजइ गरुड गरि  
मा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय रुषीतर वंदिये, दसारण  
जइ नमुं डाल वंदिये ॥ अर्जुनखली सुख संजमधरो, मुददप्रहा

श्री सिंवरमणी बरो ॥ उल्लाखो ॥ सिंवरमणी बरो श्री कूरगनू कमावत  
 प्रसिद्ध, कोमिन्न विन्न अनै सेवाली पनर सतक तिमोत्तरा ॥ गो  
 तम प्रबोधत सिद्ध पुढता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥  
 गरुआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रथवीचंड प्रथम्यां सुख पाईये ॥ खं  
 दकुमार सदा अजिनंदिये, नमिह ज़रद मित्र मन आणंदिये ॥  
 उल्लाखो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रुष  
 लापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र दीये धरी ॥ श्रीई नाम निर्मथ निर्मम  
 धर्मरुचि धर्मांगिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनी  
 संसे ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि २ जसतपो, श्रमण सु  
 वंसेण सीख सुदामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आडकुमार ए, चित्त चतुर  
 नर चित्त चमकार ए ॥ उल्लाखो ॥ चमकार सार सुजात कृषिबर  
 देवतानिध जस धणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजे सुजिन पालत हि  
 त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीत धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥  
 श्रीकपिल कृषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरखेव ए ॥ १७ ॥  
 ॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषे जुठ, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुठ ॥ श्री  
 इखुंकार नृपति कमलावती, रांणी जूगुसुं प्रेहित सुजमती ॥ उल्ला-  
 खो ॥ सुजमती जेहनी जसान्नार्था पुत्र दोय वखाणिये, ए ठूं  
 खेइ चारु चारित्र मुगति पढुता जाणिये ॥ कत्रिय मुनिसर साधु  
 संजम धर्मरुचि महाव्रती, निर्ग्रथनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुलं  
 यती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कळपो, विषसुं शीतल  
 सिवकमला मिळ्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, बीरप्रज्ञ  
 स्यो तप गुण बीर ए ॥ १९ ॥ श्रीबीर दीक्षित श्रीसुबाहु जड नं  
 दकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए ॥  
 श्रीचंमरुद्र सुसीत खंदग हमानिधि कदिये इया कलै, कुरुदत्त सुत  
 तीसग सरोरुद रिष नम्यां आस्था फजे ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुंख रिष च्यारे आवरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अन्नैकुमार  
मुनि अजयकरो, दल्ल विदल्लसु आतमः हितकरो ॥ उल्लाखो ॥  
हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधिये, सुनहत्त  
ने सर्वानुभूति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने  
मंदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसाखजइ सुषंभ मुनिवर समरता  
मंगलकरो ॥ १० ॥

॥ बाळ ३ ॥ राख प्रत्यासिरी ॥

वनवेरागी वर नमूं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रजव सिव्यंजव  
परगढो, सुजस जसोत्तम स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं जी,  
नामे घर नवनिध वाधै रिद्ध समुद्ध ॥ महा ७ ॥ ११ ॥ जग संजु  
तिविजय जयो, जद्रवाहु कतजद्र, जग जोयीसर जागतो, मुनिवर  
ओधूलजद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ जद्रवाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्ये  
मुनीराय ॥ सीत परीषद जिणसह्या, सारया २ आतम काज ॥ म० ॥  
॥ १४ ॥ अज्जमहागिरि जांशिये, अज्जसुद्धि विसाज ॥ संप्रति नृप  
पन्निबोद्धियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ १५ ॥ आरिजसांमि  
यसंसियो, अज्जसुजद्र मुनीस ॥ अज्जमंगु महिमा निखो, सींहगि  
श्री समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि धिवर महामनी, श्रीवयर  
स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, जद्रगुपति निरमाय  
॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरु, श्रीरक्त गुरु वरु ॥ सुस  
मित्र गुण गहपह्यो, प्रभु डुरबलका पद ॥ म० ॥ २८ ॥ विज सा  
धु सुविंघ जंरयो, श्रीवंदिल सुविद्व ॥ सूत्रअरंभ रत्ने जंरयो,  
कमोअमण देव ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्री  
हुपसें सूर दयाल ॥ सुख क्रिया खरतर सदी, जिन आज्ञा प्रतिपाल  
॥ म० ॥ ३० ॥ इम पत्तर कर्मजुमी जिके, दुआ दोस्ये अर्णत  
॥ वर्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रय गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ब्राह्मी

सुंदरि रात्रिने, लाहुणी चंदनबाळ ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिकी  
रणा सुद्ध त्रिकाळ ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल ळचीस ए, श्री  
विमलनाथ सुरलाळ ॥ दिक्का कढ्याणक दिने, गूंथी श्रीमुनिमाळ  
॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरै रल्लियामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥  
सूरि विजय राजै सदा, संध सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री  
अतिजड सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंध वखाणयि,  
सदां जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमाळका, गुणग  
ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पामे सुख ज़रपूर ॥ म० ॥  
३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम  
हासिद्ध घरे फळे, सदां कढ्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाळ  
का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नं जिन स्तवन लि० ॥

॥ दो० ॥ धरतमान चौवीसी वंदू, मन सूषै नित मेव री माई ॥  
रुषज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम प्रजु सेव री माई ॥  
॥ व० ॥ १ ॥ श्रीसुपार्थ चंद प्रजु प्रणमूं, सुविध शीतल श्रेयांत री  
माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री  
माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी  
पास जिनंद री माई ॥ चौवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा  
जेंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ डाल २ ॥ मर सम सूषा साधु नमुं नित ॥ ए देखी ॥

नित २ अतीत चौवीसी नमियै, जेहना नाम प्रगट ए जाण ॥  
केवलग्यानी ते निरबाणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥  
॥ नि० ॥ सर्वाजुजति श्रीधरदत्त जिनवर, वामोदर सुतजा श्रीस्वा  
मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नाम  
॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कतारघ, श्रीजिनेसर सुद्ध

ति सुजगीस, सिवकर स्थंदन संप्रति नामे, चंदीजे-जिनवर-चोवी-  
स ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ ढाल ३ ॥ सकल संसारनी ॥

जे जविस्संतिअणागए काल ए तेह चौविस् प्रणमीस त्रिहुं  
काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाज प्रण  
मीस सदीव ए ॥ १ ॥ बीरनो पितरियो नाम सुपास ए, दुसी  
जिन बीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उदाइ नरिंद ए,  
तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोहलो  
साव ए, चौथो स्वयंप्रभू नाम आराधि ए ॥ द्वादस्य जीव सिद्धा  
तमें जाणिये, पंचम सर्वानुभूति प्रमाणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्त इण नाम  
इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते ठगो स्वांमि सुलहीजिये ॥ सुख  
आवक हुस्ये उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाल जिन  
आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोहल जिणं, सतक आवक  
शतकीर्त्ति दसमो जणूं ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, सत्य  
कीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव त्रिकषाय  
जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो निर  
मम देव सुलता कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सदी ॥ ६ ॥  
समाव जिन सत्तरमो आवका रेवतो, अठारमो शंखजीव सुंदर  
जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोइजीव  
ते विजय जिन बीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकबीसमो जीव नारदतणो,  
देव बावीसमो अंबछ आवक जणूं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंत  
बीरज नमो, स्वातबुधजीव ते जइ चोवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम  
चोवीस जिन जाणिया, प्रवचन सारउद्धारथी आणिया ॥ केइ पर-  
सिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कहा, साख अनुसारथी साच कर सरवद्धा ॥ एह ॥

( ३६३ )

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहैजो रे दीसे नाहालो ए देशी ॥

विहरमांन जिन वीसे वंदियै, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर  
शुगमंधर वाहुंजो, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु  
रुग्गानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रवर चंडानन  
चंडवाहुजी, जुजंग ईश्वर नेमि जाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा  
प्रभु नमुं बली, देवयसा यसोरिद्ध अढीढीपमे विचरे आज ए, नांम  
लिगं नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥

च्यार तीर्थकर सासता, इराहिज अजिधान ॥ रुक्मजानन चं-  
डानन वारिषेण वर्द्धमान ॥ च्यार० ॥ ए ॥ अठ कोनि ठप्पन्न  
लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे गयासी देहरा, त्रिहुं लोक मजार  
॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोनिया, बिंब भेपन लाख ॥  
संदह अठावीस च्यारसै, अठयासी जाल ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ विजु  
जिणवर नांम ए, समरथा सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, सम  
कित सुद्ध आय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम त्रिण चौवीसी वीस विहरमांण चऊ जिणवर सासता,  
संयुगया सतरैसै बयालै अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता  
मणितणा पर प्रबल वंछित पूर ए, प्रदंसमै त्रिकरण शुद्ध प्रणमै  
सदा जिनचंड सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री विभूं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पौसह सिद्धाय लि० ॥

जग चूनामणिजुठ, उसजो वीरो तिलोय तिरि तिलठ ॥  
एगो लोगाइहो, एगो चक्कू तिहुअणस्त ॥ १ ॥ संवहरमुसन्न जिणो,  
उम्मासे बद्धमाण जिणचंदो ॥ इह विहरिया निरसणा, जए ऊएउव  
माणोण ॥ २ ॥ जइता तिलोयराहो, विसइई बहुचाई असरित्त

यास्त ॥ इयं जीर्णतकराई, एतं स्वमा सबसादूषं ॥ ३ ॥ न चइ  
 ऊह चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग सइस्तेहिं  
 वि, मेरु जहा वाथं गुं जाहिं ॥ ४ ॥ जहो विणीय विणउ, पढम  
 गणइरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमहं; विन्ध्य दियउ  
 सुणइ सब ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इहंति ॥  
 इय गुरुजण मुहं अणियं, कयंजविउनेहिं सोयवं ॥ ६ ॥ जइ  
 सुर गणाण इंदो, गइगणतारागणाण जइ चंदो ॥ जइय पयाण  
 नरिंदो, गणस्त वि गुरु तदाणंदो ॥ ७ ॥ बाबुचि महीपालो, न  
 पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ कानं, विहरंति मुणी  
 तदा सोवि ॥ ८ ॥ पनिरुवो तेहस्ति, जुगप्पहाणागमो महुरवको  
 ॥ गंजीरो थिइमंतो, उवएसंपरो य आयरिउ ॥ ९ ॥ अपरिस्तावी  
 सोमो, संगइसीलो अजिग्गहमई य ॥ अविकलणो अचधलो, पसं  
 तदियउ गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं  
 पदं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिऊइ, संपयं सयवं ॥ ११ ॥  
 अणुगम्मए जगवई, रायसुयजा सइस्त वंदेहिं ॥ तहवि न करे इ  
 माणं, परिय छइ तं तदा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्त दमग, स्त  
 अजिमुहा अऊचंदशा अऊ ॥ नेहइ आसणागइणं, सो विणउ सब  
 अऊाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अऊाए अऊदिक्खिउ साहू ॥  
 अजिगमण वंदण नमं, सणेष विणएणसो पुऊो ॥ १४ ॥ धम्मो  
 पुरिसप्पजवो, पुरिसव रवेसिउ पुरिसजिओ ॥ लोएवि पदू पुरिसो,  
 किंपुण लोयुत्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ सवाइणस्ससरणो, तइया वाणा-  
 रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सइस्तमदियं, आसी किरूववंतीणं ॥ १६ ॥  
 तह वि य सारायसिरी, उल्लइंती न ताइया ताहिं ॥ उयरइएण  
 इके, ए ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिजाणसु बहुयाण वि, म  
 ऊाउ इइ समत्त घरसरो ॥ रायपुरिसेहिं निऊइ, जयेवि पुरिसो

जहिं नहिं ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सत्किं  
सुक्यं ॥ इह जरहचक्कवट्ठी, पसन्नचंदो य दिवन्ता ॥ १९ ॥ वैसो वि  
अप्पमाणो, अत्तंजम पएसु वट्टमाणस्त ॥ किं परियत्तियवेत्तं, विस्सं  
न मारेइ खळ्ळं ॥ २० ॥ धम्मं रक्कइ वेत्तो, संकइ वेत्तेण दिक्खित्तं  
मिअइ ॥ उम्मगेण पत्तं, रक्कइ राया जणवत्तं यं ॥ २१ ॥ अप्पा  
जाणइ अप्पा, जहदित्तं अप्पसत्कित्तं धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह,  
जह अप्पसुहावहं होइ ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ  
जेण जेण जावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥  
॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविअन्ति ॥ संव  
जरमणीत्तं, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियम्मइ विग  
प्पिय चिं, निएण सत्तं बुद्धिचरिएण ॥ कत्तो पारत्तदियं, कीरइ गुरु  
अणुवएत्तेणं ॥ २५ ॥ अद्धो निरोवयारी, अविणीत्तं गवित्तं निरवणा  
मो ॥ साहुज्जास्त गरहित्तं, जणेवि वयणिक्कयं जहइ ॥ २६ ॥  
धोवेण वि तप्पुरिसा, सणकुमारु ब्बेकेइ बुद्धंति ॥ देहे खणपरिहाणी,  
जंकिर देवेहिंते कहियं ॥ २७ ॥ जइता खवत्तम सुर, विमाण  
वासीवि परिवर्तंति सुरा ॥ चित्तिज्जंतं सेत्तं, संसारे सत्तयं कयरं ॥  
॥ २८ ॥ कहंतं जन्नइ सुक्कं, सुचिरेण वि जस्स उक्कमल्लिदियए ॥  
जं च मरणा वत्ताणे, जव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ जवएस सह  
स्सेहिं, बोदिज्जंतो न बुद्धइ कोइ ॥ जह बंजदत्तराया, उदाइनिव  
मारत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिचच्चाइ रायलढीए ॥  
जीवासक्कम्म कलिमल, जरिय जरातो पत्तंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तं  
णवि जीवाणं, सउक्करा इति पावचरियाइ ॥ जयवंजा सा साता  
पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पन्निवज्जित्तं दोसे, नियए सम्मं  
च पायवनियाए ॥ तो किर भिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥  
इति पोसइ सिद्धा ॥



॥ अथ राईसंथारा पोसह सिधाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥  
महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिज्जंतं ३, कहिये, अणुजाणह जि  
ठिक्का, अणुजाणह परमगुरु. गुणगणायणेहिं मंमिअसरीरा ॥ बहु  
परिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं,  
बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुर पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जाए  
जूमि ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, जवटंतेय काय परिखेहा ॥ दवाई  
जवजंगं, कसासनिरुंजणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाणं, इमस्स  
देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार सुवहि देहं, सबं तिविहेण बोरिरियं  
॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा जस्काण परपरीवानं ॥ अरइ  
रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिच्चत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइसु, स्कम  
ग्ग संसग्ग विग्घ जूआई ॥ डुग्गइनिबंधणाइं, अठारस पावणाणाइं  
॥ ६ ॥ एगो हं नज्जिमे कोइ, नाइमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीण  
मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासज्जं अप्पा, नाण  
दंसणसंजुज्जं ॥ सेसा मे बाहिरा ज्ञावा, सव्वे संजोगलस्सणा ॥  
॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुक्कपरंपरा ॥ तम्हा संजोग  
संबंधं, सबं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं  
सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥  
चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवलि  
पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा  
लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलि पन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ च  
त्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पव  
ज्जामि, साहुसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥  
अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया ॥ अरिहंता किञ्चिअत्ता  
णं, वोसिरामिच्चि पावणं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धा य मज्झ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ १ ॥ अरि  
 यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं,  
 वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवझाया मंगलं मझ, उवझाया मझ  
 देवया ॥ उवझायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ सा  
 हूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं,  
 वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अणणि मारुय, इक्किक्के सत्त  
 जोणि लक्कांठ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चन्दस जोणि लक्कांठ ॥  
 ॥ १ ॥ विगळिंदिणसु दो दो, चनरो चनरो य नारय सुरेसु ॥ ति  
 रिणसु हुंति चनरो, चन्दस लक्का यमणुणसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व  
 जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वचूणसु, वेरं मझं न  
 केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरुडिअ डुगंठिअं सम्मं ॥  
 तिविहेण पन्निक्कंतो, वंदामि जिणे चण्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा  
 विअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धसाख आलोयणह,  
 मझह वेर न जाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चण्डह राज  
 जमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मझवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति  
 संथारा गाथां स० ॥

॥ अथ निदावारक सञ्चाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोढ्यां महा  
 पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणो माय  
 वाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमा बलती  
 देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगमां रे, कदो केम छ  
 जला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,  
 निंदानी सूको परी टेव रे ॥ ओमे घणो अवणुणें सहु जरयां रे,  
 केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 आये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेमहुटकवारो आय रे, ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण प्रहजो  
सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कण्ठपरें सुख पामशो  
रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ नि० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिन्धाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, जाली जालअपार रे ॥ सु  
जाणें सीता ॥ जाणें केसू फूलियां रे लाल, राता खैरअझार रे  
॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परि  
भाषा रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी यया रे लाल, निरखे राणो  
शण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक  
पासैं आय रे ॥ सु० ॥ कज्जी जाणें सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप  
दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, कजा  
करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ जस्म हुशी इणें आगमें रे लाल, राम  
करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन बाँधयो हुवे रे लाल,  
सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुऊ अगन प्रजालजो रे  
लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेढी आग  
में रे लाल, तुरत अगन ययो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें इह जलशुं  
जरयो रे लाल, जीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम  
वरणां करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें क  
तरी रे लाल, साख जरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत स  
हुको ययां रे लाल, सखे ययां उबरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम  
खुशी यया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग  
माहि जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ क  
हे जिन इर्थ सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥  
॥ ९ ॥ इति सीतासती सिन्धाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी रुषि सिन्धाय ॥

॥ श्रेष्ठिक रयवर्णी चढ्यो, पेखियो मुनी ए केत ॥ वर रु  
पकते मोहियो, राय पूजे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेष्ठिकराय हुं  
रे अनाथी निर्धय ॥ तिणमैं लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए  
आकणी ॥ इया कोसंबी नगरा वसे, मुऊ पिता परि गल धन्न ॥  
परवार परें परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इ  
क दिवस मुऊ वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु  
जूरी रह्या, तोही पक्ष रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी  
गुण मन ठरनी, ठरनी अबला नार ॥ कोरमी पीना में सही,  
नहिं कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाइया,  
काधला कोमी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, पण तोही रे दाह  
नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे, तो लेउं सं  
जमझार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥  
॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमादे को केहनो नहिं, ते जणी हुं रे अनाथा  
वीतरागनो धरम बाहरो, कोई नहीं रे सुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥  
॥ ७ ॥ कर जोमी राजा मुख स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे  
ष्ठिक समकित तिहां लहे, बांदी पहुँचे रे सरग मजार ॥ श्रे० ॥  
॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोमी ॥ गणि समय  
सुंदर तेहना, पाय वांटे रे बे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिन्धाय ॥

॥ कर पन्तिकमणो जावसुं, दोय धनी शुज जाण ॥ लाख  
रे ॥ परजव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाख रे ॥ १ ॥  
कर पन्तिकमणु जावसुं ॥ ए आकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रे  
ष्ठिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंकी सोना तणी, दीये दिन  
प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते बली, एम

दीये इय्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामाधिकनी तुला, नावे तेह लेंगार  
 ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चण्विसडो, जलुं वंदन दोय  
 दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रतं संजारो रे आपणां, ते जव कर्म नि  
 वार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर काउसगग शुनंध्यानणी, पञ्च  
 स्काण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सद्या ये ते बलो, टालो टालो  
 अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादणी, लहीये  
 अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए  
 निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिधाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह उठोने समरिजे हो ॥ जवियण मंगलिक सरणां चार  
 ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ ज० ॥ दोखतनो दातार ॥ हियमे रा  
 खिजे हो ॥ ज० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ ज० ॥  
 केवलि ज्ञाख्यो धर्म ॥ ए चारु जपतां थकां हो ॥ ज० ॥ टूटे  
 आवुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारु सुखकारि हो ॥ ज० ॥ ए चारु  
 मङ्गलिक ॥ ए चारु उचम कहां हो ॥ ज० ॥ ए चारु तहतीक  
 हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटे चालतां हो ॥ ज० ॥ समरुं वारं  
 वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ ज० ॥ विघन निवारणहार ॥  
 ॥ हि० ॥ ४ ॥ साकण साकण जूतनां हो ॥ ज० ॥ सिंह चित्ताने  
 सूर ॥ वैरी दुसन चोरटा हो ॥ ज० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥  
 ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ ज० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ पर  
 जव जातां जीवने हो ॥ ज० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ रा  
 खो सरणाकी आसता हो ॥ ज० ॥ नेमों नहिं आवे रोग ॥ वरते  
 आनंद सुख सही हो ॥ ज० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥  
 निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी  
 नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

भनेचित्त मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोर कळ्याण ॥ शुद्ध  
भने करी समरता हो ॥ ज० ॥ निर्वै पद निर्वाण ॥ दि० ॥ ए ॥  
ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तपो आधर ॥ ए सर  
णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मजार ॥ दि० ॥  
॥ १० ॥ संवत् अठारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥  
त्रोथमेल्ल इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ दि० ॥  
॥ ११ ॥ इति श्रीमंगलिक सरणां ॥

## ॥ अथ सिंहाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ दंडण रुपीनी सङ्गाय ॥

॥ दंडण रुषिजीने वंदना हूं वारी, उरुछो अणगार रे दूवा  
री लाल, अजिग्रह लीधो एहवो हुं० ॥ लेस्युं शुद्ध आहार रे ॥ हुं०  
॥ १ ॥ हुं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हुं० ॥ न मिलै शुद्ध आहार  
रे ॥ हुं० ॥ मूल नवै अणसूजतो हुं० ॥ पंजर कीधो गात रे हुं०  
॥ २ ॥ हुं० ॥ हरि पूठे श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सहस्र अठार रे ॥ हुं०  
वां० ॥ उरुछो कुण एहमें हुं० ॥ मुजने कही विचार रे ॥ हुं०  
॥ ३ ॥ हुं० ॥ दंडण अधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद  
रे हुं० ॥ कृष्ण ऊमाहो वादवा हुं० ॥ धन जादवं कुलचंद रे हुं०  
वां० ॥ ४ ॥ हुं० ॥ गलियारे मुनिवर मिळ्या हुं०, बांधा कृष्ण  
नरेस रे हुं० ॥ किराही मिळ्यास्वी देखने हुं०, आयो जाव वि  
सेसरे हुं० ॥ ५ ॥ हुं० ॥ मुज घर आवो साधजी हुं०, ल्या मोदक ठे  
शुद्धे हूं० ॥ मुनिवर विहरीने पांगुरचा हुं०, आयां प्रभुजीने पास रे  
हुं० ॥ ६ ॥ हुं० ॥ मुज लंबधै मोदक मिळ्या हुं०, कहीने तुम्हे  
किरपाल रे हुं० ॥ लंबध नही वळ ताहरी हुं०, श्रीपति लंबधि  
निधान रे हुं० ॥ ७ ॥ हुं० ॥ एलेवा जुगतो नही हुं०, ज्याळिया परठ-

न काज रे हूं० ॥ इंट निवा हे जायने हूं० चूरे करम समाज रे  
हूं० ॥ ८ ॥ टं०॥ आंणी चढती जावना हूं०, पांभ्यो केवल नाण रे  
हूं० ॥ टंदण रुषि सुगते गया हूं०, कहे जिनहर्ष सुजाण रे हूं०  
॥ ९ ॥ टं० ॥ इति टंदण रुषि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धनारुषी सिंहाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन,  
मनमै तो मांणी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना,  
धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो मममो रे किम परभावसुं  
॥ २ ॥ दस दिस्ती दीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनु  
मति देतां रे जीज वहे नहीं ॥ ३ ॥ बचासै नारी हो धन्ना,  
अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥  
बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति चाले  
रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो० ॥  
कोम बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, वय  
पिण जांणो मो० ॥ जोगवि लेण्यो रे जोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत  
अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नहीं ठे रे साधु क  
हावणो ॥ ८ ॥ घर ९ जिका हो धन्ना, गुरुतणी शिका मो० ॥ कहाणी  
रे रहणी नहीं ठे सारखी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आ  
गम जणिये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुकर जोग ठे ॥ १० ॥  
वनवासै रहणा हो धन्ना, परीसह सहणो मो० ॥ कोमल  
केसां रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जारुयो हे अम्मा,  
जूठ न दारुयो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥  
सुख अजिजाणी हे अम्मा, जूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग  
जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नहीं परमार  
शि. मोरी अम्मा, बीर बखाण्यो परखदा सहु सुण्यो ॥ १४ ॥

( ३०३ )

मैं इस जाण्यो हें अम्मा, वीर बखाण्यो मोरी अम्मा, ए धन जो-  
वन आयु धिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजे  
मोरी अम्मा, जो खिश्त जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अन-  
मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो  
रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ ठठर पारयो हे अम्मा, विगय निवा-  
रण मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो सुरमर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं-  
जम पावे हे अम्मा, दूषण टाळे मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ  
रुना ज्ञायै ॥ १९ ॥ संजम पाढ्यो हे अम्मा, नव पखवाने मोरी  
अम्मा, मास संघारे सरबारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना  
शुवि सिन्हाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिन्हाय लिख्यते ॥

देव दाखव तीर्थकर गणधर, हरि हर नरवर सवला ॥ करम  
तपो वस सुख डुख पाया, सबल हुआ महा निबला रे प्राणी, कर्म  
समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिव  
स रह्या झूवा ॥ वीरने बारे वरस डुख बीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूलै  
रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सदस सुत मारया एकण दिन, जोष-  
जुवान नर जैसा ॥ सगर दुठ महा पूत्रनो डखियो, कर्मतखा फल  
एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सदस देसारी साहिब, चक्री  
सनतकुमार ॥ सोले रोग तरीरमे ऊपना, कर्म कीयो तनु ठार रे  
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म द' ल किया हरचंदने, वेची सुतारा रांपी ॥  
बारे वरस लग मध्य आण्यो, नीचतयो घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥  
॥ ५ ॥ दिवाइन राजी बेटी, चावी चंदनबाला ॥ चौपद ज्यूं  
चहुटामे वेची, करम एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संजूम नामे  
आठमो चक्री, कर्म मार नाख्यो ॥ सोले हज्र जह्र उजा देखे,  
पिण किराही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे



बारमो बकी, कर्म कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो जविप्राणी,  
 कर्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ उपन्न कोरु जा  
 दवरो लाडिव, कृष्ण महाबल जाणी ॥ अटवी मांदि मूंड एकलमो,  
 विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांशुव पांच महा  
 जूजारा, हारी डोपदा नारी ॥ बारे बरस लग बन रुवनिया, ज  
 मिया जेम जिल्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ बीस जुजा दस  
 मस्तक हुंता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलमै जग सहु नर जीत्या,  
 ते पिण कर्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम  
 महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म प्रमाणे सुख दुख पांण्या,  
 वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी  
 श्रेष्ठिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥  
 करमसुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ सत्पि लोमणी डौ  
 पदि कडिये, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी,  
 शूरव कर्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आज्ञानगरीनो जे  
 स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांदि कीधो पंखां कूकनो, कर्म नाख्यो  
 ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, क  
 रता पुरुष कदावै ॥ अहनि स महिल मसांणमे वासो, जिहा जो  
 जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी,  
 रात दिवस रवे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये  
 घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंन्या नर कर्म,  
 प्राज्या ते पिण साजा ॥ रुद्धिहरण कर जोमीने विनवै, नमो २  
 कर्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म सिंहाय सं० ॥

॥ अथ सात विसनकी सिंहाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुख तेहनो सुविचार वि  
 वेकी ॥ सात नरकना रे जाइ सातेई, आपै इस्क अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन पर्यायकां, पन्ध्र पांच  
 प्रसिद्ध विवेकी ॥ नखराजा पिण इण विसने पण्यो, खोइ सङ्ग रा  
 जरिइ वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस ज्ञकण अवगुण घणा, करै  
 पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवतो, नरक गइ  
 निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पान विसन  
 तली, चित धरी बलि चाह वि० ॥ क्षीपायण रिषि दहव्यो जा  
 वदे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चौथे विसने वे  
 स्थाधर वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कथवज्रादिकनो गयो  
 कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आदेने  
 कुविसन साचवै, प्राणी इणिये प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रे  
 णिक नृप गयो पहली नरक मजार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ षडे  
 चोरीने विसने करी, जीव लहे डक जोर वि० ॥ मुंजदेव रा  
 जायें मारियो, चावो हुंरक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय  
 संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो  
 रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥  
 इम जांणीने ज्ञव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण  
 जव परजव आपांद अतिघणा, कहे भ्रमसी सुखकार ॥ वि० ॥  
 ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति सात विसनकी सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिंहाय लिख्यते ॥

वीर बांदी बलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निग्रंथा॥राति वन  
 मांदि कासलग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखा  
 णी राणी चेलणा जी, सतिथ सिरोमणि जाण ॥ भेम्भराजानी  
 साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमाण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत  
 ङंगर सबसो पने जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमे  
 वस्यो जी ॥ सौमि बाहर रह्यो हाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ जबक जागी

कहे चेलणा जी, किम करतो दुस्यै तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण  
 वस्यो जो ॥ श्रेणिक पळ्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेजर परो  
 जालज्यो जी, श्रेणिक दिव्यो रे आदेस ॥ जगवंत सांतो जाजियो  
 जो, चमकियो चित्त तरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां अकां  
 जी, पैसतां नगर मजार ॥ धुआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे  
 अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, अत  
 लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो जवत  
 णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिंहाय ॥

॥ जूखो मनजमरा कांड जमै, जमियो दिवस ते रात ॥  
 मायारो लोत्री प्राणियो, जमियो परमल जात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुं  
 ज काचो काया कारमी, जेदना करो रे जतन ॥ विषसतां वार लागे  
 नही, निरमल राखो रे मन ॥ २ ॥ जू० ॥ केदना ठोरु केदना  
 वाठरु, केदना माय नै बाप ॥ ठ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य  
 नै पाप ॥ ३ ॥ जू० ॥ आस्या तो रूंगर जेवनी, मरवो पगला रे  
 हेठ ॥ धन संची संच कांड करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ जू०  
 ॥ लखपति बत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी  
 गोखै बैठता, जए जल बल राख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जवसायरजल  
 डुख जरयो, तिरबो ठे रे जेह ॥ वीचमें बीह सबलो अठै, करमें  
 वाय ने मेह ॥ ६ ॥ जू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो  
 पहिले रे पार ॥ आगल नहि दट वांणियो ॥ संबल लेज्यो रे लार  
 ॥ ७ ॥ जू० ॥ मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो इतो न थाय ॥  
 वस्त्र विना जाय पोदवो, लखपति लाकरु माय ॥ ८ ॥ जू० ॥ मह  
 मंद कहे वस्त बोरीयै, जे कुठ आवे रे साथ ॥ अपणो लाज उवा  
 रियै, लेखो सादिस हाथ ॥ जू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिन्हाय ॥

॥ राजंतणा अति खोजिया, जरत बाहूबल जूजे रे ॥ मूठ  
उपासी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूजे रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गजध  
की ऊतरो, ब्राह्मी सुंवरी जालै रे ॥ रुषज जिनेसर मोकली, बा  
हूबलने पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढयां केवल न होई रे ॥  
वी० ॥ २ ॥ लोच करी चरित्र लियो, बलि आयो अजिमांनो रे  
॥ लघु बांधव बांदू नही, काठसग रह्यो शुज ध्यानो रे ॥ ३ ॥  
वी० ॥ वरस दिवस काठसग रह्यो, बेलनियां वींटाणो रे ॥ पंखी,  
माला मोनिबा, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी व  
चन सुण्या इला, चमक्यो चित्त मऊारो रे ॥ हय गय रथ में प  
रिहरया, पिण नवि मूक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन  
वालियो, मूक्यो निज अजिमांनो रे ॥ पांव उपासी बांदिवा, ऊय  
नो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंचतो केवली परखदा, बाढ  
बल रुषिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर बंदे  
पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिन्हाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाढ्या गोचरी, तमके दाजे सीसो जी ॥  
पाय डवराया रे वेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर०  
१ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्युं, ऊजो गोखने हेगो  
जी ॥ खरै डुपहरै रे दीगो एकलो, मोही माननी मीगो जी ॥ २  
॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नयणो वेधियो, रुषि अंज्यो तिण वारो  
जी ॥ दासीने कदे जाय ऊतावली, उरिषि तेनी आणो जी ॥  
३ ॥ अ० पावन कीजे रुषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी  
॥ नवजोवन रस काया कांड दहो, सफल करो अवतरो जी ॥  
४ ॥ अ० ॥ चंझावदनी रे चारित चूक्यो, सुख विलसै दिन रातो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगतै, तब दीगो निज मातो जी ॥  
 ए ॥ अ० अरणक३ करती माय किये, गलियै२ मज्जरो जी ॥ क  
 हि किये दीगो रे माहरो अरणको, पूछै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥  
 अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिया  
 रो जी ॥ धिग२ पापी रे माहरो जीवने, एह में अकारज धारयो  
 जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिखा उपरै, अरणक अणस  
 ण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरु, मन वंछित फल  
 सीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिंहाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिंहाय लिख्यते ॥

नाम इलापुत्र जांशियै, धनदत्तसेवनो पूत ॥ नटवी देखी रे मो  
 हियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न बूटे रे प्राशिया, पूरब नेह  
 विकार ॥ निज कुल बंदी रे नट थयो, नाखी सरम लिंगार ॥  
 ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, छंयो वंस विवेक ॥ तिहां  
 राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ खोच  
 पग पहरी रे पावनी, बस चढयो गजगेर ॥ निरगारा ऊपर नाचतौ,  
 खेलै नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर  
 साद ॥ पायतल घूँघर घमघमें, गाजै अंदर नाच ॥ क० ॥ ५ ॥  
 तिहां राय चिते रे राजियो, लुखे नटवी रे साध ॥ जो पमै नट  
 वी रे नाचतो, तो नटवी मुऊ हथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दान न आयै  
 रे झूपती, नट जांशे नृप वात ॥ हूं धन बंटू रे रायनो, राय बंटै  
 मुऊ वात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथो मुनिवर पेखियौ, धन३ साधु  
 नीराग ॥ धिग२ विषया रे जीवना, मन आययो वैराग ॥ क० ॥  
 ॥ ८ ॥ संबरजावे रे केवली, ततखिण कर्म खपाय ॥ केवलि मदि  
 मा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिन्नाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुषा देशन वै  
रागीचौ जी, ए संसार असार रे मायनी ॥ अनुमति द्यो मुऊ आज ॥  
संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वठ तूं केवो ज़ोव  
व्यौ रे, अेषिक तात नरेस ॥ कांइ ऊणौ किण वूहव्यो रे, हूं नवि  
हुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरबाहिस जार रे  
जाया ॥ हूं न० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुख्यो जी, सहिया डस्क  
अणंत ॥ सासोअलें जव पूरीया जी, तेह न जाणू अंत हे ॥  
॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ दिवणा तूं बालक अठे जो, जोवन ज़रघों  
रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुख अपार रे  
जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, डस्क न  
सहणौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मै सुणियो कांन हे  
मायनी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वठ कांठखीवै जीमणो जी ॥ अरस विरस  
आहार ॥ जुंइ पावा नित हीमणो जी, जाणसि तुऊ कुमार रे जाया ॥  
हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत ज़ण्यो जी, धर्म डुहेखो होय ॥  
जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायनी ॥  
॥ अ० ॥ ७ ॥ सृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो  
बनजरे ठोरु नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥  
॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजनी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि  
सुंदाखी वेहनी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥  
॥ ९ ॥ स्वास्थनो सहू ए सगो जी, अरख पखे सहू कोय ॥ विषय  
विषम महुरा कहा जी, किम जोगविये सोय हे मायनी ॥ अ० ॥  
१० ॥ खमिष माठ पसाय करी जी, मै दीधुं तुऊ डस्क ॥ दिठ आवेस  
जिम हूं सुखी जी, वीर चरणें व्युं दीस्क हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥  
तन फाटें खोयण जरे जी, डख न सहणा जाइ ॥ वठ सुखी हुयो

તિમ કરો જી, મેં દીધો આદેસ રે જાયા ॥ સંયમ વિ० ॥ ૧૨ ॥  
 મણિ માંણક મોતી તજ્યા જી, તોજ્યો નવસર દાર ॥ મુંગનયણી  
 આઠે રમે જી, દિવ અહ્મ કવણ આધાર નરેસર ॥ સંયમ ० ॥ ૧૩ ॥  
 કુમર જણે સુકુલી ધિયા જી, બહુ ડાલ એ સંસાર ॥ નેહ તુમારો  
 જાણિયો જી, જો લ્યો સંયમજાર રે નારી ॥ સંયમ ૦ ॥ ૧૪ ॥ રથ  
 સિવિકા તબ સર્જી કરી જી, કુંવર ધારણી માફ ॥ શ્રેણિકરાય ઝ  
 ઢવ કરે જી, ચારિત્ર લ્યો રિષિરાય રે જાયા ॥ સં ૦ ॥ ૧૫ ॥ ફમ  
 જાણી વૈરાગિયો જી, વરજે જે નર નારિ ॥ કરજોમી પૂનો જણે જી,  
 તે તરસ્યે સંસાર દે મા ૦ ॥ અ ૦ ॥ ૧૬ ॥ ઇતિ મેઘકુમાર સિં ૦ ॥

॥ અથ અસિઝાઈ નિર્ણય સિઝાય ॥

શ્રાવણ કાતી મિગસર માસ, પહિલી પરુવા ત્રીન વિમાસ ॥  
 ચૌથી પરુવા વદિ વૈસાલ, ચ્યાર પુદર અસિઝાઈ જાલ ॥ ૧ ॥ જાં  
 લગિ હોલી ઝમે વાર, ધુંવર પરતી હુવે જિવાર ॥ જાં પરચક્રનો  
 જય નવિ જાય, તાં લગ અસિઝાઈ કહિવાય ॥ ૨ ॥ ધૂલવૃષ્ટિ ને  
 કેસ પાચાંણ, વરસે તાં લગ અસિઝાઈ જાણ ॥ ઝૂઝે મલ્લ માંદોમાંદિ  
 જાંમ, તાં લગ અસિઝાઈ તિણ ઝાંમ ॥ ૩ ॥ જૂપતિ પરજવ પોદતો  
 હોય, જાં લગ પાટ ન બૈસૈ કોઈ ॥ તાં લગ બોલી ઠૈ અસિઝાઈ, સ  
 હુકો સરદહજ્યો મન માંદિ ॥ ૪ ॥ ઝલકાપાત અને દિગદાહ, એક  
 પોદર અસિઝાઈ થાય ॥ નિવલ મેહ તિમ જાંણો સહી, આઠ પહોર  
 સબલ જલ કહી ॥ ૫ ॥ ચૈત્ર સુદિ પાંચમ દિનચકી, પમિવા લગ  
 અસિઝાઈ વકી ॥ પમિવા બીજ તીજ ચાંદણી, સમીતાંજ અસિઝાઈ  
 ગિણો ॥ ૬ ॥ આશ નક્ત્ર ન લાગે જાંમ, ગાજ વીજ અસિઝાઈ તામ ॥  
 ગાજ વીજ જો હુવે અકાલ, અસિઝાઈ બે પુદર સંજાલ ॥ ૭ ॥ ચંદ્રમદ્દણ  
 અસિઝાઈ જણી, બારહ પોદર ઝલકી ગિણી ॥ જઘન્ય પ્રકારે આઠ વિ  
 ચાર, સૂર્યમદ્દણ પોદર જઘન્યે બાર ॥ ૮ ॥ સોલ પ્રદર ઝલકી કહી,

सुगुरु मुखे नविषण सरदही ॥ नगर प्रधानं मरे जो कोइ,  
 आठ पुहर असिजाई होय ॥ ए ॥ वसतीथकी सातां घर मांदि, नर  
 विहमै अहोरति असिजाई ॥ पुरुष पञ्चो होय मृतकअनाथ, तां  
 असिजाय कही सो दाय ॥ १० ॥ पुत्रतथै प्रसवै दिन सात, बेटी  
 आठ दिवस विहात ॥ सो कर मांदि कही असिजाई, नारी शतु दिन  
 तीन कहाइ ॥ ११ ॥ इमो छूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पमै तिन  
 गाइ ॥ असिजाइ सो कर मांदि, त्रिएह पोहर के ऊपर नहो ॥ १२ ॥  
 असाढै चौमासै दिने, पत्तिकमणा गायंथी गिणै ॥ बार पोहर  
 असिजाई कही, काती चौमासै इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर  
 असिजाई बै बहु, गीतारथ गुरु जाणै सहू ॥ सांजलि ए में कही  
 संखेवि, हरखै पय प्रज्जु कीजै देवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतहर जेइ;  
 च्यार मावठबीजे तेइ ॥ सत्तम वर्ग बीअं अकरै, तब कबि नांम  
 कहियो इण परै ॥ १५ ॥ इति असिजाइ सिजाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिजाय लिख्यते ॥

जि शासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व  
 ए निरता करो ॥ मिथ्यानत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सहि पालों  
 रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित  
 शुद्ध पालौ, टालो दोष दया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत,  
 च्यार सिक्काव्रत घरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो नवि  
 यण मनरली ॥ दाखविण गुण परइ केरा, दोष सम काढौ बली ॥  
 ॥ २ ॥ मम काढो रे लोत्ती नर कूनौ करौ, जांणी सावध रे अ  
 नक बावीसे परिहरौ ॥ वन पीपल रे पिलखण नें कटुंबरो,  
 कंवरफल रे रखे तुमें नकण करो ॥ ३ ॥ उज्जालो ॥ रखे  
 तुमें नकण करौ मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम  
 करहा उंनि परहा, दोष मूल साटी धणो ॥ परिहरो सज्जन र



प्रणीजोजन, प्रथम दुरगति बारणौ ॥ मम करौ ज्यारू अति अ  
 सूरौ, रविउदय विन पारणौ ॥ ४ ॥ अथाणौ रे अनंतकाय सब  
 नाम ए, काचागोरस रे मांदि कगोल न जिमिये ॥ एह वैगण  
 रे तुड फला सवि ठाम ए, आपणपूं रे व्रत लीधो नविखं  
 ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंए व्रत नियम लेइ, बेइ फल  
 व्रत जंगनौ ॥ अज्ञात फल बहुबीज जोजन, चलि रस दोष  
 जेहनो ॥ संबर आणी अजक ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥  
 गुरु वयण विगैं वली पूबयौ, अनंतकाय बचीस ए ॥ ६ ॥  
 अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु जकण रे पातिक बोड्या  
 बै बहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आहुं बली ॥ वजचूरण रे कंद  
 बहू कुंवलीफली ॥ ७ ॥ तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखै, चाखै  
 चतुर नर आविलो ॥ रतालू पिमालू श्रेग ओहर, सतावरी लसण  
 कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रिंगण विरहाली टुकवजुलौ, पछयंक  
 सूरण बाल वीली मौष नीली सांजलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे  
 कूपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी  
 रे जमरवृक्तनी बालमी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलमी ॥ ९ ॥  
 वेलमी तानु ताजा खिलोम ने खरसुआ, जूय जूंफोम ठा  
 कार जाणौ नील फल सेवे जूआ ॥ बचोस बोल प्रसिद्ध बोड्या  
 लहमीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी  
 ते सवि सुख लहे ॥ २० ॥ इति बावीस अजक तिऊय सं० ॥

॥ अथ गजसुकमाल सिधाय ॥

॥ संवेगरसमे ज़ीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोह  
 टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धनश गजसुक  
 माल, तेहने करुं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रजू  
 प्राप्त संयम आदर्यौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया बसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ ३ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा  
 यवा अलजयो, परुषैन दिन दस बीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो,  
 पिण दिन जावे रे तो ठेह बीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय  
 काउसग रह्यो, तिण सांछि प्रजुने पूठ ॥ मुनिवर अवर इम चिं  
 त्तवै, एहनै साची रै ठे मुंह मूठ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुज सुता विन  
 अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाख ॥ सिगरी रचि सिर ऊपरै,  
 चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ  
 धिक बधै, तिम बधै मन परिणांम ॥ चवदमें गुणगार्यो चढ्यो, मु  
 निवर पांमी रे केवलग्यान ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जामणने थई,  
 ते रयण वरस हजार ॥ बांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे  
 आंणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूठतां प्रजु मांमी करी, रातिनी बी  
 तग वात ॥ हरि देखी हियसो फूटसी, तेणें कीधो रे रुबिजीनो  
 थात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अविचलरा  
 ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रणचंद्र सिन्धाय ॥

॥ राज बंरी रलियामणो रे, जांणी अथिर संसार ॥ बैरागै  
 मन बालियो, कांड लीधो संजम जार ॥ प्रणचंद प्रणमूं तुमारा  
 पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काउसग रह्यो  
 रे, पग ऊपर पग छाय ॥ बांह बेउं उंची करी, सूरज सांमी इष्टी  
 खगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, बीरजीने वंदन  
 जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध स्वमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डरमु  
 ख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां  
 मियो, जीव पळ्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूढियो रे,  
 एहनी सी गति आय ॥ जगवंत कहे द्विषां मरे तो, सातमी नर-  
 के जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंतै पूढियो रे, सरबारअसिद्धि वि

मानं ॥ वाजी देवनी डुंडुनी, मुनि पांम्पा केवलज्ञान ॥ प्र० ॥  
॥ ६ ॥ प्रणचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमदावारना शिष्य ॥ रिद्ध  
रष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उत्पत्ति सिद्धाय ॥

॥ उत्पत्त जोय जीव आपणी, मनमांदि विमास ॥ गरजा  
वासे जीवमो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नात्नी  
तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नामी ठै  
दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥  
आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर  
श्रवे तिण मांसणी, रुतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी,  
तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित  
दुरगंध ॥ तिण आनक तूं ऊपनो, दिव हूत अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥  
नामी वांसतणी जरिये घणी, रूघाल ॥ ताती छोट सलाकतैं, जाले  
ततकाल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, ठै नव लख जीव  
॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी  
मिळ्यां, पांचेंडी जेह ॥ तेहतणी संख्या नदी, तजो कारज एह ॥  
उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टो वार ॥ जीव ज  
घन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य  
तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ बार वरसनी धिति तिहां, उत्कृष्टी  
जाण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरजे कोइ जीवमो, जंपै जग  
दीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥  
महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां  
पठै, आथे पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूळै नर वतै,  
तिम वामे नारि ॥ बीच नपुंसक जाणिये, जिनवचन विचार ॥  
१३ ॥ उ० ॥ दिव सामान्यपणै इहां, आयो गरजावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ ३० ॥ १४ ॥ आठ व  
 रस तिर्यच रहे, उत्कृष्टे काल ॥ गरजावासै जोगव्या, इम बहु  
 जंजास ॥ ३० ॥ १५ ॥ कार्मण काये कर लियो, पहिलो आहार  
 ॥ शुक्र अने स्त्रोषिततणो, नही जूढ खगार ॥ ३० ॥ १६ ॥ पर-  
 जापत पूरी नही, तिहां विसवावीस ॥ तिण आहारै तूं थयो, उदा-  
 रिक मीस ॥ ३० ॥ १७ ॥ पवन अठै उदरै तिको, उपजायै अंग  
 ॥ अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ ३० ॥ कठन  
 पणै पृथ्वी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचजूत सरीरमें, इम करै प्र-  
 कास ॥ १९ ॥ ३० ॥ वारै महु रत तां पठै, विलसै नर नारि ॥ गर-  
 जतणी उतपति तिहां, नही अवर प्रकार ॥ २० ॥ ३० ॥ कलख हु-  
 वै दिन सातमें, अरबुद दिन सात ॥ अरबुदणी पेसी बचै, घन मांस  
 कहात ॥ २१ ॥ ३० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अमृतालीस टांक  
 ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ ३० ॥ सु-  
 थिर मास बीजे हुवै, द्वि तीजे मास ॥ कर्मतणै वसि ऊपजै, मा-  
 ता मन आस ॥ २३ ॥ ३० ॥ चौथै मासै मातना, प्रणमै सहु अं-  
 ग ॥ हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ ३० ॥ पि-  
 च रुधिर ठेके पडै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे-  
 सी सय पंच ॥ २५ ॥ ३० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोमि  
 ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोमि ॥ २६ ॥ ३० ॥ आठमें मा-  
 सें नीपनो, इम सकल सरीर ॥ उंघै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥  
 ॥ २७ ॥ ३० ॥ सोषित शुक्र सलेषमा, लघु ने वरुनीत ॥  
 चात पित्त कफ गरज्जथी, आयै नर नीत ॥ २८ ॥ ३० ॥ मात-  
 तणी सूटि लगै, बालकनो नाख ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल  
 ॥ ३० ॥ २९ ॥ जननी छये आहारते, जाय नामोनाम ॥ रोम इंदी नख  
 चस वधे, तिम मीजी ने हाथ ॥ ३० ॥ ३० ॥ सबहू अंगे ऊख

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गरजै सुविचार ॥  
 ॥ उ० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने, थाये ज्ञान विजं  
 ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥ उ० ॥ ३२ ॥  
 कटक करे वैक्रियपणें, जूजी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी  
 करी, मरी सुर पिण थाय ॥ उ० ॥ ३३ ॥ ऊँचै मुख गोमा  
 हिये, सहितो बहु पीर ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुठी  
 जींच ॥ उ० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिके, ऊपजै आ  
 घान ॥ अथवा विहुं नारी मिढ्यां, कह्यो गरजविधान ॥ उ० ॥  
 ॥ ३५ ॥ कोइ उचम चितवै, देखी डलावास ॥ पुन्य करी तिम  
 नीकलूं, नाउं गरजावास ॥ उ० ॥ ३६ ॥ ऊँठ कोमि चांपे सुई, कोइ  
 समंकाल ॥ तिणथी गरजै अठ गुणौ, सहे वेदन बाल ॥ उ० ॥  
 ॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती  
 ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ उ० ॥ ३८ ॥ गरजथकी डस लख  
 गुणो, जांमैं जिण वार ॥ जन्म थयां डस बीसौ, धिग्ग् मोह वि  
 कार ॥ उ० ॥ ३९ ॥ ऊपज्यो अशुचिपणो जिहां, मल मूत्र कलेस ॥  
 पिंरु अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ उ० ॥ ४० ॥ तु  
 रंत रुदन करतो थकी, जांमैं जिण वार ॥ मात पयोधर मुख ठवै;  
 पीयै दूध तिवार ॥ उ० ॥ ४१ ॥ दिन१ दीसे दीपतो, करै रंग अपा  
 र ॥ लारु कोरु माता पिता, पूरै सुविचार ॥ उ० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र  
 इग्यारे नारिं, नव नरने जाण ॥ रात दिवस बहिता रहै, चैतो चतुर  
 सुजाण ॥ ४३ ॥ उ० ॥ सात धातु साते त्वचा, तै सातसै न  
 नि ॥ नवसे नामी पिंरुमें, तिम तीनसे हार ॥ ४४ ॥ उ० ॥ संधि  
 एरुसो साठ ठै, सतोचर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै,  
 ढांकी ठै चरम ॥ उ० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाब  
 सरीष ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ उ० ॥

॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अठै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्ती  
स सलेखमां, जायै जंगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाणयकी  
यदा, उठे अधिको थाय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजें काय ॥  
॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खानै  
पान जूषण जला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजै  
दसके जणयो, विद्यां विविध प्रकार ॥ तीजें दसकै तेहने, जाग्यो  
काम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण आनक तूं ऊपनो, तिणमें  
मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोरु ऊपाय ॥ ५१ ॥  
उ० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें संसनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा,  
परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ ठठे दसके प्राणियो, बले परवसं  
थाय ॥ जरा आई जौवन गयो, तृष्णा तौही न जाय ॥ ५३ ॥  
उ० ॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणो तेह ॥ बल जागो बूढो  
अयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके मोसलो,  
खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावै सिर धुषौ, करे फोगट वात ॥  
॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ सावै  
वचन बहुआंतणो, दिन फुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपज्यो  
खूंखूं करे, सडू गाली देह ॥ हाल हुकम हाले नही, दीयो परिजन  
बेह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुरु मिले, पै मुंहने लाळ ॥  
बेटा बेटी ने वडू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टा  
ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो  
जिम जव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाखे निर  
मल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥  
उ० ॥ कोरि रतन कवनी सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखै  
पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया  
कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जौवन कारमो, साचो धरम

संज्ञार ॥ ६२ ॥ उ० ॥ चवदै राज प्रमाण ए, ठै लोक महंत ॥  
 जनम मरण कर फरसियो, ते बार अणंत ॥ ६३ ॥ उ० ॥ आप  
 सवारधिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै,  
 सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां  
 लग सबल सरौर, धरम करो जीव तां लगै, होय साहसधीर ॥  
 ॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज देस लह्यो हिवै, लाघो गुरु संयोग ॥  
 अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ उ० ॥ श्रीनमि  
 रायतणी परै, चेतो चितमांदि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ  
 कियारो नांदि ॥ ६७ ॥ उ० ॥ जोग संयोग तजी सहु, अथा जे  
 अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ० ॥  
 सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति  
 वधे, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ उ० ॥ तंडुलबेयाली अवे, एह  
 नो अधिकार ॥ तिणथी ऊद्धरनै कह्यो, नही जूठ खिगार ॥ ७० ॥  
 उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांजलि लिये संजमज्ञार ए,  
 परि सिंह केरा सदा पावै नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख  
 सकल जोगवि ते लहे जव पार ए, श्रीजिनदर्ष सुसीत रंगै इम  
 कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ उ० ॥ इति उत्तपति इकहचरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिष्ठा लिख्यतै ॥

हे आत्मा ! हे चेतन ! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें  
 प्रवृत्ति, यह रसगृहीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोष घनी  
 मात्र कालमें तूं मत चितवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें,  
 कज्जी तूं मिश्रमोहनीमें, कज्जी तूं कामरागमें, कज्जी तो स्ने  
 हराममें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कज्जी तूं कुयुक्तमें, कज्जी तूं कु  
 देवमें, कज्जी तूं कुधर्ममें, कज्जी ज्ञान विराधनामें, कज्जी दर्शन  
 विराधनामें, कज्जी चारित्रविराधनामें, कज्जी मनोदममें, कज्जी व

चनदंरुमें, कज्जी कायदंरुमें, कज्जी हास्यमें, कज्जी रतिमें, कज्जी  
 अरतिमें, कज्जी ज्ञयमें, कज्जी सोकमें, कज्जी डुंगामें, कज्जी  
 कृष्णलेस्यामें, कज्जी नीललेस्यामें, कज्जी कापोतलेस्यामें, कज्जी तुं  
 रुद्धिगारबमें, कज्जी तुं रसगारबमें, कज्जी तुं सातागारबमें, कज्जी तुं मा  
 यासल्यमें, कज्जी तुं नियाणासल्यमें, कज्जी तुं मिथ्यादर्शनसल्यमें,  
 कज्जी तेरे तेरेकाठिया आय फिरता है, कज्जी तेरे बाहिर कर अ  
 ठारे पापस्थानक आय फिरता है, रे तूं आत्मा महा डुष्टो, महा  
 डुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुत्रिया, अरे तूं  
 हीणदृष्टी, अरे तूं अयोद्धा कामका करणहार, रे तूं डुष्ट पापिष्ठ जीव,  
 प्रायें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामान, अनंतानु  
 बंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोजरी चोकरो, विचारा तेरे स्वपी  
 नही, गुणगणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा  
 दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नही, दरियाव  
 जेसा कल्लोल तेरे उबल रहा है, तें जो धर्मक्रिया करता है सो शून्य  
 मनसें करता है, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें  
 करी जो क्रिया सो राख पर लीपये जेसा है, अरे चेतन ! सोगन  
 नही लेवे सो पापी, ठर लेकर जगि सो महापापी, तैं अनंतकाय,  
 अजक, शीलव्रत, जरदा, ज्ञांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन  
 लेकर खोटा किया, तेरा कहां बूटकबारा होगा, रे चेतन ! तैं पुज्जले  
 वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो है, मेरे पारस पत्थर,  
 मेरे नवनिधान, मेरे रसकूपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अ  
 मृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, बादस्याह हो जाउं, राजा हो  
 जाउं, प्रधान हाकम सेनापती हो जाउं, किसी तरे धन उपार्जन  
 करूं, ये वाते तेरे हमेसां ऊपजै, दसमे गुणगणेवालेकेही लोजका  
 त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो कैसें सरे, है चेतन ! तूं मनमें विचारतो



हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुत्र  
 ल, अरे चेतन ! चौरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा,  
 संसारमें न किसीका तू है, नहि कोई तेरा है, रे चेतन ! तू  
 तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणो, केइ वखत पूत्र  
 पणो, केइ वखत पुत्रीपणो, किसी वखत स्त्रीपणो, जैसे ठगकी बेटी  
 ने अपणी मांसे पूढा-माताजी में जो पाप करतीहूँ सो कोण जो  
 गेगा ? मा बोली-बेटी, करेगा सो जोगेगा, तबनो उसने कहा थिक्  
 हे इस स्वारथिये संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म,  
 आर्यदेस, आर्यकुल, आवकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका  
 धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, उर पायकरके तेने ब्राह्मण जैसे क  
 जएकूं उरुणो चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसे तें चिंतामणि  
 रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ-  
 नंबरी कुगुरुठके उपदेससे चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म  
 आझाप्रमाण जो था सो तेने खो दिया, अब तेरा निस्तारा कैसे  
 होय, विष्टामें कमिपणो तें अनंती वार पेदा जया, मानरूपी गज  
 पर बाहुबल चढ़ा उर संजवलनमान था, उर बाह्मी सुंदरी बहिना  
 जैसी समझायेवाली थी जब समझै, उर तेरे सो ऐसा मान, अरे  
 चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तू जरतमाहाराजा जिणोके  
 केसीक राजशुद्धि सो केसीक जावना जावतां, धिःकार राज्यमें, धिः  
 कार पाठकूं, धिःकार चक्रवर्त्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोकूं,  
 धन्य श्रीतार्थिकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पालते हे, धन्य  
 जो सर्वविरती धर्म पालते हैं, धन्य जो दान देते हे, धन्य जो  
 सील पालते हैं, धन्य जो तपस्या करते हैं, धन्य जो जावना जाते  
 हैं, ऐसे जावना जावते जरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन  
 पायां, इस तरे रे जीव तू उनोही बराबरी मतकर, वहनो तेसव

सलाका पुरुष चौथै आरेका जीव तें पंचम कालका नरतर्हेत्र-  
 का कीना उनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जी-  
 ववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों  
 करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गि  
 राया; इग्नारमें गुणगणेशका जीव जुवनजानु केवलीजी, कमलप्र  
 ज्ञाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योक्तं गिगाय दिथा; तो तेरी तो  
 विसायतही क्या, आठ करम अद्यावनही प्रकृती हे प्रभु केसें जीता  
 जाय, मोहकर्म पीछे लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-  
 की फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आझामें रह सदागमसुं परि-  
 चय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीछी मार, जेसेंतें तिर  
 जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तोने गुप्ते गुप्ता,  
 बकायका पीयर, सात महाज्ञयका टालणहार, आठ मदका ज.प-  
 क, नवविध ब्रह्मचर्यकी वारुका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका  
 उजवाळक, इग्यारे अंगका ज्ञणणेवाला, बारे उपांगका ज्ञणणेवाला,  
 कुरकीसंबल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि  
 प्रभूकी आझा मुजब धर्म पालै, रे चेतन तुजै कब नदै आवेगा, रे  
 चेतन तेरे उदय कहासें आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ, धन्य देसब्र-  
 ती पाले जिके प्रभुजीकी आझा पाले, जिके प्रज्ञात उठ सामायक  
 करे, पन्निकमणो करे, देवदर्शन करै, प्रभुजीकी दादसांगी वाणी  
 सुणे, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिष्ठी  
 पोसा, संध्याकूं देवसी पन्निकमणा जिनाझा प्रमाणै ब्रह्मवश्यक करै,  
 सुजेजी कज्जी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा  
 हवाल होगा, बुरे परणामोसे बुरीही गती उदय आयगी, सा-  
 मायक मनसुद्धै करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पदण गुणना वां-  
 चनेकी खप कगे, जेसें नवसायर लीला तरो, सामायकवंतके यह

लक्षण है, उर तेरी सामायक तो निर्दा विकथारूप है, तुजें पढखे गुणनेकी लगन नही, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नहो किया. जो श्रुतज्ञानकी प्रक्ति करते है उनोको ज्ञान दर्शनको प्राप्ति होती है, केवलज्ञान उर केवलदर्शन पाता है वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका प्रचार होता है. दिवस प्रते दै कोई सुजाण सोना खंरी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतखो, सामायक कीधा तेतखो ॥ १ ॥ लेकिन् तूं इस जरोसे मत झूल, यह तेरी सामायक वो नही, वह सामायक आषांढ कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंदावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी है कांम काज घरका चितवै, निर्दा विकथा कर खिज रहै; आरत रौड्य्यांन मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण ऐसे है अपणा पराया सरषा गिणै, कंचन पत्थर समवन धरै, साचो थोमो आगम जणे, ते सामायक शुद्ध करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायाबुरा चाहता, अपणा जला चाहता, वो पराया बुरा या नही चाह्या वो तेनें अपणे आत्माकाही बुरा चाह्या, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रस्के, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे गती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा है, तूं अपणे आत्माका गुण विचारे तो अवेदी है, अफरसी है, अधाती है, अलेसी है, अविनासी है, तें दिलमें विचारता है यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन है, कोण तेरा सज्जन उर कोण तेरा दुस्मन है, आठ कर्मरूपिया सत्रु है जिनोको तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाल जस्म कर जिस्से तेरा गरज सरे, अहोहो में जव्य हूं अजव्यहूं अथवा डुरजव्यहूं, मेरे संसार पोते वढोत दिखता है, प्रायेतो में अजव्यही दिखताहूं पीठे तो ज्ञानीयोने जाव देखा सो सही, है रे जाइ तें तो एसी सामायक करता है, खुणे खाज मोमे

करनका, उंचतर्णा लेवे सरनका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सि-  
कारेगा जब लेखे लगेगा, उदा-आत्मनिद्या आपणी, ज्ञानसार मु-  
नि कीन; जो आत्मनिद्या करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥  
इति आत्मनिद्या संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववन्दनभाष्यादिकसं मंदिर

जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी-विधि श्रीमहा-

निसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकण्ड्यसूत्रमें ऐसा लिखा हे ठती शक्ति साधु जिनमंदिर  
में जाके दर्शन नही करे तो तेलेका मंदिर उर आवककूं बेलेका  
मंदिर ॥ प्रथम आवक दो चार घन्टी रात रहे पिठली तब झुठके  
नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या  
मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मज्ञानरणासैं दिलको  
सावचेत करे, पीठे मल मूत्रकी बाधाकूं दूर कर अंग शुचि करके  
सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदोरासरकी पूजा करे,  
पीठे यथाशक्ति अन्नावस्त्र आज्ञापण पहरके घोना हाथी रथ पाल-  
खी सिंघाई नोकर चाकर ज्ञाई बंधु परिवार सभेत पूजाके लायक  
फल फूल प्रमुख संगमे लेकर ज्ञव्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता  
हुआ जिनशासनकी प्रज्ञावना करता थका जिनमंदिरमें जावे.  
जिन मंदिरमें प्रवेश करके झोपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार  
१० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ वेर निस्तही कह्योका, जिसमें १ निस्तही  
जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीठे संसार घर संबंधी कुञ्जनी  
कार्य विचारणा न करे १: दूसरी निस्तही प्रवक्षणा तीन दियां पीठे  
कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार शंजाल  
रस्कीथी सोजी ठोने ३; (इसमें इव्यपूजा करणी मोकली रही )

तीसरी निस्सही कहे पीठे निकेवल जावपूजाही करे, लेकिन् इयं पूजा नही करे. यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. १

दूसरा त्रिक—ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रभूके दक्षिणावर्त्तसे तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक—मूलनायकजीके बिंबको पंचाग मिलाके तीन वेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक—प्रभूकी अंग १ अग्र २ उर जाव ३ ऐसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे. अब निस्सही किये पीठे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसे लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, उर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंडियोकूं वसमे रखे, चलणे उर फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दुसरोंका सुणके चितमें व्याकुलता नहि रखे, कुंभजी देवकार्यकों ओमके, उर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथा दिक ४ हो सो विकथाको ओमे, जन्म उर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया जया खोटे कार्य कों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन अधिको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले. निस्सही किये पीठे जिनमंदिरमें धर्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोयेत वचन बोले, जिसने मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपणी आत्मासे किया हे उस जीवके जावसे निस्सही होय, उर जिसने दूषणका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र इयनिस्सही. होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरेके आठ तहका उज्जल वस्त्रसे मुखकोस बांधे, धूपादिकसे अंग अपणा शुद्ध करे, जावसे दुसरा निस्सही कहते मूलगुंजारमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, नि केवल जगवानकी स्तवनामें चित रखे. प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचासृतसे ज्ञान करावे, सुकमल अड्डा कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसे  
जगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसे  
विलेपन करे, शुभ्रवर्ण शुभ्रगंधयुक्त जीवादि रक्षित निर्दोस गुला-  
ब चंपा चंपेली केवला जाई जूई मोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे,  
अष्टांगधूप अग्रवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड उज्ज्वल  
अक्षतोसे प्रज्ञूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लाखे—दर्पण १ जडासण २  
वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ महायुग ५ कलश ६ स्वस्ति  
क ७ नंदावर्त ८ ऐसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंसे  
अष्टमंगलीकफूं पूजे, अडे केसर चंदनके हड्डा देवे, उत्तम नैवद्य  
चढावे, अडे खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती  
पर्यंत रायपसेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाग्निगमादि सिद्धांतोमें लिखे  
मुजब करे, पीठे अंतरंग जक्तिसे प्रज्ञूके सन्मुख नाटक करे, जेसे  
देवेंद दानवेंद नारद उवाइराजाकी राणी प्रजावती द्रौपदी रावण  
प्रमुख केइ जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टा-  
पदादि तीर्थोंपर तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया नेसें शंकारहित  
जन्मजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसे  
करीजावे सो अंगपूजा १ प्रज्ञूके सन्मुख नैवद्यादिक चढाथाजावे  
सो अग्रपूजा २ प्रज्ञूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक  
करे सो ज्ञावपूजा ३. अंगपूजा गर्जित बोधा त्रिक कहा. ४.

अब पांचमा त्रिक—तीन अवस्था विचारणी. पिंमस्थ १, पद  
स्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंमस्थ अवस्थाके तीन जेद हे. ज  
न्मावस्था १, राज्यावस्था २, अमणावस्था ३, उर केवलअवस्था  
कों विचारणा सो पदस्थअवस्था, निरंजन निराकार सिद्धावस्था  
सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब उठा त्रिक—तीन दिशा ओरके प्रज्ञूके सामने नजर रखे.

उर्द्ध १, अध २, तिरन्नी ३, दहणी ३४ वांइ पिठामी निजर नही करे. ६.

अब सातमा त्रिक—तीन वेर धरतो प्रमार्जके उस ठिकाणे चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक—वर्षादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्षाशुद्धि १, अक्षरोके अर्थपर आलंबन रखे तो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ७.

अब नवमा त्रिक—तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोकी अंगुली मिलाणी सो योगमुद्रा कहिजे, इस योगमुद्रासें शकस्तव कहे १, काउसग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसें हाथ रखणा सो मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीरराय कहे. ८.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १, मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चे इयाई इह संतो तउसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावंति केविसाहू तिविहेण तिदंरु विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीररायसे लेके आज्ञवमखंरु तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३. एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अग्निगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहने हैं. स चित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपणे जोगमें होय उसकूं दूर धरदेणा १, उर राजचिन्ह मुगट उत्र खरग चमर पाडुका अब्धितवस्तुउकाजी ओरुणा आज्ञूषण वगेरे पहरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनबिंबकूं देखतेही नमोभुवणबंधुणो एसें नमस्कार करणा ५. यह दुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बैठके ज गवंतकूं वांदे, स्त्री वांइ तरफ बैठके ज गवंतकूं वांदे.

( ३३१ )

अब चौथा द्वार तीत अग्निग्रहका. अग्निग्रह देववांदणामे कहा हे. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बैठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसे उपरांत बैठके देव वांदे २, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बैठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन जेद हे. एमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसे नमोब्रूयांसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते हे पांचवंदक समेत थुईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहीजे.

अब छठा द्वार पंचांग प्रणिपात करे, दो गोमे. दो हाथ, णर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासे लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसे प्रज्जुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सञ्चित्त १, द्रव २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाइण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंज ११ दिशि १२, न्हाण १३, जत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम संज्ञावे दिनमें जो चीज अण्णे अंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सञ्चित्त वस्तुका प्रमाण इस तरेसे करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका वेदन जेदन, तरकारी फल परबल जमीनी तोरी केला मतीरा ककनी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.



दूसरा द्रव्य प्रमाण, तहां धातु वस्तुकी शक्ती तेसे अपणी अंगली विगर जो चीज मुमें मालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिण तीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर दोणेसे द्रव्य जुदा गिणणेमे आता हे, जेसें गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी वेढवारोटी वाटी यह सब जुदा द्रव्य कह लाता हे. इस तरे ज्ञात दाख रोटी कट्टी मांनिया कट्ट तरकारी सब जात पापन खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकमेंसे सब द्रव्यमेसे जो चहिये सो रखे बाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नाम लेकर रखे सो एकही द्रव्य कहलावे, जेसेके मेवेकी खीचनी तो वह अनेक द्रव्यसे बणी नई हे तोजी एक द्रव्यही कहिये. इति द्रव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमाण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसे आवककूं चार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मस्कण ३ ऊर सहतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमाण रखे. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूती खमन मोजा अपनां इतना विराणा एसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रखे. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीना सुपारी लोंग इला यची गेटी ऊर बनी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणेकी चीज धारण प्रमाण रखे. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ छठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ बूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रखे, पोसाख १ में पधनी १ जामा २ कमरबंधा ३ धोती ४ इक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कहंजे. ऐसें स्त्रीके स्त्री मुजब. जो ऐसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपड़ा दिनमें मोकला रखे. पराया वस्त्र जूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अब सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवला केक की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रखे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ अथ गान्धी वहली इका बग्घी कोच पालखी घोडा हाथी जंत तामजांम म्याना इत्यादिक सब अलवाहन, पाणीमें चलायेवाले मोरपंखी वतक घुमदोम लचकार मगर पनसोइ पलवार वज्रानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रखे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी ढालका चमकेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ९.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूँका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोमे परमलम प्रमुख आंखोंमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाया सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०.

अथ ब्रह्मचर्य नियम. रातकों तथा दिनकों सूइ मेरेके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरव १ पश्चिम ३ दक्षिण ३ उत्तर ४  
अश्लेषा ५ नैऋतकूषा ६ वायव्यकूषा ७ ईशानकूषा ८ अधोदि  
शि ९ उर्ध्वदिशि १० यह दश दिशिका अपणो जाणो आणोका  
प्रमाण करे, चिह्न लिखणी आदमी जेजणा देशांतरकी चिह्नी  
वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम, तहां आज दिनमें स्नान २ वेर  
अथवा ४ वेर भोक्खा लेकिन पाणीका तोल रखे, घने प्रमुख  
का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा  
नही गिरावूं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा ज्ञात नियम. दिनमें ज्ञात २ सेर तथा २  
वेर जीमूंगा अथवा चार वेर उपरांत डुविहार या चोविहार  
धारणा प्रमाणे रखे. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका  
प्रमाण रखे तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल बारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम, जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सामने शुद्ध सपेद वस्त्र  
पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढ़ावे, पीठे अखंड  
तंडुल मुठे ३ थालमें रखे उस पर नारेख रुपया या मोहर  
धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पन्निक्कमे इच्छाका ० सम्य  
क्त सामाअरारोहणार्थ चेइयाई वंदावेद गुरु केह वंदावेमो चैत्यवं  
वण करे. बाधे पासे चावलांको साधियो करे श्रीफल धरे पीठे  
गुरु वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासक्षेप  
करे, वर्द्धमान स्तुतिसे देववंदन करवावे पीठे सत्तेर शुईमें नवकार १  
एकेकका काजसग करे पीठे शासनदेवता निमित्त चार लोगस्त  
का काजसग करे, पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ नवकार  
गुणें शक्रस्तव कहे नमोर्द्धत् ० कहे वमा स्तवन कहे पीठे जय

धीयराय कहे उति नेंदी विधिः । पीठे खमासमण देई श्रुतसा  
 मायक सम्यक्तसामायक आराधणार्थ काउसंग करावेह, गुरु कहे  
 करावेमो सम्यक्तसामायक आरौगनार्थ करेमिसाउसंग, ४ लोग  
 स्तका काउसंगा करे पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे १ वेर नव  
 कार गुणकर गुरूके पात तीन वेर सम्यक्तदंरुक उच्चरे गुरु पाठ  
 बोले उसकी मनने धारणा रखे, सूत्रं अद्वंजते तुह्माणं सम वे  
 मिहताउ पमेहमाभि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पजिइ  
 अन्नतिठिएवा अन्नतिठिदेवयाणिवा अन्नतीठिपरिग्गहिय अरिहंत  
 चेइयाणिवा वंदित्तएवा नंपंसित्तएवा पुर्विअणात्तिनएणं आलवित्त  
 एवा तेसिअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणप्पाउंवा  
 तेसिगंधमह्माइ पेसिउंवा नन्नठरायान्नियोगेणं गणान्नि योगेणं बला  
 न्नियोगेणं देवान्नियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउविहं तंजहां  
 दवउं खित्तउं काळउं जावउं तउदवउं दंसण दवाइं अदिगिच्च खित्तउं  
 जाव ज्जरहमझिमखंमे काळउं जावजीवाए जावउं जावठलेणं नठ  
 विज्जामि जावसन्निवाएणं नन्नविज्जामि जावकेशइ, उम्माइवलेणं  
 एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवमइ तावमे एसो दंसणाज्जिग्ग  
 हो अन्नठराज्जोगेणं सहस्तागारेणं महत्तरागारेणं सबसमादिवत्ति  
 यागारेणं वोसिरइ, पीठे उं ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एते अक्षर श्रीगुरूके  
 पाससें हाथमें लिखोके जिन प्रतिमाकूं वासहोप चढावे, नवकार  
 पढतोथको १ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वादे, पीठे श्रुतसामायक  
 धिरि करणार्थ सत्तःवीस उस्तास प्रमाणे एक लोगस्तका काउस  
 ग करे पीठे प्रगटलोगस्त कहे पीठे सम्यक्तरूप कछपवृक्ष पायके  
 अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावज्जीवं सुसा  
 हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतं, इयसम्मत्तंमएगहियं, १. पीठे गुरु  
 धर्मदेशना देवे, मिश्रगारुवरूप सम्यक्तेके पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवन्दन इतनी वेर कलंगा, इतना नवकार नित्य गुलूंगा, फल  
केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाउंगा, ज्ञान दर्शन चा  
रित्रके जक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वनिधिमें पा  
लूंगा, नित्य पञ्चखाण इस मुजब कळंगा, दिनकी नवकारसी आ  
दिक रात्रिकों डुविहार तिथिहार चउ विहार उर बावीस अजह  
बत्तोस अनंतकाय बिदल वगेरे डोडूंगा इत्यादिक अपणी धारणा  
प्रमाण सब वस्तुका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टीप  
सुणे अतीचार नहि लगे ऐसे उपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंरुक लि० ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणं स  
मीधेवेथूलगपाणाइवायं संकप्पितं निरवराहं पञ्चस्कामि जावज्जीवाए  
एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं तिविहेणं मणेशं वायाए काएणं  
नकरेमि नकारवेमि तस्सजंते पक्कमामि निदामि गरिहामि अ  
प्पाणं वोसिरामि ॥ यह पदले व्रतका दंरुक तीन वेर उच्चरावे॥१॥  
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसाइवायं जीहाड्येयाइहेअं  
कन्नालीयं गवालीयं जूमालीयं थापणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं  
पञ्चस्कामि दस्किन्नाए अविसए दवउं खित्तउं कालउं जावउं सबउणं  
मुसावायं खित्तउं इडवा अणडवा कालउणं जावज्जीवाए जाव  
उणं जावगहेणंनगहेज्जामि जावगलेणंनगहज्जामि अण्णेणकेणवि  
रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ तावअज्जिगह डुविहं तिविहेणं  
अन्नत्थणाज्जेणं सहस्सागारेणं महत्तगागारेणं वोसिरई ॥ २ ॥  
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खलखणणाइयं चोरंकारकरं  
रायनिग्गहकारयं सचित्ताचित्त वज्जुविसयं पञ्चस्कामि ववउं खित्तउं  
कालउं जावउं दवउणं अदिन्नादाणं खित्तउणं इडवा अन्नडवा का  
लउणं जावज्जीवं जावउणं जावगहेणं नगहज्जामि जावगलेणं नग  
हज्जामि अण्णेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुई ताव अ

जिग्मह डुविहं तिविहेणं अन्नत्थं सहसा० महत्त० सब० वोसि  
 रइ ॥ ३ ॥ अहत्तंजंतुम्हाणंसमीवे उदारिय त्रेक्षिय जेयं थूलमेहुणं  
 पच्चस्कामि अहागहियजंगणं दिव्वंतिरिणं माणसिय एगविहं एग  
 विहेणं पच्चस्कामि दवत्तं खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं मेहुणं खि  
 त्तं इत्था अन्नत्थवा कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेणं  
 नगहेज्जामि अन्न० सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहत्तं  
 जंतं तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पमुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चस्कामि  
 धणधन्नाइ नवविहवत्तु विसयं इत्थापरिमाणं उवत्तंपज्जामि अहाग  
 हियजंगणं तंजहा दवत्तं खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं नवविह  
 परिग्गहं खित्तं इत्था अन्नत्थवा कालत्तं जावज्जीवं जावत्तं  
 जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न० सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ ५ ॥  
 अहत्तंजंतं तुम्हाणंसमीवे दिसिपरिमाणं पच्चस्कामि तंजहा दवत्तं  
 खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं दिसिपरिमाणं खित्तं धारणाप  
 माणं कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेणं नगहेज्जामि जाव  
 त्तावअजिग्मह अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहत्तंजंतं  
 ते तुम्हाणं समीवे जोगोवजोगयेजोगेणत्तं अनंतकायबहुवीया राइ  
 जोगेणाइ परिहरामि कम्मत्तं पन्नरसकम्मदाणाइ इंगालकम्माइया  
 इ बहुत्तावज्जाइ खरकम्माइयं रायाजियोगंच परिहरामि तंजहा दवत्तं  
 खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं जोगाव जोगवयं खित्तं इत्था अन्न  
 त्थवा कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न०  
 सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहत्तंजंतं तुम्हाणंसमीवे  
 अन्नत्थदं पच्चस्कामि अववज्जाण पापोपदेशं हिंसोपकरण  
 दांशं पमायचरितं चउविहं अन्नत्थदं जहासत्तीए परिहरामि तंज  
 हा दवत्तं खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं अन्नत्थदं खित्तं इत्था  
 अन्नत्थवा कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेणं नगहेज्जामि

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नंजते तुम्हेणसमीवे  
सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिथिसंविज्जागवयं जहा सं  
त्तीए पन्निवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुवयं सत्तसिस्कावयं ऊवा  
लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह०  
सवस० वोसिरइ ॥ ९ ॥ षट् साख उ ठंभी च्यार आगार संयुक्त  
पालुं ॥ इति आवककुं संक्षेप बारे व्रत उच्चरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथानकका छोटा स्तवनं देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करो, वीस थानक रे  
गणतुं विधि कहउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं  
गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी धुणउ ॥ नूटक० ॥ धुणउ  
प्रविआं बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी  
स जिननी, पुंरुरीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पवयण  
स्स, प्रजावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थानकि,  
आचारज जगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ धिवर  
पूजा करो, नमो उवझायाणं रे षठइ थानक उचरउ ॥ वस्त्र कंबल  
र बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें तपिआ  
पूजिए ॥ त्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी जगति  
करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमे ते  
नमो विनयकारीणं विनय वरुानो कीजिए, इग्यारमे नमो क्रिया  
कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ ९ ॥ बारमे थानक रे नमो बंज  
धारीणं सदा, वृत्तधारी रे मन वचक्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय  
धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाहिघरणं रे रात्रइ गीत गान  
वरचिये ॥ त्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दान ते  
पनरमे, नमो वांयगस्स विगयनउ त्याग करो थानक सोलमें ॥  
सतरमे नमो वेयावचकारीणं, उषध गुरुनइ आपिये ॥ अठारमे

नमो नाण धराणं, नवूं जणवूं थापिये ॥ ३ ॥ नमो सुअज्जतीणं  
 रे जगणीसमे ज्ञविया मुण्ड, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं  
 सुणो ॥ वीसमे धानक रे नमो पञ्चावगाणं कही, संघजगती रे  
 यथासक्ति कीजे सही ॥ ब्रू० ॥ सही कीजे वीस उंची एक षठ  
 मासि कीजीये, उपवास करिये बे सहस्स गुणिये पक्किमणे  
 छाहो लीजिए ॥ त्रये काले देववंदन नाइण धोअण टालिये,  
 आरंज वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु  
 साधवी रे श्रावक श्राविकाये सेविआं, तीर्थकर रे तेणे नामकर्म  
 बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, ठाणां रे  
 सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ ब्रू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा  
 सुपास उदाई नृप बलि, पोष्टिल मुनिवर अने द्वादयुष शंख  
 शतक श्रावक रुची ॥ सुलसा रेवती श्राविकाये एह धानक  
 फरसिआं, सेवकजन कढ्याणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥  
 इति वीसधानक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥  
 वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥  
 ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कै, जेठे सहु जवि चित्त सुख  
 पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके  
 मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रभु  
 पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखनिया, मुख सुंदर जास ॥  
 मे० ॥ १ ॥ कानें कुंरुल दोय जलकै, शशि सूरज सम जास ॥  
 मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिभुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥



प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसासं ॥ मे० ॥ लावचंद  
अरज सुनीजें, पुरो वांजित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ तुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुषो सुजाण नेमजी, हारे में  
खमी पुकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में  
पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन  
अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें मारो ॥ सुजा० ॥  
॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं जव जवकी बेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ नेम जिणंदजीसें आंखमली, मोरी रेन  
दिवस नित लग रहीर ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आब उन  
दोस्ती कीनी, ले पीछें छिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया  
करीने, सिवरमणी तें वर लेइ रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केई  
जविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिछ्यातनिद में खोई रे ॥  
आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन जसो मेरे, आनंद चित्त अब  
जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम बिन उर न कोई मेरे, देख्यो त्रिजु  
वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत बिनति, तुम  
प्रभु जव जव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन जयो, क्या सोये  
जिया जागरे ॥ रा० ॥ होय घमी तरुकी अब रहियो, ऊठ धरममें  
लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी बरबीच धार ले, उर जरम  
सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए  
सुधी शिवभाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदः ॥

॥ राय जैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर  
खे मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ ब्रमत फिरयो संसार जगतमें, मेदो जव  
ही केरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ जव जवके प्रभु तुम जगनायक, राखो  
झारों तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशरो पकड़्यो तेरो, सरण  
झही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कमलानी देही ॥ आव धरि धन्य दिन आज, सफलो  
गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर नरि विमल  
गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ १ ॥  
प्रग मग उमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोय चरख त्रिदां चलत  
आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकतकी दिशा, आज धन दीह  
गिरि सुजस गायो ॥ जा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति ठरी जात्र विधिशुं  
करी, पुण्यजंगम पोतें जरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि  
शिखर, रुषज्जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंघर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंघर साहिबा, वीनूतनी, अवधार, लाल रे ॥  
परमात्म परमेसरु, आत्म परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥  
केवलज्ञान दिवाकरु, जागे सावि अनंत लाल रे ॥ जासक लोकायो  
कको, काधिक होय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद चंद चक्र  
सरु, सुर नर रहे कर जोरु लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणदूते  
एक कोरु लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ त्ररणकमल पिंजर वस्यो, मुज  
मनहुंत नित्यमेव लाल रे ॥ चरख सरण मोहि आसरो, जवजव  
देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उधारण जे तुमें, दूर  
दूरो जवहुं लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल  
सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंघर जिन स्तवनम् ॥

( ३४३ )

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनमो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि  
दीप्त जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन  
चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरे जी, पावन  
शाला आठ जी ॥ आठ जोजन उंचुं देहरूं जी, दुःख दोहण  
जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ जरतें जरायां जलां देहरां जी,  
सो जोंयरां घूज जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने  
ऊज जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली  
जागीरय गंग जी ॥ गोत्र तीर्थकर बांधीयां जी, जाणे जोई जे  
ऊज जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुऊने पांखमी जी, आवुं केम  
हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह जगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रजु आशा  
राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजें कबुक दिलासा  
राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चामी चटकी जवमाहि जटकी, नाच्यो में  
विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी,  
लागुं प्रजुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत  
संजाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथाली  
वाजे ताली, वात अचंज्ना वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परजपगारी  
पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी  
मन शुद्ध धारी, श्रीधमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥  
सांजलीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण जय वारो ॥ १ ॥ सेवक  
अरज करे ते राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकषी ॥ सहु

कोना मनवाञ्छित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह विरुद ठे राज सु-  
भारुं, किम राखो ठे दूरो ॥ सेवक० ॥ १ ॥ सेवकने बलवलतो देखी,  
मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार  
न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही ठे, परतक  
वरिसण दीजें ॥ धूवाने धीजुं नहीं साहिव, पेट पज्या पतीजें ॥  
॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंरुण साहिव, वीनतनी अवधारो ॥  
कहे जिनदर्ष मया करी मुऊने, जवसायरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥  
जिनेसर ॥ साहेव वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण जरत मऊ र  
॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आनो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु  
मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लामला, कागल थुं किण  
हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकठा, दिनमें  
दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता  
घणो मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलसो जीहो  
अवसरें, मिलसो सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण कण कण  
जीहो सांजरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥  
मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रखो, फलशे ते दिन आश ॥  
॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास्त ॥  
॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे ठे ॥ जिनराज, वधाई, वाजे ठे ॥  
नगर अयोध्यामाहि, मेघ घर आज वधाई वाजे ठे ॥ ए टेक ॥  
मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति जइ  
सदु देशमें रे, प्रगट जयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इत्यादिक सह

सुर मढ्यारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मङ्गल पूजन बहुविधै रे,  
भिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ १ ॥ घर घर रंग वधामणा रे,  
घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख  
कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोदधव रंग रत्नो री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत  
त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥  
सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥  
आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥  
आ० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी  
री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, बेना बीन मोचंग वली री ॥  
आ० ॥ ३ ॥ इंदु दुकुम कर धरणीं पठायो, सब वसुधा धन,  
धान्य जरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम बिलेरत  
गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार ज्यो जिनशासना  
व्याधि व्यथा सवि विपत हरो री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो,  
मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चञ्चलीसय अतिसय जुन, वचनातिशये जुन ॥ सो परमैसर  
देख जवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ दाख ॥ सिंहासण बेग जग  
जाण, देखी जविजन गुणमणि खाश ॥ जे दीजे तुज निम्नले  
जाण, लहिये परम महोदय दाश ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो आ  
दिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोजागी चो  
वीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजिनंदा ॥ ३ ॥  
( इतना कह कुसुमांजलि चढाई जे चरणोके टीकी दोजे ) ॥ गाथा ॥  
जोनिअगुण० जा रम्यो, तसुअनुजवएगन ॥ सुहृदगुणआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पु-  
 गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणामो  
 प्रथम अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० ( एसा कह  
 जोमे टीकी दीजे ) ॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगु-  
 णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पइधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥  
 लोकालोक प्रकाशक नांणी, जविजन तारण जेहनी वांणी ॥ पर-  
 मानंदतणी नीसाणी, तसु जगते मुऊ मति उहरांणी ॥ १ ॥ कु-  
 सुमांजली मेळो नेम जिनंदा तोरा० ॥ ( एसा कह हाथे टीकी दीजे )  
 ३ ॥ गाथा ॥ जेसिज्ञासिज्ञंतिजे, सिज्ञस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन  
 उविषमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह  
 त्रिकाले, सम परिणामे जगत निहाले ॥ उच्चम साधन मार्ग दिखा-  
 ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा  
 तोरा च० ॥ ( एसा कह खांयोके टीकी दीजे ) ४ ॥ गाथा ॥ सम्म-  
 दिद्विदेसजय, साहूसाहुणीसार ॥ आचारजउवज्ञायमण, जोनिम्मल  
 आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धारयो, मोक्षतणो  
 कारण निरधारयो ॥ विवह कुत्तमवर जात गदेवी, तसु चरणे प्रण-  
 मंत ठवेधी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ ( एसा कह  
 मस्तक टीकी दीजे ) ५ ॥ ( पोळे स्नात्रिया चमर ले के प्रजुजीकूं  
 हुलावे ) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर १ नमिय मनरंग, कल्लाणक वि-  
 दि संठविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सिचर तित्थंकर,  
 इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥  
 जम्म समय इगवीस, जत्तहि जावे पूजिया, करो संघ सुज-  
 गीस ॥ ढाल ॥ जव तीजे समकित गुण रम्भा, जिनजक्की प्रमुख  
 गुण परिणम्भा ॥ तजि इंडिय सुख आसंसना, कर आनक वीसनी  
 सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रज्ञावता, मन जावना एदवी

ज्ञावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, एसी ज्ञावदया मन उल्ल  
 सी ॥ १ ॥ लही परिणाम एहवूं जलूं, निपजावी जिनपद निरम  
 लूं ॥ आनबंध विचे इक जव करी, अज्ञा संवेग ते धिर धरी ॥ ३ ॥  
 तिहांथी चवि लहे नरजव उदार, जरते तिम एरवतेंज सार ॥ म  
 हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥  
 ॥ दाख ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेषे ॥ गजवर  
 उज्जल सुंदर, निरमल वृषज मनोहर ॥ निरजय केसरिलिह, लंख  
 मी अतिह अबीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शशि सुकमा  
 ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश  
 पमूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण  
 सायर ॥ बारमें जुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि  
 खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने ज्ञासे, राजा  
 अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, दोस्ये पूत्र मनोहर ॥  
 इंद्रादिक जसु नमस्थे, सकल मनोरथ फलस्थे ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य  
 उदय २, कृपना जिणनाह ॥ माता तब रयणी समे, देख सुपन  
 हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांजले  
 सो ज्ञागी ॥ त्रिजुवन तिलक महागुणी, दोस्ये पूत्र निधान इंद्रा  
 दिक जसु पाय नमी, करस्थे सिद्ध विधान ॥ १ ॥ दाख ॥  
 चंडाजलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अबधे मन आ-  
 पांदियो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, जवजल तारण  
 प्रगळ्यो जिहाज ॥ १ ॥ जवअरुविथ पारग सज्जवाह, केवलना  
 पाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण जल-  
 ठ्यो आसाढ मेह ॥ १ ॥ हरखे विकसे तब रोमराय, बलयादिकमां  
 निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन  
 आपांद कंद ॥ ३ ॥ सग अरु पय समुहा आवि तब, कर अंजलि

प्रणमिय मठ सत्थ ॥ मुख ज्ञाषे ए कण आज सार, तिय लोष  
 पडू दोगे उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोष देव, विषयानल  
 ताभित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्या  
 विष चूरण गरुवांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समठ, प्रगळ्यो  
 तसु प्रणमी हुठ सनत्थ ॥ इम जंपी सक्कव करेवि, तव देव  
 देवो हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंजा गीत गांन, सुरलोक हुठ मंग  
 लनिधान ॥ नरहेत्रे आरज वंस ठाम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥  
 ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उठव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष ॥  
 सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरथी जनने ठमंग ॥ ८ ॥  
 गुज वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंझादिक हर्ष साथ ॥ सुख  
 पांम्या त्रिजुवन सर्व जीव, वधाइए अई अतीव ॥ ९ ॥ (एसा पढ  
 चैत्यवंदन करणा पीठे हाथमें साधिया करणा पीठे कलस पंचामृत  
 का लेकर खना रहे ॥) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुख  
 कार, नरखिन् मंमल उह दिहंरुण जविक मन आधार ॥ तिहां  
 राव राणा हरख उठव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अवधि वि  
 शेष जांणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कु  
 मरी गावती गुण ठंड, जिनजननी पासे आय पडुती गहकती आ  
 णंद ॥ हे माय ते जिनराज जायो सचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म  
 निम्मल करण कारण करित सूईयकम्म ॥ २ ॥ तिहां जूमिसोधन  
 दीप दर्पण वाय वींऊणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर ज  
 ननि मज्जराकार ॥ वर राखनी जिन पांण वांधी दिये इम आसी  
 त, जुग कोन्किनी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उला  
 लनी ॥ जिन रथणीजो दस दिसि उज्जलता घरे, मुज लगनेजो  
 ज्योतितचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताघरे,  
 तिण अवसरजी इंझासण पिण थरहरे ॥ बूटक ॥ थरहरे आसन इंद्र



ચિંતે કોન અવસર એ બન્યો, જિન જન્મ ઝઘવકાલ જાણી અતદિં  
 આણંદ ઝપનો ॥ નિજ સિદ્ધિ સંપત્તિ હેતુ જિનવર જાણ જગતે ઝ  
 મહ્યો, વિકશંત વદન પ્રમોદ વધતે દેવનાયક ગદગદ્યો ॥ ૧ ॥  
 ॥ ઢાલ ॥ તબ સુરપતિજી ઘંટાનાદ કરાવ એ, સુરલોકેજી ઘોષણા એ  
 દિરાવ એ ॥ નરદેત્રેજી જિનવર જન્મ હુન્ન અઢે, તસુ જગતેજી સુરપ  
 તિ મંદિરગિર ગઢે ॥ ટૂટ૦ ॥ ગઢે મંદિર શિશ્વર ઝપર ઝુલન જીવન  
 જિનતણો, જિન જન્મઝઘવ કરણ કારણ આવજ્યો સબ સુરગણો ॥  
 તુમ શુદ્ધ સમકિત આસ્યે નિરમલ દેવ દેવી નિહાલતાં, આપણા પા  
 તિક સર્વ જાસ્યે નાથ ચરણ પલાલતાં ॥ ૨ ॥ ઢાલ ॥ ઇમ સાંન  
 લજી સુરવર કોમિં બહૂ મિલી, જિન વંદનજી મંદિર ગિર સાંદમી  
 ચલી ॥ સોદમપતિજી જિનજનનીધર આવિયા, જિનમાતાજી વંદી  
 સ્વામિ વધાવિયા ॥ ટૂ૦ ॥ વધાવિયા જિનવર દર્પ બહુલે ધન્ય હૂં ક  
 તપુન્ય એ, ત્રૈલોક્ય નાયક દેવ દીઠો મુઝ સમો કુણ અન્ય એ ॥ દે  
 જગત જનની પૂત્ર તુમચો મેરુ મજ્જનવર કરી, ઝઘંગ તુમચે વલિય  
 આપિસ આતમા પુન્યે જરી ॥ ૩ ॥ ઢાલ ॥ સુરનાયકજી જિન નિજ  
 કરકમલે ઝઘ્યા, પાંચ રૂપેજી અતિશય મહિમાયે સ્તઘ્યા ॥ નાટક  
 વિધિજી તબ બત્તીસ આગલિ વઢે, સુર કોમિજી જિન દરશણને ઝ  
 મઢે ॥ ટૂટ૦ ॥ સુર કોમકોમી નાચતી વલિ નાથ સચિ કુણ ગા  
 વતી, અઢપરા કોમી હાથ જોમી હાવ જાવ દિસાવતી ॥ જય જયો  
 ૨ તૂં જિનરાજ જગગુરુ એમ ઘે આસીસ એ, અમ ત્રાંણ સરણ આ  
 ધાર જીવન એક તૂં જગદીસ એ ॥ ૪ ॥ ઢાલ ॥ સુરમિરવરજી પાં  
 મુકવનભેં ચિહું દિસે, ગિર શિલ પરજી સિંહાસણ સાસય વસે ॥  
 તિહાં આણીજી શોકે નિજ સ્થોલે ગદ્યા, ચોસઠેજી તિહાં સુરપતિ  
 આવી રહ્યા ॥ ટૂટ૦ ॥ આવિયા સુરપતિ સર્વ જગતે કલશ શ્રેણિ વ  
 ણાવ એ, સિદ્ધાર્થે પમુદા તીર્થ ઔષધ સર્વ વસ્તુ અણાવ એ ॥ અચ્ચુ

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोमने, जिन मज्जनारथ नीर  
 द्यावो सबे सुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रस्ती देव  
 कोमी हसी, उल्लसीने घसी खीरसागर दिली ॥ पञ्चमदह आदि  
 दह गंग पमुदा नई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति  
 अरु कलश कर सदस अछोचरा, उच्च चामर सिंहासण सुजतरा ॥  
 उपगण पुष्प चंगेरी पमुदा सबै, आगमे जासिया तेम आणी ठवे  
 ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता जावता  
 धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम  
 सगति शुचि जगति इम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म  
 आरोपता, कलश पाणी मिसे जक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे  
 सर्व आग्या वही, शक्र उडंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा ॥  
 हंहोदेवा अणाइकाखो अदिष्ठपूवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥  
 मिञ्चत्तमोहविहंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवादिदेवोदिष्ठो २ हि  
 यकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पज्जणंति वण जवण जोईसरा, देव  
 वेमाणिआ जत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पडिया केविमिन्ताणुगा, केवि  
 वररमणे वयणेष अइज्जगा ॥ १ ॥ वस्त ॥ तत्थअच्चुयइ इइ आ  
 देस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदञ्जुत  
 रूप सरूप जुय कवण एइ पुडंति सामिय, इइ कहे जगतारणो पा  
 रग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मेनो करिये तसु अजिषेस ॥  
 ॥ १ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे  
 न्हामे ॥ आतम निरमल जाव करंता, वधते सुज परिणामे ॥ अ  
 न्युत्तादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंझणी  
 पमुदा, इम अजिषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाथा ॥ तबईसा  
 णसुरिंदो, सकंपज्जणेशकरिसुपसाठ ॥ तुम्हअंकेमहताठ, खिणामि  
 संअम्हअप्पेइ ॥ १ ॥ तासकिंदोपज्जणइ, साहमीयवड्डलम्भिवहुला

हो ॥ आशाएवंतेषां गिएहह दोउकयत्थाजो ॥ ३ ॥ (कलस दाते)  
 सोहन सुरपति वृषज रूप करि, न्दवण करे प्रभु अंगे ॥ करिय वि  
 लेपन पुष्पमाल ठवि, वर आजरण अजंग ॥ १ ॥ तव सुरवर बहु जयश  
 रव कर, नञ्जे धरि प्राणंद ॥ मोक्षमारग सारथपति पांभ्यो, ज्ञांज  
 सु हिव जवफंद ॥ २ ॥ कोरु बचीस सौवन उवारी, वाजंते वर  
 नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥  
 आणी थापे एम पर्यंपे, अह्न निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्यारो  
 धणी अह्यारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राख  
 ज्यो एहने, तुम सुत अह्न आधार ॥ सुरपति जगते सहित नंदीस  
 र, करे जिन जक्ति उदार ॥ ५ ॥ नियश कप्प गया सब निर्जर,  
 कहता प्रभु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कळ्याणक, इहा चित्त  
 मजार ॥ ६ ॥ खरतर गह्व जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥  
 ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद  
 जिन जगते गायो, जनम महोच्चव बंद ॥ बोधबोज अंकूरो उल  
 स्यो, संघ सकल प्राणंद ॥ ८ ॥ दाख ॥ इम पूजा जगते करो,  
 आत्म हित काज ॥ तजिय विजाव निज जावमा, रमता सिव  
 राज ॥ ९० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, दोस्ये जेह जिणंद ॥  
 संपश सीमंधर प्रभु, केवलनाण दिणंद ॥ ९० ॥ २ ॥ जन्ममहोच्चव  
 इण परे, आवक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन  
 खंत ॥ ९० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां जव पार ॥ जिन  
 प्रतिमा जिनसारखी, कही सुत्र मजार ॥ ९० ॥ ४ ॥ इतिस्नात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल ज्ञासन ज्ञास्करं, जगत जंतु महो  
 दय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचि मनाः स्नापयामि वि  
 सुद्धये ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमङ्गिनेन्द्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चं-  
 दन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल ज्ञाव श्रुतं  
 जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनैः, सहजं तत्त्व विकास कृतेर्ज्ञेयः ॥  
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं० केसरचंदनं यजामहे ॥ ३ ॥ त्रींजी पुष्प पूजा ॥ विक-  
 च निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन ज्ञाव समुज्ज्वले ॥ सुपरिणा-  
 म प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्त्व मयं हिय जाम्यहं ॥ ॐ ह्रीं  
 प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चोष्ठी धूप पूजा ॥ सकल कर्म  
 मर्हधन दाहनं, विमल संवर ज्ञावसु धूपनं ॥ अशुभ पु-  
 ञ्जल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु मुहूर्ततः ॥ ४ ॥  
 ॐ ह्रीं० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ ज्ञविक नि-  
 र्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग वि-  
 शुद्ध समन्वितं, दधतु ज्ञाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं० प०  
 दीपं यजामहे ॥ ५ ॥ षष्ठी अक्षत पूजा ॥ सकल मंगल केल नि-  
 केतनं, परम मंगल ज्ञाव मयं जिनं ॥ अथति ज्ञव्यजना इति दर्श-  
 यन्, दधति नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं० प० ॥ अक्षतं  
 यजामहे ॥ सातमी नैवेद्य पूजा ॥ सकल पुञ्जल संग विवर्जनं, स-  
 हज चेतन ज्ञाव विलासकं ॥ सरस ज्ञोजन नव्य निवेदनात्, पर-  
 म निर्वृति ज्ञाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं० प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी  
 फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफलव्रज ढोकनं ॥  
 विहत मोक्ष फलस्थ प्रज्ञो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥  
 ॐ ह्रीं० प० फलं यजामहे । (अर्थ) इति जिनवर वृंदं ज्ञकितः पूजयं-  
 ति, सकल गुणनिधानं देवचंद्रं स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्त्व  
 सुब्रावयंति, परम सहज रूपं मोक्षं सौख्यं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीं  
 प० अर्थं यजामहे ॥ ( वस्त्र ) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला,  
 सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यक्ते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वाञ्जनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० वस्त्रं  
थजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सतरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछै अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रकेवीमें कुंकुम तथा  
केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलसमें  
ढालै मुखकोस बांध उचारासण कर तीन नवकार गुणै तीन बेर नमस्कार कर हाथ  
को धूप देकर रकेवी हाथमें धरै मन सुद्धकर खडा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती मुनी कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ ज्ञाव ज्ञवै जगवंतनी, पूजा सतर प्रकार ॥ पर  
सिद्ध कीर्धी झोपदी, अंग ठहै अधिकार ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति  
सकल जग जागती, द्वारे अश्यो जा० सरसति समरि सुजिंद ॥ सतर  
सुविध पूजातणी, पञ्जशिसु परमानंद ॥ १ ॥ गाहा ॥ न्हवण १ विलेवण  
२ वत्थयुगं ३, गंधारुहणचं ४ पुष्परोहणयं ५ ॥ मालारोहण ६ व  
न्नयं ७ चुन्न ८, पन्नागय ए आन्नरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुय  
वंसुधरं ११, पुष्पं पगरंच १२ अढमंगलयं १३ ॥ धूव जखेवो १४  
गीययं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तद्वा ज्ञणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध  
पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मज्जार ॥ उपदसुता झोपदि परै, करियै विधि  
विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसास ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अद्वत धोती धरी उच्चि  
त मानी रे, अश्योउ० ॥ विद्वत मुखकोसके कीर गंधोदकै, सुभृत  
मणिकलस कर विविध वांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगवं,  
लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा वारिवारि ॥ अ० ॥ ज्ञणिय कुस  
मांजली, कलस विधि मन रली, नवति जिन ईइ जिम तिम अ  
गारी ॥ अ० ॥ २ ॥ डुहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण सुगति  
सोपान ॥ धरमरूप तरू सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

ह्रीं पूजा साचवै, श्रावक शुभ परिणाम ॥ शुचि पखाव जिनतनु  
 तणे, करइ सुकृत हितकाम ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्र  
 कारी, सुख जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण बढ्योरी सुधारस, तप-  
 त बुझिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रज्जुकुं विलोक नमि जंतन  
 प्रमारजित, करत पखाव सुचि धारविनकी ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथ-  
 म निज वृज्जन पुलावत, पंककु वंरष जिम धनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि  
 तरणि जवलिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥  
 शिवपुर पंथ दिखावन दीपी, धूमरि आपदेवेल मरदनकी ॥ पू० ॥  
 ३ ॥ संकल कुशलरंग मिढ्योरी सुमति संग, जागी सुदिता शुभ  
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधूकीरति सारंगजरकरतां, आस फलो  
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पद पंचामृतसु न्हवण कीज । डावे पांवके अंगुठे जलधार दीजे ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगहूणसे अंग जिनविंबका प्रमार्जकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके खडा रहै)  
 रामगिरिमें राग ॥ गात्र लूहै जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर  
 सु धूपित वाससुं ॥ वाससुं हारे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलिये  
 ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारे देवा नं० ॥ मांहे मृग-  
 मद कुंकम जेलिये, कर लीये हारे दे० क०, रयण पिंगणि कचो-  
 लिये ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंबे सिरै रे देवा, जाल कंठ जर  
 उदरंत रै ॥ डुख हरै हारे देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजियै ॥  
 गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरै, श्रावक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम  
 सुरगिरै, तिम करै हारे देवा ति० जिण पर जनमन रंजियै ॥  
 ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखसदन,  
 श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे जवोदधि तीर  
 ॥ १ ॥ मिटे ताप तसु देहको, परम शशिरता संग ॥ चित खेद सम  
 उपसमें, सुखमें समरसरंग ॥ २ ॥ राग वेलाजत्र ॥ विलेपन कीजे

जिनवर अंगै, जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद  
यक कर्दम, अंगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर  
खंधै सिर जाल कंठ, उर उदरन्तर संगै ॥ विलुपति अघ मेरो कर  
त विलेपन, तपति वुजित जिम अंगै ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव  
१ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहै साधु तन शुचि  
करो सुखलित पूजा, जैसै गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितिय  
विलेपन पूजा ॥ १ ॥ एसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल उज्ज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥  
लाज्ज ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गौमी ॥  
कमल कोमल धन चंदन चरचित, सुगंध गंधै अधिवासिया ए, हारे  
अश्यो० ॥ कनक मंमति हय लाल पल्लव शुचि, वसन युग कंति  
अधिवासिया ए ॥ हारे अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्नो  
यथा, करिय पहरावणी ढोइयै ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो दे-  
वनें, वस्त्रयुग पूज मल धोइयै ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैरामी ॥  
देवदुष्ययुग पूजा वन्यो हे जगतगुरु, देवदुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥  
तूही हे सबहि हितु तूही हैं सुगति दाता, तिण नमि प्रभुजी कै  
चरणो लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहै साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण,  
देवदुष्य मिस देहु उत्तम वांगूं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत  
पीतां, सब राम डख संसय घुरम जांगूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृति-  
य वस्त्रयुगल पूजा ॥ ( एसा कह प्रभुजाकुं वस्त्र चढावे ॥ )

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासस्त्रपूजा ॥

॥ गोमी रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारण  
वास ॥ कुमति कुगति दूरे हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग  
सारंग ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन धस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो  
 अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वासु दसोदिसि वासुते, पूजै जिन अंग  
 नवंगू ए ॥ हा० लाठि जवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अन्नं  
 गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौरी ॥ मेरै प्रजुजीको पूजा आ-  
 नंदमेले, पू० ॥ वासुजवन मोह्यो सबलो ए, संपदा जेले ॥ पू० ॥  
 ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्तायेइ ॥ अप्रमिच्छगुण  
 तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन  
 राजं तत्तायेइ, चतुर गति डुक्क गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥  
 इति चतुर्थी वासुदेव पूजा ॥ ( एसा कह चूर्णवास चढावे )

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगै पुष्प उत्तम छे के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुद्गल अनेक प्रकार ॥  
 प्रजु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥  
 चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई  
 जूहिका, वनलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण नवरि धरै ए,  
 अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसैं वर वरे, विधि जिन  
 पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग कानको ॥ सोहे री माई व  
 रणें, मन मोहे री माई वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसुम जिनच  
 रणें ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रजु हम सर  
 यै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी, कु० ॥ पंच  
 विधै हां० पं० डःख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति जगति जग  
 वंतकी, जविक नरां हारे जग सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठी पूजाए ठठी, महा सुरजि पुष्पमाल ॥ गुण  
 गूंथी थापे गलै, जेम टलै डुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज  
 री ॥ नाग पुत्राग मंदार नवमाजिका, मालिकासोग पारिध कली



ए ॥ जलां पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल  
 गुलाब पामल जिली ए ॥ जलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मो-  
 गरा वेणवा मालती, पंचवरणै गंधी मालती ए ॥ जलां गुं० ॥ हे  
 माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पावती ए ॥  
 जलां स० ॥ २ ॥ इति ॥ राग आसाजरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक  
 एधतिनंदै, चकोरकुं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि  
 वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुहमंदै ॥ दे० ॥  
 ॥ २ ॥ ठढी रे तोमरपूजा सब मार धूजै ॥ सब अरियण हारे स०  
 होइ तिम वंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधूकीरत सकल आस्था सुख,  
 जविक जगत हारे ज० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति ठढी  
 तोमर पूजा ॥ ६ ॥ ( एसा कह फूलमाला प्रजुकुं पहिरावे ॥ )

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगै फूल केसरसैं अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवला, सोनै तेम सुगात ॥ चाढो  
 जिम चढतां दुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौनी ॥  
 कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हारे अ० ॥ कुंद  
 गुलाबसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी  
 अलंकैयै, अंग आलंक मिस माननी मुगति आर्खिगियै ए ॥ २ ॥  
 ॥ इति ॥ राग जैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं० ॥  
 कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥  
 ॥ १ ॥ दमणक मरुक पामल अरविंदो, असं जुई वेणलवाती ॥  
 पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी जाती ॥ पं० ॥  
 ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण जाती, जैरवी कुगति व्रत तिदाती ॥  
 पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरवत्ती अथवा धूप लेकर खडा रहै ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेहद्वारस सार, सुमती पूजा आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु जावसैं ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥  
 कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥  
 सुरभि सिखर मृग नाजिनो जी देवा, चुन्नरोदण अधिकारो जी ॥  
 ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो जी देवा, अशुज करम चूरीजै जी ॥  
 अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तब कुमतीजन खीजै जी ॥ तब  
 सुमतीजन रीजै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री  
 माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदरै, गोत्र  
 तीर्थकर बांधइ ॥ जलांश गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-  
 व्हारस, लावै जिन तनु रागै ॥ धार कपूर जाव घन वरपत, सामेरी  
 मति जागै ॥ जलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूद्व गीत समूल ॥ दीजै  
 तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौरी ॥ वस्तु ॥  
 सहस्रजोयण ५, हेममय दंरु ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत  
 घुग्घरीय बाजै ॥ मृदु समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद  
 ल सखल जाजै ॥ मुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ न  
 वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक ध्वज वहन, ति० ॥  
 आपै दान अजंग ॥ आप ॥ १ ॥ राग नटनारायण ॥ जिनराज  
 को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन  
 सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सबद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधवधू  
 सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ जाति वसन पंचवरण बन्यो री,  
 विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू जणत नवमी पूजा नव, पाप  
 नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

( ॥ ए कही ध्वजा चढाईजै ॥ पहली बाजित्र बाजतां सधवस्त्री चांदीके थालमें  
 धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुंइली कर धजा पर गुरु  
 पास वासंतेप करा के प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तारै ॥ )

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

( एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खड़ा रहे ॥ )

॥ दूहा राग केदारमे ॥ दसमी पूजा आभरण, रचना यथाग्र  
नेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे  
जिनवरतसै, रयण मुगट ऊलकंत ॥ तिलक जाल अंगद जुजा, श्रवण  
कुंरुल अति जंति ॥ २ ॥ राग अधजास गुंनमब्दहार ॥ आसावरी ॥  
पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणिक लाल रसणिया, हीरा  
सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुजग अंक अं-  
जना, मनमोहे रे ॥ ३ ॥ मौलि मुगट रयणै जङ्घो, काने कुंरुल  
हारे अति जुगैत जुङ्घो उर हारू रे, मन वारू रे ॥ जाल तिलक  
वाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, डुलहारू  
रे ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ प्रजु सिर सोहै मुगट मणि रयण जङ्घो,  
रय० ॥ अंगद वाहुं तिलक जालस्थल, यहुनीको कवण घङ्घो ॥  
॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंरुल शशि तरुण मंरुल जीपे, सुरतरुं  
अलंकरयो ॥ डुलकेदार चमर सिंहासन, उत्र सिर उवरि धरयो,  
अलंकृत उचित वरयो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक इयाभरणदि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोजतो, फुंदै लहकै फूल ॥ महके  
परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥  
कोज अंकोल राय बेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू  
ए ॥ अईयो० तिलक दमणकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिष  
पारुलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिजुवनकूं रुचै, कुश  
मगेहे विच तोरणूं ए ॥ हारे अ० ॥ गुड चंडोदयं जूवकाउन्नयं,  
जालिका गोख चितचोरणूं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो  
मन मोह्यो माईरी फूलघर आषांद जिलै, फू० ॥ असत असत दांम  
दघरी मनोहर, देखत तवही सब डरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसुम मंजुष घंज गुह्य चंदोदय, कोरणी चारु विभाण सजै ॥ इग्या  
रमी पूजा वशी हे रामगिरी, विबुध विमान जैसैं तिपुरि जजै ॥  
॥ १ ॥ फू० मे० ॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजै ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरषै बारमी पूजमें, कुसुम बादलिया फूज ॥ हर  
ण ताप डुख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग ज़ीम  
मढहार करुखेकी जाति ॥ मेघ वरसै ज़री पुष्प वादल करी, जानु  
परिमाण कर कुसुम पगरं ॥ पंचवरणें वणयो विकच अनुक्रम चिणयो,  
अधोवृंते नही पीर पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास मढके मिलै ज़मर  
ज़मरी ज़िलै, सरस रसरंग तिण डुख निवारी ॥ जिणप आगै करै  
सुरप ज़िम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥  
राग ज़ीममढहार ॥ पुष्प वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ यो-  
जन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥  
गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥  
गुंजत२ मधुकर इम पज़णै, गुं० ॥ मधुरवचन जिनगुण गुणइ ॥ पु०  
॥ २ ॥ कुसुमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीर नही सुमणें, पु० ॥  
समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥  
॥ ३ ॥ बारमी पूज ज़विक तिम करै, कुसुम विकस हस उचरै ॥  
तसु ज़ीमबंधन अधरा हुवै, जे करहिजे जिन नमैं ॥ पु० ॥ ४ ॥  
इति बारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै  
सुमनै सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल  
मिढिया, अखंर गुणै ज़िढिया, साल रजततणा तंडुला ए ॥ श्लषण  
समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा छजला ए ॥ १ ॥  
अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अखै, जिनप आगै सुधानक

धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टतिद्धि  
करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वली ते रसमें,  
रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्पण ज्ञासन नंदावर्त पूर्णकुंज, मन्त्रयुग  
श्रीवन्ध तसुमें ॥ वर्द्धमानं स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण  
सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अंगर, सेढहारस घनसार ॥ कर  
प्रज्ञ आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलाढल ॥  
कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुदरुक्त सेढहारस सार, गंध  
वटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटी घनसार चंदन, मृगमदारस जेखियै,  
श्रीवास धूप दसांग अंवर, सुरजि बहु द्रव्य मेखियै ॥ वेरलिय दंरु  
कनक मंरित धूपधांणो कर धरै, जववृत्ति धूप करंति जौंग रोग  
साग अशुज हरे ॥ १ ॥ राग मालवी गोमो ॥ सब अरति मयन  
मुदार धूप, करति गंध रसाख रे, देवाक० ॥ घामधूमावलिय धूसर,  
कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ उर्ध्वगत सूचंत जविकुं, म  
घिमधे करनाख रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीयै रयण विसाख रे ॥  
आरती मंगल माल रे, मालवीगोमी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति  
चवदमी धूप पूजा ॥ ( एसा पढके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ जलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥  
जावो अधकी जावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें  
आर्या ॥ यद्ददनंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण  
वर्षा तान वाद्यै, मात्रा ज्ञाषालयैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः,  
स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंचुर चारोचारी गीतं गानं सुपीयूषं  
॥ १ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुत अमृतं, तार मंजुदि अ  
नाहत तानं, केरल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध

( ३६१ )

कुमारी कुमरी आलापै, सुरज उषंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ अ  
 वं धूयो प्रतिमानं, आयति उद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सबद  
 समान रुख्यो त्रिभुवनकुं, सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर  
 भान शिव श्रीगीतं, वनरमी पूज हरै डुरितं रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ( कुमार कुमरी नाटिक करै ॥ )

॥ हूहा ॥ करजोमी नाटिक करै, सऊ सुंदर सिपागार ॥  
 जवनाटिक ते नहि जमै, सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ राग शुद्धनट  
 काव्यं ॥ ज्ञावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना, सपिन्मा  
 सैम हव वेत वयसो मचेज कुंजत्थणा ॥ लावणा सगुणा पिकस्त  
 र्वई रागाईआ लावणा, कुम्भारी कुमरावी जैन पुरज नचंति सिं  
 भारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अहसयं कुमारिकुमरोज सूरियाजे  
 णदेवेशं संदिदा रंगमनवेपविदा जिणनमंता गायंता वायंता नचंतिति  
 ॥ १ ॥ राग नट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, झगरुदि तचाथेई  
 ॥ अ० ॥ झगरुदिश्क थौंगिशन, मुखेतचाथेईयं ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे  
 णु वीणा मुरज बाजै, सोलही सिपागार साजै ॥ तनन्नन्ननेईय ॥  
 अईयो० ॥ प्रयाण प्रयाण प्रयाणाय धुग्घरु धमके, रणससससेईय ॥  
 ॥ अईयो० ॥ २ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी जेकार क  
 रणी ॥ सोजंती कुमरीय ॥ अईयो० इस्तकं हावादिज्जावै, ददन्ती  
 जमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटिकतणी, सूरयाजे  
 रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप जगतें जविक  
 लीणां, आणंद तत्तेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ४ ॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजिन पूजा ॥

॥ हूहा ॥ ततधन सुखिरे आनधै, वाजित्र चौविध वाय ॥  
 जगत-जेली-जंगवंतनी, सतरमियै सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर  
 मदल कंसाखो, महुयर मदल सुवज्जए प्रणवो ॥ सुरनारि नंद तेरे,  
 मुखणइ तूं नंद जिणनाइ ॥ २ ॥ राग मधुमांधवी ॥ तूं नदिआ

नंद बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी ॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्मल  
 वावन मुखवेदी, तिबल बोलै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥  
 जेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवै जैन जैशावंती ॥ जैन  
 शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंघ परपरिघ वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥  
 सेव जविक मधुमाधव फेरी, जवनी फेरी नप्पजणंती ॥ कहे  
 साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कदंती ॥  
 तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ जवि तूं जण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै  
 ॥ ते० ॥ कवित शतक आठ धुणत शक्रस्तव, ध्रुय रंगे हम ठाजै  
 ॥ जवि० ॥ १ ॥ अणदलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सि  
 द्द आबाजै ॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, जणी में जगति हि  
 त काजै ॥ जवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंड सूरि खरतर पति, धरम  
 वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अद्वार श्रावण धुर, पंचमि दिवस  
 समाजै ॥ ज० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माशिव्यवर, तासु  
 पसायै सुविध हूय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब  
 लीला सुख साजै ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति सतर जेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरकर उचरासण करकै तिलक करके रक्तेबीमें  
 स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणार्चसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोर  
 चरणकमलकी में जाउं बलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजी  
 केनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष  
 सोवनमें काया, मृग खंडन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ च  
 क्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोदे, सोलम जिनवर जग सहु मोदे ॥ जै०  
 ॥ ४ ॥ मंगल आरती जोरहि कीजै, जन्मश को लाहो लीजै ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपदे  
पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदको पूजामें जो अवस्य चीज चाहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली  
छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंदुवा धूप चावल गहूँ चणोकीदाल मूंग उडद  
नव प्रकारका नैवेद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्कान खजली मिश्री पतासा  
ओला नगैरे अंगलूङ्गो के वास्ते स्वेतवल्ल वासशेष गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे  
नवनालीकिकलस ॥ ९ रकेथी तसला आरसी मंगलदीपक धी अंगीसमोसरण थाप  
नामैं रोकनाणा रु?) ज्ञानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसैं जाननी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करो, तास धरी नर ध्यान ॥  
अरिहंतपद पूजा करो, निज शक्ति प्रमांश ॥ १ ॥ काव्य ॥ ७ पपन्न  
सन्नाषा मद्भोग्याणां, सप्पाप्ति हेरा सणसंविद्याणां ॥ सद्देसणाणां  
दिय सङ्गणाणां, नमोऽ होठ सयाजिणाणां ॥ १ ॥ नमोनंत संत  
प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय ॥ अथा जेहना  
ध्यानथा सौख्यज्ञाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ क  
था कर्म दुममर्म चक्रचूर जेणैं, जला ज्ञव्य नवपद ध्यानेन तेणैं  
॥ करी पूजना ज्ञव्य जावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण  
कालैं ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदये करीनै, दिधे देसना ज्ञव्य  
ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाणिहारे समेता, सुरैसै नरैसै स्त  
व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ करथा घातिया कर्म च्यारे अलग्गा, जवोप  
ग्रही च्यार ठे जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकढ्याणके मुख पांमै, नमो  
तेद तीर्थकरा मोहकांमै ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं,  
परम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वरुं  
वीरो जी ॥ ती० ॥ उल्लाखो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान ज्ञासन सर्व  
जाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म जावे चरण थिरता वास



ता ॥ जिन नामकर्म प्रज्ञाव अतिसय प्रातिहारज सोजता, जगजंतु  
 करुणावंत जगवंत जविकजनने थोजता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सी  
 मंथर साहिब आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे जव वर थानक तप कर, जि  
 न बांधुं जिननाम ॥ चउसठ इंदै पूजित जे जिन, कीजे तास प्र  
 णाम रे जविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ ज० ॥ जिम चिरकालै नं  
 दो रे ॥ ज० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ ज० ॥ रत्नत्रयीनो वंदो रे  
 ॥ ज० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जे  
 हने होय कळयाणक दिवसे, नरके पिण उजवाळूं ॥ सकल अधि  
 क गुण अतिशयधारी, तेजिन नमि अथ टाळूं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्न ऊपन्ना, जोग करम खिण जांणी ॥ लेइ  
 दीहा सिद्धा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 ९ ॥ महगोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्प्रवाह ॥ उप  
 मा एहवी जेहने गजै, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 १० ॥ आव प्रातीहारज जसु गजै, पेंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबो  
 धै करे जगजनने, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ११ ॥  
 ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दबह गुण पर्यायै रे ॥ जेद छेद  
 करी आतमा, अरिहंतरूपी थायै रे ॥ १२ ॥ वीर जिसेसर उपदिसै, सां  
 जलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यानि आतमा, रुद्धि मिले सब  
 आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान  
 शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमस्तिद्धचक्राय अष्टङ्ग्यं  
 यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अ  
 शुभ करम दूर ठले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाण  
 माणंद रमालयाणं, नमोऽर्पयंत चक्रकथाणं ॥ सम्मग्न कर्मरक्तयका

रगाणं, जन्मजरा दुष्क निवारणां ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय  
 पार पांभ्या, जरा जन्म मरणादि ज्ञय जेश वाभ्या ॥ निरावरण  
 जे आत्मरूपें प्रसिद्ध, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रि  
 ज्ञागोनेदेवावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा ॥ सदानंत  
 सार्वव्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्नवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥  
 ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अ  
 व्याबाध प्रभुतामई, आतम संपत जूपो जी ॥ उल्लाखो ॥ जे जूप  
 आतम सद्गुण संपति, शक्ति व्यक्तिपर्ये करी ॥ स्वइयक्षेत्र स्वका  
 लज्ञावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वज्ञाव गुणपर्याय परणति, सि  
 द्दसाधन परजणी, मुनिराज मानसरदंस समवर, नमो सिद्ध महा  
 गुणी ॥ १७ ॥ दाख ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिज्ञाग  
 विलेस ॥ अवगाइन लही जे शिव पुढता, सिद्ध नमो ते असेस रे  
 ॥ १८ ॥ ज० ॥ पूरब प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग  
 ॥ समय एक ऊरधगति जेदनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ ज० ॥  
 ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लो  
 कंत ॥ सादि अनंत तिदां धिति जेदनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥  
 ॥ २० ॥ सि० ॥ जाणै पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम  
 गुण जास ॥ उपमा विण नांणी जवमांदि, ते सिद्ध दिव उल्लास  
 रे ॥ ज० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जमु अनुपम,  
 विरसी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध स  
 हज समाधि रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ सि० ॥ दाख ॥ रूपातीत स्वज्ञाव  
 जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गु  
 ण खाणो रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ हैं ॥ ह्रीं ॥ इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ द्वाविंश आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दिव आचारज पदनणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

हतिमर दूरै हरै, सूरै ज्ञाव असेप ॥ १ ॥ काव्य ॥ सूरैणदूरीकय  
 कुग्गहाणं, नमोऽसुरिसमप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अ  
 स्कंमत्तोत्तगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनैज्जग  
 में प्रौढ साम्राज्यज्जाजा ॥ षट्त्वर्गवर्गित गुणै शोभमाना, पंचाचारने पा  
 लवे सावधाना ॥ २ ॥ ज्विप्राणिने देशना देशकालै, सदाअप्रमत्ता यथा  
 सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीवज्यो  
 शुद्धजल्पा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणवत्तीसे  
 धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परज्जावे निक्कामो जी उल्लाखो  
 ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदधन, साध्य निज निरधारणी ॥ वर  
 ज्ञान दरसन चरण बोरज, सायना व्यापारणी ॥ ज्विजीवबोधक  
 तत्त्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संबर समाधी गत ऊपाधी, ड  
 विधत्त पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूषा पालै,  
 मारग ज्ञाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने या  
 चो रे ॥ ज्ञ० ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर वत्तीसगुणैकरि सोजै, युगप्रधान  
 जगबोहै ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥  
 ज्ञ० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम नवएसे, नहि विकथा  
 न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमिये, अकलुस अमल अमाय रे  
 ज्ञ० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पन्निचो  
 यण वलि जनने ॥ पट्ठारी गच्छुंज आचारज, ते मान्या मुनिम  
 नने रे ॥ ज्ञ० ॥ २९ ॥ सि० ॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदी  
 जे जगदीवो ॥ ज्वन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो  
 रे ॥ ज्ञ० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज ज्ञा, महामं  
 त्र शुभ्र ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज दुय प्राणी रे  
 ॥ वी० ॥ ३१ ॥ ते हैं आचार्यपदे अष्ट डव्यं यजामहे स्वाहा ३  
 ॥ अथ चोथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोजित गात्र ॥

उवज्ञायापद अरचियै, अनुजवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुनक्ष्रं  
 वित्थारणतप्पराणं, नमोऽवायगकुंजराणं ॥ गणस्तसंधारणसायरा  
 णं, सवप्पणावज्जियमभराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सूरिगुणने सु  
 हाया, नमूं वाचकात्यक्त भदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदा  
 ने, जिके सावधाने निरुक्षजिधाने ॥ २ ॥ धरै पंचनेवर्गवर्गितगु  
 णौघा, प्रवादिद्विपोहेदनेतुल्यलिंघा ॥ गुणीगणसंधारणेस्थंजपूता,  
 उपाध्यायतेवंदियेचित्प्रज्ञता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ,  
 अज्जव महवजुत्ताजी ॥ सच्चंसोयंअकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥  
 उल्लाखो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता गुजधरा ॥ स्या  
 द्वादवादं तत्वसाधक, आत्मपरविजंजनकरा ॥ जवज्जीरुसाधनधी  
 रसासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदांसमरथ, नमोपाठ  
 कपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिद्धाय करे जे, पारगधारग  
 तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रतिक ते, नमो उवज्ञाय उल्लास रे ॥  
 ज० ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दांसविज्ञागे, आचारज उवज्ञाय ॥  
 जवत्रिएदै जे जहै शिवरूपद, नमियेने सुपसायरे ॥ ज० ॥ ३५ ॥ सि०  
 ॥ मुखशिष्यनीपायेजेप्रभु, पादणने पल्लवआणै ॥ ते उवज्ञाय स  
 कलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजांशे रे ॥ ज० ॥ ३६ ॥ सि० ॥ रा  
 जकुमर सरिखा गणार्चितक, आचारजपद योग, ते उवज्ञाय सदा ते  
 नमतां, नावै जवज्जय सोग रे ॥ ज० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ बावनचंद  
 नरस समवयणै, अद्वितताप सवि टावै ॥ ते उवज्ञाय नमिजे जे  
 वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ ज० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥  
 तपसिज्ञायै रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते  
 आत्मा, जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ नै ह्री० श्रीपा.  
 ठकपदे अष्ट इव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचमी साधूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमार्ग साधनज्ञानी, सावधान अथा जेह ॥

ते मुनिवरपद वंदता, निरमल आये देह ॥१॥ काव्य ॥ सांख्य स  
 साह्यसंजमाणं, नमोऽशुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं,  
 सुखीणमाणंदपयडिआणं ॥ करेसैवनासूरिवायगगणीनी, कंठवर्णना  
 तेहनीसीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुता, त्रिगुतेनहाकाम  
 जोगेषुलिता ॥ ४१ ॥ बलोबाह्यअर्ज्यंतरेग्रंथटाली, हृदमुक्तिनेयो  
 गचारित्रपाली शुजष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निजं पा  
 प टाली ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निका  
 मो निस्संगी जी ॥ जवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी  
 जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणों देह निर्मम निर्मदा;  
 कान्तसगमुझा धीर आसन ध्यान अज्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै  
 कर्म जीपै नैव बीपै परजणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिजुवन प्र  
 णमो हितजणी ॥ ४३ ॥ ढाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो बेस, पीका  
 तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय  
 रे ॥ ज० ॥ ४४ ॥ सि० ॥ पांचरंङीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु  
 प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, वंदू दीनदयाल रे ॥ ज० ॥  
 ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलंगना धेरी, अचल आचार च  
 रित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ ज०  
 सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्त जे पाले, बरे बिध तपसूरा ॥ ए  
 हवा मुनि नमिथै जो प्रगटै, पूरब पुन्य अंकूरा रे ॥ ज० ॥ ४७ ॥  
 सि० ॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढतै वानै ॥ संजम  
 खप करता मुनि नमिथै, देसकाल अनुमानै रे ॥ ज० ॥ ४८ ॥ सि०  
 ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरथै नवि सोचै रे ॥ साधु सु  
 धा ते आतमा, स्युं मुनै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं ॥  
 साधुपदं अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छद्मी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर ज्ञापित शुद्ध नर, तत्त्वदृशी परतीत ॥

( ३६९ )

ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियै शुभ रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु  
 चतरेरुल्लक्षणस्त, नमो २ निम्नलदं स्यास्त ॥ मित्रचनानां सप्त  
 गमस्त, भूलस्तसधम्ममहाडुमस्त ॥ विपर्यासदोवासनारूपमिच्छा,  
 टलेजेअनादीअजेकुपय्या ॥ जिनोक्तैहुइंसहजशीशुद्धध्यानं, कदि  
 बैदर्शनंतेहपरमेनिधानं ॥ ५० ॥ विनाजेइशीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि  
 चित्रंजवारण्यकूपं ॥ प्रकृतिसातनेउपसमैक्यतेहहोवे, तिहांआपरूपैस  
 दाआपजोबै ॥ ५१ ॥ ढाला ॥ सम्यग् दर्सण गुण नमो, तत्त्व प्रतीत सरू  
 पी जी ॥ जसु निरधार स्वजाव ठै, चेतन गुण जे अरूपी जी ॥ चाल ॥  
 जे अनूप अद्वा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता जाव प्रग  
 टै अनुजव कल्याण उठलै ॥ बहुमांन परणित वस्तु तत्त्वे अद्व सुखकारण  
 पणै, निज साध्य दृष्टै सरब करणी तत्त्वता संपत्ति गिणै ॥ ५२ ॥ ढाला ॥ शुद्ध  
 देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्विद्या परिणाम ॥ जेइ पांमीजै तेह नमीजै,  
 सम्यग्दर्शन नाम रे ॥ ज० ॥ ५३ ॥ सि० ॥ मल उपशम क्यं उ  
 पशम जेइशी, जे होइ त्रिविध अजंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै,  
 जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ ज० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश  
 म लहीजै, क्यउपसमीब असंख ॥ एक वार क्षायक ते सम्यक्,  
 दर्शन नमीइ असंख रे ॥ ज० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विष नाण प्र  
 माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवाण न जे  
 विष लहिये, समकित दर्सन बलिउ रे ॥ ज० ॥ ५६ ॥ सि० ॥  
 समस्त बोलै जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रजुं मूल ॥ समकितदर्श  
 न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ ज० ॥ ५७ ॥ सि० ॥  
 ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते  
 दिज आत्मा, स्युं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ उ० ॥ ही  
 प० दर्शनपदे अष्ट इयं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दुहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धक तपमाह ॥ आ  
 ४७

राधीजे गुंज मने, दिन २ अधिक उंठाई ॥ १ ॥ काव्य ॥ अज्ञाण  
 सम्मोहतमोहरस्स, नमो २ नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पवारस्सुवगा  
 रगस्स, सत्ताणसवत्थपयांसगस्स ॥ दोइजेदेयीज्ञानगुंक्षपबोधे, यथा  
 वर्णनासैविचित्राविबोधे ॥ तिणैजाणीयेवस्तुषट्ठव्यज्ञावा, नंदोवै  
 विकञ्चानिजेञ्चास्वज्ञावा ॥ एए ॥ दोइपंचमैत्यादिसुग्यानेजेदे, गुरु  
 पासणीयोग्यतातेहवेदई ॥ वलीकियेदेयांउपादेयरूपे, लहैविचमंजे  
 मध्यानेप्रदीपे ॥ ६० ॥ ढाल ॥ जव्य नमो गुणं ज्ञानेने, स्वंपरप्र  
 काशक जावै जी ॥ परयाय धरम अनंतता, जेदाजैद स्वज्ञावै जी  
 ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधवास विलासता,  
 मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंठना ॥ स्यादादस  
 गी तत्स्वरंगी प्रथमं जेद अजेदता, सवि कंठ्य ने अविंकण्य वस्तु  
 संकल संसय जेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ जंक अजंक न जे विण लं  
 दिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लदिये, ज्ञान  
 ते सकल आधार ॥ ज० ॥ ६२ ॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञान ने पीठे अहिंसा,  
 श्रीसिद्धाते ज्ञाख्यु ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञानम निर्दो, ज्ञानीये सिवसुखं चा  
 ख्यु रे ॥ ज० ॥ ६३ ॥ सि० ॥ संकल क्रियांलुं मूल ते अर्ध्या, तेहनुं मूल  
 जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित २ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये  
 रे ॥ ज० ॥ ६४ ॥ सि० ॥ पांचज्ञानमादे जेद संदागम, स्वंपरप्रकाश  
 क तेह ॥ दीपकपर त्रिजुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह  
 रे ॥ ज० ॥ ६५ ॥ सि० ॥ लोक ऊरथ अथ तिर्यग्ज्योतिष, वैमानि  
 क ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहणी, ते ज्ञाने मुज गुडी  
 रे ॥ ज० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म ठे, हय  
 उपशम तसु पाये रे ॥ तो दोइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता  
 जाये रे ॥ बी० ॥ ६७ ॥ उँ ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट इव्यं यजा  
 महे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम प्रद चारित्रनो, पूजो धरी कमेद ॥ पूजत  
अनुत्तरवत्स मिले, पातिक होय उठेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराधिया  
खंतिअसक्रियस्त, नमोऽसंजमवीरिअस्त ॥ सञ्जावणासंगविवद्विअ  
स्त, निद्याणादाणासमुज्जयस्त ॥ बलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, तिरा  
संसताचाररोधेप्रसंगे ॥ जवांजोधिसंतारणेयानतुख्यं, धरंतेदचारित्र  
अप्राप्तमख्यं ॥ ६८ ॥ होइजाससहिमाथकीरंकराजा, बलिघादशां  
शीतलीहोइताजा ॥ बलिपापरूपोपिनिष्पापथायै, थईसिद्धनेकर्मने  
प्रारजायै ॥ ६९ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण बलि नमो, तत्त्वरमण  
जसु मूलोजी ॥ परस्मणीयप्रणो टलै, सकल सिद्धिअनुकूलो जी ॥  
उल्लाखो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तल थिरता दममयी, शुचि  
परम खंति मुनीद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायकादिक जे  
द धरमै यथाख्यातै पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्जल काम  
कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही  
यतिने अजिरांम ॥ ते चारित्र जगत जगवंतो, कीजै तास प्रणाम  
रे ॥ ७१ ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तूण पर जे षट्खंम सुख ठंमी, चक्र  
वर्त्त प्रिण वरिठ, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में सनमहि धरि  
ठरे ॥ ७२ ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद  
नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते वारू, वरिठ ज्ञान आनंद रे ॥  
७३ ॥ ७३ ॥ सि० ॥ बारमासपर्यायै तेहनें, अनुत्तर सुखअतिक्रमिये ॥  
शुक्ल अजिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ ७४ ॥ ७४  
॥ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र  
नाम निरुके जाख्युं, ते बंदू गुणगेह रे ॥ ७५ ॥ ७५ ॥ सि० ॥  
॥ ढाल ॥ जांशि चारित्र ते आतमा, निजस्वजावमांदि रमतो रे  
॥ लेस्या शुद्ध अलंकस्थो, मोहवने नवि जमतो रे ॥ ७६ ॥ ७६  
॥ ठैं हौं ५० चारित्रपदे अष्ट इव्यं यजामहे स्वाहाः ॥



॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ठ प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन  
॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म  
हुमोन्मूलनकुंजरस्स, नमोऽतिव्रतवोवरस्स ॥ अणो गलक्षीणानिबंधण  
स्स, उसङ्गाअत्थाणयसादणस्स ॥ ७७ ॥ इयनवपयसिद्धिं लद्धिं, विज्झास  
मिद्धं, पयमियसरवगंगं ह्रीं तिरेह समगं ॥ दिसि वइसुरसारं खोषिपीढाव  
यारं, तिजयविजयचक्रं सिद्धचक्रं नमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालिकपणें कर्म  
कषाय टालै, निकाचितपणें बाधिया तेह बालै ॥ कह्यो तेह तप  
बाह्य अर्ण्यंतर ड जेदे, कामायुक्ति निर्देत डुर्ध्यान बेदे ॥ ७९ ॥ होई  
जास महिमायकी लब्धि सिद्धि, अवांगकपणें कर्म आवरण शुद्धि  
॥ तपो तेह तप जे महानंद देतें, होई सिद्ध सीमंतनी जिम संके  
ते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवजव सिव  
जावै देव नर जवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रजा  
वै, सवि डुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ढाल ॥ इहा  
रोधन तप नमो, बाह्य अर्ण्यंतर जेदै जी ॥ आतम सत्ता एकत्व  
ता, पर परणति उन्नेदे जी ॥ १ ॥ उल्लाखो ॥ उन्नेद कर्म अनादि  
संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुद्ध योग संग आहार टाली जाव अ  
क्रियता करै ॥ अंतरमुहूरत तत्व साथै सर्व संवरता करी, निज आ  
त्मसत्ता प्रगट जावै करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥ ढाल ॥ इम न  
वपद गुणमंरुलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, स  
भ्यगुणानें जाणै जी ॥ उल्लाखो ॥ निरधारसेती गुणो गुणनो करइजे  
बहुमान ए, जसु करण ईहा तत्वरमणें आयै निरमल ध्यान ए ॥  
इम शुद्धसत्ता जलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अकथ्य अनंत म  
हंत चिदधन परम आनंदता वरै ॥ ८३ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख  
कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लद्धिविज्जा सिद्धि मंदिर ज  
विक पूजो मन रखी ॥ उवझाय वर श्रीरजसाग्रह ज्ञानधर्मसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरणा सेवक देवचंद सुशोजता ॥८४॥ ढाल ॥  
जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जवमुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्म  
खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम नि  
काचित पिण कय जायै, कमासहित जे करतां, ते तप नमियै ते  
ह दीपावै, जिनशाशन उजमंता रे ॥ ज० ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही  
पमुहा बहु लद्धि, होवै जास प्रजावै ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र  
गटै, नमियै ते तप जावै रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव  
सुख मोटुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो  
वंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां  
हि पढलो मंगल, वर्षावियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित न  
मियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद  
श्रुणतो तिहांलीनो, हुठ तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोप्रे  
खंनै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ  
झारोधन संवरी, परणित समता योगै रे ॥ तप ते एहिज आतमा,  
वरते निजगुण जोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो,  
जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावै धिरं हूठ, परजावै मत  
राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकलं समृद्धिने, घटमांहे रुद्धि दा  
खी रे ॥ तिम नवपद रुद्धि जाणच्यो, आतमराम ठै साखी रे ॥  
वी० ॥ ९३ ॥ योग असंख्य ठै जिन कह्या, नवपद मुख्यते जाणो रे  
॥ ए हतणै अविलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ ९४ ॥ ढाल  
वारमी एहवी, चोथै खंनै पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय  
न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ उँ हँ प० तपपदे अष्ट इव्यं  
यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालण विधी ॥

॥ नव क्वात्रिया केसरसैं निलक करे, हांथके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साधिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके जड़ कलस-ढाले फेर-केसरकी टीकी देकर चरणों पर वासशेष चढ़ावे यथाक्रम अष्ट द्रव्य चढ़ावे ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी घजागोटा चढ़ावे, आचार्यपदमें चिणोकी ढाल पीले रंगकी घजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें जड़द, बाकी चारपद में चावल चंदनलेपित गोटा चढ़ावे, श्वेतघजा चैत्रीपूना आसोजीपूनाम बगेरोंमें करे, नमो सिद्धाणं इत्यादि तबपदों के न्यारे २ कह के चढ़ावे, गड़े मुजब पड़े पर तब साधिया कर बीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजब यथाक्रम चढ़ावे ॥

॥ ओली करणवाला वासशेष पूजा करे तो एकैक पूजामें चालकी लाया तथा छाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासशेष यजामदे कह्या. एसें नेत्रपदों की चाल और छाला पद वासशेष चढ़ाया ॥

॥ अथ दादाशुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल डुङ्कृत दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंजित दायकं, कुशल सूरि गुरोश्चरणां यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥ १ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसरवारिण, निखल जाण्यरुजातं प्रहारिणा ॥ सकल ० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकु ॥ २ ॥ अथ धूपपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत्पदपद वंदकैः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अकृत पूजा ॥ सरज तंडुल कैरित निर्मलै, प्रवर सौक्तिकं पूजं वडुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं प० अकृतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहु विधैश्चरुजिर्वदकेयकैः, प्रवर मोदकपुंज सुखकैः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकैः, विमल कंचनजालन संस्थितैः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजि० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै, प्रसरिताखिल दिहुसुधूत्रकः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पत्रा मोचं सदाफल कर्कटैः, सुसुखदैः

किंल श्रीफल चिर्जटै ॥ सकल मे० ॥ उँ ह्री श्री० फलं यंजामहे  
स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, अरुप्रदीप  
क धूप फलादिभिः ॥ सकल मे० ॥ उँ ह्री श्री श्रीजि० अर्घ यज्ञ  
महे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सदगुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि तमरी  
जै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहण सब  
दूर हरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पमैती धारा, जयवारण तूँही सुख  
कारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरी सब दुर्म  
ति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चौथी सुगलपूत जियदायक, सुरवर दुक  
म धरै र्जु पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिण तारी, संघ स  
कलनो संकट चारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ ठंठी आंनोवज विदारी, विद्या  
पोथी परगठकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साधी,  
सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती  
कीजै, मनवंजित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनवांज खर  
सर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ९ ॥  
इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णमं ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसे दिन १० इस सूतक ॥ पुत्री जन्म हो  
नेसे दिन १२ बार सूतक ॥ घर जो लीके पुत्र होय, उस लीके  
एक मासको सूतक॥पुत्र होके मरण पामे, तो दिन १ एक सूतक ॥  
परदेश मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, जैष, घोमी,  
सांढ, घरमाहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हवां कले  
वर घर बाहिर लइ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी  
नेषायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ उर जितना महिनाको गर्ज गिरे, तितने दिन सूतक ॥  
 अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १२ बार  
 दिन देवपूजा न करे. उर मृतकके सूतक में घरका जो  
 मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥  
 उर अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. उर जो मृत  
 कको बुवा होवे, सो २४ चौबीस प्रहर पक्कमण न करे ॥ जो  
 सदाका अखंरु नियम होवे, तो समताजाव रख के संवरपणामें  
 रहे. परंतु मुखसे नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करे नहिं. स्थापना  
 जीके हाथ लगावे नहिं. उर जो मृतकको बुवा न हो तो मात्र  
 आठ प्रहर पक्कमण न करे ॥

जैसेके जब बच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीठें दूध पीणों  
 कढ्ये. गायके बच्चा होय तो १४ सतरे दिन पीठें दूध पीणों कढ्ये.  
 बकरीको दूध ८ आठ दिन पीठें पीणों कढ्ये ॥

१ रतुवती स्त्री, चार दिन ज्ञानादिकको न बुवे. २ चार दिन  
 प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक का  
 रणें तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीको रक्त चखता दीसे, जिसका  
 विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसे पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीठें  
 स्थापना पुस्तक बुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा  
 न करे, साधुको पकिलाजे. ऋतुवती तपस्या करे, सो तो सफल  
 होय. परंतु रतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न  
 होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा हे. जिसके घरमें जन्म मरणका सू  
 तक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहेरे.  
 सूतकवालेका घरका जखसे तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देव  
 पूजा न करे. निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूत  
 कवालेका घर दुर्गन्तिक कहा हे.

गायके मूत्रमें २४ चौबीस प्रहर पीठें, जैषके मूत्रमें १६ सौल प्रहर पीठें, गामर, गधेनी, घोनीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीठें, नर नारीके मूत्रमें ४ चार प्रहर पीठें, संमूर्धिन जीव उपजे, इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा है. विशेष विचार शास्त्रांतरसे जानना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अब असञ्चायकी विगत कहते हैं ॥

१ धूआरी पने, तासोम असञ्चाय जाणवी.

२ सर्वदिशामां राती ठाया तथा अरण्य संबंधी रज उठे, निरंतर पने तो दिन ३ तीन उपरांत असञ्चाय.

३ मेह वरसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असञ्चाय.

४ जाना ठांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अने न रहे तो असञ्चाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जालगें होय, तां सीम असञ्चाय, अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असञ्चाय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असञ्चाय होय.

७ चैत्र शुदि पांचमहंती पन्निवा लगे असञ्चाय, तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रजउझावणठं काउस्त ग करुं? इठं. अचित्त रज उझावणठं करेमि काउस्तगं. पठी लोगस्त उझायगरेना चार काउस्तग करवा.

८ आशोशुदि पांचमने दिने द्विप्रहरथी आरंजीने पन्निवा लगे असञ्चाय.

९ दश दिग्दार्द प्रहर १ एक असञ्चाय.

१० अकाले गाजतां प्रहर ९ वे सीम असञ्चाय.

११ अकालें बीज उल्कापात होय तो प्रहर १ असन्ध्या,  
१२ अजवालीये पक्षें समी सांज, पन्वो, बीज, त्रीज,  
इयारी असन्ध्याय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक असन्ध्या.

१४ जूमिकेंपें प्रहर ८ आठ असन्ध्याय,

१५ चंड्यदणें प्रहर १३ वार उत्कृष्टें, अने जयन्यें प्रहर  
८ आठ असन्ध्याय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोय, अने जयन्य प्रहर  
१२ वार असन्ध्याय.

१७ आसाढ चउमासा पम्क्कमणा वायादूती प्रहर १३  
वार असत्तजाय.

१८ कार्तिक चउमासे पण प्रतिक्रम्या पीठें पमिवा लगें प्र  
हर वार असत्तजाय.

१९ मांडोमांडे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असत्तजाय.

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असत्तजाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यांपर्यंत असत्तजाय.

२२ फागण चउमासे रजपर्वी ज्यां लगें रज उमे, अने उप  
शामें नहिं, तां लगें असत्तजाय.

२३ दंनको मार पकते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी  
असत्तजाय.

२४ परचक्रादि जय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहिं, तां  
लगे सूत्र जणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांडे प्रधान पुरुष विद्वने, तो अहोरात्र असत्तजाय;

२६ उपाश्रयशी सात घरमांडे जो कोइ पुरुष विद्वने, तो  
अहोरात्र असत्तजाय.

२३ सो हाथमादे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणान्हरे एतले ज्या पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असव्वाय.

२४ तिर्यचना रुधिर पन्वार्थी हाथ १०० सो माहे अहो-  
रात्र असव्वाय.

२५ मनुष्यना रुधिर पन्वार्थी हाथ १०० सो माहे अहो-  
रात्र असव्वाय.

२६ मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पमे हाथ १०० सो माहे  
सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

२७ स्त्रीने रुतु आवे अके दिन ३ ऋष असउज्जाय.

२८ आर्द्रा नक्षत्र आठवा पीठें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे,  
बीजे, मेह वरसे, तो असउज्जाय न होय.

२९ पुत्रने प्रसवे दिन ७ स्यात असव्वाय. अने बीकरीने प्रस  
वे दिन ८ आठ असउज्जाय.

३० कालग्रहण विषकी जखवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ बार  
असउज्जाय.

३१ वैशाखवदि १, आषाढवदि १, कार्तिकवदि १, मागशि  
रवदि १. ए चार दिवसें सदैव असउज्जाय अने सूत्रनी असउज्जाय  
तो प्रहर १२ बार सूची जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥

॥ ओर दिन पीछे न सावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राब प्रहर १२, बील प्रहर २०, गढी  
प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीबर्मा प्रहर २४,  
घोमवर्मा प्रहर ४, लट्ठ्यां वर्मा प्रहर ४, पूनी प्रहर ८, रोटी प्रहर  
४, तथा ६. बाजरा कृष्ण प्रहर १२, जवार कृष्ण प्रहर १२, बा  
जरीकी खीचनी प्रहर ८, जवारकी खीचनी प्रहर ८, चावलकी



खीचनी प्रहर ४, सीयाले आठो दिन १०, उन्हाले आठो दिन ८, वरसाले आठो दिन ५, पक्कान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्कान्न दिन १५, वरसाले पक्कान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी ज़ीजोइ प्रहर ८, पाणीकीउसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलेकीतली घूघरी प्रहर २०, तथा २४, वनी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६, रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु ए कीये परिमाण उपरांत चखितरस होवे, सो साधु तथा श्रावकको खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन और पूजन

विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते ॥

॥ पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गुरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिना हाथके मौली उर कांकणमोरा मंत्राय के बांधै ॥ (ॐ नमो परमेष्ठि नमस्कारं) इत्यादि स्तोत्रसँ गुरुआश्रमरक्षा करावै. पीठै एक थालीमें १०, एक थालीमें ९, फेर एक थालीमें फेर ९, ऐसे ३८ नागरवेलका पान रखै. जिसपर पुष्प अकृत नैवेद्य फल रोकड्य यथाशक्ति धरै उरजी पंचामृत फूल पुष्पमाला अकृत नैवेद्य तरे२ के गीले उर सूकेफल अनर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजापेकां सांमान रखै. फेर स्नात्रपूजा की थापना रखै, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीठै दसदिग्पाल के पड़े ऊपर जलका डीटा देकर वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढ़ाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेलका पान चढ़ावै ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ नैऋत्य सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इहअस्मिन्जं वूदीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो  
 ञ्छवे आगच्छ१ वलिगृहाण१ नदयमञ्जुदयं कुरुस्वाहाः नैऋत्यन  
 मः इति इन्द्राह्वानपूजा ॥ ( पूर्वदिशि जल चंदनादि अष्ट इव्य च  
 ढावै ) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्ये सायुधाय सवा  
 हनाय सपरिकराय अस्मिन्जं वूदीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे  
 अमुकचैत्ये अमुकपूजामहोञ्छवे आगच्छ१ वलिगृहाण१ नदयमञ्जु  
 दयं कुरुस्वाहाः नैऋत्येनमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ नैऋ  
 त्मांय सायु० संवा० सपरिच्छदा अस्मिन्जं बु० दक्षिण० अमुकन०  
 अमुकचैत्ये० अमुकपूजा० आग० वलिगृ० नदयम० स्वाहा नैऋ  
 त्मायनमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋत दिग्पाल पूजा ॥ नैऋताय  
 सायु० संवा० सप० अस्मिन्जं० दक्षि० अमुक पूजामहोञ्छवै  
 आग० वलि० नदय० स्वाहा नैऋतायनमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दि  
 ग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु० संवा० सप० अस्मिन्जं० अमुकपू०  
 आ० वलि० नदय० स्वाहा नैऋत्याय नमः ॥ पश्चिम० ॥ ५ ॥ अथ वा  
 यव दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु० संवा० सप० अस्मिन्० द०  
 अमुकचैत्ये० अमुकपूजामहोञ्छवे० आ० वलि० नदयम० स्वाहा  
 नैऋत्यायनमः ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ नैऋतेरा  
 य सायु० संवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमु  
 कपूजामहोञ्छवे आ० वलिगृ० नदय० स्वाहा नैऋतेरायनमः उत्तर  
 दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ नैऋतानाय सायु०  
 संवा० सप० अस्मि० द० अमुकपू० आ० वलि० नद० स्वाहा  
 नैऋतानायनमः ॥ ईशानकूष्ण ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥  
 नैऋत्याय सायु० संवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकन० अमुकचैत्ये

अमुक पू० आ० बलि० नदय० स्वाहा नैनागायनमः ॥ नैनादिशि०  
॥ ए ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ नैनागाय सायु० सवा० सप०  
अस्मिन्० दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्यै अमुकपू० आ० बलि०  
नदय० स्वाहा नैनागायनमः ॥ १० ॥ अघोदिशि अष्टद्वय चढावै ॥  
ऊपर कसूमल वस्त्र बाँवै मौलीसे, पीठे ॥ नैनादिशि दिग्पालायनमः  
॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकमद्वय समेत नागरवेल्का पानः आदि  
सर्व द्वय चढावै, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक घरे अथवा एक  
दीपक आगै घरै ॥ इति दस दिग्पाल पूजनविधिः ॥

॥ अथ नव ग्रह पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ नैनामोआदित्याय सायुधाय सवाहना  
य सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुक  
चैत्यै अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ १ बलिपूजांगृहाण २ नदयमभ्युदय  
कुरु ३ अत्रपीठेतिष्ठ ४ स्वाहा नैनासूर्यायनमः ॥ ( एसापढकेजलचंदनादि  
अष्टद्वयचढावै ) ॥ १ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ नैनासायु सवा० स  
प० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० बलि १०  
नदय० अष्टपीठेति० स्वाहा नैनासायनमः ॥ २ ॥ अथ मंगल पूजा ॥

नैनामोन्नोमाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु०  
अमुकपू० आ० बलि० अत्रपीठे नदय० स्वाहाः नैनामायनमः ३ ॥  
अथ बुधपूजा ॥ नैनामोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अ  
मुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० बलि० नदयम० अत्रपी०  
स्वाहा नैनामायनमः ॥ ४ ॥ अष्ट वृहस्पति पूजा ॥ नैनामोवृहस्पतये  
सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुक  
पूजाम० आ० बलि० अत्रपी० नदय० स्वाहाः नैनावृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥  
अथ शुक्र पूजा ॥ नैनामोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं०  
द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० बलि० अत्र

पाठे उदयम० उंशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥  
 उंनमोशनिश्चराय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन०  
 अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ१ उदयम०  
 स्वाहा उंशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पूजा ॥ उंन  
 मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अनुकचै  
 त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० उंराहवेनमः॥८॥  
 अथ केतू पूजा ॥ उंनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मि  
 न्जं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे  
 तिष्ठ१ उदय० स्वाहा ए उंकेतवेनमः ॥ इति ॥ (इसी मुजब ऊपरलाल  
 वस्त्र मोलीसे बांधे पीठे नागरवेलके घान आदि अष्टङ्ग्य रोकन इय  
 समेत सांमने जेट धरे फेर एसा कहे ॥ उंनवग्रहायनमः ॥ च्यारों तरफ  
 नवदीपक वा एक दीपक सांमने धरे इति नवग्रह आपन पूजनविधिः  
 ॥ बाये तरफ मंरुलके नवग्रहकी आपना करे दहिणे बाजू वसदिग्पाल  
 की आपना करे ॥ जिस महोद्वामें इनोकी पूजा कराणी उस महो  
 द्वका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसें सीखणी ॥ शुद्ध जल  
 से पवित्रपणे बणायाजया सधवल्लीके या पुरषके हाथसे पांचरंग  
 के धानके बाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा  
 मालपूवा पांचरंगके लड्डु इत्यादिखाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें  
 सब इय एकठे करै उर घृत खान अत्तर गुलाबजल पंचरंगफूल  
 यदली बाकलोंमें मिलावे पीठे गुरु ३ तीन बार मंत्रके तीन बेर  
 बाकुलो पर वासहोप माले, ) अथ वासहोप मंत्र ॥ उंह्रांहीसवोप  
 इवर्विस्वरहस्ववाहा उंशमोअरिहंतांशं उंशमोसिद्धांशं उंशमोआ  
 यरिआंशं उंशनोउवज्ञायांशं उंशमोलोएसवसाहूयं उंशमोआगास  
 गामींशं उंशमोचारणलहींशं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुम  
 गंधर्व जस्क रस्कत पिशाच चूअ माइणप्पनइउ जिणघरनिवांसि

णा सन्निहिंयाथ तेसवेविलेवणा धूवपुष्पफलवडवसंयाहिं वलिपन्नि  
 ङंता तुष्किराज्वंतु पुष्किरा संतिकराज्वंतु सवजणकुर्वंतु सवजि  
 णाणं संहणप्पजावज पसन्नजावतणे सवत्थरक्कंतुकुर्वंतु सवडुरियाणी  
 नासंतु सवाशिवमुवसमंतु संतितु ण्णुडिसिवसत्थयणाकारिणोअज्वंतु  
 स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासकेपकूं मंत्रके बलबाकुलोमें  
 मालके सुद्ध करे ॥ पीठै आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके  
 वास्ते वस्त्रसें ढककर रखढोने. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर  
 इग्यारे स्नात्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चौटीके बाल खों  
 लकर बलबाकुल लेके पूर्वकी तरफ खमा रहे, २ दूसरा कैसरकी  
 कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चौथा अ्रेता, ५ पांचमा धूप  
 धाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा धंटा, नवमा  
 जलका कलश, १० दसमा बलबाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंग  
 लवाजित्र. इस तरे सब स्नात्रिये एकेक दिसाकी तरफ खमा रहै.  
 जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूकै तब क्रमसें जल चंदन फूल बर  
 कुलादिक चढावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र बजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसो  
 स्तु वलिपूजांप्रयञ्जतु ॥ १ ॥ ( एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ  
 बलबाकुल चढावै ) ( अग्निकूशके सामने ) ॥ सदाबद्धिविशो  
 नेता पावकोमेषवाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयञ्जतु ॥ २ ॥  
 ( एसा कह बाकुलादिष्ण्य चढावै ) ( दक्षिणदिशाकी तरफ ) ॥  
 दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥  
 ( बलबाकुल चढावै वाजित्र बजावै ) ( नैऋतकूशकी तरफ ) ॥  
 यमापरांतरालोको नैऋतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥  
 ( अथ पश्चिमदिशि ) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

( १८५ )

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ ( अथ वायव्यकूष ) ॥ हरिणोयाहनयस्य  
वायव्याधिपतिर्मस्तु संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ ( अथ उत्तर दिशि )  
॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥  
( ईशान कूष ) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य०  
वलि० ॥ ८ ॥ ( अथ अधोदिशि ) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म  
वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ ( अथ उर्ध्वदिसि ) ब्रह्मलोकवि  
भोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि  
ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ ओर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ जैनमोईशाय पूर्वदिग्अधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र  
नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्धे अमुं कन  
गरे अमुकचैत्ये अमुं रुमहोष्ठवे सर्वोपद्वाहलिरक्त१ गच्छ१ स्वाहा ॥  
पूर्वदिशाकी तरफ जैईशायनमः ॥ १ ॥ ( अग्नि कूष ) ॥ जैनमोअ  
ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०  
सर्वोपद्वाहलिरक्त२ गच्छ२ स्वाहा ॥ इति ॥ ( दक्षिणदिशि ) जैन  
मोयमाय दक्षिणदिग्अधिष्ठायकाय महिषवाहनाय दंरुआयुधाय कृष्ण  
मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्वाहलिरक्त१ गच्छ१ स्वा  
हा ॥ ३ ॥ इति ॥ ( नेरुतकूषे ) ॥ जैनमोनेरुताय खरुगहस्ताय  
सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्त२ गच्छ२  
स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ( पश्चिमदिशि ) ॥ जैनमोवरुणाय पश्चिम  
दिग्अधिष्ठायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु०  
सर्वोपद्वाहलिरक्त१ गच्छ१ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ ( वायवकूषे ) ॥  
जैनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु०  
सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्त० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

( उत्तरदिशि ) ॥ नैनमोधनदाय उत्तरदिग्धिष्ठायकाय नरवाहनाय  
 गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ२ स्वा  
 हा ॥ ७ ॥ इति ॥ ( ईशाणकूपे ) नैनमोईशानाय त्रिसूखहस्ताय  
 ईशानाधिपतये वृषजवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाह  
 लि० गच्छ२ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ ( उर्ध्वलोके ) नैनमोत्रह्मणे रा  
 जहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्०  
 अमु० सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ० स्वाहा ॥ ९ ॥ इति ॥ ( अधोलोके )  
 नैनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप०  
 अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाहलि२ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ ( इत  
 तरे पदे वाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढ़ै ॥ यथा ॥ शक्राद्या  
 लोकपालादिशिविसिगता शुद्धसद्धर्मशक्ताः, आयातास्त्रात्रकाले क  
 लुषहृत्किृते तीर्थनाथस्यज्जक्त्याः न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसु  
 खाः स्वरूपदंसांप्रतंते, स्त्रात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदोयांतुकळ्याण  
 ज्ञाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वंक्षम  
 तंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि  
 पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीठे यथाश  
 क्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश  
 दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्त्रात्रिया मंत्रितजलसें स्नान  
 करे ( जलमंत्र ) ॐ ह्रीं अमृतेश्वराय अमृतवर्षा अमृतंश्राव  
 य२ स्वाहा ( इस मंत्रसें जलमंत्रे, पीठे ) ॐ ह्रीं अमलेविमले वि  
 मलोन्नेवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाअशुचिशुचिज्जवामिस्वाहा (इस  
 मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे. पीठे ॥ ॐ ह्रीं आँ क्राँः॥ (सा  
 त वेर इस मंत्रसें बल्ल शुद्ध कर पहिरे पीठे ॥ ॐ आँ ह्रीं क्राँ अर्दते

नमः ) इस मंत्रसें सान वेर गुरु पाससें केसर मंत्रायके तिलक करै. ( पीठै ) ॐ ह्रीं अवतर २ सोमे २ कुरु २ वट्ठु २ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे ठैकवलीकः कः स्वाहा ॥ ( इस मंत्रसें मोली मेंढल मरोमाफली मंत्रायके हाथके बांधै तुर जब मंमलजीके च्यारुं तरफ मोलीमेंढल बांधे सोजी इसी मंत्रसें मंत्रायके बांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरुके सामने हाथ जोमके बैठे तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पढ़िली लिखा हे उससें तीन वेर पढेके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीठै तीन वेर नवकारमंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्नात्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंमलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्थ कराणी चाहिये. पीठै मंमलजीमें अधिष्टायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावै अष्टङ्ग चढावै. पीठै चंपेलीके तेलमें दिगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढावै, अतर चढावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकङ्ग इत्यादि सर्वङ्ग ( ठैक्षेत्रपाला यनमः ) एसा बोलता हुंवा चढावै. पीठै मंमलजीके दहसे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी आपना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढेके जल चंदनादि सर्व ङ्ग चढावै. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढेके ऊपर लाखवस्त्र मोलीसें बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीठै बायें तरफ नवग्रहके पट्टेकी आपना कर पूर्वोक्त काव्य पढेके इसी मुजब पूजा करै. ) पीठै सर्व स्नात्रिया कुं १७ स्तुतीसें देववंदावै.

अदारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पढ़ली इरियावही पन्निमें च्यार नवकारका कानसंग कर लागेस्त कदे. नीचे बैठके दहिणागोमा धरतीपर रखे के मावागोमा नमी भूत करके चैत्यवंदन करै,



( ३८८ )

नमोऽस्तु० कहेके अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्ति० अन्नहु० ?  
 एक नवकारका काउसगग करै, नमोर्हत्तु सिद्धा० कहेके यदंहीन  
 मनदेव शुईकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वदण० अन्नहु० एक  
 नवकारका काउसगग इस शुईकी दुसरी गाथा कहे, पुक्क  
 रवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काउसगग० शुईकी तीसरी  
 गाथा कहे, सिक्षाणंभुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका  
 काउसगग शुईकी ४थी गाथा कहे, पीठै बैठके नमोऽस्तु० कहेके खमा  
 हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाउसगगं वंदण  
 व० अन्नहु० ? नवकारका काउसगग कर० ॥ रोगशोगादिजिदोंपै रं  
 जितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विदितानतशांतये ॥ ( ततः  
 श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाउसगगं० ? नवकारका काउसगग )  
 ॥ श्रीशांतिजिनज्जाय ज्व्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांति  
 मपनीयते ६ ( ततः श्रीश्रुतदेवतानिमित्तं० ) सुवर्णशालनीदेयात्  
 द्वादशांगीजिनोद्भव श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥ (ततः श्री  
 ज्ञानदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णायकीस्तुति ? गाथा कहे ॥ (ततः  
 क्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्संति ? गाथा कहे ॥ ७ ॥  
 (ततः श्रीअंघिकादेवतानिमित्तं०) अंबानिहितमिंबामे सिद्धुत्तम  
 न्विता सितेसिंहेस्थितागौरी वितनोत्तुसमीहितं ॥ १० ॥ (ततः श्री  
 पद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा कुडो  
 पड्वतःसामां पातुफुल्लत्फणावलो ॥ ११ ॥ ( ततः श्रीचक्रेश्वरीदे  
 वतानि० ) चंचश्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निजा विरंचक्रेश्वरीदेवी  
 नंदतानिवज्राच्चमां ॥ १२ ॥ ( ततः श्रीब्रह्मादेवतानि० ) खड्गले  
 टककोदंरु वाणपाणिस्तमित्युतिः तुरंगममनाहुता कड्याषानिकरो  
 तुमे ॥ १३ ॥ ( ततः श्रीकुबेरदेवतानि० ) मथुरापुरीसुपार्थ श्री  
 पार्थस्तूपरकका श्रीकुबेरानगरारूढा सुतांकावतुवोजयात् ॥ १४ ॥

( ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि ) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया  
 द्वीरसेवकः श्रीमस्तस्यपुरेस्तया येनकीर्त्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥  
 ( ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि० ) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस-  
 दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ ( ततः श्रीशक्रा  
 दिसमस्तदेवतानिमि० ) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः  
 देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ ( ततः श्रीसिद्धायि  
 का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्तको काष्ठस्तगकर स्तुति  
 कहे ) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापातु  
 चक्रेचापेषुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्त कहके बैठे चैत्यवं० नमोबु०  
 जयवीरराय पर्यंत कहै ॥ इस तरै १८ स्तुतिसे देववांछन विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठाविधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी बत्ती जगाके घृतका दी  
 पक करै, इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखै ( पीठै ) सो  
 ने चांदी बगेरे के कलसमें अबोटजल जरके सोनवाणी करै, हाथमें  
 कलस लेके सात नवकार गुणै॥ नै ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु  
 स्वाहा॥ इस मंत्रसें सात बेर जलको मंत्रके मंमलजीके चारों तर  
 फ धारा देवे, ऊपर जरा गीटा देकर पवि करै, धूपखेवै ( पीठै )  
 नवतारी मोलीसूत्रका साढातीन आंटा मंमलजीके बाहर करदेवे,  
 पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली तथा मंडल मरोमाफली चारुं तरफ  
 बांधे ( पीठै ) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ नै आँ ह्रीं श्री अर्द्धतेनमः ॥  
 इस मंत्रसें मंत्रके मंमलके ऊपर केसरका गीटा देवे ( ऊपर ) चा  
 वलोंको साधियो करै, टीकीदेवे, मंमलके अगामी साधिया चाव  
 लोंका वा नंदावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर जेट धरै ( पीठै )  
 केशरचंदन लेकर मंमलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन क  
 रै ॥ ( पीठै ) वासुदेव पुष्प हाथमें लेके ॥ नै जूग्लीजूतधात्रीविश्वा

धारैः नमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंरुलजूमें तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरुवासकेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्द्ध त्पीठाय नमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंरुलपीठकी पूजा करे (पीठै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तोन बेर मंरुल कों बधावे. नीचे चावलोंका साधिया करके रुपिया नाखेर थापना कों धरे ( पीठै ) स्नात्रिया मंदरके ज़ीतरसे प्रतिमांजी लायके त्रिं गनेके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐ नमो अर्द्धत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिग्गुमरीपरिपूजिताय च तुषष्टिसुरासुरैर्हस्तेष्विताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति ४१ स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ४ बेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंरुलप्रतिष्ठा करके पीठै सिद्धचक्रपूजा सरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ७ कर्कैतनरत्न, ३४ होरा, पुष्प अर्कत फल नैवेद्य दीप धूप दारु-में ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै ( यथा ) अथाष्टदलमध्याब्ज क-र्णिकायां जिनेश्वरान् आविर्भूतोत्पलसहोधा नाग्रतः स्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषैर्धनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतुन् यजैसमस्ता तिशयैकहेतुन् श्रीमङ्गिनानां बुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्द्ध ज्ञयोनमः स्वाहा (इस मंत्रकूँ बोलके अर्द्धत्पदकी पुजा करै. अपने २ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीठै रकेबीमें लालगोटा, लालघडां लालवस्त्र, ७ मांणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्य पूर्वदले सिद्धान् सम्यक्तादिगुणात्मकान् निःश्रेयसपदं प्राप्तां नि दधेन्न किनिर्जरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रे शतितः प्रणष्टः दुष्टाष्टकर्ममधिग म्यथुदि प्रासान्नरान्तिस्त्रिमनंतबोधान् सिद्धान् यजेशांति करान्नराणां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धे ज्ञयोनमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

( ३९१ )

पूजा करै, सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीठै) रकेबीमें पीला गोटा,  
पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि  
सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै ( यथा ) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण  
स्मिन्इलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंस्त्युषैर्युतान् ॥ ५ ॥ सू  
रीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैकनिवा  
रणार्थं मन्त्र्यर्चयाम्प्रकृतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीच्योनमः स्वा  
हा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य आपना पूजा करै इति ॥ पीठै)  
हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालहु, ४ इंद्रनील, ५५ मरकतप  
न्ना, सर्व द्रव्य लेके खमा रहे, उपाध्याय पद पूजा पढे ( यथा )  
द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान्  
पवित्रेष्वश्वमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशान्त्यै पठंतियेन्या  
न्यपिपाठयंति अभ्यापकस्तांनपराञ्जपत्रै स्थितान्पवित्रान्परिपूज  
यामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेच्योनमः स्वाहा ( पश्चिमदि  
शाकी तरफ उपाध्यायपदकी आपना पूजा करै इति ॥ पीठै )  
स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उरुदकालहु, ५ राजपट्ट, २४  
अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै ( यथा )  
व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुभ्रध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतानवारान्  
साधुवासीसमुब्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वा  
द्दशधाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्प  
रिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुच्योनमः स्वाहा ॥ ११ ॥  
( उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी आपना पूजा करै इति ॥  
पीठै ) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६४ मोती, सर्व डव्य  
हाथमे ले के खमा रहे काव्य पढै ( यथा ) जिनेशोक्तमनश्चक्ष, ल  
क्षणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमयनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसद्वले ॥ ११ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः ( ईशानकूपमें दर्शनपदकी

( ३९५ )

आपनापूजा करै इति ॥ पीठै ) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा,  
श्वेतवस्त्र, चावलोकावहु, आदि सर्व द्रव्य ले खमा रहै ॥ काव्य  
पढै ( यथा ) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावज्ञासकं ॥ ज्ञानमाश्रयप  
त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ उँ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानायनमः  
स्वाहा ॥ ७ ॥ ( अग्निकूषकी तरफ ज्ञानपदकी आपना पूजा करै ॥  
इति ॥ ) फेर ) रकेबीमें ७० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वे  
तवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खमा रहे, काव्य पढै ( यथा ) सामायि  
कादिजिज्ञैदै, श्रारित्रं चारुपंचघा ॥ संस्थापयामिपूजार्थं, पत्रैर्हमैरु  
तेक्रमात् ॥ १३ ॥ उँ ह्रीं श्रीं सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा ( नैऋ  
तकूषकी तरफ चारित्रपदकी आपना पूजा करै इति ॥ ८ ॥ )  
पीठै ) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व  
द्रव्य लेके काव्य पढै ( यथा ) द्विधाद्वादशधाजिज्ञं, पूतेपत्रतपस्व  
यं ॥ निधाययामिज्ञत्तयात्र, वायव्यांदिशि शर्मदं ॥ १४ ॥ उँ ह्रीं  
श्रीं सम्यगुत्तपसेनमः स्वाहाः ( वायव्यकूषकी तरफ तपपदकी आ  
पनापूजा करै इति ॥ अथअर्थ ) निःस्वेदत्वादिविद्यातिशयम  
यतनन्श्रीजिनेद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्तादिप्रकृष्टाष्टकगुणजृदाचार  
साराश्वसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राखिरह्याप्रवचनरचनासुंदराण्यादिसंज्ञं,  
स्तस्मिद्धयैपाठकानांयतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं  
अष्टदलंपद्मं, पूरयेदर्हदादिजिः ॥ स्वाहांतैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्त  
ये ॥ १६ ॥ उँ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआलसा सम्यग्दर्शनं ज्ञानं चा  
रित्रं तपसेज्यो ह्रीं श्रीं अर्हं परमेष्ठिनं परमनाथं परमदेवाधिदेव  
परमार्हन् परमानंतचतुष्टयं परमात्मनेतुर्च्यननः ( इति मूलामंत्र )  
इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पहिले वलयमें एक तो बीचमें चार दिशिमें चार विदि

सोमे एते अष्टदल कमलके आकार नव कोठ मंमलके मध्य जाग  
में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावै ( पीठै ) दूसरे वलयमें  
चूमीके आकार १६ कोठा होय ( जिसमें ) एकैक कोठाके अर्ध  
तर आठ कोठोंमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करै ( ओर ) एकैक  
कोठा बीचमें खाली रहा हे उसमें अनाहतपद नै हौ एमो अरि  
हंताण ) एसा पद स्थापन करै ( पीठै ) एक रकेबीमें मिश्री ल-  
वंग ( तथा ) एक रकेबीमें मोटी दाखां ले के खना रहे. अनाहन  
पदमें मिश्री लवंग चढावै ओर आठ वर्गमें दाखां चढावै ( यथा )  
( नै हौ एमो अरिहंताण ) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई  
उ ऊ ऋ ॠ नृ नृ ए ऐ न औ अं अः ( नै हौ स्वर वर्गायनमः )  
( इहां ) १६ दाख चढावै २ ( नै हौ एमोअरिहंताण ) मिश्री  
लोंग ३ क ख ग घ ङ ( नै हौ व्यंजनकवर्गायनमः ) १६ दाख  
चढावै ४ ( नै हौ एमोअरिहंताण ) ५ च छ ज झ ञ ( नै हौ  
चवर्गायनमः ॥ ६ ( नै हौ एमोअरिहंताण ) ७ ट ठ ड ढ ण  
( नै हौ टवर्गायनमः ) ८ ( नै हौ एमोअरिहंताण ) ९ त थ द  
ध न ( नै हौ तवर्गायनमः ) १० ( नै हौ एमोअरिहंताण ) ११  
प फ ब ज म ( नै हौ पवर्गायनमः ) १२ ( नै हौ एमोअरिहंता  
ण ) १३ य र ल व ( नै हौ यवर्गायनमः ) १४ ( नै हौ एमो  
अरिहंताण ) १५ श ष स ह ( नै हौ शवर्गायनमः ) १६ पहिले  
अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोलेश दाख चढावै सब ए६  
( उर ) य र ल व १ श ष स ह २ इण दो वर्गोंमें ६४ चोसठ  
दाख चढावै इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ ( अब तीसरा वलयमें ) चार दिश चार विदिशिमें आठ  
परमेष्ठिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै इस आठ कोठाके  
बीचमें वलाका तीन देवे तीनु वलाकामे २४ खाना होय एके  
५०

कं खानेमें १ दोय १ दोय लब्धिपद स्थापन करणेतें चोबीस धरो  
में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अय लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्ठीपदमें ( ॐ ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा ) एसा  
८ वेर कदके ८ बीजोरा चढावै, उर लब्धिपदका नाम बोलके खा  
रका ४८ चढावै ( यथा ) ॐ ह्रीं अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं  
अर्हणमोउहिजिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपरमोहिजिणाणं ॥  
॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसबोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअ  
णंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोकुब्बुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं  
अर्हणमोवायबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥  
ॐ ह्रीं अर्हणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोदिठिविसाणं ॥  
॥ १० ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसंजिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोस  
यंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अ-  
र्हणमोबोदिवुद्धीणं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥  
ॐ ह्रीं अर्हणमोविज्जलमईणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोदसपूर्वीणं ॥ १७ ॥  
ॐ ह्रीं अर्हणमोचउदसपूर्वीणं ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअङ्गनिमत्तकु  
सत्ताणं ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोविज्जवणइद्धिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं  
अर्हणमोविक्कादराणं ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोचारणलक्षीणं ॥ २२ ॥  
ॐ ह्रीं अर्हणमोपप्सासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोआगासगामी  
णं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोस-  
प्पियासत्ताणं ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं अ-  
र्हणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसिद्धायणाणं ॥ २९ ॥  
ॐ ह्रीं अर्हणमोजयवयामहाइमहावीरवद्धमाणाबुद्धरिणीं ॥ ३० ॥  
ॐ ह्रीं अर्हणमोउगातवाणं ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअस्कीणमहाण-  
सियाणं ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोवद्धमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हण

भोदित्तवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोत्ततंतवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ-ह्रींअ  
 र्हणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ  
 -ह्रींअर्हणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरपरिक्रमाणं ॥ ३९ ॥  
 ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरबंजयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोआमोसहि  
 पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ-ह्रींअ  
 र्हणमोजल्लोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोविप्पोसहिपत्ताणं ॥  
 ॥ ४४ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोसबोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोम  
 णवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोवयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ-ह्रींअर्ह  
 णमोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ-ह्रींअर्हअरुयाललब्धिपेदज्योनमः ॥ इत  
 तरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका  
 चढ़ावै ॥ ( पीठै ) मंरुलजीके गलेमें -ह्रींकारजी स्थापन किया हे  
 ( जहांसे ) साढातीन नवलाका मंरुलजीके चोतरफ देके नीचै  
 ( क्रों ) एसा अक्षर लिखा हे ( जिसके ) प्रथम वलयमें आठे दि-  
 शायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दान्तिमफल चढ़ाव  
 ( यथा ) ॐ-ह्रींअर्हत्पाडुकाज्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढ़ावै ॥ ॐ-ह्रींसि  
 द्दपाडुकाज्योनमः ॥ २ ॥ ॐ-ह्रींआचार्यपाडुकाज्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ  
 -ह्रींगुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रींपरमगुरुपाडुकाज्योनमः ॥  
 ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रींअष्टगुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रींअनंतगुरुपाडु  
 काज्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ-ह्रींअनंतानंतगुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ  
 -ह्रींअष्टगुरुपाडुकाज्योनमः स्वाहाः ॥ इत तरे ठठे वलयमें ८ दा  
 न्तिम चढ़ावै ( पीठै ) सातमा वलयमें आठों दिशामें जयादिक ८  
 देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढ़ावे ( यथा ) ॐ-ह्रींजयायैनमः  
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ-ह्रींजंजायैनमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ-ह्रींविजयायैनमः  
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ-ह्रींयंजायैनमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रींजयंत्यैनमः  
 स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रींमोहायैनमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रींअपराजिता



यैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अं धायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ ( इसी  
 तरे ) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढ़ावै ( पीठे ) आठमें वलयमें  
 १६ बिद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके बर्ण लपेटी १६ सुपा  
 री चढ़ावै ( यथा ) ॐ ह्रीं रोहण्यैनमः ॥ १॥ ॐ ह्रीं प्रहसैनमः ॥ २॥  
 ॐ ह्रीं वज्रशृंगलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ ॐ  
 ह्रीं चक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं पुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं  
 काट्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं माहाकाट्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं  
 गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं गंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सर्वास्त्र  
 भद्राज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं मानव्यैनमः ॥ १२ ॥  
 ॐ ह्रीं विरोध्यायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अक्षुत्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं  
 मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं माहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे  
 आठमां वलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढ़ा के पूजा करै पी  
 ठे नवमें वलयके बायें तरफ शासनदेवीयां ॥ १४ की थापना  
 कर पूजा करै ॥ १४ धुंगीफल चढ़ावै ( यथा ) ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ १॥  
 ॐ अजितवलायैनमः ॥ २ ॥ ॐ डुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐ काट्यैनमः  
 ॥ ४ ॥ ॐ महाकाट्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ श्यामायैनमः ॥ ६ ॥ ॐ शांतायैनमः  
 ॥ ७ ॥ ॐ नृकुट्टियैनमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायैनमः  
 ॥ १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐ चंदायैनमः ॥ १२ ॥ ॐ विदि  
 तायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ कंदप्पाययिनमः  
 ॥ १५ ॥ ॐ मिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐ बलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐ धार  
 ण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐ धरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐ नरदत्तायैनमः  
 ॥ २० ॥ ॐ गंधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐ अंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्माव  
 स्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐ सिद्धाधिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ दक्षिणे त  
 रफ १४ यहराजकी स्थापना करै वरकलपेटी २४ सुपारी चढ़ावै ॥  
 ( यथा ) ॐ ब्रह्मशांत्यैनमः ॥ १४ ॥ ॐ पार्श्वायैनमः ॥ २१ ॥ ॐ गो

मेघायनमः ॥ २२ ॥ उँनृकुटयैनमः ॥ २१ ॥ उँवरुणायनमः ॥  
 २० ॥ उँकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ उँयक्षराजायनमः ॥ १८ ॥ उँगंध  
 र्वीवनमः ॥ १७ ॥ उँगरुणायनमः ॥ १६ ॥ उँकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥  
 उँपातालायनमः ॥ १४ ॥ उँषण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ उँकुमाराय  
 नमः ॥ १२ ॥ उँयक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥  
 उँअजितायनमः ॥ ९ ॥ उँविजयायैनमः ॥ ८ ॥ उँमातंगायनमः  
 ॥ ७ ॥ उँकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ उँतुंवुरुयैनमः ॥ ५ ॥ उँयक्षनाय  
 कायनमः ॥ ४ ॥ उँत्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ उँमहायकायनमः ॥ २ ॥  
 उँगेमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीठे चार दिशामें ४ द्वारपालकी  
 स्थापना कर के पीछा बलवाकुल चढावे ( यथा ) उँकुसुदायनमः  
 ॥ १ ॥ पूर्वदिशि ॥ उँअंजनायनमः ॥ २ ॥ दक्षिणदिशि ॥ उँवामनाय  
 नमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ उँपुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥  
 पीठे चार विद्विस्की तरफ च्यार वीरपदमें काले बलवाकुल चढावे  
 ( यथा ) उँमाणज्जायनमः ॥ १ ॥ उँपूर्णज्जायनमः ॥ २ ॥ उँक  
 पिलायनमः ॥ ३ ॥ उँपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ ( इस तरे दसमें बल  
 यमें आठ दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीठे पूर्ण कल  
 सके आकार ऊपरसे कियाज्या सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठि  
 काणे नवनिधान पढ़ै तब सोने चाँदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति  
 रोकनाणा मालके स्थापन करै ) ( यथा ) उँनैसर्पकायनमः ॥ १  
 ॥ उँपांडुकायनमः ॥ २ ॥ उँपिंगलायनमः ॥ ३ ॥ उँसर्वरत्नायनमः  
 ॥ ४ ॥ उँनहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ उँकालायनमः ॥ ६ ॥ उँमहा  
 कालायनमः ॥ ७ ॥ उँमाणवायनमः ॥ ८ ॥ उँशंखायनमः ॥  
 ९ ॥ ( इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीठे  
 कोहलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके बराबर पासमें वंगली  
 का आकार किया है ( जहां ) उँहोविमलस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ एसा

कइकेचढ़ावै ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के वांयेनेत्रके पास वंग-  
 लीमें ( उँहोत्रपालायनमः ) एसा बोलके चढ़ावै २ ॥ पीठै तीसरा  
 कोइलाफल ) हाथमें ले के नीचै पीँहिके दक्षिणे तरफ वंगलीमें )  
 उँचक्रेश्वर्यैनमः ( एसा बोलके चढ़ावै ॥ ३ ॥ ( पीठै ) चौथा को  
 इलाफल हाथमें ले के नीचे पीँहिके बाँये तरफ वंगलीमें ( उँअप्र  
 सिद्धसिद्धचक्राधिष्ठायकायनमः ) एसा बोलके चढ़ावै ॥ ४ ॥ ( पीठै  
 दसूं दिशामें इँझादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै, बरासकेतो अ  
 पणा ९ वर्षां मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि इव्य चढ़ावै अथवा सर्वकों  
 एक इव्य सर्व समान चढ़ावै ( यथा ) उँइँझायनमः ॥ १ ॥ कनक  
 वर्षां चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकइव्य आ  
 दि सर्व इव्य चढ़ावै ॥ ( अग्निकूपे ) उँअग्नयेनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्षा  
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ ( दक्षिणदिसि ) उँयमायनमः  
 ॥ ३ ॥ काले वर्षाका वस्त्रादि इव्य चढ़ावे ॥ ३ ॥ ( नैरुतकूपे )  
 उँनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्षाका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ( पश्चि  
 मदिश ) उँवरुणायनमः ॥ धूसरवर्षाका सर्व इव्य चढ़ावै ५ ( वा  
 यव्यकूप ) उँवायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्षाका वस्त्रादिक द्रव्य च  
 ढावै ॥ ६ ॥ ( उत्तरदिसि ) उँकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदव  
 र्षाका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ ( ईशानकूप ) उँइशाना  
 यनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्षाका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥  
 ( अथोदिसि ) उँनागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्षाका वस्त्रादिक इव्य  
 चढ़ावै ॥ ९ ॥ ( उर्द्धदिशि ) उँब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्षाका  
 वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढ़ावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्था  
 पन पूजन करै ॥ ( पीठै यंत्रके पीँदीके स्थानक नव कोठा किया  
 जया हे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै ( यथा ) उँसूर्यायनमः  
 लालवर्षाका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ १ ॥ उँसोमायनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ उँजोमायनमः ॥ ३ ॥ लीं  
 लरंगवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ४ ॥ उँमुंघायनमः ॥ ५ ॥ मूंगेरंग  
 का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ६ ॥ उँबुंदस्पतयेनमः ॥ ७ ॥ पीलेवर्ण  
 वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥ उँशुक्रायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णनंदोल  
 वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ १० ॥ उँशनेश्वरायनमः ॥ ११ ॥ नीलेरंग  
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ १२ ॥ उँराहवेनमः ॥ १३ ॥ कालेरंग  
 का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ १४ ॥ उँकेतवेनमः ॥ १५ ॥ गीटरंग व  
 स्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ १६ ॥ इस तरे नीचै नवग्रहकी स्थापनपूजा  
 करै, पीठै स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढ़ावै चैत्यवंदन कर शुद्ध क  
 रकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीठै गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर  
 वास्तुक्षेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीठै यथाशक्ति साथ  
 मी वास्तुछ्य करै ॥ इति मंगल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये  
 ( जब ) कोइ श्रीमंत मंडलीकी तपस्या करै तब तो छए महीने मं  
 गल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ १७ ॥ वरसे तप पूरण  
 जये बाद उँडव के साथ मंगलपूजा कराकें नव२ उपगणशेसे उ  
 द्यापन करै, जलजात्रादि अठारहमहोडव कर धर्मशास्त्रासिपागारै  
 ( फेर ) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च  
 ढावै, रुद्रिदित जावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढ़ावै ( उँर ) पंचा  
 यती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंगलपूजादिक नवपदपूजा  
 अवश्य विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणजस्वामीसर्वज्ञाय  
 नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

धनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा० ॥  
 ॥ ८ ॥ श्रीरुष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥  
 श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥  
 श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥  
 श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्री  
 अमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥  
 श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ स्तर्मेन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥  
 श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेंद्र  
 प्रज्ञसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त  
 सर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ रूपज्ञनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिज्ञद्रसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥  
 अजितज्ञद्रसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजे  
 श्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ घातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांति  
 सर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पुंजकेसीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥  
 ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमू  
 र्तिसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ आगमिकसर्वज्ञा०  
 ॥ १० ॥ कुक्तिनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥  
 महत्त्वनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ वलंमृत  
 सर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णमैत्रसर्व  
 ज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा०  
 ॥ १९ ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥ २०  
 २१ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीज्ञानुनाथसर्वज्ञाय०

॥ २३ ॥ श्रीप्रज्ञजलसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५ ॥  
 श्रीजलप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥  
 श्रीरुषिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुंगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री  
 वज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीनूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीती  
 र्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ ॥ घातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीनूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥  
 श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीपेश  
 नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्व  
 ज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाधोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ ९ ॥ श्रीनूमिपालसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा० ॥ ११  
 ॥ अतिव्युत्तसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥  
 श्रीतीर्थनूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंडसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीलमा  
 धिसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंडसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथ  
 सर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर  
 सर्व० ॥ २० ॥ श्रीवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २२ ॥ श्रीनयोत्तनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २४ ॥ श्रीकपिनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा० ॥  
 २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥  
 ॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥  
 ॥ ३० ॥ श्रीसहस्रान्नसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धमयमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजाविकुषिकसर्वज्ञा० ॥  
 ॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीपापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥  
 श्रीभृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीज  
 गत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाभ

हेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरज्जुतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार  
 चंद्रसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीवीरपेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ  
 सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलजद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय०  
 ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय  
 नमः ॥ १९ ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय०  
 ॥ २१ ॥ श्रीतुंदारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंडातपसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥  
 श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीमहा  
 यशसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीभोक्तृनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीप्रद्युम्नना  
 थसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २९ ॥ श्रीपुष्पकेतु  
 सर्वज्ञायनमः ॥ ३० ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीसमतकेतुस  
 र्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ५ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितिये महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र  
 नाजसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीवयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥  
 ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्री  
 वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजी  
 मनाथसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुजङ्गसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीजङ्गुप्तसर्व  
 ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुढधसदस्त्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व  
 ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा०  
 ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥  
 ॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मजुतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥  
 २४ ॥ श्रीवरूपादत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्तिसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥

नागेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतत्र  
ह्यनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध  
मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

( जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे जिननामानि ) श्रीअजिनाथसर्वज्ञा०  
॥ १ ॥ ( धातकीखंमेप्रथमभरते० ) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥  
( धातकीखंमे द्वितियभरतेजिननांम ) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥  
॥ ३ ॥ ( पुष्कराद्वेप्रथमभरतेजिननांम ) प्रज्ञासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४  
॥ ( पुष्कराद्वेद्वितियभरतेजिननांमः ) प्रज्ञावकनाथसर्व० ॥ ५ ॥ ( जं-  
बुद्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननांम ) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ ( धात  
कीखंमेप्रथमएरवतेजि० ) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ७ ॥ ( धातकीखंमे  
द्वितियएरवते ) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ ( पुष्कराद्वेप्रथमएरव  
तेजिनना० ) आम्नाहिकसर्वज्ञाय० ॥ ९ ॥ ( पुष्कराद्वेद्वितियएरवतेजि० )  
श्रीवलिभद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥ इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका  
गुणना संपूर्ण ॥ १६ स्याम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५०  
श्वेत, सर्व संख्या १७० ॥

॥ अय सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद ॥ त-  
रपद नामी रुंधरा, कारण सिव सुखकंद ॥ १ ॥ वाङ्मयासरदातणो,  
उर धरे समरणा शक्ति ॥ सद्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु  
चि जक्ति ॥ २ ॥ ठे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाज ॥  
पूर्वापर जवि तेहनें, विजय नामको लाज ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु  
प्रतिदिशा, कयनामें युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि  
श्वावीस ॥ ४ ॥ खंरु धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन  
गिरि युग ठे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जां



णिये, द्वीप सकल गुणखांख ॥ अर्थ ज्ञाग जसु उत्तमें, त्रिरि युग  
 जलद समान ॥ ६ ॥ ज्ञोन्नवि संख्या विजयनी, प्रति मेरौ बत्तास  
 ॥ धारो गणित अनुक्रमें, षष्ठ्युत्तर शत हींस ॥ ७ ॥ एह अढाइ  
 द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्थ तिदां सदा, ज्ञाण्यो  
 श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थकर वारके, विचरया जे जिनरा  
 थ ॥ ते हूं प्रति विजये ज्ञाणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥ (हाल  
 पारणोकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थकर महाराज ॥ अ  
 जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ ज्ञविकजन ध  
 रज्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वां  
 णी गुणपैतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नरसुर ईस ॥  
 ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि  
 चरया महियल बोधता जी, विजय मऊर सज्जंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥  
 पंच२ ज़रतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन ता  
 रता जी, समरयां संपति थाय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन  
 वरू जी, अतुल सकल गुणखान ॥ श्यांमवरण सोले कह्या जी,  
 अकल कला द्युतिवान ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कह्या जी,  
 नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम ऊलखह ज्ञाथरू जी, कनकवर  
 णा बत्तीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित  
 विमल प्रकाश ॥ ज्ञविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पञ्चा  
 स ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासणी जी, बीस प्रमित  
 जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुज्जातमां जी, वरिये ज्ञाव विशाल ॥  
 ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण दुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥  
 कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी ज्ञक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ९ ॥ ए त  
 पविधि ज्ञवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ  
 नुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत् मूनि सर लोक नारद चंद्र ज्येष्ठ पशुर ए, वदि सप्तमी रवि  
दिने हितवस्त्रज कथनधर जूर ए ॥ गुरु खरतरांबर तरणि सन्नि-  
ज जैनचंद्र सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद्र कपूर ए  
॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती-मतिज्ञानावरणीरहितायश्री  
सिद्धान्तनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धान्तनमः २, अवधि  
ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणीरहितायश्रीसि  
द्धान्त ४, केवलज्ञानावरणीरहितायसि० ५, ( दर्शनावर्णकर्मकी नव  
प्रकृती ए )-चक्षुदर्शनावर्णरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावर्ण  
र० ७, अवधिदर्शनावर्णर० ८, केवलदर्शनावर्णर० ९, निष्कार्म  
रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच  
ला० १३, धीणद्धी० १४ ॥ ( वेदनीकर्म की प्रकृति २ )-समावे  
दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, ( मोहनी  
कर्म की प्रकृती १८ )-सम्यक्तमोहनीर० १७, मिश्रमोहनीरहिताय  
१८, मिश्र्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु  
बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २१, अनंतानुबंधिलोचनर०  
२२, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २३, अप्रत्याख्यानीमानर० २४, अप्रत्या  
ख्यानीमायार० २५, अप्रत्याख्यानीलोचनर० २६, प्रत्याख्यानीक्रो  
धर० २७, प्रत्याख्यानीमानर० २८, प्रत्याख्यानीमायार० २९, प्रत्याख्यानीलोचनर० ३०,  
प्रत्याख्यानीलोचनर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलनमानर० ३३,  
संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोचनर० ३५, हास्यमोह  
नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, जयमोह  
नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, डुंगमोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर०  
४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४ ॥ ( आयुर्कर्मकी प्रकृति ।

४ )-देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यचायुरहि० ४७, नरकायुरहि० ४८ ॥ ( नामकर्मकी प्रकृति १०३ )-देवगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, ऐकंद्रीजातिर० ५३, वेइंद्रीजातिर० ५४, तेइंद्रीजातिर० ५५, चौरेंद्रीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीरर० ५८, वैक्रियशरीरर० ५९, आहारकशरीरर० ६०, तेजसशरीरर० ६१, कर्मणशरीरर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदास्किबंधनर० ६६, औदारिकतेजसबंधनर० ६७, औदारिककर्मणबंधनर० ६८, वैक्रियबंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकर्मणबंधनर० ७०, आहारकबंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारककर्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकर्मणबंधनर० ७५, वैक्रियतेजसकर्मणबंधनर० ७६, आहारकतेजसकर्मणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कर्मणकर्मणबंधनर० ७९, तेजसकर्मणबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कर्मणसंघातनर० ८५, वज्ररुषज्जनाराचसंघयणर० ८६, रुषज्जनाराचसंघ० ८७, नाराच० ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्तसंघयणर० ९१, समचतुरस्त्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुञ्जसंस्थानर० ९६, हुंरुक्कसंस्थानर० ९७, ऋष्यवर्षारहि० ९८, तीक्ष्णवर्षार० ९९, लोहितवर्षार० १००, पीतवर्षार० १०१, स्वेतवर्षार० १०२, सुरज्जिगंधर० १०३, डुरज्जिगंधर० १०४, तिक्तसर० १०५, कटुकसर० १०६, आम्लसर० १०७, कषायसर० १०८, मधुरसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, ज्वरीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, परखराफरसर० ११४, सुक-  
 मालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितया०  
 ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्यचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वी  
 र० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुजविद्यायोगति १२२, अशुज-  
 विद्यायोगतिर० १२३, पराधातनामकर्मर० १२४, कृतासनामकर्म  
 र० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अ  
 गुरुलघुनामकर्मर० १२८, तीर्थीकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनाम  
 कर्म १३०, उपधातनामकर्मर० १३१, त्रसनामकर्मर० १३२, बाद  
 रनामकर्मर० १३३, पर्यासिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म  
 १३५, धिरनामकर्म १३६, शुजनामकर्म १३७, सौजाग्यनाम  
 कर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०,  
 यशनामकर्म १४१, आवरनामकर्म १४२, सूक्ष्मनामकर्म १४३,  
 अपर्यासिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अधिर  
 नामकर्मर० १४६, अशुह्यनामकर्मर० १४७, दौर्जाग्यनामकर्मर०  
 १४८, दुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अथश  
 नामकर्मर० १५१, ( गोत्रकर्मकी प्रकृति २ ) ज्यैर्गोत्र १५२, नी  
 ज्यैर्गोत्र १५३, ॥ ( अंतरायकर्मकी प्रकृति ५ ) दानांतरायकर्मर०  
 १५४, लाज्जांतरायकर्मर० १५५, जोगांतरायकर्मर० १५६, उप  
 जोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥  
 ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयमीरो गुणानो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयही स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंजव जिनराज ॥  
 मूलकरम उत्तर पगड़, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकुं  
 क्षय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदा  
 नंद विदधन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयनि विस्ता

ર ॥ વરણું જીવિજન હિતજીણી, પ્રવચનને અનુસાર ॥ ૩ ॥ (દાલ ॥  
 ॥ રામચંદ્રકે વાગ એ દેશો) ॥ અષ્ટ કર્મ તીર્થેશ, નામે જિન્ન કહ્યા  
 રી ॥ હેયવસ્તુ પરિત્યજ્ય, આતમગુણ ગ્રહ્યા રી ॥ ૧ ॥ નાણ દંડાણ  
 આવર્ણ, વેદની મોહ વૂરો રી ॥ આઠલો નામ કર્મ, કર્મતરાય ચૂરો  
 રી ॥ ૨ ॥ જ્ઞાનાવરણી કર્મ, દર્શનાવર્ણતથો રી ॥ વેદનીય અંતરાય,  
 તીસ કોનાકોનિ જાયો રી ॥ ૩ ॥ નામકર્મ ગોત્રકર્મ, વીસ કો-  
 નાકોનિ હુવે રી ॥ આયુ સાગર તેતીસ, હિવ મોહનીય થુવે રી ॥  
 ॥ ૪ ॥ સત્તર કોનાકોનિ સાગર માંન જાયો રી ॥ એ ઉત્કૃષ્ટ  
 શ્રિતિ જોન, કેવલી કાલ ગણ્યો રી ॥ ૫ ॥ જથન્ય સ્થિતિ પંચકર્મ,  
 અંતરમુદુર્ત્તપણો રી ॥ નામ ગોત્ર દોય કર્મ, આઠ મદુર્ત્ત ગણો રી ॥  
 ॥ ૬ ॥ અકપાય વેદની વર્જ્ય, વેદનો કર્મ વદે રી ॥ વારે મહુરત  
 માંન, શાસ્ત્રાનુસાર મુદે રી ॥ ૭ ॥ નાણાવરણ અંતરાય, પંચ જેદ  
 જુદા રી ॥ વેદનીય ગોત્ર કર્મ, દો દો જેદ જુદારી ॥ ૮ ॥ દર્શના  
 વરણ નવ જેદ, આયુ ચ્યાર વિવે રી ॥ મોહ કર્મ અનવીસ, સૌ ત્રિક  
 નામ સધે રી ॥ ૯ ॥ એકસો અઘાવન્ન, ઉત્તર પ્રકૃતિ કહી રી ॥  
 અષ્ટ કરમના જાણ, સર્વે વિકલ્પ સહી રી ॥ ૧૦ ॥ દાલ ॥ નણ  
 દલ ચુમલે જોવન જિલ રહ્યો ॥ એ દેશી ॥ પાટે સમ જ્ઞાનાવરણ  
 ઠે, દર્શનાવરણ પ્રતીહાર, જીવિયણ કર્મ વિવેચન કીજયે ॥ મધુ  
 લિસા અસિધારાની પરે, વેદની કર્મ મુદાર ॥ જીવિય ॥ ૧ ॥ મ  
 દિરાઠાક સમાન ઠે, મોહ સુજટ મહારણ, જીવિ ॥ જોને બંદીલાંન  
 સારલો, આયુકર્મ પ્રમાણ ॥ જ ૦ ક ૦ ॥ ૨ ॥ ચીતારે સમ નાંમ કહીજે,  
 ગોત્ર કુંજાર સમાંન, જ ૦ ॥ શ્રીધર જંફારી સમ લાલ્યો, અંતરાય  
 કુખ્યાંન ॥ જીવિ ૦ ક ૦ ॥ ૩ ॥ અષ્ટ કર્મ એ જાવના, વીર વદે વ્યા  
 રુયાન, જ ૦ ॥ કર્મ સંસાર સ્વરુપ ઠે, અકરમ સિદ્ધિ સુધાન ॥ જ  
 વિ ૦ ક ૦ ॥ ૪ ॥ નિજ સાસાડન મિત્રા રિતિ, દેસવિરિતિ પ્રમત્ત,

ॐ ॥ अग्रमत्त गुण अंत सबीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ ज० क०-  
 ॥५॥ अपूरव अनिवृत्ति गुणमें, आयुं वरज संत बंध, ज० ॥ सुद्रुम-  
 संपराय दशशम ठाणें, बिन मोहायुं षट खंध ॥ जवि० क० ॥ ६ ॥  
 उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंधे उदार, ज० ॥ अयोगी गुण  
 चवदमें, नही बंधत कर्म द्वार ॥ ज० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु  
 कहुआ, मिथ्यात अविरत जोय, ज० ॥ क्रोध प्रमुख कषायशी, यो  
 य युगत च्यार होय ॥ ज० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म  
 स्थिति पद लेय; ज० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति वेद ज्ञेय  
 ॥ जवि० क० ॥ ए ॥ कम्मपयमी कर्मग्रंथमें, कर्मतणो निरधार,  
 ज० ॥ बंधे सत्ता उद्दीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ जवि० ॥ क०-  
 ॥ १० ॥ इकसो अठावन अथा, चउत्थजत तप सार, जवि० ॥ त  
 प उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ जवि० ॥ क० ॥ ११ ॥  
 अष्ट ज्ञानोपगरण जला, अष्टगंगल वृद्ध आल, जवि० ॥ वात्सल्य  
 चउविह संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ ज० ॥ क० ॥ १० ॥ इच्छा  
 रोधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, ज० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम  
 लही, शिवरमणी जरतार ॥ ज० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिन-  
 चंद सूरि मुखिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु वचने  
 स्तवन कीधो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निधेक वरषे विशद  
 फाल्गुन द्वादशी, उवजाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित्त  
 नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयमी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवर ममी, पंच परमेष्ठि सार ॥ परम  
 मंत्र नवकारनी, महिमा जणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर  
 आर्य सुदस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरबंतणो,  
 नव निधि सिद्धि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जात, संकट तब

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमस्तव वरेण विख्यातं,  
 सात गुरु अक्षर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप,  
 जाये अस्कोरे, संपूरण पांचसैं मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर द्वीपार्द्ध,  
 सिद्धावट गांम, पासे परबत कंदरा ए ॥ चोमासी पञ्चस्काण, करने  
 तिहां रह्या, दमसार नांमे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ जील जीलणी वेअ,  
 मन सुध जावसुं, नवकार मुनि पासे जणी ए, बीजे जव राज-  
 सिंद, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रत  
 नपुरी यसोज्झ, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति  
 आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुणबहु जणूं ए ॥ ५ ॥  
 एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धरयो ए ॥  
 नवकारने परजाव, सबल संकट टळ्यो, सोनापुरसो तिण करयो ए ॥  
 ॥ ६ ॥ ढाल १ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री  
 नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुज गामो जी ॥ सेठ सु-  
 जद्र तणी सुता श्रीमती, आविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥  
 मिश्यामते किय एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम  
 न मूके हणिये मन धरी, कलसमें मूक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥  
 साप फीटीने फूलमाला अई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिठने  
 कुटंव सद्गू प्रतिबूज्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥  
 कितिप्रतिष्ठित बलराजा तिहां, इक दिन वूठो मेहो जी ॥ नदीपूर  
 बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद  
 लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर जहू करे  
 नरने तिहां, ये बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी  
 जिनदाससेठनी, आवक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार जण बीजोरो  
 अहो, बूज्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल १ ॥ नमणी  
 खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितदात्र राया,

ज्ञवा नामे नारि सुहाया ॥ चंरुपिंगल चोरथो नृप हारा, गणिका  
 ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरथो हार ते जाणी, सूखी  
 दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पढतावे, चोर समीपे  
 ढानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रजावे वंजित  
 सीधो, नृपने घर सुत अइ अवतरियो, पापी चोर एखे ऊधरियो ॥  
 ॥ ३ ॥ मधुरानगरी जिशदाससेठ, तिहां किण हुंरुक पापनी डेठ ॥  
 एकदा चोरी करतां जाड्यो, राजा हुकमें सूखी घाड्यो ॥ ४ ॥  
 हुंरुक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार  
 दीधो उपगार आंशी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणो ॥ ५ ॥  
 चंपानगरीमें जे कीधूं, सुजडा सती निकलंक प्रसीधूं ॥ श्रीनवकार  
 प्रसाद ते जांणो, मनमें एहनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥  
 चरतनृप ज्ञावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिम करी ए, वांजल।  
 वांधी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृद्ध उपानी चलावियो ए,  
 अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाठरूया एक चारतो ए,  
 नदिय प्रवाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो  
 ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ इत्या चार करी हवे ए, वली करया पाप  
 अनेक, न० ॥ डुटकरबारो एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥  
 ॥ ४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणो मनरंग, न० ॥ ती  
 र्थकर पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन २  
 अधिकी संपदा ए, मनवंजित सुख आय, न० ॥ दयाकुसल वाचक  
 वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका  
 चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुजदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे. जिस पदका  
 जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका १२००,०१



गुणानां करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ एमोअरिहंताणं ॥ उपवास ३ ॥  
 २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आयरियाणं ॥ उपवा-  
 वास ३ ॥ ४ । एमोउवझायाणं ॥ उपवास ३ ॥ ५ । एमोलोए  
 सवसाहूणं ॥ उपवास ६ ॥ ६ । एसोपंचनमोकारो ॥ उपवास ७ ॥  
 ७ । सवपावप्पणास्तणो ॥ उपवास ७ ॥ ८ । मंगलाणंचसवेत्ति ॥  
 उपवास ७ ॥ ९ । पढमंदवइमंगलं ॥ उपवास ९ ॥ एते नवकार  
 मंत्रका ६७ उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वरानवकार अथवा ऊपर  
 लिखा सो स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेतें यथाशक्ति नवपदका  
 उच्चव करे. चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रज्ञावसें अनेक  
 सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिष पयकमल सुज्जवाव सवि जिनतणा, पंच कल्याण  
 दिणं जणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कचीतयै पस्सि पंचमि दिणै,  
 नाण संजवतणौ खयकरम चिहुं तणैः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण  
 सुरजवणथी बारसै, पञ्चमपद् जम्म वलि दिस्क तसु तेरसै ॥ वीर  
 सिवमां वसै पस्सि दिव ऊजलै, नाणसिरि सुविधि अर तीज बार  
 सि मिळे ॥ २ ॥ ज्ञास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि  
 थो, सोइ ठहै रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे सं-  
 यम आदरथौ, इग्यारसि रे उपमप्पद् सिवसिरि वरथौ ॥ सिर वरथौ  
 मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति  
 पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसै वलि  
 मल्लिजिणने जम्म दिस्क सुनाणीया, वलि मल्लि दिस्का नाण ठहै  
 अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संज्ञा  
 धियै, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण जावियै ॥ ते परि सक्कि रे गीता-  
 रथ सदगुरु लहै, श्रुतकेवल रे वचन सह सम सहदे ॥ सहदे

सहूये ते प्रमाणजि बलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कढ्याणिक  
 चउदसि जनम संजवनों धुणौ ॥ पूनिमें संजव दिस्का पांमी दया  
 धरि जगजोवनी, दिव पोस वदि दसमी इग्यारस जनम दिस्का  
 पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, बलि तेर  
 सि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशोतल अयो के-  
 वली, पोसह सुदि रे ठह विमल नाणी वली ॥ नाणी बलि थयौ  
 नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अजिनंदनें केवल पूनि  
 मै धम्मैं वसें ॥ माहाइ ठे पन्थ चवियो बारसें शीतल अयो,  
 बलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥  
 अम्मावसि रे दिवसें नाण इग्यारमें, जिन पांमी रे माहसुद्धे दिव  
 अनुक्रमें ॥ सित बीजे रे अजिनंदन वासुपूजनों, कढ्याणकरे ज  
 नम गंश अनुक्रम मनों ॥ अनुक्रमें मानों बिहू बीजे विमल धरम  
 सुजामिया, श्रीविमल दिस्का चउथि अठमि अजित उतपति पांमि  
 था ॥ नवमियें दिस्का अजित पांमी बारसें अजिनंदनें, श्रीधर्मनाथें  
 सार संयमतिर वरि तेरसि दिनें ॥ ६ ॥ ज्ञास ॥ फागुण वदि ठे सुपास  
 केवलतिरि पत्तो, सत्तम बलि तसु मुगति चंडप्रभु नाणें जुत्तो ॥  
 नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुद्वय नाण  
 जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि वंत सिद्धंत तयो चवदस वसु  
 पुज्ज, जम्म हुठ अम्मावसें ए तसु संजम रज्ज ॥ सुकल बीज चउथि  
 अठमियें अर मल्लि संजव, चवण सुबारसि मल्लि मुगति सुद्वय वय  
 उज्जव ॥ ८ ॥ ( ढाल फागनी ) चैत्र पढम पस्कि चउथि नाण च  
 वण पासस्त, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्त ॥  
 बलि संजम पिण रिसहस्तांमि अठमि आदरियो, धवल तीज दिव  
 कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत अने सं  
 जवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नाण बलि पांम्यो सुमनि ॥

॥ त्रिशलादेवे वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमना  
ह केवलसिरि पायो ॥ १० ॥ जास ॥ हिव वैसाख वंदेपनिवा दिन,  
कुंथु सिद्ध शीतल बीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ ठेठे, श्रीशी  
तल अवतरियो, दशमैं नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम  
अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिस्का नाण अणंतह, जनंम हुठ श्रीकुंथु  
जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अजिनंदन उत्तम, ध  
रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउठ ॥ १२ ॥ सुम  
तिनाथ अठमिये जायो, नवमैं संयम सांमे पायो, गाथो धरि आ  
णंद ॥ दशमैं नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वा  
मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण प्रस्कि  
ठठ, चवियो सेयंस, अठमी सुवय जनमियो ए ॥ नवमि सुगति  
सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुठ ए ॥ धरमनाथ  
सिव पत्त, धवली पंचमैं, नवमैं वसुपुक्क अवतस्थो ए ॥ श्रीसुपास  
जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥  
जास ॥ हिवै असाढ वदि चउथि रिसहेस, चवण सत्तमिहि सिरि  
विमल ॥ मुखं नवमि नमि वय गहण, सेय ठेठे चवण ॥ वीरनी  
अठमि नेमि मुख चवदसें श्रीवसुपुक्क जिणंद, ठ सय वर साधु  
कर परवस्थो ए ॥ बहुतर वरस लख पुरि चंपापुरें, करमदणि सुग  
ति रमणी वस्थो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि हिव तीज सु  
गति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविठ अणंतनाह अठमि नमि जा  
मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुठ अह निम्मल बीजे, सुमति  
चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म जणीजै ॥ १६ ॥ ठेठे मुनिवर ने  
मि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिसुवय पूनिमरयणि, चविठ गु  
णमणि वास ॥ १७ ॥ जाइव वदि सत्तमैं संति सति चवण जव  
स्कय, अठमि चविय सुणस नवमि सुदि सुविभ सिवंगय ॥ हिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर गध ॥ हरण अम्मावसी  
 ए, नांणी नेमीसर ॥ १८ ॥ पुनिम नमि जिणवर चविय, इण  
 पर बारह मासिं ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कळयाणक रासि  
 ॥ १९ ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दि  
 ने, अरिहंत जत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनें ॥ कळयाण नीते  
 कोमि पांमी अनुक्रमे सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी  
 एह कळयाणक कहे ॥ २१ ॥ इम पांच जरते ऐरवत करि एक  
 दिन जिनवरतणा, दस कळयाणक हुवे इण दिन सुर करे उज्जव  
 घणा ॥ जिम दूआ ते तिम वली होस्से पंच कळयाणक सदा, श्री  
 पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २१ ॥ इति श्रीपंच  
 कळयाणक स्तवनं ॥

॥ अथ रुषिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ प्रथम आद्यंताकर संलक्ष० यह रुषिमंडल स्तोत्र धूप  
 दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रजात समय सुषै. रुषिमं  
 रुलमें जो मूल मंत्र हे सो शुज्ज दिन शुज्ज घमी हाथमें फल  
 फूल जेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. जेट धरके वि-  
 नय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करै. उसका ८००० आठ हजार जाप  
 आठ महीनेमें करे. आंबिलकी शक्ति होय तो हमैस करै, नहीतो  
 आठम चौदस दो आंबिल जरूर करे. आठ महीने बाद ऊजमणा  
 करै. ऊजमणोके दिन एकसो आठ बेर सुषै. पीठै शक्ति होय तो  
 विधि संयुक्त रुषिमंडल स्थापन करायके पूजा करै. विशेष जक्ति  
 करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुजत्की करे, सादमीबन्धन करै.  
 विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ रुषिमंडल सुणणेवाले पूजणेवा  
 ले जव्यजीवके घरमें कच्ची उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उच्चाहरहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल जरी संपुट यत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

कृष्ण चरण अंगूठनो, दायक जवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का  
 उत्सर्ग रह्या, विचर्या देस विदेस ॥ खनां२ केवल लह्यो, पूजो  
 जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥  
 कर कंठे प्रभु पूजना, पूजो जवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दोय  
 अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, जुजाबले जवजल तर्या, पूजो खंध म  
 हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण कजली, सकल सुगुण विसराम ॥ ना  
 निकमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदयकमल  
 उपशम बले, बाल्यो राग ने छेप ॥ हेम दहे वनखंमने, हृदयक  
 मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देह देसना, कंठ विवर वरतूल,  
 मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तर्ककर पद  
 पुन्यथी, त्रिजुवन जन सेवंत, त्रिजुवन तिलक समा प्रभु, जाल  
 तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिला गुण कजली, लोकांतिक जगवंत ॥ ९ ॥  
 सिया तिण कारण विभू, शिरशिखा पूजंत ॥ १० ॥ उपदेशक नव  
 तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध जावथी, कहे शुभ  
 वीर मुखंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन हुदा ॥

### ॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवमा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें  
 परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रहे,  
 जल विन कुंज न होय ॥ ज्ञाने बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न  
 होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे  
 गुरुवाणी वेगला, रमचमिया संसार ॥ ३ ॥ जावे जिनवर पूजिये,  
 जावे दीजे दान ॥ जावे जावना जाविये, जावे केवलज्ञान ॥ ४ ॥  
 पांच कोमीने फूलने, पांथ्या देश अढार ॥ राजा कुमारपालने, व  
 रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवन्दन, नव स्तवन तथा नव थुई ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवन्दन ॥

जय२ श्रीअरिहंत ज्ञानु, जविकमल विकासी ॥ लोकालोक  
अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्धात शुभ्र केवलै, कथ  
कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसें, जयो वर अविन्यासी ॥  
॥ २ ॥ अंतरंग रिपुण्य हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद  
पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिं नाम-  
तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री  
तेरम गुण बलिके कंत, कर्मकुं जंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥  
अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारणी होवे हीनि ॥ म० ॥ १ ॥  
बादरकायें मन वच जोग, तनु२सैं फुन हट तनुयोग ॥ म० ॥ सुह  
मकायतें मन वच रोक, मिज चीथैं ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥  
संझी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि  
समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥  
॥ ३ ॥ एषां योगणी समयें एक, होना संख गुणो कर ठेक ॥ म० ॥  
समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥  
वेदसमेनाहारता पात्य, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें  
गुणमें गुण समै देव, आपो ता जगकुं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥  
इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल  
ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणो करि पूरो जी ॥ ताजै जव  
पानक आराधी गोत्र तीर्थकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा अ  
रिहंत आराधो गुण जूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीशैलेशी पूर्वे प्रांत, तनुर्दिनत जागी ॥ पुढ पन्थपसंग  
सैं, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय, एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण  
निरागी ॥ चेतनचूषे आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल  
दंशानाणथी ए, रूपातीत स्वज्ञाव ॥ सिद्ध जये तसु हीरधर्म,  
वंदे धरि शुभ्र ज्ञाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थारि महिलां ऊपर भेह धरोलै वीजली, ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें, म्हा० लाल ही० ॥  
उत्कृष्टो करै वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै  
जवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलै गुण श्रेणिता,  
म्हा० दलै० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा०,  
र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे  
नगरऊर्से अक्रिय होयने, म्हा० अ० ॥ पुढ पयोग असंग स्वज्ञाव-  
अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इहु गुण नव परमाण योजन लहै  
कही, म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदाज्ञास निरालंबन सही, म्हा०  
नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मही प-  
क्षी हीन जणी सिद्धांतमें, म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनुपञ्चारा नाम  
सिलासैं जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें ज्ञाग अलोककुं स्प-  
र्शनैं, म्हा० अ० ॥ लघु-अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहणा, म्हा०  
प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासैं हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥  
मिलिया एकमेंनंत अबाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि  
रम्य सिरिहो जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म  
नगदमें, म्हा० ध० ॥ कुशल जये जगजीव मिलोगा तेदमें, म्हा०  
मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद धुई ॥

अष्ट करमकुं धमन करीने गमन कियो शिववासी जी, अ-

व्याबाधे सादि अनादि चिदानंद चिद्रससी जी ॥ परमात्मपद पूर-  
ण विलासी अघ घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव  
पद ध्यावो केवलज्ञानी ज्ञासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद शुद्धि ॥

॥ अथ तृतीय आचार्य पद चैत्यवन्दन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥  
प्रबल सबल घन मोहकी, जिणतें चमुहारी ॥ १ ॥ रुज्ज्वादिक जि  
नराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ जवकूपें पापें परत, जगजन  
निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं  
वंदे हीरधर्म, अघोतर सौ वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अग्न आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल बीदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खरुगथी जेषो, हणयो क्रोध सुजट सम देणो हो, गण  
पति गुणपेखी ॥ टेरा ॥ मान महा गिरि वयरे, अति शोजन महव वयरे  
हो ॥ ग० ॥ १ ॥ दंजरूप विसवेली, वर अज्जवकीलै ठेलो हो ॥ ग० ॥  
मुर्छावेलथी जरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन  
नाग मद हीनो, जिण दमसम जंत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहा  
मल्ल ताड्यो, पुण वैराग मुगर्गे पाड्यो हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दोस गबंध  
वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु जेया,  
सुरवर पिण जिण शिषेया हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस कति गुणथी लीणो,  
सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जी  
व कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद शुद्धि ॥

॥ पंचाचारकुं पाळै उजवाळै दोष रहित गुणधारी जी, गु  
ण ठत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन  
मोह हरणकुं अनिल समो गुण वाणी जी, कमा सहित जे संज  
म पाळै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति शुद्धि ॥



॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवन्दन ॥

॥ धन धन श्री जवज्जाय राय । सठता धन रंजन । जिन वर विसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण जं जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंध लोय लोयणें । जत्थय सुय मंजण ॥ २ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसें पद तुय । तिनपें अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांबळिया अलगा रहोनें ॥ ए देखी ॥

॥ हुयने ३ दूरी हुयने, चेतन जाबै सठने, दूरी हुयने ॥ तुं मुऊ पास क्युं आवै, दू० ॥ तुऊनें कुण वतलावे, दू० ॥ ए आंकणी ॥ तो संगै निज पंचेडीनो, रचना चरम जुलाणो ॥ नाणावरणी खयउपसमसें, जावेडी मंमाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ इयै ते परजासे कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किण क में उपदेश ॥ दू० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुऊकुं संका, तेरे संगे ला गी ॥ नीलवर्णाकी समता सेती, में जयो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३ ॥ उप कहिये हणियो जवियानो, अधियां लाजत आय ॥ आधीनांमन पीमानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर आगम, सूत्रसें ते जवज्ञाय ॥ तत् सेवाते हणि सठताकुं, चेतन कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद शुद्ध ॥

॥ अंग इयारै चवदै पूरब गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र अरधधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूर आगम पूरा नय निहोपै तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद शुद्ध ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवन्दनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुद्ध शुचि चक्रते, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्तते,

जये अंतरजामी ॥ मानस इन्द्रिय दमनज्ञूत, समदम अजिरामी  
॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण जरथो ए, पंचम पद मुनिराज ॥  
तत्पदपंकज नमत दे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ मारुनर मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकषाया जगजन कहे, धारै चउगति वसनसें रोस हो,  
मुनिंदजी ॥ राग हीण जय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो  
मुर्षिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० गढै पूरब कोरु हो  
मु० ॥ शत सोगम आगम करै, सा० लघु कालै गुण आदि हो  
मु० ॥ २ ॥ स्थानदीनिद्रा उदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रच  
लानिझमें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थि  
ति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो  
पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥  
॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथें, सा० साधन पर वर जीव हो मु०  
॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु जवतु जगतीव हो मु०  
॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद शुद्ध ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बघालीस टालै जी,  
षट् काया गोकुल रखवालै नव विध ब्रह्मव्रत पालै जी ॥ पंच म  
हाव्रत सूधा पालै धर्म शुद्ध उजवालै जो, हृपकश्रेणि कर कर्म  
खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुगल परियट्ट, अट्ट परमित संसार ॥ गंढिजेद  
तव करि लहै, सब गुण आधार ॥ १ ॥ हाथक वेदक शशि असं  
ख, उवसम पण बार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवै शिव  
दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लब्धन अजिराम ॥  
दरसनकुं गणि हीग्धर्म, अद्वितिस करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अय दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके बाग आबो मोहि रखो री ॥ ए चारु ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साथ जणयो री ॥ धर्म जिने  
श्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज ससम  
नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, ताते अधिक बुरो री ॥ २ ॥  
मिथ्या तापे तप्त, बोधही गंध लहेरी ॥ उपशम कार्यक वेद, ई  
श्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर हे अपार, फुल अस्तांभ क  
ह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद  
जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें  
कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अय दर्शनपद युई ॥

॥ जिनपक्षतत्त सूधा सरथै समकित गुण उजवाले जी,  
जेद वेद करि आतम निरखी पशु ठाळी सुर पावे जी ॥ प्रत्या-  
ख्याने सम तुल्य ज्ञाख्यो गणवर अरिहंत सूरु जी, ए दरशनपद  
नितर वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अय ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ किंप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मि  
लापसें जिन जनित, सुय बोस प्रमाण ॥ १ ॥ जव गुण पक्कवि  
उंहि दोय, मण लोचन नांण ॥ लोकालोक स्वरूप जाण, इक के  
वल जाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नांण प्रकाश ॥ ससम  
पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अय ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चारु ॥

जिनवर जाषित आगम जणिया, तत्व यथास्थित गमिया  
जी ॥ म्हारे जगजन तारु ॥ ते उत्तम वर नाण कहायै, जविजन  
अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जहाजक कुपंथ सुपंथा, पे-  
यापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणें  
जेश विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुते मति दोय ठै इंदी तारु,

तेषां परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ उद्दी मण केवल दे वारू, जीव  
प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अविजस्त बलें जग जाणें,  
लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजै जासु पसायै,  
धारी शुभ्र अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम  
कथय्यी, चेतन नाणकुं बिलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें जवि  
जन हरखे, निसदिम कुशलता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद शुद्धि ॥

मति श्रुति-इंदी जन्मि कदियै लदियै गुण गंजरीरो जी,  
आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अविधि म  
नपर्यव-केवल बलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकुं वंदो  
पूजो जविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति शुद्धि ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्त पसार्ये साहु पाय, जुग २ समितेंद ॥ नमन करै शुभ्र  
जाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि  
कर्म निकंद ॥ सुमति पंचतीन गुप्ति युत, दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इखु-  
कृति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकुं दीर  
धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवन ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाज्ञास निस्तंग ॥ सुग्यानी  
साजलो ॥ डेर ॥ मूर्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु०  
॥ १ ॥ स्पर्थक कारण वर्गणा, कार्ये कारण जाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जो  
गसुधामता, लब्धा संख स्वजाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जो  
गमें, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्ये वसु समयें लहे, अंते दौते  
जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सङ्कारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥  
सु० ॥ प्राप्ता घन प्रकारता, सप्त धृतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तडो  
घन रूपी जलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद

धर्ममें, कुशल जवतु अजिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ अथ चारित्रपद युई ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावे जी, बारे  
जावना सूधी जावै सागर पार कतारै जी ॥ खट खंन राजकूं दूर  
तजीनें चक्रो संजम धारै जी, एहवो चारित्रपद नित बंदो आतम  
गुण हितकारै जो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीरुषजादिक तीर्थनाथ, तन्नव सिव जाण ॥ बिदि अं  
तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स  
ही, आदिक लब्धि निदान ॥ जेदें समता युत खिणें, दृग्घन कर्म  
विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतपपद जलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदनसैं  
नित हीरधर्म, दूर जवतु जवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस जेद जणया जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजें  
रे ॥ म्हारे शिवपदभ्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण जव सिद्धितणा  
वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्त्ता रे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ स  
मता सहितें जिनतें जारी, जली कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारे  
शिवपदभ्रे० ॥ जीव कनकसैं कर्म कचौरा, ददे तप पावकका जोरा  
रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम हे रुद्धि, देव नरनी  
फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप  
जानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्त पसायें लहियें  
वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति उक्कर फुन  
साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इच्छा  
रोधन रुपी कहिये, तपपदही चैतन बहिये रे ॥ म्हा० ॥ पाठक  
आहीरधर्म कृपासे, नवपद कुसलाकूं जासे रे ॥ म्हारे शि० ॥ ५ ॥ इति ॥

( ४५५ )

॥ अय तत्र पदं युई ॥

इच्छारोचन तप ते ज्ञात्स्यो आगम तेहनो साखी जी, इय  
जावत्ते द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण  
परणित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, सबधि संकलनो कारण  
देखी ईश्वर तेँ मुख जाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अय श्रुतिविक्रिति जिन स्तुति ॥

श्रीमद्वृषभ सर्वज्ञ, वृषभांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवादा,  
नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ सुगस्यादौ त्वयायेन, ज्ञानत्रय युते न  
यत् ॥ जनन्या मरुदेवाद्याः, बावनं जहरं कृतं ॥ २ ॥ इति रुषभ  
स्तुति ॥ अर्हताजितनाथेन, गज लांठन शाखिना ॥ जितसत्रु  
महीपाल, पुत्रेण कनकत्वचा ॥ ३ ॥ विजयाकुकि रत्नेन, जगदं-  
स्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोयेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥  
इत्यजित स्तुति ॥ जितारिनुपतेर्वर्धातु, संजवः संजवाजिधः ॥  
सेनाधा नंदनो हेम, वखौं गंधर्व लांठनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य,  
ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ सुनिःवां धूंगवो देवो, नित्यं दिततुमांजिनः ॥  
॥ ६ ॥ इति संजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्थो नंदनं साबै, वीतरागं जग-  
त्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, पुवगांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन  
नामानं, विशुद्ध हृदयं तदा ॥ वस्तुति परया जक्त्या, सनालोकेनि  
नंदते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेवाजिध धरि त्रोल, तन  
यो मंगलप्रदः ॥ कौंच लक्षण जूकेम, मरीचिर्मंगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं  
सुनतिनाघेश ॥ सुमतिं तनु सचमां ॥ जविनां पुण्य कर्तृणां, स्वर्ग  
सौख्या बलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुनति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र  
सत्कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराजिव नृपेक्षुनः, पद्म लक्षण  
धारकः ॥ ११ ॥ जवान्यौ जव संकीर्णो, दुस्तरे पततां नृणां ॥  
त्राणाय सनतं देव, पद्मप्रज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वोन्निधोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकजृत् ॥  
 प्रतिष्ठ नृप संजात, आमीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र  
 इव गंजीरः, कर्माणां छेदने परः ॥ यः सार्धः परमब्रह्मा, रतं  
 नौमि सदा विज्जुं ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंडप्रज्ञ प्र  
 ज्ञोकांत, चंड लक्षण संयुतः ॥ तमापतिष्ठ विज्ञान, तमोव्यूह विं  
 नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोन्नव ॥ लक्ष्मणा  
 पुत्रमां स्वामि, न्नव केवल बोधजृत् ॥ १६ ॥ इति चंडप्रज्ञ स्तुति ॥  
 ( अत्रायश्चत्रबंधः श्लोकः ) ॥ संस्तुतोबोददत्वाश्च, सुरासुरनरेश्वरैः  
 ॥ सुविधिर्वीरितशर्म, सुर्यावनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीकननीरा  
 मा, माननीयादिवोकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांघिनः  
 ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ( चामरबंधाविमौ ) ॥ श्री  
 मञ्जीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः ॥ ज्ञास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्सांक्षां  
 कधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणान्नोज, सेवकानां वपुर्जृतां ॥ प्राक्क  
 तंवृंजनव्यूहं ॥ डष्टंशंजोयद्देविजौ ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तु  
 तिः ॥ विष्णुर्वैशार्कवद्देवो, विष्णुपुत्रोदिरण्यजः ॥ श्रेयोवृद्धिकरोज  
 स्त्रं, खड्गलांघिनजृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुनस्तार्ध, श्रेयांसश्रे  
 यस्तैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदं परं ॥ २२ ॥ इति श्रेयां  
 स स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरोवार्त्तिरामीहा, जवतांश्यदि ॥ जटितिष्ठे  
 दितुंचिते, ज्ञोन्नव्याः प्राप्तुमकरं ॥ २३ ॥ तदाजजध्वमेनंदि, वासु  
 पूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकचरक्तजं ॥ २४ ॥ इ  
 ति वासुपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥ श्रीमद्धिमलनाथेऽ, कृतवर्मसमुन्नवः  
 ॥ गूकरांकधरस्यामा, पूत्रकल्याणदीधिते ॥ २५ ॥ चंडवद्धिमलज्ञान,  
 त्वर्दायस्मरणं विना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्मा, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६  
 ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपूत्रस्य, सुयशःसिंह  
 सेनयोः ॥ देवस्यश्येनचिह्नस्य, वर्धनान्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ ईशद

योपिवस्वातं, गुणानांलेज्जिरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, कमोवक्तुं  
 नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंतं स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापूत्रवज्रांक,  
 आनुवंशार्कसन्निजः ॥ कनकप्रज्ञसर्वज्ञ, धर्मनाथाजिनेश्वरः ॥ २९ ॥  
 तबागोपिपुराणी, जृतलेधारयशोकतां ॥ अनुचरफलाः संति, सतर्  
 संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधी  
 सं, नन्दनंमृगलक्षणां ॥ आचिरेयंतुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥  
 ॥ ३१ ॥ तंश्रीमन्नांतिनामानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां  
 वृष्टिं, विबुद्धाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शान्तिनाथ स्तुतिः ॥ श्री  
 युतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यज ॥ सूरिभूपतिसंजात, ङागल  
 कणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंशुनाथजिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं  
 पापसंदोहं, जवांतरकृतंयनं ॥ ३४ ॥ इति कुंशुनाथ स्तुतिः  
 सुदर्शनचुपोज्ञतं, नंदावर्त्तकसंयुतं ॥ अंजोजवन्निरालेपं, देवोपुत्रसु  
 वर्णजं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यायुषाः सर्वं, धुर्य्यप्रभुतयाजिनं ॥ चरी  
 कर्मिनमस्तमा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८  
 ॥ कुंजप्रजावतीपूत्रौ, नीलवर्णौघटांकभृत् ॥ जगन्मित्रश्चध्वान्त,  
 नासनाह्नितःसदा ॥ ३७ ॥ उत्रप्रययुतोज्ञाति, देवयोविष्टपत्त्रये  
 ॥ तस्यश्रीमल्लिनाथस्य, स्मरलेनमुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिना  
 थ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्मल  
 कणभृद्गर्भ, दावकस्यामलजये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणक  
 र्मारिमंरुल ॥ देहित्वमेव्ययीजावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इ  
 ति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयभूपाय, कुलोत्तंसहिर  
 ण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकभृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते  
 पंचजनोदेव, निन्दाचक्रुस्तेश्वर्यं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र  
 संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेव  
 र्यं, समुद्विजयोन्नवे ॥ हरिवंसहरौशंजौ, शंखकिंकमलप्रज्ञे ॥ ४३



( ४५८ )

॥ त्यक्तराजीमतीलेहे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामावा, प्र  
त्यकेपिजिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥ अश्वसेना  
कञ्जुपाल, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनदितायेन, कमठस्याजिमान  
ता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनास  
नचिन्हाय, नीलवर्णायसंज्ञवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥  
श्रीमत्सिद्धार्थवंशर्क, त्रिशलेयजगत्प्रभो ॥ महानादध्वजार्द्धित, क  
ल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थरुद्धीर, मोहेज्जहनेनमृगात् ॥  
त्वब्रक्तिदत्तचित्ताय, कमलांदिहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः  
॥ २४ ॥ इति श्रीकृष्णकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः ॥

अथ नवपदजाके जलीके देववन्दनमें कह्योका चैत्यवन्दन प  
हली लिखा हे ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नवपद अजिरामी रे लोय ॥  
अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥  
अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी  
रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी  
रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल हय करी, यथा सिद्ध  
सरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ सिद्ध नमो जवि ज्ञावधी, जे आगम  
अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण उत्तीसे सोजता, सुंदर  
सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजै पदै, बंदू अविकारी  
रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप डु विध  
आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवेग  
समाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा,  
पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमं  
दरुजागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनं जलखै,  
श्रुत श्रद्धा आवै रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ ठठे गुण दरसल नमो, आ-

तम शुभ्र ज्ञावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण  
सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक  
दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठमें चा  
रित्रपद नमो, परज्ञाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ खंत्यादिक  
दस धर्मनो, जेह ठे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ९ ॥ नवमे  
बलि तपपद नमो, बाह्याज्यंतर जेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या  
काल अनंतना, जे कर्म उन्नेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए  
नवपद बहुमानथी, ध्यावै शुभ्र ज्ञावै रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप  
श्रीपालतणी परै, मन वंछित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥  
आसू चैत्रुक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥  
नव ठली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥  
॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परै, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ० ॥  
व० ॥ श्रीजिनदाज कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ० ॥  
अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध  
अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ जविक मन धारज्यो रे ॥  
धारज्यो नवपद ध्यान ॥ ज० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ ओ आचारज गुण  
धरू रे, गुण ठचीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दा  
यक सुविलास ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोजता जी,  
साधू समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥  
ज० ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण ठै रे, तप उत्तम विधि दोय ॥  
ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ ज० ॥ ४ ॥  
अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनु  
जव कारणे जी, नितप्रति नमत कळयाण ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, जविका न० ॥ मन वच काया कर  
एकेंते, विकषा दूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जमी अरु तंत्र घणे  
रा, इन सबकुं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य जं  
मार जरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अरुसिद्ध नवनिधि मंगलमाळा, संपति  
सहज वरो रे ॥ लालचंद याकीबलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाथ रे, जी० ॥ नवपद  
महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो  
अपणे आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ करम  
निकाचित दूर करणकुं, सुंदर शुद्ध ऊपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन  
को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद आय रे ॥ जी० ॥ इय  
जिन ज्ञाए आगामी होयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत  
सिद्ध उर आचारज, उवजाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व  
साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दरशन ज्ञान  
चरण तप उत्तम, याहीसें दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज  
जज नवपदकुं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाळ कहे यही सार  
जगतमे, उर द्वार मत जमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र सुज जाव, दिव कारज सि  
द्धिो लाधो एह ऊपाय ॥ तुज नाम पसार्ये आरति व्याधि पुलाय,  
इग तुज अनुग्रहथी सुख संपति मुज पाय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न  
मिथै सिद्ध सूरि उवजाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुदाय ॥

हुग विधि चारिसें बुध विष तप मन जाय, ये नवपद ध्यावता नि  
रुषम शिवसुख आव ॥ १ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री  
गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे जाण्यो एह विचा  
र, जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंगार ॥ ३ ॥ जिनधरम अ  
मुरागी चक्केसरि सुखकार, सेवकने आपे सुख संपति परिवार ॥  
हिव निहि उद्व करि चारित्रनंदी मम जाय, जिनचंद सूरिसर  
स्वरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति शुई ॥

॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपद उल्लो करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

( प्रथम ) आसो सुदि ३ अथवा चैत्र सुदि ३ सें उली सरू  
करे, कज्जी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, वढी होय तो ७ सें  
सरू करे, लेकिन आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध  
करके मांगणादिकसें चित्रित करे, पीठे पट्टे पर सिद्धचक्र थापके त्रि  
काय पूजा करै. प्रजातसमें राईपन्निकमणा करके पीठे वस्त्रोंकी  
परिलेहसा करै. जहां सिद्धचक्रकी थापना हे उहां आयके पांचे  
शक्रस्तवे देव वादे, पीठे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव  
चैत्यवंदन करै, वासुकेप पूजा करे, पीठे केसरचंदनसें पूजा करै.  
गुरु पास आयके अश्रुछिल्लिमिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका प  
चस्काण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इस वास्ते चावलोंसें  
उर गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीठे अरिहंतके बारे गु  
णोंको विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हैं. सब गुणोमे इहा  
मिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

- ३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ६ ज्ञानमंजुल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ७ कुंडलि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ८ उन्नतत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- ११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥

१२ अयापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥ इति द्वादश अ० शु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नदूससियेणं कहिके १२ लोगस्तका काउसग करै. एक लोगस्त प्रगट कहे, पीठै स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पञ्चखाण पार के आंबिल करै. पहले वखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीठै मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव वांदै. गुणानो ( १००० ) ॥ ऊँ ह्रीं लामो अरिदंताणं ॥ इस पदका करै. श्रीपालचरित्र सुणे. पूरा पहर दिन रहणेसें तीसरी बेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदै. पीठे फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार पञ्चखाण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रति क्रमण करै. आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगेरे करके पीठै पम्किमणा करै. ( सोणे के वखत ) पहले इरियावही परुक्रमके चैत्यवंदन करै, फेर रा. ५ संयारा गाथा सुणे ॥ मिझ नही आवे जहां तक नव गुण स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितिय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रजात समे की सब करणी पहले मुजब करके सिद्धपदका लाल रंग दे इस वास्ते गेहूंकी रो-

( ४३३ )

टीसैं आबिल करै ॥ उँ हँही णमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हजार गुणना करै. सिद्धपदका ८ गुण दे. ८ नमस्कार गुरु करावै सो लि० ॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

- १ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥
- २ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
- ३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ५ अक्षयस्मिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टौगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नद्वसति ८ कहेके आठ लोगस्सका काजसग करै, एक लोगस्स प्रगट कहे. फेर पूर्वोक्त करणी करै ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसैं प्रजात कर्त्तव्य करै. आचार्यपद पीले वर्ण दे इस वास्ते चणाकी दालका आबिल करै ॥ उँ हँही णमो आयदि आणं ॥ इस पदका दो हजार जाप करै, आचार्यके ३६ गुण दे. ज्जीस नमस्कार गुरु करावे सो लिखते हे ॥

॥ अथ आचार्य ज्जीस गुणाः ॥

- १ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥
- ४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ५ गांजीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

- ७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 ८ अपरिआवीगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 ९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 ११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १२ अविकषकगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १५ कृमागुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १६ मृडगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 १९ द्वादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
 २५ अनित्य ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २६ अस्मरण ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २७ संसार स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २८ एकत्व स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 २९ अन्यत्व ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 ३० अशुचि ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
 ३१ आश्रव ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३२ संबर ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३३ निर्जरा ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३४ लोकस्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३५ बोधदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३६ धर्मदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥ इतिषट्त्रिंशत् आ०

॥ यह ष्ठीस नमस्कार करके अन्नभूससि० कहके ष्ठीस  
३६ लोगस्सका काउसग करे, प्रगट लोगस्स कहे, पूर्वोक्त करणी  
क्रमसें करै, इति तृतीय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ है ह्रीं णमो ज्ञवज्ञायाणं ॥ इस पदका २, हक्कार जाप  
करै, हरेमूंगका आंबिल करै, उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके  
नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २६ गुण लिख्यते ॥

- १ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
- २ श्रीसुयगंगांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ३ श्रीगणांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०
- ४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ५ श्रीजगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ८ श्रीअंतगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- १० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- १२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥



( ४३६ )

- १३ आग्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥
- १५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २२ अविध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २३ प्राणायामप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २५ लोकविडुसार पठनगुण यु० ॥ इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणः ॥

इस तरे २५ नमस्कार करै, खना हो के अन्नरूप कहके २५ लोगस्तका काजसंग करै, प्रगट लोगस्त कहके पारे, पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

जै हँही एमो लोए सब साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै. साधुपद काले वर्षा दे इस वास्ते जन्म के बाकलोसैं आन बिल करै. सर्व साधूपदके सचाईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करै ॥

॥ अथ साधूपदके २७ गुण लिख्यते ॥

- १ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
- २ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

- ६ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥  
 ६ रात्रिज्जोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥  
 ७ पृथ्वीकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 ८ अप्पकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 ९ तेजकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १० वातकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 ११ वनस्पतिकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १२ त्रसकाय रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १३ ऐकेंडीजीव रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १४ बेइंडीजीव रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १५ तेइंडीजीव रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १६ चोइंडीजीव रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १७ पंचेंडीजीव रक्ताय श्रीसा० ॥  
 १८ लोभ निग्रहकाय श्रीसा० ॥  
 १९ क्लमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २० शुभ्रजावना जावकाय श्रीसा० ॥  
 २१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥  
 २२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
 २६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सहस्र तत्पराय श्रीसा० ॥  
 २७ मरणांतनपसर्ग सहस्र तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुणः ॥  
 इति वजे २७ नमस्कार करै, २७ लोगस्सका कान्तसंग करै,  
 प्रगट लोगस्स कहिके पारे, पीठै पूर्वोक्त करणी करै. यह पंच पर

मेष्टि पदके सब गुण मिलाएसें १०८ होता है, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हैं ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ जै ह्रीं एमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै दर्शनपद सपेद वर्ण है इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै, सम्यक्तके समसठ गुण चिंतवकर नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सबसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसदर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थ ज्ञानृसेवनारूप सह० ॥
- ३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सह० ॥
- ४ कुदर्शन वर्जनरूप सह० ॥
- ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
- ६ धर्मरागरूप सह० ॥
- ७ वैयावृत्तरूप सह० ॥
- ८ अर्हद्विनयरूप सह० ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
- १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
- १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
- १३ साधूवर्ग विनयरूप सह० ॥
- १४ आचार्य विनयरूप सह० ॥
- १५ उपाध्याय विनयरूप सह० ॥
- १६ प्रवचन विनयरूप सह० ॥
- १७ दर्शन विनयरूप सह० ॥
- १८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सह० ॥
- १९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूप सह० ॥

- २० संतारे जिनमत स्थित साध्यादि सारमिति चिं० ॥  
 २१ शंकादूषण रहिताय सह० ॥  
 २२ कांक्षादूषण रहिताय सह० ॥  
 २३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सह० ॥  
 २४ कुट्टादिप्रशंसादूषण रहिताय सह० ॥  
 २५ तत्परिचय दूषण रहिताय सह० ॥  
 २६ प्रवचनप्रज्ञावरूप सह० ॥  
 २७ धर्मकथाप्रज्ञावरूप सह० ॥  
 २८ वादीप्रज्ञावरूप सह० ॥  
 २९ नैमित्तिकप्रज्ञावरूप सह० ॥  
 ३० तपस्वीप्रज्ञावरूप सह० ॥  
 ३१ प्रज्ञायादिक विद्याजृम्भप्रज्ञावरूप सह० ॥  
 ३२ चूर्णअंजनादि तिक्प्रज्ञावरूप सह० ॥  
 ३३ कविप्रज्ञावरूप सह० ॥  
 ३४ जिनसासने कौसलता जूषण सह० ॥  
 ३५ प्रज्ञावनाजूषणरूप सह० ॥  
 ३६ तीर्थसेवाजूषणरूप सह० ॥  
 ३७ स्थैर्यताजूषणरूप सह० ॥  
 ३८ जिनसासने जक्तिजूषणरूप सह० ॥  
 ३९ उपशम गुणरूप सह० ॥  
 ४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥  
 ४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥  
 ४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥  
 ४३ आस्तिका गुणरूप सह० ॥  
 ४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सह० ॥

- ४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सह० ॥  
 ४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सह० ॥  
 ४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥  
 ४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥  
 ४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥  
 ५० राजाजियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥  
 ५१ गणाजियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५२ बलाजियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥  
 ५३ सुराजियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥  
 ५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्व मूलमिति चिंतनरूप सह० ॥  
 ५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्वारमिति चिंतन श्रीसह० ॥  
 ५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सह० ॥  
 ५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सह० ॥  
 ६० चारित्रधर्मस्याधारमिति चिंतनरूप सह० ॥  
 ६१ चारित्रधर्मस्य ज्ञानमिति चिंतनरूप स० ॥  
 ६२ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतनरूप स० ॥  
 ६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सह० ॥  
 ६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥  
 ६५ सचजीव कृतककर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥  
 ६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०  
 ६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥ इति स० ॥  
 ॥ इति वजे समस्त नमस्कार कर खमा हो के अन्नबू कदके

६४ लोगस्सका काउसंग करै, एक लोगस्स प्रगट कहैके पोरि, पीठै  
पूर्वोक्त करणी करै, इति षष्ठ दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै,  
ज्ञानपद उज्ज्वल वर्ण, तंडुलका आबिल करै, इकावन जेद ज्ञानपद  
के चितव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ श्रेद लिख्यते ॥

- १ स्पर्शनेंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- २ रसनेंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ३ घ्राणेंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ४ श्रोत्रेंड़ी व्यंजनावग्रह मति० ॥
- ५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ७ घ्राणेंड़ी अर्थावग्रह मति० ॥
- ८ चक्षुरिंड़ी अर्थावग्रह मति० ॥
- ९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- १० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
- ११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
- १२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
- १३ घ्राणेंड़ीईहा मति० ॥
- १४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
- १५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
- १६ मनेकरीईहामति० ॥
- १७ स्पर्शनेंद्रीअपाय मति० ॥
- १८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
- १९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

- २० चक्षुरिंद्रीअपाय मति० ॥  
 २१ श्रोतेिंद्रीअपाय मति० ॥  
 २२ मनैनापाय मति० ॥  
 २३ स्पर्शनेिंद्रीधारणा मति० ॥  
 २४ रसनेिंद्रीधारणा मति० ॥  
 २५ घ्राणेिंद्रीधारणा मति० ॥  
 २६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥  
 २७ श्रोतेिंद्रीधारणा मति० ॥  
 २८ मनोधारणा मति० ॥  
 २९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३२ असंज्ञी श्रुत० ॥  
 ३३ सम्यक् श्रुत० ॥  
 ३४ मिथ्या श्रुत० ॥  
 ३५ सावि श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥  
 ३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥  
 ३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥  
 ४० अगमिक श्रुत० ॥  
 ४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥  
 ४२ अन्नंगप्रविष्ट श्रुत० ॥  
 ४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥  
 ४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ वक्रमान अवधि० ॥

४६ दीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ शुभमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पं० ज्ञा०॥

इस तरे ५१ नमस्कार करै, खरुा होके अन्नहू० कहके एका  
वन लोगस्तका काउतग्न करै. एक लोगस्त प्रगट कहके पारे. धीमे  
पूर्वोक्त करणी करे. इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अब अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ उँ ह्रीं नमो चारिचस्त ॥ इस पदका २ हजार जाप करे.  
चारित्र पदका उज्ज्वल वर्ण हे, इसीसे तंडुलका आंघिल करे. सत्सह  
भेद चारित्रपदके चित्तवके नमस्कार करे.

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ मृषावादविस्मरणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ कृमाधर्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृडताधर्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्मरूप चारित्रे० ॥



- ११ संयमधर्मरूप चारि० ॥
- १२ सत्यधर्मरूप चारि० ॥
- १३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
- १४ आर्कचनधर्मरूप चा०
- १५ ब्रह्मधर्मरूप चारि० ॥
- १६ प्रखीरकासंयम चारि० ॥
- १७ उदगरकासंयम चारि०
- १८ तेज्जरकासंयम चा० ॥
- १९ वाजरकासंयम चारि० ॥
- २० वनस्पतिरकासंयम चारि० ॥
- २१ वेङ्गीरकासंयम चारि०
- २२ तेङ्गीरकासंयम चारि० ॥
- २३ चौङ्गीरकासंयम चारि० ॥
- २४ पंचेङ्गीरकासंयम चारि० ॥
- २५ अजीवरकासंयम चारि० ॥
- २६ भेकासंयम चारि० ॥
- २७ उपेकासंयम चारि० ॥
- २८ अतिरक्तवस्त्रज्जकादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
- २९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
- ३० मनसंयम चारि० ॥
- ३१ वाक्संयम चारि० ॥
- ३२ कायासंयम चारि०
- ३३ आचार्य वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३४ उपाध्याय वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३५ तपस्वी वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥

- ३६ लघुशिष्यादि वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा०॥  
 ३७ गिलाणसाधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३८ साधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३९ श्रमणोपासक वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा०॥  
 ४० संघवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४१ कुलवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४२ गणवैद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४३ पशुपंरुगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४४ स्त्रीदास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्ष्य वर्जनरूप चारि०॥  
 ४७ कुमयंतरसहित स्त्रीदावजाव सुणम वर्जनब्र०  
 ४८ पूर्वस्त्रीसंज्ञोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०  
 ४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५१ अंगविज्ञूषावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५२ अणसण तपोरूप चा०  
 ५३ छणोदरी तपोरूप चा० ॥  
 ५४ वित्तसंखेवरूप चा० ॥  
 ५५ रसत्याग तपोरूप चा० ॥  
 ५६ कायकिलेस तपोरूप चा० ॥  
 ५७ संलेखणा तपोरूप चा० ॥  
 ५८ प्रायञ्चित्त तपोरूप चा० ॥  
 ५९ विनय तपोरूप चा० ॥  
 ६० वेष्वावच्च तपोरूप चा० ॥

- ६१ सिञ्जाय तपोरूप चा० ॥  
 ६२ ध्याम तपोरूप चारि० ॥  
 ६३ उपसर्ग तपोरूप चा० ॥  
 ६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥  
 ६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥  
 ६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥  
 ६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥  
 ६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥  
 ६९ माया निग्रहकरण चा० ॥  
 ७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रजेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै, खमा हो के अन्नभूससि०  
 ७० लोगस्तका काउसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, पूर्वोक्त क  
 रणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं एमो तवस्त ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै,  
 तपपदका उज्ज्वल वर्षा इस वास्ते चावल्लोका आंबिल करै, पञ्चास  
 जेद तपपदके चितव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

- १ यावत् कथक तपसे नमः ॥
- २ इत्वर तपजेद तपसे नमः ॥
- ३ बाह्यकणोदरी तपजेद तपसे नमः ॥
- ४ अर्ज्यंतरणोदरी तपजेद त० ॥
- ५ इत्यतपवृत्ती संखेप तपजेद त० ॥
- ६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपजेद त० ॥
- ७ कालतप वित्ती संखेप तपजेद त० ॥
- ८ ज्ञावतप वित्ती संखेप तपजेद त० ॥

- ७ कायकिलेसं तपजेद तप० ॥  
 १० रसत्याग तपजेद तप० ॥  
 ११ इंद्रिकषाय योग विषयक संलीषता तपसे नमः ॥  
 १२ स्त्री पशु पंक्षीदि वर्जित स्थान अवस्थित संलीषता त० ॥  
 १३ आलोचय प्रायश्चित्त तप० ॥  
 १४ पन्क्तिमण प्रायश्चित्त तप० ॥  
 १५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे ॥  
 १६ विवेक प्रायश्चित्त तप० ॥  
 १७ उपसर्ग प्रायश्चित्त त० ॥  
 १८ तप प्रायश्चित्त त० ॥  
 १९ जेद प्रायश्चित्त त० ॥  
 २० मूल प्रायश्चित्त त० ॥  
 २१ अणवस्थित प्रायश्चित्त त० ॥  
 २२ पारंक्षिय प्रायश्चित्त त० ॥  
 २३ ग्यान विनयरूप तप० ॥  
 २४ दर्शन विनयरूप तप० ॥  
 २५ चारित्र विनयरूप त० ॥  
 २६ शुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥  
 २७ वचन विनयरूप त० ॥  
 २८ काय विनयरूप त० ॥  
 २९ उपचारक विनयरूप तप० ॥  
 ३० आचार्य वेयावच्च त० ॥  
 ३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥  
 ३२ साधू वेयावच्च त० ॥  
 ३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

- ३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥  
 ३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥  
 ३६ श्रमशोपासक वेयावच्च त० ॥  
 ३७ संघ वेयावच्च तप० ॥  
 ३८ कुल वेयावच्च त० ॥  
 ३९ गण वेयावच्च तप० ॥  
 ४० वायणा तपसेनमः ॥  
 ४१ पृच्छना तपसे नमः ॥  
 ४२ परावर्चना तपसे नमः ॥  
 ४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥  
 ४४ धर्मकथा तपसे नमः ॥  
 ४५ आर्चध्याननिवृत तपः ॥  
 ४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥  
 ४७ धर्मध्यान चिंतन त० ॥  
 ४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥  
 ४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥  
 ५० अन्त्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद ज्ञेयाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै, खना होके अन्नबूतसि० इत्यादि कहेके ५० लोगस्तका काउसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणैको गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ घनी देखेके अन्ना वस्त्र आचूषण प्रहरके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मौली बांधेके अक्षत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकड़्य लेके नवकार गुणता जया गुरुके पास जावै, द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

पीठै प्रमोदवंत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करणैकी विधि आगे लिखी हे ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थ गुरु पास जाणैकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीकी लिख्यते ॥

पंचवर्ष के अनाजसँ सिद्धचक्रका मंमल करै. सिद्धचक्रजी के चौ तरफ तीन गढ़ चूनीके आकार बनावे, पहिले गढ़में अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै. पद९ के रंग मुजब गुण प्रमाणसँ रत्न चढावे ऊर पंचवर्षके फूज, पंच वर्षके धान्य, नव नाखेरका गोटा रंगके अपरोक्ष रंग मुजब धीदुरेसे ज़रके चढावै पंचरंगी ए धजा चढावै, दूसरे बलयमें सोले श्रीफल अथवा सुपारी चढावै. तीसरे बलयमें ४८ दूहारा चढावै, नव निधानोंकी जगे नव बने फज चढावै, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पक्कान्न रंगरंगे चढावै. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करै. ऊर जिनमंदिरमें बाहिरले मंमपमें ए ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणें मंमल रचना करै. विस्तारसँ सब विधि गुरुके हाथसँ करै, नवपद जीकी पूजा पढाय कलस ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावै, वाजि ज बजावै, महा महोन्नव उदार चित्तसँ करै, मंगलदीप आरती प्र मुख करै. दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल विधिः ॥ अब दसमें दिन गुरु पास आयके उलीके तपकों पारै. तप पारणको विधि आगे लिखी हे तथा उद्यापनमें ग्यानज्ञातिके कारण ए पूजा ए दीटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव जिल मिल ए रुमाल ए मोरा ए मिजासणा ए थापना ए चंद्रआ ए पूठीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रतिमा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नव२ चीज बणवावे, शक्ति नदी होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावै. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगवै, इत्यादिक यथायोग्य शुजलेत्रमें खरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ से लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम है. उत्तमताका कारण ऐसा है—बारे महीनोंमें तीन अठाइ महोत्सव आते हैं जिसमें चैत्र आसोजकी अठाइ तो सास्वती है. आठमसे पूनम तक इन दोनों महीनोंमें व्यास निकायके देवता ऋ ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर द्वीपमें जाते हैं, (पुन्याहं२) कहते जये अष्ट द्यसे पूजन करै, गीत गान नाटकादिकसे अनेक तरेसे जक्ति करै, पीठै नवमें दिन अपणे२ जन्मकूं स फल मानते जये अपणे२ देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अठाइ आसाढ चोमासेकी ( १४ ) पीठै ( ४१ ) दिन जाणेसे संवत्सरी पर्व साचवणेकूं ( ८ ) दिन तक अठाइ महोत्सव करै. लेकिन यह अठाइ सास्वती नहीं कही, कोइ वखत व्यास निकायके देवता ए कठे होकर नहींजी जावै, पहली पीठैजी करलेवै ॥ यह नवपदजी की उली शाश्वती अठाइमेंही की जाती है, नवपद माहात्म्य अधि कार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसे उद्धार करके जयजीवोके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली जगवान जगद्बाहूस्वामीने इसको प्र सिद्ध करा, इस वास्ते जयजीवोंको यह तप प्रमाण है, ऋ जो अजवी अपनी अपनी कुर्युक्तिये लगाकर खंन करते हैं सो तीर्थ-करका वचन उत्थापणेसे अनंतसंसारमें जमेंगे, सूत्रोंमें जगवंत महावीरने फुरमाया है, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हैं ऋ उन सूत्रोंमेंसे एक हरफकेजी यथार्थ अर्थकूं तोरुके नया कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विग्रह सो अनंतसंसारी होगा ( सूत्रनाम किसका है ) ॥ सुतंगणहररइयं, तदेवपणेयबुद्धर इयंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अजिन्नदसपूषिणारइयं ॥ १ ॥ ( अर्थ ) गणधरोका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियो का रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा जयेकूं जगवानने सूत्र कहा है. सूत्र १, पयन्ना १, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

दस नाम जगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा है, एकार्थ वाचक है इस वास्ते जड़बाहु उमास्वातिवाचकादिकोंके बनाये निर्युक्ति वेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये, एक क्रोरु पुस्तक श्रुतकेवलीयोके बनाये अग्नी जंमारोमे मौजूद है ॥

॥ अथ अष्टापद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि ( ८ ) सें लेकर पूर्णमासी तक ( केइयक नव्यजीव ) अष्टापदजीकी उली करते हैं ( जिसमें ) पन्तिकमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी उली तुल्य करै. ( इतना विशेष है ) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः ( इस पदका ) २००० गुणाना ( वा ) बीस जाप करै. अरिहंतपदके १२ गुणका नमस्कार करै, १२ लोगस्सका काउसगग करै, आं बिल ( वा ) एकासणेका पञ्चस्काण करै, पीठै पूणमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी आपना करै, मंरुल रचै, सो विधि लिख्यते हैं ॥

१५११६११७१८१९२०२१२२२३२४२५  
कतर

पूर्व  
१ । ३ ।

त्रिवेदिकमध्य  
असोकवृक्ष  
उर्ध्वः

१  
२  
३  
४  
५  
६  
७  
८  
९  
१०  
११  
१२  
१३  
१४  
१५

दक्षिण

( चत्वारि दक्षिणाए, पश्चिमउ  
अठउत्तरारि ॥ दस पुवाए दो अवा,  
वंगमि वंदे चउबीसं ॥ १ ॥ पुवा  
इं उलजमजियं ॥ दक्षिणउ सं  
जवाइ चत्वारि, पश्चिम सुपासमा  
इ, धम्माइ दसउत्तरउ ॥ २ ॥ )  
इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम  
यथाक्रमसैं चौबीस कोठे मंरुल  
में बसाणा. इहां कांक्षणोरे मो  
ली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके  
मंरुलवत् जाणना. नवग्रह दश  
दग्पाल आपना करे. पीठै एक२  
काव्य पद२ के एकेक कोठेमें एक२

३५७८९१०१११२१३१४१५

पश्चिम



जिनेश्वरके नामके चिठी उस पर बरक चढ़ा सुपारी चढ़ावे.  
 एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनागेशजिनेशत्वं, नंदायत  
 सितांशुकः ॥ यथाकुमुदतीनेता, नंदायतसितांशुकः ॥ १ ॥ नै ह्रीं  
 श्री अर्है ऐं श्रीरुपज्ञदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठ २ स्वाहा ॥ १ ॥  
 उपाध्वमजितंज्ञत्त्या, कंदधानामनेकपं ॥ प्रयातोद्योधितंज्ञान, कंद  
 धानामनेकपं ॥ २ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐं श्रीअजितस्वामी ० ॥ २ ॥  
 श्रीशंजवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंसारवनान्मुक्ति, समयं  
 तेसदादरात् ॥ ३ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐं श्रीसंजवस्वामी ० ॥ ३ ॥  
 येजिनंदनतेतीर्थ, राजपादसज्जाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, राजपा  
 दसज्जाजनाः ॥ ४ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐं श्रीअजि ० ॥ ४ ॥ पूजि  
 तोह्रीदधीमुक्तये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनादः, कांतारा  
 जीवमालया ॥ ५ ॥ नै ह्रीं श्री ऐं श्रीसुमति ० ॥ ५ ॥ पद्मप्रज  
 सुदृष्टीनां, जूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसिपूयेव, जूरिशोभात  
 पोदयाः ॥ ६ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐं श्रीपद्मप्रज ० ॥ ६ ॥ सुपार्थ  
 तत्श्रुतंश्रुत्वा, दर्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्पकोप  
 क्रमानलां ॥ ७ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐं श्रीसुपार्थ ० ॥ ७ ॥ जवांश्चंद्र  
 प्रज्जेष, यैरजाजिसमुन्नतः ॥ यैरजाजिसमुन्नतः ॥ ८ ॥  
 नै ह्रीं श्री अर्है ऐं श्रीचंद्र ० ॥ ८ ॥ सुविधेस्त्वद्भिप्राप्य, प्रमाद्यंत  
 समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रुत, प्रमाद्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ नै  
 ह्रीं श्री अर्है ऐं श्रीसुविधि ० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वाये, देवसंपन्न  
 केवलं ॥ अपिमुक्तिर्जन्नेत्तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ नै ह्रीं श्री  
 अर्है ऐं श्रीशीत ० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूजाजां, परमोक्षगतिर्जवा  
 न् ॥ अनंतानसत्त्वविश्रान्तं, परमोक्षगतिर्जवान् ॥ ११ ॥ नै ह्रीं श्री  
 अर्है ऐं श्रीश्रेयांस ० ॥ ११ ॥ वासुपूज्यनवस्वर्णी, नीरजारूढसक्रमः ॥ हर  
 स्तदिरहंमोदं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ नै ह्रीं श्री अर्है ऐं श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वये, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ अपि  
 उर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं  
 मल० ॥ १३ ॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्र  
 यीलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं  
 न० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरं धर्मजि  
 नर्द्धमा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं धर्म० ॥  
 ॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनादेहि, सारंगविदधेष्टुतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक,  
 सारंगविदधेष्टुतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं शांति० ॥ १६ ॥  
 कुंभुनाश्रस्तुपंधानं, विधुतारोवृषादृतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, वि  
 धुतारोवृषादृतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं कुंभु० ॥ १७ ॥  
 येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोऽग्रनाथकुधीर्ज्या, व  
 नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं अर० ॥ १८ ॥ नां  
 ह्रिपद्मसुतःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेजिद्यतेमल्ले, प्रतिपन्न  
 सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं मल्लिस्वामी० ॥ १९ ॥  
 श्रीसुव्रतजिनाधीश, मङ्गमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्ध, मङ्ग  
 मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं मुनि० ॥ २० ॥  
 देव्योपित्वहुषोज्ञाना, सहामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्जत्त्या,  
 सहामंदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं नमि० ॥  
 ॥ २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्ष, शंमितादानवारणा ॥ श्रीने-  
 मेजनताराध्य, शंमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं  
 ऐं श्रीं निम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकृत, महाहारतरंगिताः ॥  
 नाट्यंतिचरित्रंते, महाहारतरंगिता ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीं  
 पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ वि  
 भ्रन्नमेषुनिस्तीमां, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं  
 ऐं श्रीं वीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठत स्वाहाः ॥ २४ ॥ पाठै

चोवीस माहाराजकी पूजा करावै, पीठै बलबाकुल दैके दिग्पालई को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक जया है, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरुष गुरुमुखसैं समजके जल जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोत्सव करै, एसैंही रुद्धिबंत श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब जगवंतके कल्याणक जो जो होय उसका उत्सव करणा, एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधीश्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके ज्यवनकल्याणकसैं लेकर निर्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महोत्सव पूजन करणा चाहिये, इससैं धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रोपनमपर्वधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते है॥

प्रथम चावलके पूंजसैं सेतुंजयपर्वतको स्थापन करै ( तिल पर ) पट्टा रखके श्रीपुंरुरीक गणधर ( वा ) श्रीरुषभदेवस्वामीका बिंब स्थापन करै, अकृत मोतियोंसैं पर्वतको बधावै, केसरचंदनसैं पर्वतको पूजै, सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रदक्षिणा देवे (पीठै) पूजन सुरू करै (यथा) दश (१०) बीस (२०) तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुष्पदामेणालहई॥ चतुर्दशअष्टम, दसमदुवालय स कलाईच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसैं पूजनका अधिकार लिखते हैं, एकाम चित्तसैं अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदकसैं मूलप्रतिमाको न्दवण करावै, पीठै श्रीसंघ खना होके ( १० ) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै, यथाशक्ति सुपारी नारेख इत्यादि सब चीज उत्कृष्टसैं दस ९ जघन्ये नारेख १ सुपारी १० ठर फल

फूल यथासंज्ञं चढावै, धूप खेवै, कपूरकी आरती करै, पीठै सिद्ध  
 गिरी गुणगर्भित चैत्यवन्दन करेके पांचे शक्रस्तवे देव वांदै, १० ख  
 मासमण देके ( श्रीसिद्धकेश पुंरुरीक गणधराय नमः ) इस पदका  
 १० बेर नमस्कार करै, पीठै ( श्रीसिद्धजय पुंरुरीक आराधनार्थ करै  
 मि काउसगं अन्नभूसलि० ) कहके १० लोगस्तका काउसग करे  
 (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उज्जव होय वखत कम रहे तब  
 एक लोगस्तका काउसग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाकां  
 स्तवन कहे ) पीठै अनेक प्रकारका वाजिप्र वजावै ॥ इति प्रथम  
 पूजा विधि ॥ अब इसी तरै ( वीस । तीस । चालीस । पचास ।  
 यह चारों पूजाके जेद जाण लेणा ( इतनाही विशेष हे ) दूसरी  
 पूजामें १० के ठिकाणे ३० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामें १०  
 की जगे ३० की विधि करै, चौथी पूजामें १० की जगे ४० की  
 विधि करै, पांचमी पूजामें सब विधि ५० की करै, तथा ( सिद्ध  
 केश श्रीपुंरुरीकाय नमः ) इस पदका दो हजार गुणानो करै, उ-  
 त्कृष्टें पांचूं पूजामें जुदी २ धजा चढावै, जघन्यसे पांचूं पूजा किये  
 पीठै १ धजा चढावै । यह तप गुरूके मुखसे लेके जघन्य १ वर  
 स, ज्यादा हो सके तो ३ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त  
 तपस्या करै, गुरूके मुखसे उपदेस सुखै, संपूर्ण तप हुआं पीठै  
 सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ग्यानपूजा करै, गुरुभक्ती करै, सा-  
 हनीवञ्छ करै ( यह ) चैत्रीपूनमके दिन श्रीरुषभदेवस्वामी  
 के प्रथम गणधर श्रीपुंरुरीकजी पांच कोनी साधू साथ अक्षय  
 सुखको प्राप्तजये, ( इसवास्ते ) जरत प्रथम चक्रवर्तीनें चैत्री  
 पूनमको आराधन करके ( यह ) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध कि  
 या, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणसें इस जवमें अनेक सुख  
 संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोंके पुत्र पुत्रादिककी वांछा पूरण होय, नर

( ४५६ )

आधिव्याधि सौग संताप सब दूर होय, परजन्ममें देवादिक कृति प्राप्त होय, क्षीणकर्मी होखेसे अक्षयसुखको प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

( ढाल ) पय प्रणामी रे जिनवरना सुपसाजलै, पुंरगिर रे गार्हस हूं सुज जाजलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीज जो मुखहु वै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ ( उल्लाखो ) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण है अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण जाबियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःखदूरै राखियै ॥ १ ॥ ( चाल ) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरे चक्रवर्ति जरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंरगीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणै जलो ॥ ( उल्लाखो ) गुण जलौ अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरो, पुंरगीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुप्तै संचरी ॥ पण कोनि साथे दिमलगिरिवर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंरगीक कहाव ए ॥ २ ॥ ( चाल ) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामखो, सेंजुंजे रे आराध्यां फल हुवे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपै आनक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ ( उल्लाखो ) ते पुन्य पामें दान तप जप धर्म ध्यान मने धरै, बहु जाव जतै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ जावना जावै तेण दिवसै पंचकोनि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पांमी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ ( चाल ) दस बीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे आवक निरती सरदही ॥ चंडणठै रे अठम दसम ड्वाखसे, पूजा फल रे अनुक्रम एमुज मन बतै ॥ ( उल्लाखो ) मन बतै पूजकपूरधूपै मासखमण फले बली, सामन्न

धूपै पखौनो फल जे करे मननी रखी ॥ दिव पूजनी विधि जेम  
गुरुमुख सुणीअवै परंपरा, ते मोह माया कपट ठंमी सुखो जवि  
थय सादरा ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तंडुलरासि विमलगिरि थापी, तसु  
ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर करी, पुंमरीकनी  
आपी निवेरो ॥ ५ ॥ सेतुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल  
दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचा  
वौ ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरै करि आठ ॥  
प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥  
ऊजा अर्थ नवकार गुहांता, दसर जैती तिलक करंता ॥ माला  
पुष्प पूंगीफल ढोवो, मेरु जरण वर धूप उखेवो ॥ ८ ॥ ( ढाल )  
शंकरस्तव पांचे देव वादै, जघन्यना वंदण पाप भेदै ॥ दसे नमस्का  
र करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेइ सैती ॥ ९ ॥ आराधिव  
काजे काउसग, जिणे किये जांजै कर्मवग्ग ॥ लोगस्तज्जोय दसे  
चंखाणु, वेला प्रमाणे अहिएग आणूं ॥ १० ॥ इथे प्रकारै धूपपूज  
एह, इसी परै बीज। च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै,  
एक चित्त सूधै शुज पुन्य कीजै ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करी  
जै, एकेरू पूठै अथवा गिणिजै ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पढा  
प्रभु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ ( कलश ) इम करिय पूजा यथा  
योगै संघपूजा आदरो, साहमोवञ्चल करो जविका जवलमुइ ला  
लावरो ॥ संपदा सोहग तेह मानव रुद्धि वृद्धि बहू लहै, आअमर  
माणिक सीत सुपरै साधुकोरति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्री चै०स्त०॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यतै ॥

स्तवन पहली बने स्तवनोमें लिखा है सो सुणाया. अथ शुज  
धनी शुजदिन गुरुके पास नंदीश्वरतपग्रहण करे, नंदीश्वरदीपके च्याह  
दिसि तरफ ५९ चैत्यकी अपेक्षाये अमावस ९ ( ५२ ) वावन उपवास

करै, जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामका १००० गुणना करै, जो लिखते हैं ॥ १ श्रीरूपनाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ( यह ) च्यार नामकूं ४ बेर जलटा, ४ बेर सुलटा गिणै ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणैसैं एक उंली होय, ४ उंली करणैसैं यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब ऊजमणा करै, नंदीश्वरदीपका मंरुल वणावै, पूजा करावै, इत्यादि महोच्चवकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साह मीवञ्चल करै, मंरुलकी विधि एकेक दीसीमें (१३) तैरे २ पहारकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसा में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमें १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनविंघ थापे, इनको पूजामें ५२ आपना, ५२ नारेख, ५२ पान नागरवेखके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ वावन लेवे, क्रमसैं एकेक काव्य पढ़के जल चंदनादि अष्ट इ व्यसैं अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महानेमें मिती वैसाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतीया नामसैं पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीरूपजदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण किया पीठें बारै मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रैयांसकुमरजीके हाथसैं इंदुरससेती जया. उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसैं सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साहीवारै कोरि सोनझोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान २ एसी उदघोषणा ४, देवडुंडुजी वाजित्र ५, ऐसे पांच इय प्रगट किये. श्रैयांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबको मालम नई. इस दानके प्रज्ञावसे श्रेयांसकुमार अक्षयसुखको प्राप्त जया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आपोसे वस्त्र आभूषण पहरेके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पीछे गुरुके मुखसे एकासणादिकेक पञ्चक्लाण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको वहिरायके सब कुटुंब समेत जीमें, जुर जो मंगल कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वको जो जव्यजीव सेवन करते रहेंगे उनोका तपतेज हमेसां बढ़ता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतीय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ठ कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उचम दिनमें सब जगे श्रोसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने घरमें गंटे. इस शांतिपूजाके कराणेसे मारी, देजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कच्ची श्रोसंघमें प्राप्त न होय ( अथवा ) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. ( इससे ) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीना सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है. ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, जव्याश्चतुर्मासकर्मनानि ॥ १ ॥ ( अर्थ ) ज्ञो ज्ञाना एतानि सानायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं



मंथलानि अलंकारनूतानि विद्यन्ते ॥ अहो ज्ञव्य प्राणी जीवो यह सामायकको आद लेके जो धर्मकृत्य हे सो चोमासेके मंथण हे, अर्थात् अलंकार समान हे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव सामायक परिक्रमणा पोसा करै, कोइ जगवानके मंदिरमें नाना-प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पालै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसँ वण, आबै सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन कोईजी प्रकारसँ धर्मका उद्योत करणा चाहिये. जिससँ सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय, उर चोमासी ( १४ ) के दिन सब मंदिरोंमें दर्शन करणेको जाणा, पांच शक्रस्तवसँ देववाँदै, पीठै गुरुके पास जाके चोमासे, शर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन लेवै, सांजकूं चोमासी परिक्रमणा करे. इस मुजब काती चोमासै फागुण चोमासे कौंजी सेवन् करै ॥ इति चतुर्मासपर्वधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ ज्ञव्यजीव मम्मार्ह आदि क्षेत्रोंमें तरेश की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चोमासेपर्वका उद्योत करते हैं, इस माफक सब जगे तरे२ की पूजा कराणी चाहिये. उर देस, देसमें श्रावकण्यां इस महीनेमें केइ२ तरेकी तपस्यार्ये करती हे. जिसमें उत्तमफलकी देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथसे उद्धरण करके संक्षेपविधिसँ इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ वुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमह १, एकासण १, नीवी १, आबिल १, उपवास १, ( यह १ उली ) इस तरे पांच उली करै. तपोदिन २५. ऊजमणों २५ लाडू चढावै ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आबिल १, उपवास १, इस तरे

उंली ब्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लहू चढ़ावै ॥ इति कषायजयतपः ॥ ३ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे उंली ३ करै. तपोदिन ९. ऊजमणें ९ लाडू चढ़ावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलगा उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३, ऊजमणें झा नपूजा करै ॥ इति नाथतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतपः ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अमः १, उठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलठाणो १, दति, १, नीवी १, आंबिल १, यह एक उंली. इसी तरे उंली आठ करै. तपोदिन ८८. ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहामा करायके ग्यान खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूरुषतपः ॥ ७ ॥

जाडवा वदि चउथरें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकासणा अथवा विआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अन्ने ठिकाणें कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे जेरै, संवत्तरीके दिन कलस ऊपर नारेख रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै ॥ इति अक्षयनिधि तपः ८ ॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै ( श्रीवासुपूज्यस्वामी सर्वज्ञानमः ) इस पदका २००० गुणना करै, गुरु के पास स्तवन सुणे. ( सो स्तवन आगे लिखेगें ) ऊजमणें ज्ञानके उपगणसैं, ज्ञानजक्ति गुरुजक्ति करै, इति रोहिणीतपः ॥ ९ ॥

सुदिपक्षके पांचमेके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पांच

( ४६५ )

एकासणादिक तप करै, अंबिकादेवीकूं वेस चढ़ावै॥ इति अंबिकातपः ॥

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करै, इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारण्ये आंबिल ८, एवं दिन १६. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. ऊजमणें सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढ़ावै ॥ इति सौ-  
जाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पनिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसैं पूनम पर्यंत (१५) उप-  
वास करै. जो तिथि झूले सो तिथि उर करै. ऊजमणें एकसो बीस  
लक्ष मंदिर चढ़ावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपतितपः ॥ १४ ॥

वरसातका च्यार मास उर पोष, चैत्र, यह षट मास टा-  
लके गोटो पांचमतप सरू करै. अंधारी उजवाली पांचम मास ५.  
लग एकासणादि तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति गोटो  
पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै. उपवास  
के दिन देव वांछणादिक क्रिया करै. ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोप-  
गरण पकान फल कलशादिक पांच ५ चढ़ावै, सत्तरजेदी पूजा  
करावै, साहमी बजल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पनिवा, बीज, तीज, चोष, पांचम, एकाश-  
णादि तप करै. अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नेवेद्य चढ़ावै. इस  
तरे वरस १ तप करै. ऊजमणें चावलसैं अशोगवृक्ष लिखके पूजा  
करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण  
वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीआ-

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ३ श्रीमंश्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलोंने लोकनाथ चषाके साँ ते राज सात पावनी करके उसपर सिद्धोत्र ( उसको ) सोनेरत्न का मुगट चढ़ावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशषादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढ़ावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावनी, इ स तरे आठे वरसे आठ पावनी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिय. ऊजमणें अष्टापदपूजा करावै, पकवान फल सर्व चौबीस चढ़ावै ॥ इति अष्टापदपावनीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै. ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लक्ष्मि देव आगे चढ़ावै ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन इस उपवास अथवा बीस एकासषा करै. ऊजमणें अखंमिति धी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंमितिदशमीतपः ॥ २१ ॥

चदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशषा, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै. ऊजमणें ११ अं थकी पूजा करै ॥ इति श्रीङ्ग्यारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासषादि १४ तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढ़ावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै ( प्रथम तेले ) सिखरणसे पारणा ( दूसरे तेले ) सारेका पारणा ( तीसरे तेले ) लापशीका पारणा ( चौथे तेले ) लक्ष्मसे पारणा ( पांचमें तेले ) खीरसे पार णा. पारणे प्रथम साधुको बहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृतते लातपः ॥ २४ ॥

अष्टम १, एकासणो १, अष्टम १, एकासणो १, अष्टम १,  
एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावै तो  
सदा जय होय, विषज व्यापारमें लाज होय ऊगनेमें जीत होय॥  
इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै॥इति पंचमहाव्रततपः२७॥  
उपवास १, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १. उपवास  
१, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १.

एवं दिन १० पूनमसें सुरू करै. पारणै साधु पन्थिजानै, ग्यानपूजा  
करै ॥ इति दालिङ्हरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंडिये उपवास १, वेइंडिये ठठ १, तेंडिये अष्टम १,  
चौरेंडिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, ठकायें चतुर्दसम १, तप करै.  
ऊजमणें सुखमीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति ठकायआलोयणतपः॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

ठठ पांच करै ॥ इति पूत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अष्टम पांच करै ॥ इति पूत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति जर्तारसुखतपः ॥ ३४ ॥

॥ निवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६ ॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणकी आवक  
एयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतोके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उक्ता  
र करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी हे. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा  
सादमीवञ्चल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुंजकेत्रोमें अपणा धन

स्वरथ करै, धर्मका उद्योत करै ॥ इस तपस्याके प्रज्ञावर्से इस ज  
वमें संसारसंबंधी दुःखदालिङ्ग दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा  
होय, परजयमें देवादिक रुद्धी प्राप्त होय, ( किंबहुना ) इति वृष्ट  
कर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ ज्ञाड्व महिनेमें मिति ज्ञाड्वा सुद ४ तथा केइ मतकी  
अपेक्षासे ५ तिथिओं संवहरी नामसे पर्व प्रसिद्ध हे ( प्रथम इस  
संवहरी पर्वकी महिमा कहते हे ) जेसे जगत्रमें अनेक मंत्र हे  
पर नवकार समान कोइ मंत्र नही १, तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोइ  
तीर्थ नही २, पांचदानमें अन्नयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही  
३, गुणमांहे विनयगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममें संतोष  
नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा  
जल ९, अलंकारमांहे चूनामणी १०, ज्योतषोंमें चंद्रमा ११, ते  
जवंतमांहे सूर्य १२, गजमें एरावण १३, बैत्यमांहे रावण १४, तु  
रंगमें पंचदल्लजकिशोर १५, नृत्यकलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे  
नंदन १७, काष्टमांहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९,  
न्यायवंतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२,  
शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५,  
बाजित्रमें जंजा २६, स्त्रीमांहे रंजा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दाता  
में कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कटपवृक्ष ३१, जलमें  
अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एकप्र चीज  
उत्तम होतो है. इस तरे सर्व पर्वोंमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री  
संवहरी ( दूसरा नाम ) श्रीपर्यूपण पर्वकों जगवंत श्रीमाहावीर  
स्वामीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्यूपणपर्वके आशेसे प्रथ  
म श्रीसाधुके करण योग्य धर्मकृत्य कहते हे ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण

कैरै १, लोच करावे २, तेलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोमें जगवंत की ज्ञावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावै ५, यह पांच कारण के वास्ते श्रीतीर्थकर गणधरोनें पर्यूषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवहरी पर्व आराधन करणोकूं आठ दिन अठाइ महो भव करै सो कल्पलता शाल्वोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी जक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रोजागर एा करावै; प्रजातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीठे पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आजूपण पहरकै मुगट छत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रम हाराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मं गलीकरचित आलमें पुस्तक धरके अथवा दोनुं हाथमें आल धरके दोनुं तरफ पुरुष अष्टा वस्त्र आजूपण पहरके चमर ढालै, अनेक प्रकारके वा जित्र वाजते जये, दान देते जये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते जये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै, गुरु पिण खमा होके विनयसंयुक्त पुस्तकको नमस्कार करके आगे रखै, श्रीसं घके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जने अमारिपन्ह वजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी जमझूंजा इत्या दिक सबका आरंभ जोमावे २, सुपात्रदान देवे ३, विदाम सुपारी नालेरादिक की प्रज्ञावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार जक्तिसें पूजा करै, चौदसके दिन संवहरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकोट हो कर सर्व मंदिर दरसन करणोको जावै ५, सचिन्तका परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउठ, उठ, अठमादिक तप करै ८, अपने वित्तके अनुसार जन्मकल्याणकका उठव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवहरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघ से खमावै १२, पारणोके दिन पोसह पनिकणोवाले साधर्मिजाइ

घोंकी जक्ति करै १३, गुरुजक्ति करै १४, संवहरी दान देवै, साहमी, वज्र करै १४. इस विधिसंयुक्त यह कट्यसूत्र एक चित्त सुषनेलें, आराधन करलेमें आठ जवसें मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता है ( उर ), केवक जवज्जीव अत्यंत शुद्ध जाव धरतेजये अठमादि तप कर के युक्त कट्यसूत्रजीकों वांचते है उर सुषनेवाले प्रमाद निद्रा वि, कथा ठोरके अठमादि तप करके एक चित्तसें शुद्धजाव रखके इक बीस वेर सुषते है, सो जव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे जव सि, द्विस्थानकों प्राप्त होते है ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोत्सव जो जव्य जीव करते है सो धन्य है, धर्मके प्रजावीक है, अपणी लक्ष्मीसें, धर्मका उद्योत करते है. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते है उर नमस्कार करते है ॥ (अब कट्यसूत्रजीका महात्म कहते है ॥ यह कट्यसूत्र नबमेंपूर्वसें उद्धार कियाजया दशाश्रुतस्कंधका आठमा, अध्याय है. सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुनकेवली श्रीजगन्नाथ स्वामी प्रसिद्ध किया है. यह श्रीकट्यसूत्रके अनंते विषय है. जेसें सर्व नदीके बाजू के कण होय उसले जी एक सूत्रके अनंते विषय है. इस कट्यसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हजार जीज करके कहे तोजी महात्मका एक ग्रंथ जी कह सकता मही. ऐसा इस पर्वका महात्म जाण जो जव्यजोव शुद्ध जावसें सेवन करेंगे सो अनेक तरे सें रुद्धि वृद्धी सुख सौभाग्य को प्राप्त होमें. उर परजवमें देवादिक रुद्धि पावके मुक्तिसुखको प्राप्त होमें ॥ इति पर्यूषणपर्वधिकारः ६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिति आसोज सुदि ७ से लेके आसोज सुदि १५ तक नवपदजी की जुली तथा अष्टापदजीकी जुली विधिसंयुक्त करै. सो सब विधि पहली लिखो है उसी माफक करै॥

॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मिति कार्तिक वदि अमावस है सो दी-



पमालिका नामसें पर्व अस्तिद्ध हे. यह दीपमालिकापर्व कबसें जयां  
 सों लिखते हे. चौबीसमें तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु  
 साध्वी साथ विचरते थेके अंतकी चोमासी मध्यमपांवापुरीमें आ-  
 यके रहे, वहां आगामीकालकी सर्व वात जयजीवोंके सामने निरू-  
 पण किया, फेर अपणा अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शु-  
 क्लाशालामें आयके रहे. अपने पर गौतमस्वामीकां बहुतं खेद देख  
 के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देखेकूं जेजा. पि  
 ठानी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंर देसना देते  
 जये बहुततर वरसका आयु पूरण पालके इसी अमावासके दिन पि  
 ठली दो घनी रात रहसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त जये. जिस समय  
 जगवंतका निर्वाणकल्याणक जया उस समय चौसठ इंद्र देवताग  
 णके आणे जाणेसें वना उद्योत जया, उर जो राजा पोषधमें बैठे  
 जयेथे सो जावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके इव्य-  
 उद्योत किया. एकमके प्रजात समें देवतोका आणा जाणा उर व  
 चन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न जया. दूजके दिन  
 सुदर्शना बहिन अपने जाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमां  
 या, शोक दूर कराया जिससें जाईबीज प्रवर्चन हुई. इससें यह  
 दीवाली पर्व वना उत्तम हे. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना  
 करते हे सो लिखते हे ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥  
 श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः  
 ॥ इस एक२ पदको ३००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागर  
 ण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोले । निर्वाण  
 कल्याणकका अधिकार सुणै । गौतमरास सुणै. इत्यादिक उदार  
 चित्तसें सर्व ठिकारै दीवालीपर्वका उन्मव करणा चाहियै ॥ दिवा  
 लीका स्तवन पूर्वे लिखा हे सो पढ़ै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन सर्व ज्ञानजीवोंको ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ ज्ञी नहीं है. सर्व तत्त्वमें ज्ञानके समान कोई तत्त्व नहीं. मोक्षमार्ग सार्धनकुं ज्ञान समान कोई उपाय नहीं. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्टकर्म नाशहोय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, और कोढ़ादिकरोग सर्व दूर होय. अनुक्रमे ज्ञानावरणी कर्म के क्षय होखेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जैसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण जये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववन्दन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्टे पर ग्यानको स्थापन करै, उसके आगे पांच साधिया करै, फल फूल प्रमुख चढ़ावै, पांच बत्ती का दीपक चढ़ावै, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढेके वासुदेव कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढ़ावै तथा पूठा विटांगणादि चढ़ावै. ( ज्ञानपूजा लिखते है ) नमंतिसाभंतमहीवनाहं, देवायपूयंसुविदेयपूर्वि ॥ ज्ञात्तीयचित्तमणिदामएहिं, मंदारपुष्पसवेहिनाशं ॥ १ ॥ तदेवसद्वामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुष्पेहिंवरंसएहिं ॥ पूयंतिवंदंतिनमंतिनाशं, नाशस्तत्त्वज्ञायजवस्त्वयाय ॥२॥ यह गाथा पढेके ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करेके पीछे ज्ञानपूजा करे सो लिखते हैं) खमासमण दे के । शरियावही पन्निहमें । लोगस्त कहे । बेठके । मुंदपत्ती पन्निहहे । अणूजाणह मेमिउगहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै, पीछे पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञात ज्ञान

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन, पुष्टहेतु ज्वजलनिधि तारण ॥ सं-  
 यमतप आनन्दकंद अन्नाण निवारण, मार विकार द्रव्यैः साध तापि-  
 त जिन वारण ॥ १ ॥ स्याद्वाक् परित्याग धर्म परणति पनिबोद्धा,  
 साहु साहुणो संघ सर्व आराधन सोद्ध ॥ मोह तिमर विध्वंससूर  
 मिथ्यात्व पणासण, आत्मशक्ति अमंत शुद्ध प्रचुता परगासण ॥  
 ॥ २ ॥ मनि श्रुति अबधि विगुह नाण मणपक्कव केवल, जेद प-  
 चास द्वायोपसमिक एक द्वाधिक निरमल ॥ दोष परोक्ष प्रथम तिहां  
 डुग परतह दीसत, सकल प्रतह प्रकाश ज्ञास भुव केवल अपर-  
 मित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन ज्ञासौ, बाहिर  
 अंग प्रधान खंघ गणधर सुप्रकाशौ ॥ शाखा श्रीमिर्युक्ति ज्ञाप्य पनि  
 शाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचां-  
 गो सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदो अनुयोगद्वार शाख मा-  
 नो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुजव उपगारी, अन्यासो आग-  
 म अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धंत  
 अबोधे, देवचंड आणा सहित नयजंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोदा  
 मणो सकल मोह सुखकंद, जगते सेवो जविकजन पामो परमा  
 नंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । एमो  
 त्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हत्तु सिद्ध० । कह-  
 के ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोले, जयवी-  
 यराय० कहै, वंइशव० अन्नहू० कहके एक नवकारका काउसगग  
 करै, शुई कहै ॥ ॥ अथ शुई लिखयते ॥ देविंदवंदियपएहिंपरुवि  
 याणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईंसियपं  
 चमोए, पूयातवोगुणरथाणजियाणदितु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके  
 ( ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउसगगं ) तस्तुत्तरी० अन्नहू०  
 कहके । लोगस्तका काउसगग करै, ( पारके ) बोधागाधं० ( इत्या-

दिगाथापढ़के) पीठै ॥ आज्ञाशिवोदियनाणें । सुयनाणंचेवन्नदिना  
 पांच ॥ तहैमहापंक्तवनाणें । केवलनाणंचंपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा  
 कहके । इष्टामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा  
 नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४,  
 सखस्त लोकालोकजास्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५, इत तरे पांच  
 नमस्कार करै, धिरता होय तो ( ५१ ) ज्ञानके गुणोंकों नमस्कार  
 करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करै  
 ॥ पीठै (उं ह्रीं एमोनासस्त) इत पढ़का २००० गुणना करै, कम  
 धिरता होय तो इगारे अंगकी सिझायों पढ़ै वा सुखें, सो लिखते है॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हठीबाली ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आ  
 चरांग रे ॥ सुगणनर ॥ वीर जिनंदे ज्ञाषियो रे लाल, उववाई जात  
 उवंग रे ॥ सु० १ ॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जातं वारंवार रे ॥ सु० ॥  
 विनवे गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु०  
 ६० ॥ १ ॥ सुयखंध दोष वै जेइना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु०  
 ॥ उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिढ्यासी सुजगोस रे ॥ सु० ६० ३ ॥  
 हेतु जुगत कर सोजता रे, पद अद्वार हज्जार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप  
 दने उहमे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० ६० ४ ॥ गमा अनंता  
 जेइमां रे, बलिखि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परितो वै इहां  
 रे लाल, आवर अनंत कहाय रे ॥ सु० ६० ५ ॥ निबद्ध निकाचित  
 सासता रे, जिनप्रणीत ए जाव रे ॥ सु० ॥ सुखातां आतम उलसे  
 रे लाल, अगटे सहज स्वजाव रे ॥ सु० ६० ६ ॥ सुगुण आवक  
 वारु आविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥ सु० ॥ विधिपूर्वक तुमे सां  
 जलो रे लाल, गीनारथ गुरु पास रे ॥ सु० ६० ७ ॥ ए सिझांत  
 महिमानिलो रे, ऊतारे जव पार रे ॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माहरे

रेखाल, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० ब० ८ ॥ इति आचारंग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगङ्गांगसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांजलो, मनोहर  
श्रीसुगमांग ॥ मोरासाजन ॥ त्रिणसे तेसठ पाखंतीतणो, मत खंध्यो  
धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे  
हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरै, मानु सुधा रे  
समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग ठे जेहनो, ए तो सूत्र  
गंज्जीर ॥ मो० ॥ बहुश्रुत अरथ जाणे सहू, कीर नीर धनु तीर ॥  
मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखंय दोय ठे, वलि अष्ययन तेवीस  
॥ मो० ॥ उहेसा समुदेसा जिहां जला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो०  
मी० ४ ॥ नय निकेप प्रमाण जरया, पद ठचीस हजार ॥ मो० ॥  
संख्याता अकर पदमांहे, कुण लहे तेहनो रे पार ॥ मो० मी० ५ ॥ ग  
मा अनंता पर्याय बली, जेव अनंत जिण मांहि ॥ मो० ॥ गुण  
अनंत त्रस परित्त कहा, आवर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥  
निबद्ध निकाचित्त जे सासय कमा, जिन पणता रे जाव ॥ मो० ॥  
जार्षी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मी०  
मी० ७ ॥ करिये जगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चै लहिये रे मुक्ति ॥  
मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥  
मो० मी० ८ ॥ इति सूयगङ्गांग सिद्धाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ णाणांगसूत्रसिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ ठके कंकण लियोरी ॥ ए चाल ॥ त्रीजो अंग  
जलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीगणांग ॥ मोरो मन मगन थयो ॥  
हारे देखी २ जाव, हारे जीवाजीव स्वजाव ॥ मो० ॥ सबल जगत  
करी ठाजतो रे जि०, जीवाजिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह  
अंग मुऊ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अब ॥ मो० ॥

गुहिर जाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आखंब ॥ मो० २  
 ॥ कूट शैल सिखरी शिखा रे जि०, काननमें बलि कुंरु ॥ मो० ॥  
 गह्वर आगर एह नदी रे जि०, जेहमेंअठे रे उदंरु ॥ मो० ॥ ३ ॥  
 दस ठाणा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त  
 जेहनी वाचना रे जि०, संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ट सि  
 लोक निजुत्तपुं रे जि०, संगइणी पन्निवित्त ॥ मो० ॥ ए सहु सं-  
 ख्यातां जिहां रे जि०, सुगतां जलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय  
 खंब इक राजनोरे जि०, दश अध्ययन उशर ॥ मो० ॥ उदेशादिक  
 वीस ठे रे जि०, पद बहुतर हज्जार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशा  
 सन तणो रे जि०, सुणो सिद्धांत बखाण ॥ मो० ॥ विनयचंड कहै  
 ते हुवे रे जि०, परमारथरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ठा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगमूत्र सिद्धाय ॥

॥ ढाल ॥ थारा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे बीजली ॥ एचाला ॥  
 चोथो समवायांगसुणो ओता गुणी, हो लाल सुणो ओ०, पन्नवणा  
 उपांग करी सोजा वणी, हो लाल करी सो० ॥ अरध मागघो जाणा  
 साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित जाव कुसुम परि-  
 मल व्यापी घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव  
 समासयी, हो लाल जी०, लहीयै एहयी जाव विरोध कांड नथी,  
 हो लाल वि० ॥ जांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल  
 यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक बखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥  
 एकयकी ठे सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोनाकोनि प्र  
 माणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकत  
 णी संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि ठे एहना  
 सही, हो लाल ठे० ॥ ३ ॥ सुयखंब अध्ययन उदेशादिके जला, हो  
 लाल उ०, संख्यायें एक एक प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमाख सहस तेउत्तरा, हो० स०, पढ़नें अग्रउदग्र सं-  
ख्याताअकरा, हो० सं० ॥४॥ जाण्य चूर्णि निर्युक्ती करी सोदे सदा,  
हो० करी०, सुणतां जेद गंजीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥  
जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर  
कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं  
माहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो०  
सू० ॥ जिम मालती लहे जूंग करीनेनविरहे, हो० क०, इश्वर  
शिर सुरगंग तजी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-  
ग्रंथतणो जुगते वनो, हो० त०, साकर सेलनी झख अकी पिण  
मीठमो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो,  
वि०, एहना सुणने जाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतिसूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल पंथोमानी ॥ पंचम अंग जगवती जाणियेरे, जिहा जिन  
वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकड्या रे, मानुं पर  
तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नती नामे परगनी रे, जेहनी  
ठै उदाम उवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिती रे, मांदिना  
अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंथ एक अति  
जलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हज्जार उदेसा जेह  
ना रे, जिहां किण प्रश्न उचीस हज्जार रे ॥ पं० ३ ॥ पढ़ तो दोय  
लाख अरथे जरथा रे, ऊपर सहस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालो  
क स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥  
करिये पूजा अने परजावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥  
सुणिये सूत्र जगवती रागसूं रे, तो होय जवसागरनो त्याग रे ॥ पं०  
५ ॥ गोतम नामे इय चढाइयै रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम  
रे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणी रे, जगति युगति मन आणो

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण विघसुं ए सूत्र आरावतो रे, इण जव  
सीजे वंठित काज रे ॥ परजव विनयचंड कहे ते लहे रे, मोहन  
मुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७ ॥ इति श्रीजगवतीसूत्र सिंहाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलख लागी राजाजीरै माखियै ॥ ए देशी ॥  
उघो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना ठै अरथ अनेक नई  
न हो ॥ म्हा० १ ॥ सुणायो धरि नेह सिद्धांतनी वातनी जी ॥ श्रवणे  
सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंन हो ॥  
म्हा० १ ॥ जंबुदीवपत्तनी उपांग ठै जेहनो जी, इण मांहे जिन  
पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शांतिरस अ  
नुजवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उ  
द्यान चैत्य वनखंन सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने  
तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह  
लोक परलोक रुद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ जोग परि  
त्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥  
म्हा० ॥ संलेहण पञ्चक्राण पादपोषगमनता जी, स्वर्गगमन शुज  
कुल उत्पत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलाज वलि तंत ते अंतक  
त्या कही जी, धर्मकथाना दोय ठै खंड हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना  
जगणीस अध्ययन ते आज ठै जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबं  
ध हो ॥ म्हा० ५ ॥ उंठकोनि तिहां सकल कथानक ज्ञापिया जी,  
ज्ञाप्या वलि जगणीस उद्देस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार जला  
पद एहना जी, एह अकी जायै कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥  
विनय करे जे गुरुनो बहु परै जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल  
होय हो ॥ म्हा० ॥ ते रसिया मन बसिया विनयचंडने जी, सो मांहे  
मिलै जोया एककै होय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि०॥



॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विज्यानी ॥ द्विवै सातमो अंग ते सांज्ञलो, उपासकदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नत्ती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रधी, एतो जव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लदै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक ठै, अध्ययन उदस विचार रे ॥ दस संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनंदादिक आवकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥ म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वां चतां, गीतारथ पामे रीऊ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समजै नही, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस आवक तो इहां ज्ञापिया, पिण सूत्र जण्यो नही कोय रे ॥ ते मोटे शुद्ध आवक जणी, एक अरथ नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपियै, निस्संकपणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंड कहै स्थुं अयो, जो कुमती कश्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपासकदशांग सिंहायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगददशांग सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आठमो अंग अंतगददशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगद के वली जे अया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां ज्ञासता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आठ ॥ २ ॥ सकल निक्षेप नय जंगधी जी, अंगना जाव अजंग ॥ सहिज सुख रंगनी तळिपका जी, कळिपका जास उवाग ॥ आठ ॥ ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग ठै आठ अजिराम ॥ आठ उदेसा ठै वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥ आठ ॥ ४ ॥ आठमा

अंगनां पांठमें जी, एहवोअ ठे रे मीगास ॥ सरस अनुजव रस  
 ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे  
 हुवे जी, निरविषयी सुण्यां आय, जिम माहा विष विषधरतणो  
 जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती  
 जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम दिनग्रचंड इस सुत्रना जी,  
 तुरत लहै अजिप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतगमदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली है ॥ ए बाल ॥ नवमो अंग  
 अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुऊने आई हो ॥ आयक सूत्र सुणो  
 ॥ सूत्र सृणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥  
 आ० १ ॥ जसु कढ्याणवतंसिका नामै, सोदे उपंग प्रकामे हो ॥  
 आ० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥  
 आ० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिमर अंतरगति जीजै  
 हो ॥ आ० ॥ प्रगटै नवल सनेदा, एहशी उलसे मोरी देहा हो ॥  
 ॥ आ० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इयमें गाया  
 हो ॥ आ० ॥ नगरादिक ज्ञाव वखाएया, ते तौ ठे अंगे आण्यो  
 हो ॥ आ० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारु, त्रिण वर्ग वली मनोहारु  
 रे ॥ आ० ॥ उहेला त्रिण सनूरा, संख्यात सदस पद पूरा हो ॥  
 आ० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची अदा हुय जेहने हो ॥  
 आ० ॥ ओतायी प्रीत लगवूं, निंदकने मुंह न लगवूं हो ॥ आ० ॥  
 ६ ॥ जे सुणतां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण ॥ ठोर हो ॥  
 आ० ॥ कवि विनयचंड कहे साचो, भुत रंगे संधुकोराचो हो ॥  
 आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिज्ञायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रणव्याकरण सिज्ञायं लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पचारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रणवाकरणा नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चि  
दानंद फल पामे ॥ आवो१ गुणना जाश तुमने सूत्र सुणाउं ॥  
पुष्पकली ज्युं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग  
पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अंगु  
ष्ठादिक जिहां प्रकास्था, प्रणवादिक अति रुम्हा ॥ ते है अष्टोत्तर सत्  
ए तो, सूत्र मध्य मणिचूम्हा ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां  
आण्या, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लवधि जेद  
सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुघखंध एक है दसमे अंगै, पणयालीस  
अज्ञयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा  
॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥  
माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ० ६ ॥  
सूत्र मांहि तो मारग दोयहै, निश्चयनय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै  
ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ दाल करुखानी ॥ सुखो रे विपाकश्रुत अंग. इग्यारमो,  
तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्पचूलि  
का, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुभ किपाक सम  
डुकृतफल जोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल जो  
गवी स्वर्गमांजे गया, तास वक्तव्यता इहां प्राणी ॥ सु० २ ॥ दोयश्रुत  
खंधने बीश अध्ययन वलि, बीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे ॥ सहस  
संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल ब्रमर चित्त गुंजे ॥  
सु० ३ ॥ सरस चंपकलता सुरजि सहुने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि  
माटे ॥ सूत्र उपगार तेदथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अ-  
चल खाटे ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोक्षना बेउं कारणअहै, डुकृतने  
सुकृत जोवो विचारी ॥ डुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

चन धारियै गुण संजारी ॥ सु० ५ ॥ म करं रे म कर निंदा नि-  
गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधै ॥ नारकी प्रकृत तज  
सहज संतोष जज, लाग श्रुत सांजली घरमंधै ॥ सु० ६ ॥ सुख  
ने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें बीतरागै ॥ चिरजयो  
वीर शासन जिहांसूत्रथी, कवि विनयचंद्रगुण ज्योति जागै ॥ सु० ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में शुण्या, सहेली ए ॥  
आज थया रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥  
जाव्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-  
णी ॥ पसरि अंग इग्यारनी, स० ॥ मुऊ मन मंरुप वेल कि ॥ सींचू  
ते हरखे करी, स० ॥ अनुजव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी  
जे सांजलै, स० ॥ कुश बूढा कुश बाल कि ॥ तो ते फल लहे फू  
टरा, स० ॥ स्वादे अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी-  
हियै, स० ॥ अहम्मदावाद मजार कि ॥ जास करी ए अंगनी,  
स० ॥ वरत्या जयस्कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें,  
स० ॥ वरषाकृत नजजास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥  
पूरण थई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी,  
स० ॥ श्रीजिनचंद्र सूरीस कि ॥ खरतरगढ़ना राजिया, स० ॥  
तसु राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रदखनिधान जो, स० ॥  
ज्ञानतिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग  
इग्यार सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग गुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उप  
गारी सुगुरु वतार्ह, पांचु जेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन  
पर्यव, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूस दंसनकी,

करमैधनल करी ॥ सक्रिय सजम करतासुं मिल, तिद्धि रसान-  
धरी ॥ मे० २॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी,  
बाल कहै अंव विसरत नांही, पल दिन एक धरी ॥ मे० ३॥ इति पद ॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि जलौ, संघ सकल आधार नमूं श्रीजुवन तिलो-  
॥ आंकणो ॥ अरु अं श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रे श्रीगणधरगुरु  
जाण्यो, तडुजयश्री जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहूँ जग  
जाव सकल जाणो, नय एकांत मुनिजन नवि ताणो, निश्चय विवहार-  
ते मन आणो ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपांग है अति रूपा, उ जेह  
पंथना नहि कूना, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूना ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां  
निरयुक्ती सूत्रे संगी, बलि जाण्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे  
कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहिये,  
संवेगपखी बलि सरदहिये, ए त्रिण विन जवमारग कहिये ॥ श्रु०  
५ ॥ जेहनी अनुपेक्षा नित करिये, उपचारे दूषण परिहरिये,  
आराध्यां निज अनुजव तरिये ॥ श्रुत ६ ॥ जिन आगमना जे  
गुण गावे, शुद्धशय जे मनमें ध्यावे, ते कृमाकल्याण सदा पावे ॥  
श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवन ॥

॥ अर्थ कार्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महानेमें निति कार्तिक सुदि १४ के दिन सब  
मंदिरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक  
धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आस्ताह चोमासे मुजब  
जाणना ॥ इति कार्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्तिक पूर्णयासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सैं सेत्रुंजरास सुणें, निवी वा  
एकासण व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पदिकमणा करै, देववंद-

नादि करै, ( नै हूँ श्रीसिद्धोत्र अनंतसिद्धाय नमः ॥ ) इस मंत्रका जाप करे १०८ बेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी जात्रा करणेंको जावै, कातिपूनमके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै, अठाई महोत्सव करै, विस्तारसैं देववंदनादिक विधि करै, ( ११ ) बेर सेत्रुजरास सुणे ( नै हूँ श्रीसिद्धोत्र अनन्तसिद्धाय नमः ) इस पदसैं २१ जेती देवै, ( कदास ) सिद्धिगिरी जाणेंकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंसा होय उहां महोत्सव संयुक्त दर्शन करणेंको जावै, पूजादिक सब विधि करै, गच्छत कर के वा चञ्चल्यज्जत करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुज्ञाति करै, सा हमीवच्छ करे, इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करणेंसैं सर्व अशुज्जकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्रावरु वारखिल्ल प्रमुख वस कोमि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त ज्ञए, जिससैं इस दिन जो धर्मकृत्य करणेंमें आता हे उसका नि-  
 श्चे दशकोमि गुणा फल होता है ॥ इस जरतकोत्रमें सिद्धगिरीके समान दुसरा तीर्थ नही, संवत् १९१२ की सालमें मेरा चतु-  
 र्मास मुंबईमें था, उहांसैं कार्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिबोके दरसन करके गिणती देखणेंमें आई सो बारे हज्जार तीनसैं अठ्ठावनकी संख्या मिली, नर बहुत जगे चरणोंकी स्थापना हे, अन-  
 न्त साधू अणसण लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत ज्ञायी जीव होंगे सो शुद्धजावसैं इस तीर्थकों सेवेंगे, जो सेवते हे सो धन्य हे, गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तार्थग्रासातनाकारी देवद्रव्यजहक जतीसाधू जो संवेगपद्मी गीतार्थोंके देखी एसी वक वृत्तिसैं जीणोंद्वार तथा नोकारसी प्रमुखके बाढ़नेसैं अन्य देसांतरी जात्रार्थी जव्यजीवोंका धन गणणेंकी वृत्तिसैं तीर्थ सेवन अनंत सं-  
 सारका जवन्नमण समझके वर्जना, एसैं डुरबुद्धियोंकी पूजाव्रतपञ्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगन्ती न करणा. शुद्धजावसें सिद्धगिरी सेवे ताकुं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरबानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनी  
॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेमसुं  
हे, जो रे बहिनी ॥ गाइयै गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते  
दि० १ ॥ अदन्तुत ऊंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनायक आ  
दिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ जोली जगत जली परे हे, जो रे ब०  
॥ निरखयां होय सनाथ ॥ मो० ते० १ ॥ नाही निरमल नीरसुं  
हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर जरिय कचो-  
लमी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० २ ॥ रूमी  
रायणागंधमी हे, जो रे० ॥ आर्दिजनंद ऊदार, मो० ॥ तिहां  
जगनाथ समोसरया हे, जो० ॥ पूरब निनाणू वार ॥ मो० ३ ॥  
इण गिरवरियै ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥  
चोमासे रह्या दोय जिनवरा हे, जो रे० ॥ अजित जिनेसर शांती  
॥ मो० ४ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिला हे, जो रे० ॥ अदन्तुत  
उलकाजोल, मो० ॥ सिद्धवरु सेतुंजैनदी वहे हे, जो रे० ॥ करिये  
नित रंगरोल ॥ मो० ५ ॥ इण कुंगर दीठा थकां हे, जो रे० ॥  
ऊपजै परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर गंधमी हे, जो रे० ॥ कहे  
नित जिणचंद ॥ मो० ते० ६ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचंदाप्रभु प्राहुषो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो से-  
तुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपमल दूरै ठलै रे, तूटे  
करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरब निनाणू समोसरया रे, प्रथम  
जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसरया

तेवीस रे ॥ नमो० १ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सीधा ए-  
 हिज ठोम रे । काल अनंत वलि सीऊस्यै रे, साधू अनंती कोमि  
 रे ॥ नमो० २ ॥ अनंत कढ्याणक जूमिका रे, महिमावंत महंत  
 रे ॥ सास्वतो तीरथ ए सही रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो०  
 ३ ॥ कोमि जवांतर जे किया रे, पातिक विविध ऊपाय रे ॥ से-  
 ङ्गुजै सनमुख चालता रे, पग२ ते सहू जाय रे ॥ नमो० ४ ॥  
 धन दिन तेहिज जाणसूं रे, वहिस्युं सेङ्गुजे केरी वाट रे ॥ गहरी  
 यथाविध पाखस्युं रे, संघ सहित गहगाट रे ॥ नमो० ५ ॥ पग२  
 उन्नव अतिघणा रे ॥ पग२ याचक्रदान रे ॥ प्रेम जगत साहमीतणी  
 रे, जीर्णोद्धार प्रधान रे ॥ न० ६ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व-  
 दती मंगलमाख रे ॥ मणि मोतीयने वधावस्युं रे, रजत सोवन जर  
 थाल रे ॥ नमो० ७ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युं रे, करस्युं पाव-  
 न मोरी काय रे, जगति जुगति जुहारस्युं रे, नाजिनंदन जिनराय  
 रे ॥ नमो० ८ ॥ द्रव्य जाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥  
 जावै जावना जावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० ९ ॥  
 रत्नत्रयी जमती जली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ जवजव ब्रमण  
 निवारसुं रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० १० ॥ विध फरसन  
 मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पामियो  
 रे, उक्तागिरि केरी जात रे ॥ नमो० ११ ॥ नार्थ धूलेवा सुपसा-  
 यथी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहै जिनहरष सूरीसरू रे, हो-  
 यजो मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १२ ॥ इति सिद्धचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीकानी ॥ अंग ऊमाहो मोने अतिघणो, जेटवा  
 विमलगिरिंद रे पंथीका ॥ नाजिराया कुल चंदलो, जिहां वसै मरु-  
 देवानंद रे पंथीका ॥ वहिलुं बोले रे पंथी म्हारा वहिलुं बोले रे ॥



सेतुंजो है कितनी दूर रे पंथीमा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर  
 सोदामणो, रुमी ललतासरनी पाल रे पंथीमा ॥ जिहां अंबला रे  
 वरुला घणा, फुक रही चंपलारी माल रे पंथीमा ॥ वहि० २ ॥  
 धन ते पंखी पारेवमा, सेतुंज वसिया जे मोर रे पंथीमा ॥ ऊमा  
 हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ढोर रे पंथीमा ॥ वहि० ३ ॥  
 ३ ॥ सेतुंज वाटे जी चालतां, जीणीर ऊमे खेह रे पंथीमा ॥  
 मैला थावे संघना कापमा, निरमल थायै देह रे पंथीमा ॥ वहि०  
 ४ ॥ उंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीमा ॥  
 जिहां मिले घणा मानवी, गावै प्रजुगुण माल रे पंथीमा ॥ वहि०  
 ५ ॥ घस केसर जर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीमा ॥  
 फूलाहंदो सोहे प्रजु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अजंग रे पंथी-  
 मा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीगं माहरै, ऊपजै परम आनंद रे  
 पंथीमा ॥ मोने जेटणरो जी कोरु है, प्रेम घणे जिनचंद रे पंथी-  
 मा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरब निना  
 णूं वार सेतुंज गिर, रुषज्ज जिनंद समोसरियै, सेतुंजगिर यात्रा० ॥  
 कोमिसहस जव पातक तूटै, सैतुंज सामे रुग जरिये ॥ विम०  
 जात्रा० १ ॥ चोथ ठठ दोय अठम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥  
 विम० जा० ॥ पूरुकी पद जपियै हरबै, अघवसाय शुज धरियै ॥  
 वि० जा० २ ॥ पापी अजघी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधरि  
 बै ॥ वि० जा० ॥ जूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूरथकी परह-  
 रियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे  
 पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पन्तिकमणा दोय विधसुं कीजै, पापम-  
 ल विष हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकालै ए तीरथ मोटो, प्रवहण

सम जवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवंता, पदम कहै  
जव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरो स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रजाती ॥ ज्ञात्र धर धन्य दिन आज सफजो गिण्यो,  
आज में सजन आनंदपायो ॥ ज्ञा० ॥ हर्ष धर निजर जर विम-  
लगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वयायो ॥ ज्ञा०  
॥ १ ॥ पग२ उमंग धर पंथ नित पूठनां, धन्य दोय चरण जिहां  
चलत आयो ॥ ज्ञा० ॥ आज धन दीह जगी सुकृतकी दिशां, आज  
धन दीह में सुजस गायो ॥ ज्ञा० २ ॥ डुर डुरगति टरो जात्र  
विधसुं करी, पुन्यजंरार पोते जरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सु-  
रगिरसिखर, कषत्र जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ ज्ञा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मार्गशोर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ भिगसर महीनेमें मिती भिगसर सुद ११ सो मोनइग्या-  
रस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन मेढसें कढयाणक जये-हैं सो  
लिखते है. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कढयाणक श्रीमल्लि-  
नाथस्वामी के जये, श्री अरयनाथस्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री  
नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान जया. एते इस जरतक्षेत्रमें वर्तमान  
चोवीसीके पांचकढयाणक जये. इस तरे पांच जरत, पांच एरवत  
में, चोवीसीके पांच२ कढयाणक मिलाषेतें पञ्चास कढयाणक जये.  
अतीत, अनागत, वर्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसें कढयाणक जये.  
इस वास्ते यह दिन बना उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास  
करै, अठ पहरी पोसा करै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह  
की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे, ऐसे  
इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करषो  
की इच्छा होय तो महीनेमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारै अंग ज्ञा-  
वसैं सुणै, इग्यारै अंग लिखायके देवै, पढेवालोंको सहाय देवै,  
तपस्या ग्रहण करणैकी तथा पारणैकी विधि करै, सो गुरुमुखसैं  
करै, ( समवसरण बैठा जगवंत ) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वे  
लिख्या हे सो पढे वा सुणै, पीठै उद्यापनमें पैतालीस आगमकी  
पूजा करै, यथाशक्ति साहमीवन्द्य करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत

२४ जिन पंच क-

२४ जिन पंच कल्या

ल्याणक नमः ॥

णक नमः ॥ ४ ॥

॥ प्रथम ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीसर्वानुभूतिअर्द्धतेनमः

६ श्रीशुभ्रकरअर्द्धतेनमः

६ श्रीसर्वानुभूतिनाथायनमः

६ श्रीशुभ्रकरनाथायनमः

६ श्रीसर्वानुभूतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुभ्रकरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

७ श्रीसप्तनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्तमान २४

धातकीखंडेपूर्वभरतेवर्तमान २४

चिन पंच कल्याणक ॥२॥

जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

११ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः

२१ श्रीब्रह्मोद्भूतसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीमल्लिअर्द्धतेनमः

१९ श्रीगुणनाथअर्द्धतेनमः

१९ श्रीमल्लिनाथायनमः

१९ श्रीगुणनाथनाथायनमः

१९ श्रीमल्लिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअरिनाथायनमः

१८ श्रीगंगांगीवनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४

धातकीखंडेपूर्वभरते अनागत २४

जिन पंच कल्याणक ॥३॥

जिन पंचक ० नाम ॥६॥

४ श्रीस्वयंप्रभुसर्वज्ञायनमः

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

- ६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः  
 ६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः  
 ६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीउदयनाथायनमः  
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतोते २४ जि  
 नपंचकल्याणक० प्रथा॥७॥  
 ४ श्रीमृदुसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः  
 ६ श्रीव्यक्तनाथायनमः  
 ६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीकलाशतनाथायनमः  
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिन  
 पंचकल्याणक । ८ ।  
 २१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः  
 १९ श्रीयोगनाथअर्हतेनमः  
 १९ श्रीयोगनाथनाथायनमः  
 १९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः  
 १८ श्रीअयोगनाथायनमः  
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिन  
 पंचकल्याणकनामः ९  
 ४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीशुद्धार्तिअर्हतेनमः  
 ६ श्रीशुद्धार्तिनाथायनमः  
 ६ श्रीशुद्धार्तिसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीनिष्केशनाथायनमः  
 ६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः  
 ६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः  
 ६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीविशिष्टनाथायनमः  
 घातकीखंडेपश्चिमभरतेअतोत  
 २४जिनपं०ना०द्वितिया॥१०॥  
 ४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीहरिजन्मअर्हतेनमः  
 ६ श्रीहरिजन्मनाथायनमः  
 ६ श्रीहरिजन्मसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीमगधाधिनाथायनमः  
 घातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान  
 २४पंचकल्याणकना० ॥११॥  
 २१ श्रीप्रयत्नसर्वज्ञायनमः  
 १९ श्रीअक्षोजअर्हतेनमः  
 १९ श्रीअक्षोजनाथायनमः  
 १९ श्रीअक्षोजसर्वज्ञायनमः  
 १८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः  
 घातकीखंडेपश्चिमभरतेअनाग-  
 त २४ जि०पं०क० १२  
 ४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीधनदअर्हतेनमः  
 ६ श्रीधनदनाथायनमः  
 ६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीपौषनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत २४जिन  
पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः

६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४  
जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीवीपरीतअर्हतेनमः

१९ श्रीवीपरीतनाथायनमः

१९ श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत  
२४जिनपंचकल्याणक ॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः

६ श्रीब्रमर्षेणअर्हतेनमः

६ श्रीब्रमर्षेणनाथायनमः

६ श्रीब्रमर्षेणसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरिषभचंद्रनाथायनमः

घातकीखंडेपूर्वएवतेअतीत २४जिन  
पंचकल्याणकनामा ॥१६॥

४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः

६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअतीत २४  
जि०पंचक० ॥१६॥

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअजिनंदनअर्हतेनमः

६ श्रीअजिनंदननाथायनमः

६ श्रीअजिनंदनसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेवर्त्त० २४  
जिनपंचक० नामा १७

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीमरुदेवअर्हतेनमः

१९ श्रीमरुदेवनाथायनमः

१९ श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥ जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअना० २४जि  
नपंचकल्याणकनामा ॥१८॥

४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः

६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः

६ श्रीव्रतधरनाथायनमः

६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपूर्वएवतेअतीत २४  
जिनपंचक० नामा ॥२२॥

४ श्रीअष्टादिकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीवशिष्ठअर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः	६ श्रीवशिष्कनाथायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः	६ श्रीवशिक्स्सर्वज्ञायनमः
७ श्रीनारसिंहनाथायनमः	७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः
धातकीखंडेपूर्वपरवतेवर्त्तमान २४	पुष्करार्द्धपूर्वपरवतेवर्त्तमान २४
जिनपंचकल्याणकनाम ॥ २० ॥	जिनपंचक०नाम ॥ २१ ॥
२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः	२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसंतोषितअर्द्धतेनमः	१९ श्रीसायकाक्षअर्द्धतेनमः
१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः	१९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः	१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः
१७ श्रीकामनाथायनमः	१७ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
धातकीखंडेपूर्वपरवतेअनागत २४	पुष्करार्द्धपूर्वपरवतेअना ० २४
जिनपंचकल्याणकनाम ॥ २१ ॥	जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥
४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः	४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचंडदाहअर्द्धतेनमः	६ श्रीरविराजअर्द्धतेनमः
६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः	६ श्रीरविराजनाथायनमः
६ श्रीचंडदाहसर्वज्ञायनमः	६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
७ श्रीदिखादित्यनाथायनमः	७ श्रीप्रथमनाथायनमः
धातकीखंडे पश्चिमपरवतेअतोत २४	पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत २४
जिनपंचक० नाम ॥ २५ ॥	जिनपंचक०नाम ॥ २८ ॥
४ श्रीपुरुषसर्वज्ञायनमः	४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअवबोधअर्द्धतेनमः	६ श्रीकुटिलअर्द्धतेनमः
६ श्रीअवबोधनाथायनमः	६ श्रीकुटिलनाथायनमः
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः	६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविक्रमेन्द्रनाथायनमः	७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएवतेवर्त्तमान२४	पुष्करार्द्धेपश्चिमएवतेवर्त्त०
जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥	२४जिनपंचक०ना०२९
११ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः	११ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीहरअर्द्धतेनमः	१ए श्रीधर्मचंद्रअर्द्धतेनमः
१ए श्रीहरनाथायनमः	१ए श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः
१ए श्रीहरसर्वज्ञायनमः	१ए श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीनंदिकेशनाथायनमः	१८ श्रीविवेकनाथायनमः
धातकीखंडेपश्चिमएवतेअना०२४	पुष्करार्द्धेपश्चिमए०अना०
जिनपंचकल्याणकनाम॥२७॥	२४जिनपंच०क०॥३०॥
४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः	४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअसौचितअर्द्धतेनमः	६ श्रीविसोमअर्द्धतेनमः
६ श्रीअसौचितनाथायनमः	६ श्रीविसोमनाथायनमः
६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः	६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीधर्मैन्द्रनाथायनमः	७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कड्याणककी एकेक माला गुणनेसें नेदसें माला होती है. जो जव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे सो थोमे जवोंमें अनंतसुखको प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष मास मध्ये १० ॥

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिती पोष वद १०, सो पोषदसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकड्याणक है, इसीसें यह दिन श्रीसंधमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पञ्चक्राण करै, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय उहां जात्रा करनेको जावै, जो कच्ची यात्रा करनेको नही जा सकै तो जहां

( ५९ )

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महीनव संयुक्त दरसन करणेकों जावै, जलयात्रादि महीनव करै अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरजेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसैं अनेक तरैके नवव करै, और (पास जिसेसर जगतिलो ए ) वा ( वाणी ब्रह्मा वादिनी०आदिक ) पार्श्व नाथस्वामिके गुणगर्जित स्तवन पढ़ै वा सुणै. इस पर्वका सेवन करणेसैं आधिध्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरैसैं रुद्धि वृद्धि सुख सौजाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ ( स्तवन पासजिनेसर जग तिलो) सुणे वा पढ़े सो उर (वाणी ब्रह्मा०) पढ़ली लिखादे॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिति माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नाम सैं पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुषजदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक है, इस वास्ते जगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु जगवानके आगे चढ़ावै, बीचमें १ वना मेरु, चारुंदिस डोटा चार मेरु, एसैं पांच मेरु चढ़ावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढ़ावै । आगे चारुं दिश तरफ चार नंदावर्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहजेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढ़ावै. पीठै श्री रुषजदेवस्वामी ( पारंगतायनमः ) इस पदका दो हज्जार गुणना करै, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै, अतिधिसंविजाग करै पारणा करै. इस तरै १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीठै शक्ति मुजब नववसैं ऊजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मीवन्नव करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसैं अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पूत्र पिंगलरायकुमार गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणकै



तपस्या करी. तपस्याके कारणसे पांगलापणका रोग मिटा. तब तपस्या पूर्ण ज्ञयां पीछे तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्वर्णमई, १३ रूपैमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संवत्समेत तीर्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधर्मि वात्सल्य किया, बहोत तरेसे ज्ञान ज्ञक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देके श्रीसुव्रताचार्यजीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमे चवदे पूर्वकों पढ़के सर्व कर्मोंका क्षय करके अनंतसुखकों प्राप्त ज्ञया, जो ज्ञव्यजोव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस जव उर पर जवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ काल्युणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाळ्गुनमहानेमें मिति फाळ्गुन सुद १४, सोतीसरे चोमासेकी चौदश नामसे पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा हे ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ अमराजगवंत श्रीमहावीरस्वामी बारे महीनोंमें ६ वने पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, १ जली, १ पर्युषण. जिसमें जली २ का उर पर्युषण का एवं ३ अर्वाङ्का महोत्सव तो प्राये सर्वत्र होता हे. जिसमें जी जेसा वीकानेरमें खरतर गहवालोका पोया अर्थात् पुस्तकका उद्यव हाथीके होदे वने आम्बरसे होता हे वा वरधोना पुस्तकका मुंब-इमें जी होता हे. लेकिन हस्त्यारूढ नही. उर कार्तिक महोत्सव अन्यत्र जी वहीत जगे होता हे लेकिन कलकत्ते जेसा महोत्सव स्वमतमें तथा परमतमें कहाँ जी जारतवर्षमें हमने देखा नही. दक्षिणमें मल्लेवार तक हम गये, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा काली पटणा तक में नही देखा. उगणीसे वावनके वर्षमें हमने यह उत्सव कलकत्तेमें देखा था, उर फाळ्गुनमहोत्सव मकसूदावादका वहीत अथा होता

हे, उगषीससैं सुमतालीसमें देखा था, दुसरी जगे नही कहाँइ ज़ी देखा, लेकिन किसीज़ी धर्ममहोन्नवमें आज़ा विरुद्ध जो काम होय सो अन्ना नही, एक तो जगवंतके समवसरणके संग आजकलके ज्ञान्यवानलोक धूपके मरसैं रेतिके मरसैं आप-तो जते नही फक-त बेसमज अदम्योंको जेजदेतेहैं, वो लोक कूडते नाचते ज्ञागते समवसरणकों उन्नालादेते लेजातेहैं उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकूं सम्पत्तीजीव विचारके आप विवेक विनय संयुक्त शुद्धज्ञावसैं धर्मकाममें उद्योग करतेहैं उनका दोनुं जव सफल हे, वोही महोन्नव लायकतारीफके हे इस वास्ते आ-त्मार्षी धर्मज्ञ पुरुष हे तो शेतका चोमासापर्वज्ञाणके सर्व जगें जगवंतके धर्मका उद्योत करतेजये शुजध्यानरूप अन्नितैं अष्ट कर्म-रूपी काष्ठको जलाके होली करते हैं, पीठै सुबोधजलसैं स्नान क-रेके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हैं. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसैं हैं. इव्यें ठर जावै, सो प्रथम इव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ इस फाल्गुनमहीनेमें चौदश पूर्णमाशी के दिन केशवक अज्ञा-नीजीव विवेकविकल जयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त जये थके लक्ष्म ठाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हैं, उत्तम चोमा-सा धर्मपर्वका विराधना करते हैं, दूसरे दिन मलमूत्र रेतिसैं क्रीना करते हैं, खोटे वचन बोलते हैं, गधे पर चढ़ते हे, अनेक जीवोंकों दुःख देते हैं, एसे जीव वीतरागकी आज्ञा ठोरुके ज्ञान जरनोंकी कुलमर्याद करते हैं, मिष्टान्न त्याग बिष्टा खाते हैं, दूध ठोरु पेसाव पीते हैं, एसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करकै दुर्गतिकों उपार्जन करते हैं, अनर्थदंरुसैं अनंत जव संसारकी स्थिती बांधते हैं. इसवास्ते आत्मार्षी ज्ञव्यजीवोंकों ज्ञावहोली करणा चाहियै, सो इस मुजव-प्रभुके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोझै, रात्रीजागर-

ए करवै, मंदिरोंमें पूजा करवै, महोत्सव निकालै, नानाप्रकारका नाटिक करै, सादमीबन्ध करै, साधमीजाई आपसमें नाना-तरेकी क्रीडा करै ॥ आगे राजालोक जी वसंतऋतु आणैसैं मदन महोत्सव करणैकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अबोर गु-लालसे सहरके लोक बगीचोंमें क्रीडा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोंमें वहोत जगे वांचणैमें आया हे, लेकिन मलमूत्र राख धूमसैं खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, जंम चेष्टा करणी, कुल मर्याद ओमणा, वनेरोकी लज्या ओमणी, ऐसा कृत्य उत्तम पुरु-षोंके करणै लायक नही. यह क्रीडा वाममार्गीयोकी चलाइ जई हे. इसकों प्रवृत्त जयें प्राये दो इज्जार वर्ष करीब जया. पीठै स्वामी शंकराचार्यकूं यह बात सम्मत जई तबसैं घीरे १ अज्ञानी जीव ए-ककी देखादेख बहोत लोक करणै लगगये, लेकिन एसी कर्तव्यता किसी जी शास्त्रमें नहीं देखणैमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी बात हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोत्सवका काम होता हे उस वख-त तो जाणै को फुरसत नही मिलती हे, उर होलीके दिनोंमें मा-तापिता जाई वद्विन सबोंकी लज्या ओमके बहोत दिलमें खुसव-खती मानताजया पागलके माफक जांमोंकी तरे वकते फिरता हे. कोइ वैस्याउका नाच होता होय उहां तो इज्जारुं रुपे खरच कर देतेहे. मनमें फूलते हैं हमने वना नाम किया. तत्व नजरसे देखे उर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुभजगतीके पाये पूरे-मजबूत बंध करणैमें आये. एसी लज्याओमके जिनमंदिरका महो-त्सव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, एसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्ये उर जावे होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्षी धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें, उर जो महामर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगे उर

सच्ची वातकूँ कुयुक्तियोंसें जूठी ठहरावेंगे, ठर मध्यस्थ विचारवंत तो ऐसा कहेगें यह वात सच्च है. किसका पर्व किसका खेल, निकेवल इसमें अनर्थ दम लगता है, लेकिन हम इकेला क्या करें, ज्ञाइब-धोंकों ऐसा करते देख हमज्जी करते हैं, हमसें रहा जाता नहीं, परंतु यह प्रथा बंध हो जाय तो अच्छी है. इस वास्ते हे ज्ञव्यजो-वो इसमें समुदायी कर्म बंधता है. गोमे सो घन्य है. नरकके जाते का संग नहीं करणा, जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरी करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत ठर वात तक नहीं करते उस मुजब एकका अनर्थ खेल देख-डसरेकों बचना चाहिये. काम वो करणा जिस्में दोनों ज्ञवमें लाज होय. इस ड्यहोलीके खेलमें वनो२ लमाइयां होजाती है. मेमता सहर हालीके ख्या-लसें पुष्करणे ठर ज्ञोजकोंकी लमाइमें तमाम ज्ञान होगया. ठर परज्वमें अरगैर बोलणेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा है. इस बाबत जो जो कठोर लबज लिखा है उसकूँ वांच विवेकी मेरे पर गुस्ता नहीं लावेंगे. जो कुछ लिखा है सो पूर्वाचार्योंके वचना-नुसार लिखा है. हितोपदेश समजके गोमणेका प्रयत्न करेंगे. मेरे तो नवकारमंत्रके अमसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु है. जि-समें जी सर्व जीवाथोनिसें मित्रता है. कम या ज्यादा जो कुछ अपशब्द लिखा होय तो मित्रामिडुक्कनं ॥१॥ इति फा० ॥ प० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ होरी खेलीयै नर बहुरन एसो दाव  
॥ हो० ॥ दयामिगई अति जली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अ-  
थायो अति जलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १ ॥ लेस्या मा-  
दल जाव रुफ रे, क्रोध मान होय ताल ॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी  
नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० २ ॥ सुमताकेसर घोलियै रे, दमवाको

छिन्काव ॥ ग्यान पिघरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥  
हो० ३ ॥ ऐसा साज वषायकै रे, रुषजदेव गुण गाय ॥ श्रीजि-  
नचंड इम खेलतां, वारी जव२ पातिक जाय ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ जय बोलो रे पास जिने-  
सरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोढ़े मनमोहन, अंगिया सोढ़े केस-  
रकी ॥ ज० १ ॥ त्रिजुवन ज्योति अखंनित तनकी, स्यामघटा  
जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ज्ञानी, करुणा  
कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ उनाय वाय ज्युं वादल, जीत  
करी अपणे घरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवामा उदरे जिन जाया,  
राणी अश्वसेन नरसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल खपा-  
ये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहै जिनचंद्र मेरे प्रभु  
पारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज० ७ ॥ इतिपदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान  
गुलाल अबीर उनावो, सुमताकेसर रंग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृत  
रूप धरम जिनवरको, शुध कमा कहै करजोरी ॥ म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥  
संजमदूती कान लगी जब, शिवनारी पर चित दिथो रे ॥ या० २ ॥  
मोह गेरु गिरनार सिधाए, नव जव नेह अलग कियो रे ॥ या०  
३ ॥ तुम हो तीन जुवनके साहिब, सुरनर कहै तुमे चिरंजीयो  
रे ॥ या० ४ ॥ वार२ मेरी वंदना होयज्यो, चंद कहै मन  
हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ इक सुण लै नाथ अरज मेरी, इ० ॥  
इह संसार गहर तरु सिंधु, जमर परत जिहां जव फेरी ॥ इ० १ ॥  
क्रोधादिक बहु मगरमछ हे, अहत जंतु न करत देरी ॥ इ० २ ॥  
एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण विरुद तेरी ॥ इ० ३ ॥

धरमजिनेसर जगपरमैसर, दूर करो डुखकी बेरी । ६० ४ ॥ परम  
क्षमागुण दायक लायक, अनुपमकीरत जग तेरी ॥ ६० ५ ॥ इति ॥

॥ पुनः होरी ॥ सांवरो सुखदाई, जाकी बिव वरणी न जाई  
सा० ॥ श्री ॥ अश्वसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिभुवन ठाई ॥ समे-  
तसिखरगिरि मंरुण प्रभुको, देख दरस हरखाई-हृदय मेरो अति  
हुलसाई ॥ सां० १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो, आज आनंद वधा  
ई ॥ तीन जुवनको नावरु निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई-सफल  
मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रभुके दरस सरस विन पाये, ज-  
व ३ जटक्वो में जाई ॥ अब प्रभु चरण सरण चित चाहत, बाल  
कहै गुण गाई ॥ प्र० सां १ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ नेना हरखाई, आज तेरी सूरत निर-  
खी ॥ ने० ॥ जव २ संचित पाप करम सब, देखत दूर पुलाई, सु-  
मति वधारण कुमति विचारण, ज्ञान विमल जलसाई ॥ आ० १  
॥ वामानंदन अति ठबि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ दीनद-  
याल दयाकर बीजै, आनंद हरख सवाई ॥ आ० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफीमें होरी ॥ ऐसें फागुण मस्त महीने च-  
खोरी, देखो स्याम सखी मोपै ठोरी ॥ ऐसें ॥ ब्रजकी सखी सब  
वन ३ निकसी, खेलत मिल ३ होरी ॥ नारे गुलाल अवीरमुठोत्तर, अप-  
ने प्रीतम रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सजी वन ३ के,  
मधुर २ रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत मरत विन, प्रियतम २  
गौरी ॥ च० ए० २ ॥ रत अनरत रात रसे रस, सरस दरस  
प्रभु मोरी ॥ प्रो १ तजी सुमता ममता मन, बाल कहै कर जोरी ॥  
च० ए० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्यामसें कहियो मोरी, ने० ॥  
समुझिजै शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजप्रज तनु

सावलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी—अरज नहीं लीनी मोरी  
॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन जाए, लाये बल दल जोरी ॥  
तोरणसें रख फेर चले हो, चढ गए गिरकी डरी—मदन महा रिपु  
तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल जईहुं दरस विन देखे, रहि हे मुख  
कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमतीसखियनसें, विनती करै करजारी-  
लंगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे जविक मन धिर करकै, हो०  
॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अबीर जमावो जोली जरशकै ॥  
हो० १ ॥ ग्यान ध्यान रूप ताल बजावो, गुण गावो प्रजु हित धरके  
॥ हो० २ ॥ अनुजव अतर फूलेल मंगावो, वास दिसोदिस महम  
हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रजधूरु जमावो, ज्यूं तेरा पाप सब-  
ल अरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रजु जज विलं-  
ब न कर रे ॥ हो० १ ॥ विनय संजारी जर पिचकारी, हारै तूं  
तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल जर  
जोरी, हारै तूं तो खेल वसंत घर रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग  
आजूषण अंगै, हारै तूं तो जावना वागा पहिर रे ॥ हो० ४ ॥ नी-  
रंजन प्रजुना गुण गावो, हारै तूं तो आतम अनुजव वर रे ॥  
हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हारै तूं तो गूंजत मन  
मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पासजिनेसर, हारै तूं तो ज-  
गनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रोजिनलाज कहै प्रजु संगै,  
हारै तूं तो अनुपम जव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ वाकै ममतानें धूम मचाई, आज सुमतासंग  
खेलेंगे होरी ॥ वा० ॥ जिनशासन व्रतरंगमहिलमें, दीपकबोध बनाई  
॥ आ० ब्रा० १ ॥ सरधासखी कामा मृडना मिल, रुजुता मुक्ति सुदाई ॥

हर अनेक सुमति सखी ब्रजमें, अनुजव रंग रंगाई ॥ आ० वा० ३ ॥  
 ज्ञाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सदाई ॥ जिन गुण  
 गान संगीत निरत धुनि, जकि जिणंद बढ़ाई ॥ आ० वा० ३ ॥  
 खेलत संजम फाग मिलै सब, बाल आणंद बढ़ाई ॥ अब कुमता  
 संग रंग करे तो, मेरे चित न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ समकित विन जीव जगत जटक्यो, स० ॥ चउरा  
 सी जव जमतां २, नरजव पाषो सो दिख खटक्यो ॥ स० १ ॥ गर  
 ज्ञावास नव मासे नीकौ, ओऊकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥  
 पुन्य संजोग मिल्यौ कुल आवक, ग्वान प्रकाश ज्यो घटको ॥  
 स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासें तेरो मन अट  
 क्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संजाल तूं जाग रे मानवी, सूयो शिवपु  
 रकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रजु गुण गावौ, स्वर्गपुरीमें  
 नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ विसरे मत नाम प्रजुजीको, वि० ॥ प्रजुजीको ना  
 म चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १ ॥ ना-  
 ज कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन जुवन सिर हे टीको ॥ वि० २  
 ॥ चतुर कुशल चित चोलसुं राख्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको  
 वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने० ॥  
 बहुत द्वांसुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥ व० ने० १ ॥  
 सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने०  
 २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोरै, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व०  
 ने० ३ ॥ जनघरजूषण कहै जविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे  
 व० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेले ने-



मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल ज़रथौ, दिशि दूजी गिर  
 वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोजतो, तिण मादे खेले नेमकु  
 मार ॥ ग० १ ॥ फूड्या केवमा केतकी, विच फूड्या मरुआमचकुंद  
 ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांदै खैले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥  
 आंबा मोरया बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजै  
 पवन इक्षितणी, स्यामजमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३ ॥ आ  
 ब पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमार अजू  
 नही, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४ ॥ हरि हृदयर गोपि मिली,  
 विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलजरी, मुख ऊपर ठां  
 ठे यडुनार ॥ ग० ५ ॥ नेम हठी हठ ना तजै, समझायो जेरें य-  
 डुनाथ ॥ रिहहरष वाचक कहै, वात सांजलो शिवादेवी मात ॥ ग० ६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो जाग री, नेमनाथ वर  
 पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजू रुषज्जिणंदा, जिण  
 मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको छत्र धरयो सिर ऊपर,  
 गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंदेली दोनुं मरुआ,  
 फूल चढ़ाजं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख  
 बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानसंदिरकी एहि बीनती, जवर  
 दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंगनगरमें, फा-  
 गणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंरुपमें, होय रही  
 हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी जरिय कचोरी, प्रजुजीके अं-  
 गियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाब  
 उमाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध जांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित  
 लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, ब० ॥

निबिम्ब डुरित ज़र शिखर जि डुरकी, ज़वसागर तारण तरकी ॥  
 ब० १ ॥ तीन जुवन तीरथ तारागण, सोजा लहिय निशाकरकी  
 ॥ ब० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिँ, महिमा जीती सुरगिरकी  
 ॥ ब० २ ॥ परमात्म पद प्रतिबिंब तनकी, बंठित पूरण सुरतरु-  
 की ॥ ब० ॥ वर सोरठ मंरुल मंरुनकी, सकल करम रज जल-  
 धरकी ॥ ब० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाज्ञेय जिनेसर-  
 की ॥ ब० ३ ॥ ए गिरि नदयाचल परि जिनकी, डुति दीपै जेम  
 दिनेसरकी ॥ ब० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित क-  
 रुणासागरकी ॥ ब० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन जु-  
 वन जनहितकरकी ॥ ब० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषज  
 लंघन सोजाधरकी ॥ ब० ५ ॥ सुंदर प्रजुकी मोहनमूरति, देखत  
 परमानंद ज़रकी ॥ ब० ॥ केवलकमला प्रजुकी निरंतर, पदतल  
 नमत सुरासुरकी ॥ ब० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, जवश्  
 एहिज जिनवरकी ॥ ब० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रजु नेमनाथ, मेरे दिख वसिया ॥ ऐ०॥  
 त्रिगढ़में विराजमाम, डंडजि सुणत कान ॥ अपठर मिल करत  
 गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासण विराजै साम, जीत  
 लिए रूप काम ॥ देख्या दिख हर्ष धाम, स्वाम नाम वसिया ॥  
 ऐ० २ ॥ तीन डत्र चमर सार, पंच वर्षा पुष्प धार ॥ गहिर अ-  
 सोक सार, ज़ामंरुल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग,  
 द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संजवजिन सुखकारी, हो लाखा, सं० ॥  
 हारे हो रे लाखा ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाखा  
 ॥ सं० ॥ बाता तीन जुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी ॥ साता  
 दीजै साहिब मोक्क, तक आयो सरण तिहारी हो लाखा ॥ सं० १ ॥

सेनामात उयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकेज  
 खंढन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाळा ॥ सं० २ ॥ साठ  
 पूरब लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरणा  
 सेवे डुरितारी, सावन्नी नगरी सारी हो लाळा ॥ सं० ३ ॥ समेत  
 सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल  
 मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाळा ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरणा  
 सुहसें त्रिभुवन पतिकुं, बंदना होउयो हमारी ॥ चरणकमल सेवा  
 चित चाहत; सुगुण सदा हितकारी होलाळा ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस बिखावो रसिया,  
 सा० ॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥  
 सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिखया ग्यानकेवल रसि  
 या ॥ सा० २ ॥ राजुलनारी नेमीसर हाथै, संजम लेइ जवोदधि  
 तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरब निनाणुं  
 समोसरिया ॥ सा० ४ ॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर  
 सिवपुर बरिया ॥ सा० ५ ॥ नाजनंदनकूं करुं जुहारा,  
 सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया  
 ॥ सा० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे जव हारो रे ॥  
 जि० ॥ रथ पाउधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त  
 न कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राण-पियारो ॥ जि० क्या०  
 १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरजव सकल जमारो ॥ जवि  
 जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥  
 जवहुख जंजननाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो ॥ ममता तज सम  
 ता संग जेली, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें  
 रंग बधाई, घर-मंगलाचारो ॥ रथ महोन्नव रचना रची हद, मुख

जयर सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी,  
सेवक सुगुण संजारो ॥ प्रभु पंकजकी द्वि सरणा ग्रही, जवसा  
यर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली  
गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वषाय सखी सब, शिखर  
सैल जेसे चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो,  
मोसें प्रीत लगाइ जामनी ॥ आ० ॥ तोरण आय चले मोहि गोनी,  
कोन चूक मोपै काही जामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ मेन तजूंगी  
नव जव केरी, प्रांत वषी जेसी झुंझु यामिनी ॥ आ० ॥ रा-  
जुल पदली प्रीतमसेती, बाल कदै नई सुगति गामिनी ॥ आ०  
म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेल ॥  
रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, प.हिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥  
पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया घर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥  
द्वि मिल आप परम रस चखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो०  
रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाब लाख रंग लागै, सोहै अदभुत वान ॥ हो०  
रं० ४ ॥ सुमति अवीर उभाय जगतमै, वैठै शिवपुर ध्यान ॥ हो०  
रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर ध्यान ॥  
हो० रं० ६ ॥ ऐसा खेल जविकजन धारै, वंजित पावैदान ॥ हो०  
रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेलै फाग, हो हो होरी आई ॥  
मनमृदंग बजै तन मांही, गावत अगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान  
गुलाब तदा रंग लागै, खेलत सुमत सुदाग ॥ हो० ॥ समकित  
केसर चीर रंगान, पद्मिनी मनवैराग ॥ हो० २ ॥ लाख चोरासी रा-  
मत ठांसी, च्यारु गतिसैं जाग ॥ हो० ॥ अविचल मुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ ऐसा खेल जविकजन  
धारै, पावै जवजल आग ॥ हो० ॥ चेतनता सुख होय जगतमें,  
समकृतिके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसैं धाय२, डुरजनकी लाज  
मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अबीर उमावो, कमा  
करो रंग लाय २ ॥ डु० हो० १ ॥ शीख संजमव्रत पान मिठाई,  
ध्यान धरुंगी में गाय गाय२ ॥ डु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेद  
उमावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ डु० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अ-  
रज वीनती, सरण गही में तेरी जाय२ ॥ डु० हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे जरी, शिवपुरकी-  
वात पूतूं कबकी खरी ॥ मे० ॥ परनजोत प्रभु सिद्धशिला पर,  
परमात्म निज ध्यान धरी ॥ मे० १ ॥ मोहन रंग जरखो रंग शी-  
वपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रुषज बेठै अलवेसर, मारो गुलाल  
मुठी जरकै ॥ बावो० ॥ मुठी जरकै पसली जरकै, बावो० ॥ चू-  
आ२ चंदन उर अगरजा, केसरका मटका जरके ॥ बावो० १ ॥  
रतनजमित शिर उत्र बिराजै, अंगी जमाव जमी जरकै ॥ बावो०  
२ ॥ बांदै बाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा०  
३ ॥ नाजिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये जवि आदीसरसैं ॥ बा०  
४ ॥ आदिखान हेदास तुमारो, तार लीओ अपखे करकै ॥ बावो० ६ ॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे,  
जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ जवःडुख वारण शिवसुख कारण,  
देखत जवनही वंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंद-  
न, प्रणमुं रुषज जिनंदना रे ॥ जि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान  
तुमारो, जिम चातक दिल चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरणा तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥  
देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे है अति नीको ॥ द० १ ॥ बी-  
स कोसथां दरसन दीगो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥  
बीसे टूँके बीस गोमटनी, तामे चरख जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब  
जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥ ६०

॥ पुनः होरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसन करलै, संघयात्रा-सं-  
घयात्रा करणलैं पाष कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि  
सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रुषज जिनेश्वरजीको  
दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै  
नाथ निरंजन, जवश्का डुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहि अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि  
जिनंद चंद ॥ मोहि० ॥ रंग तूँही रंग रे ज तूँही है, संजम रंग  
मोहि रंगदे ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अना-  
दिको, सो अब इनकूं खिनदै ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रु-  
द्धि तेरी में देखी, सो अब मुऊकुं सऊदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥  
ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, बा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो० ४ ॥  
जुवरदास कहे सम्भक्तिदे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो० ५ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरे पारसप्रज्जुकीके रंगमंरुपमें, खलत संत  
वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अबीर विलसंत ॥  
॥ मे० १ ॥ प्रज्जुगुण प्रेम पिचरकी बूटत, समता सखिय मिलंत  
॥ आगम लहर फूली फुलवामी, मुनिवर भ्रमर गुंजंत ॥ मे० २  
अंग आजूषण पंचेंद्रिय बस, गुरुसेवास लहंत, बार जावना ग-  
हिर कसूंवा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदजून पंच माहा  
व्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहै जिनचंद प्रज्जुकी कृपासैं, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग मच्च्यो जिनहार चालो खेलिये होरी,  
रं० ॥ पास प्रजु दरबार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन च्यार रे, चा०  
कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥  
कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल मद्दके अपार रे ॥ चा० २ ॥  
लाल गुलाल अबीर उमावत, पासजीकै दरबार रे ॥ चा० ३ ॥  
जर पिचकारी गुलाबकी बिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥  
ताल मृदंग बीण रुफ बाजै, जेरी जुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥  
सब सखियन मिल नाटक करकै, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥  
॥ रत्नसागर प्रजु जावना जावै, मुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेमजीसैं कहियो मोरी, सामरेसैं कहियो  
मोरी ॥ तोरण आए किरा जरमाए, जोरु चलै अजिमाणी ॥ हां  
रे लाला जो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोमी प्रीत पुरानी-  
दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पमीसो मुंहसैं कहियो,  
ना करिये सोधाणी ॥ आठ नवोकी प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं  
ज्यानी—इयाम तेरी सूरत पिठाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें  
बेह लागी, राजुल गुलकी वामी ॥ वीनती सुणकै अमर पद दीजै,  
रंग विजय सुख दानी—आवा उर गमन बिदानी ॥ सा० ३ ॥ ५०॥

॥ पुनः होरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें वरसै रंग, जिन०  
॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा,  
सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुजव लहर फुली फु-  
लवामी, दिन२ वढते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा  
अंग अनोपम, शुद्ध ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद  
चिंतामणि चित धर, तुजसुं अविहर रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ ॥ ५०॥  
॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वषी हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रजूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी ज्ञाव  
 अज्ञंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी ज्ञांत ज्ञानी हे, वुंठिया  
 नवश'रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवना  
 संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोष कुंमल, बाजूबंध  
 सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोजत है, सौरंग वास  
 सुगंध ॥ श्रीचिं० ३ ॥ त्रिजुवम साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग  
 ॥ श्रीचिं० ॥ सुरमर याकी सेवा करत है, रात दिवस घर रंग ॥  
 श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग  
 ॥ श्रीचिं० ॥ जावना जावो जिनगुण गावो, अमर धौ उठरंग  
 ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्वावो रे, वंठित फल पा-  
 वो ॥ चिं० ॥ सकल जविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण  
 गावो रे ॥ वंठित० १ ॥ अवीर गुलाल लाल संग लावो, जर२ सु-  
 ठियां उठावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं ठिम्कावो, ज्ञा-  
 व शुक्ल जल जावो रे ॥ वंठि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुद्गल ब-  
 नावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ दरस सरस  
 करके सुख पावो, पुण्य जंमार जरावो रे ॥ वंठित० चिं० ३ ॥ वा-  
 जित्र बाजाविविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंठित० चिं०  
 ॥ अमरसिंधुर आनंद बनावो, जिनजीसें लयलावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी जीज  
 गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांदि, गावत आगम राग ॥  
 लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति  
 सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगाळ, पहिहं मन  
 वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत ठोरुं, च्यारों गति  
 सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-



सुंदरी वर मांग ॥ लाल में ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै,  
इस विध खेले फाग ॥ पिया में ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिन-  
जी, नेम ० ॥ मे हूं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये ॥  
हो ० ने ० १ ॥ हम हे केतकी तुम हो २ जमरा, फिर वासना लीजीये  
॥ हो ० ने ० २ ॥ मैं हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना  
कोजीये ॥ हो ० ने ० ३ ॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद  
दीजीये ॥ हो ० ने ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, करम कटै ज्युं शुद्ध  
ध्यानसें ॥ आ ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिठाणयो, समता मिट  
गई सारी जानसें ॥ कर्म क ० आ ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार  
सम, नास ज्यो सब ज्ञानजानसें ॥ कर्म क ० आ ० २ ॥ परमातम  
पद पावत सोई, विनय जजत पद अचल धानसें ॥ कर्म ० आ ० ३ ॥

॥ पुनः होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपस-  
मरसकी क्यारी ॥ लाल ते ० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे,  
नयन जये अविकारी ॥ निझ सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण  
निवारी ॥ लाल ते ० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत  
जरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे दुसिया-  
रो ॥ लाल ते ० २ ॥ ऐसा लछन हे नयनोंमें, क्युं पामे जव पारी,  
योही विचार करो दिख अपनै, होत कर्मसें जारी ॥ लाल ते ० ३ ॥  
धर्म विना कोई सरणा नही है, एसो निश्चै घारी ॥ विनय कहै  
प्रभु जजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार जन्मो, द ० ॥ चो-  
रासी लख योनिमें जटकत, लहि मानवजव युंही गम्यो ॥ द ०  
१ ॥ पुन्य उदय श्रावक कुल पायो, घटमें ज्ञान उद्योत जयो ॥ द ०

३॥ माया समतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो ॥  
 द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, जटकत जवमें क्युं जरम्यो  
 ॥ द० ४ ॥ कहत क्लमाकळ्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप  
 शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत ठोमो मोने यूंदी रे, कोइ चूक बतावो  
 ॥ म० । अबीर गुलाल जावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेलो रे  
 ॥ कोइ० म० १ ॥ रथ फेरी प्रजुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी  
 रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत दठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया  
 आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊजी अरज करत हे, एक वार  
 फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोलुं मुगत सिधाए,  
 पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें  
 ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो  
 री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्या-  
 रो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवज्र लंछन जनम जदिलपुर, कुल  
 इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेज धनुष शरीर सुतोजित,  
 कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरब आयु  
 कदिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५ ॥ दीनदयाल जगत  
 प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके  
 साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है  
 देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥  
 ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥  
 ने० २ ॥ मंगल धन धन्नामुनि नायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३  
 ॥ जय२ खेमकुसल गुरु जंपै, आनंदधन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासै संग्रही, अति सुगम ज्ञाप प्रकाश करता ज्ञयजन मन गहगही ॥ निधि बाण नंद सुचंद्र विक्रम माष सुदि पूनम सही, श्रीवृद्धस्वरतर गङ्ग पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन जगवंत के कल्याणक के हे सो सर्व ज्ञयजीवोंके सेवन करणे योग्य है, लेकिन कोष तिथिकूं कोषसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही ( और विशेषमें ) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले ज्ञयजीवोंके अवश्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चखता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासै पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

कार्तिकशुक्लपक्षे ॥ १ ॥

५ श्रीसंज्ञवनाथजीसर्वज्ञाय०

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०

११ श्रीपद्मप्रभुजीअर्द्धतेनमः

१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

१२ श्रीनेमनाथजीपरमेश्विनेन०

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ६ ॥

१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः

१० श्रीअरनाथजीअर्द्धतेनमः

३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः

५ श्रीसुविधनाथजीअर्द्धतेनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीअर्द्धतेनमः

६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०

११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः

१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०

११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

११ श्रीमिनाथजीसर्वज्ञायन०

पौषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१४ श्रीसंज्ञवनाथजीअर्द्धतेनमः

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्द्धतेनमः

१५ श्रीसंज्ञवनाथजीनाथायन०

- ११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥  
 १२ श्रीचंद्राप्रभूजीअर्द्धतेनमः ६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०  
 १३ श्रीचंद्राप्रभूजीनाथायनमः ए श्रीशान्तिनाथजीसर्वज्ञा०  
 १४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय० ११ श्रीअजितनाथजीसर्व०  
 माघकृष्णपक्षे ॥ ५ । १४ श्रीअजिनंदनजीसर्वज्ञा०  
 ६ श्रीपद्मप्रभूजीपरमेष्ठिने० १५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०  
 ११ श्रीशीतलनाथजीअर्द्ध० माघशुक्लपक्षे ॥ ए  
 १२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः २ श्रीअजिनंदनजीअर्द्ध०  
 १३ श्रीरुषभदेवजीपारंगता० २ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०  
 ३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन० ३ श्रीविमलनाथजीअर्द्ध०  
 फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १० ३ श्रीधर्मनाथजीअर्द्धतेनमः  
 ६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ४ श्रीविमलनाथजीना०न०  
 ७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता० ८ श्रीअजितनाथजीअर्द्ध०  
 ७ श्री चंद्राप्रभूजीसर्वज्ञायन० ए श्रीअजितनाथजीनाथा०  
 ए श्रीसुविधनाथजीपरमेष्ठिने० ११ श्रीअजिनंदनजीनाथा०  
 ११ श्रीरुषभदेवजीसर्वज्ञायनमः १३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०  
 १२ श्रीश्रेयांसजीअर्द्धतेनमः फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५  
 १२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः २ श्रीअरमाथजीपरमेष्ठिने०  
 १३ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः ४ श्रीमल्लिनाथजीपरमेष्ठि०  
 १४ श्रीवासुपूज्यजीअर्द्धतेनमः ८ श्रीसंभवनाथजीपरमेष्ठि०  
 ३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः ११ श्रीमल्लिनाथजीपारंग०  
 चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५ १२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०  
 ४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्ठिने० चैत्रशुक्लपक्षे । ८  
 ४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ३ श्रीकुंभुनाथजीसर्वज्ञा०  
 ५ श्रीचंद्राप्रभूजीपरमेष्ठिने० ५ श्रीअजितनाथजीपारंग०

- ८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः  
 ८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०  
 वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९  
 १ श्रीकुंभुनाथपारंगतायनमः  
 २ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०  
 ५ श्रीकुंभुनाथजीनाथायनमः  
 ६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०  
 १० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०  
 १३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०  
 १४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०  
 १४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०  
 १४ श्री कुंभुनाथजीअर्हतेन०  
 ज्येष्ठकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥  
 ८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०  
 ९ श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०  
 १३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०  
 १३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०  
 १४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०  
 आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥  
 ४ श्रीआदिनाथजीपरमे०  
 ७ श्रीविमलनाथजीपार०  
 ९ श्रीनमिनाथजीनाथा०  
 श्रावणकृष्णपक्षे ॥ ४  
 ३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०  
 ७ श्री अनंतनाथजीपर०  
 ५ श्रीसंज्ञवनाथजीपारंग०  
 ५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०  
 ९ श्रीसुमतिनाथजीपारंग०  
 ११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०  
 १३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः  
 १५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०  
 वैशाखशुक्लपक्षे ८  
 ४ श्रीअजिनंदनजीपरमे०  
 ७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०  
 ८ श्रीअजिनंदनजीपारंग०  
 ८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०  
 १० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०  
 १२ श्रीविमलनाथजीपारंग०  
 ज्येष्ठशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥  
 ५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०  
 ९ श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्टि०  
 १२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०  
 १३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०  
 आषाढशुक्लपक्षे ३  
 ६ श्रीवर्द्धमानजीपरमेष्टि०  
 ८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०  
 १४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०  
 श्रावणशुक्लपक्षे ५  
 २ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०  
 ५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

( ५१३ )

- |                           |                            |
|---------------------------|----------------------------|
| ८ श्रीनिमिनाथजीअर्ह०      | ६ श्रीनेमिनाथजीनाथाथ०      |
| ए श्रीकुंभुनाथजीपरमे०     | ८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग०   |
| भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥   | १५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्टि० |
| ७ श्रीचंडाप्रज्ञजोपारंग०  | भाद्रपदशुक्लपक्षे १        |
| ७ श्रीशान्तिनाथजीपरमे०    | ए श्रीसुविधनाथजीपारंग०     |
| ८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे० | आश्विनशुक्लपक्षे १         |
| आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २      | १५ श्रीसुविधनाथपरमेष्टि०   |
| १३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०    |                            |
| ३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०  |                            |

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार षष्ठमप्यस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुद्ध दिन शुद्ध घरों गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करै, उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पञ्चस्काणः करै, तीन टंक देववन्दन करै, पम्पिक्कमणा करै, जिस दिन जो मा-हाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै, उर पदली, लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुखे या पढ़ै, जहां ज-गवंतकी कल्याणक जूमि होय उहां घने महोन्नवर्ते संघ समेत यात्रा करणेंको जवै, उहां विधी संयुक्त सर्व जगवंतोंके पंच क-ल्याणकका उन्नव करै, जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीम-हावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उन्नव करै ॥ अब २३ जगवंतकी अपेक्षार्थे पांच, श्रीवीरप्रज्ञके अपेक्षार्थे षट् कल्याणक संक्षेप उन्नव विधि लिख्यते ॥ च्यवन कल्याणकको (परमेष्टिनेनमः) कहियै, इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायकै च्यवन कल्याणादिकका उन्नव करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककूं (अर्हतेनमः) कह्या, इस दिन जलजात्रादिकका महोन्नव करके अष्टो-

चरी स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कढ्याणककों ( नाथायनमः ) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृ-  
क्षादिकके नीचै स्थापन करकै दिक्षाका उज्जव करै, घृत गुरु वस्त्रा-  
दिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कढ्याण-  
ककों ( सर्वज्ञायनमः ) कहणा. इस दिन समोसरणमें जगवंतकों  
विराजमान करकै आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उज्जव करै,  
वस्त्र आचूषण चढावै, सुपेदचंद्रन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ नि-  
र्वाण कढ्याणककों ( पारंगतायनमः ) कहियै. इस दिन निर्वाण  
कढ्याणकके जावगर्भित उज्जव करै, लहू चढावै ॥ ५ ॥ और उग्र  
गर्भापहार कढ्याणकका उज्जव करणा होय तो ज्यवनकढ्याणकके  
उज्जव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कढ्याणकका उज्जव करै.  
तपस्या पूर्ण होखेसँ पंच कढ्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुजक्ति  
करै, साहमीबल्ल करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जो  
ज्यजीव करेंगे सो अनंत सुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकढ्याणक  
तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशो ॥ जंबुद्वीप सोहामणो,  
दक्षिणज्जरत उदार ॥ राजग्रही नगरी जखी, अलिकापुर  
अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय  
॥ मनवंडित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राजकरै  
निहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती; शील-  
गुणै अजिराम ॥ श्री० ३ ॥ आवण उज्ज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश  
॥ माताकुक्ति सरोवरै, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४ ॥ जेठ पदम  
पद्म अठमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोदव सुर करै, त्रिजुवन  
हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान ॥ जिनवर लंठन काठवो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री०  
 ६ ॥ परखी नार प्रजावती, जोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख  
 भोगवै, पूरै वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोगांतिक देवता, आ-  
 वि जंघै जयकार ॥ प्रभु फागुण वदि वारसै, लीघो संजम जार  
 ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि वारसै, मनधर निरमल ध्यान ॥  
 ब्यार करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ९ ॥ (दाल १ ॥  
 सुख कारण जवियषा ॥ एदेशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया च-  
 लिया सुरनर कोरि, प्रभुना पदपंकज प्रणमै बेकर जोरि ॥ बेकर  
 जोमी मन्जर जोमी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रि-  
 गमो व्रत्रत्रय जलकंत ॥ सिंहासण बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म  
 प्रकासै, बारै परखदा बैठी आगलि सुपै मन उल्लासै ॥ १० ॥ त-  
 पने अधिकारै पखवासो तप सार, पम्वाधी कीजै पनरह तिथी  
 कदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उप-  
 शम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपोजै वांढी देव उल्लास ॥ तप ऊजमणै  
 रजत पाखणो सोवन पूतलो चंग, मोदकधाल देहरै मूंकी जिन  
 वर सात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरंतर अहुरव दर्शनो जेम, म-  
 नवंछित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति वं-  
 छन जरतार, जस कीरत सोजाग वरुई मद्दियल मंदिमा जाण  
 ॥ परजव मुगति फल लहियै, ए तपने प्रमाण ॥ १२ ॥ धिर आपी  
 चतुर्विध संघतणो अधिकार, जरुवठ प्रमुख नगरादिक करियां वि-  
 हार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंडक पंच सयां परिवार, कार्तिक-  
 सेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सदेस वरष आ-  
 ऊखो पालै जग दया सार, श्रीसम्भतशिखर परमेसर पुढता मुग-  
 ति मजार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक शुशिया त्रिभुवन ताप,  
 मुनिसुव्रतस्वामी बीसमो जिनवर राय ॥ बीसमो जिनवर राय



जगतगुरु जयजंजण जगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरामर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि सीत, वाचक समयसुंदर इम पन्नणै पुरो मनह जगीत ॥ ॥१४॥ इति ॥

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुद्धदिन गुरुके पास तप ग्रहण करकै सुद (१) प-  
निवासै पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करै. जो शक्ति नहीं  
होयतो प्रथम सुदि पक्षकी पनिवा १, दूसरे सुदि पक्षकी दूज, एतें  
अनुक्रमसैं पनरे सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वामी  
के पांच कल्याणक जावगर्हित स्तवन पढ़ै. गुरुका संयोग होय  
तो गुरुके पास सुणै. ( श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस  
पदका १००० दो हज़ार गुणना करै. और तप ग्रहण करणेकी  
तथा देववंदनादिककी विधि पहले लिखी हे उस मुजब विवेकी  
जीव सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणसैं उत्तम फल  
मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पञ्चस्काण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर जगवंत ॥ त्रिगमै  
बैठा जिनवरू, परषद बार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण  
सभे, पूबै श्रीजिनराय ॥ दस पञ्चस्काण किता कहा, कीयां कवण  
'फल आय ॥ २ ॥ (ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी) ॥  
श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांजल गोयम ताम ॥ दस पञ्चस्काण कियां  
अकां, लहिये अविचल गम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी  
३, साढपोरसी पुरिमद ४ ॥ एकासण नीवी कही ६, एकलठाण देवडि ॥  
श्री० ४ ॥ दात ७ आंबिल ए उपवास १० ही, एहिज दस पञ्च  
स्काण ॥ एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करुं वखाण ॥ श्री०  
५ ॥ रतनप्रज्ञा १, सर्करप्रज्ञा २, बाहुक तीजी जाण ॥ पंकप्रज्ञा

४ तिम धूमप्रज्ञा ५, तमप्रज्ञा ६ तमतम ७ ठाम ॥ श्री० ६ ॥  
 नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम  
 वस ते सही, ऊपजै तिणहीज गेर ॥ श्री० ७ ॥ ठेदन जेदन  
 तामना, झूख ठूषा बलि त्रास, रोम २ पीना करै, परमाहम्मी  
 तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल जर नहीं जिहां  
 सुख ॥ किया करम जे जोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री० ९ ॥  
 इक दिनरी नवकारसी, जे करै जाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो  
 आउखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी,  
 ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप बलि पावला, निरमल होवे  
 जी काय ॥ श्री० ११ ॥ ( ढाल १ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो  
 ॥ ए चाल ) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥  
 जावसुं जे पोरसी करै, डुरगति ठेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांदि  
 जै नारकी, वरसैं एक हज्जार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहु-  
 त पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥  
 करम हथैं सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४ ॥ डुरगति  
 मांदि नारकी, दस हज्जार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, सा-  
 दपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमद्ध करै नित जीव जे, नरके  
 ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमद्ध करम खपाय ॥  
 ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा  
 करम एकासणैं, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोनि वरसां  
 लगे, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां जावसुं, डुरगति हणे  
 सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोनि जीव नरकमें, जितरो करै करम  
 दूर ॥ तीतरो एकलगाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात  
 करंता प्राणियो, सो कोनी परिमाण ॥ इतरा वरस डुरगति तणा,  
 ठेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंखिनो फल बहु कह्यो, कोनी

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, जाव आंबिल अधिकार ॥ सु०  
 २१ ॥ कोमि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मज्जार ॥ उपवास  
 करै इक जावसुं, तो पामे सुगति मज्जार ॥ सु० २२ ॥ (हाल ३॥  
 केकड़ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोमि वरसां लगे, नरके क-  
 रता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ बढमं तप करतां थकां, सही  
 नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोमि लाखही,  
 जीव लहै तिहां डुस्कर रे ॥ ते डुख अढमं तपहुंती, दूर करी पामे  
 सुख रे ॥ गो० २४ ॥ बेदन जेदन नारकी, कोमाकोमि वरसोइ  
 रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो०  
 २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोमाकोमि वरसनो पाप रे ॥ दूर  
 करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय वि-  
 शेषे फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे जला,  
 करता त्रिजुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं  
 करै, चवदह पूरब होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां  
 बलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै  
 जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै जेव पार रे ॥  
 गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनं  
 त जवाना पापघ्नी, बूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती  
 पापी तरथा, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें,  
 शिव पार्ष्णो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१ ॥ तपना फल सूत्रे कहा,  
 पञ्चस्काणतणा दस जेद रे ॥ अवर जेद पिण बै घणा, करतां ठेदे  
 त्रय वेद रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ (कलशः) ॥ पञ्चस्काण दस विष फल  
 परुष्या महावीर जिणदेवए, जे करै जविअण तप अखंरित तासु  
 सुर पयःसेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अश्व शशि बलि पोस सुदि  
 दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंड तप विधि

जशे ॥ ३३ ॥ इति दस पञ्चस्काण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पञ्चस्काण तप विधिः ॥

॥ यह दस पञ्चस्काणके स्तवनमें खुदासा दस पञ्चस्काणके जेद नर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक त-  
पस्या करणेके फल जगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब  
उत्तम पुरुषोने रचना करीहै, इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तव-  
नको पढ़के तपस्या करणेमें आदरवंत होता है, नर किसीके दश  
पञ्चस्काण तप करणेकी इच्छा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दु-  
सरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजब १० पञ्चस्काण दस दिवसे  
सेवन करै, तदा स्तवन सुणें पढ़ै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक  
उद्यापन करै, इस तपस्याके प्रज्ञावसे डुरगतिबंध दूर करके अच्छी  
गती पावे, महा एश्वर्यवंत होय, जाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल जेठियै ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेवि-  
यै, घर कर शुज परिणाम लाल रे ॥ तीजै नव सेव्यो थको, बां-  
धे तीर्थकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही,  
ज्ञाताअंग मजार लाल रे ॥ सुणजो नवि तुमे जावसुं, चित्तसें करिय  
उच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहै, वीस थानक  
तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुज महुर्ते, उचरोजै ससनेह लाल  
रे ॥ वी० ३ ॥ अरिहंत ? सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ थिवर ५ उव-  
ज्ञाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाथ ८ दंतेण ए अरु, विनय १० नमूं  
उलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंज १२ क्रियापदे  
१३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७  
ज्ञातने १८ श्रुत जणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥  
वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणानो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, वीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥  
 एक ठंली षट् मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर  
 नवी करणी पमै, पिठली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥  
 ठठ अठम उपवाससुं, अथवा देखी शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर  
 आराधियै, देव वांदै निज जक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपू-  
 रण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदे  
 सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी शिवर  
 पाठक पदै, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही,  
 सात ध्यानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै स-  
 दा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पम्किमणो दोय टंकही, करियै  
 पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक ठंली करो  
 वीस लाल रे ॥ वीसावीसी ग्यारसै, तप संख्या कही एम लाल  
 रे ॥ वी० ११ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित्त  
 धार लाल रे ॥ कान्तसगने परदक्षणा, मुख जणियै नवकारलाल  
 रे ॥ वी० १२ ॥ जिस पदकी स्तवना सुयै, कीजै जिनपद जक्ति  
 लाल रे ॥ पूजन शुज मन साच्यै, दिन२ बढ़ती शक्ति लाल रे  
 ॥ वी० १३ ॥ मृतक जनम कृतकालमें, कबि धारयो उपवास लाल  
 रे ॥ सो लेखे नहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी०  
 १४ ॥ सावझ त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील  
 आचूषण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १५ ॥ जेठ  
 आसाठ वैशाखमें, मिगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए षट् मासे  
 मांहिमें, व्रत ग्रहिये वरुजाग लाल रे ॥ वी० १६ ॥ तप पूरण  
 हुवां थकां, कजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारोनें,  
 उच्चव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १७ ॥ वीस२ गिणती तणा,  
 पुस्तक पूठा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै हठवाद

लाख रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी आर्विका, कीधी विंध चित  
लाय लाख रे ॥ जनस सफल करवा ज्ञानी, उद्दिज मोक्ष उपाय  
लाख रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आझा धार  
चित्त मजार ए, लहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार  
ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंड वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी  
शशि गढ खरतर ज्ञानी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुद्ध महुर्चके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुवि  
हित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक जली दो  
महीनेसे लेकर ठ महीने पूरी करै. कदास ठ महीनेमें पूरी नही कर  
सके तो वो जली गिणतीमें नही. ठर फेर नइ करणी पमती है.  
एक जलीके वीस पद हे ( तहां ) कोइ वीस दिनमें वीस पद  
जुदा गिणते हे, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरे  
वीशों दिनमें दूसरा पद, ऐसे वीशों पदकी वीश जली करै. तिहां  
पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अष्टम तप करिके आराधै. वीश  
अष्टमसे एक जली होय ( ऐसे ) वीस जली ४०० से अष्टमसे आ  
राधै. और उससे कम शक्ति होय तो षष्ठसे आराधै. उससे कम  
शक्ति होय तो चोविहार उपवास करिके आराधै. उससे हीन शक्ति  
होय तो त्रिविहार उपवास करिके आराधै. उससे हीनशक्ति आंबिख  
( तथा ) त्रिविहार एकाशना करिके आराधै, उसमें जो शक्तिवान  
होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै. हीनशक्ति  
दिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेती आराधै. जो पोसह शक्ति  
सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, शिष्य  
पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, ठर तीर्थपद-  
में ७, यह सात आनक पद तो पोसह करकेही आराधै, जो इतनी

ज्री शक्ति नहीं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार  
 बोनै, सो शक्ति ज्री नहीं होय तो यथाशक्ति तप करै आराधै,  
 अपणी हीणता जावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप  
 नहीं गिणै जावै, स्त्रियां ज्री ऋतुसमयका तप नहीं गिणै, तथा तपके  
 दिन पोसह सहित करै तो व्होत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो  
 सके तो तपके दिन उज्जय टंक पम्क्कमण करै, तीन टंक देववन्दन  
 करै, दो हज्जार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, जूमि शयन  
 करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नहीं करै, असत्य नहि बोले,  
 सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे  
 तो पारणोके दिन जिनजक्ति करै पारणा करै, जो तपके दिन पो-  
 सह नहीं होय तो उसी दिन श्रीजिनजक्ति करै करावै, जावना  
 जावै तथा तपके दिन तप पदके गुण जेद प्रमाण संख्यासैं काउ-  
 सग्न करै, इतनाही तजुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदशा करै,  
 उस पदका गुण याद करै उदात्त स्वरसैं स्तवना करै, हर्षित रहै॥  
 ॥ अथ बीस स्थानक गुणना और काउसग्नका प्रमाण लिखते है॥

( एमो अरिहंताण ) २००० गुणना लोगस्त १२ का काउ-  
 सग्न ॥ १ ॥ ( एमोसिद्धाणं ) २००० गुणना लोगस्त १५ का का-  
 उसग्न ॥ २ ॥ ( एमो पवयणस्त ) २००० गुणना लोगस्त ७  
 का काउसग्न ॥ ३ ॥ ( एमो आयरिआणं ) दो हज्जार गुणना  
 लोगस्त ३६ का काउसग्न ( एमो थेराणं ) दो हज्जार गुणना  
 लोगस्त १५ का काउसग्न ॥ ५ ॥ ( एमो उवझायाणं ) दो ह-  
 ज्जार गुणना लोगस्त ३५ का काउसग्न ॥ ६ ॥ ( एमो जोए सब  
 सादूणं ) दो हज्जार गुणना लोगस्त २७ का काउसग्न ॥ ७ ॥  
 ( एमो नाणस्त ) दो हज्जार गुणना लोगस्त ५ का काउसग्न ॥  
 ॥ ८ ॥ ( एमो दंसणस्त ) दो हज्जार गुणना लोगस्त १७ का

काठसग ॥ ए ॥ ( एमो विषयसंप्रसारणं ) दो हज्जार गुणना  
 लोगस्त १० का काठसग ॥ १० ॥ ( एमो चारित्तस्त ) दो ह-  
 ज्जार गुणना लोगस्त ६ का काठसग ॥ ११ ॥ ( एमो बंजवय  
 धारीणं ) दो हज्जार गुणना लोगस्त ए का काठसग ॥ १२ ॥  
 ( एमो किरिआणं ) दो हज्जार गुणना लोगस्त २५ का काठसग  
 ॥ १३ ॥ ( एमो तवस्तीणं ) दो हज्जार गुणना लोगस्त १५ का  
 काठसग ॥ १४ ॥ ( एमो गोयमस्त ) दो हज्जार गुणना लोगस्त  
 १७ का काठसग ॥ १५ ॥ ( एमो जिशाणं ) दो हज्जार गुणना  
 लोगस्त १० का काठसग ॥ १६ ॥ ( एमो चरणस्त ) दो हज्जार  
 गुणना लोगस्त १५ का काठसग ॥ १७ ॥ ( एमो नाशस्त ) दो  
 हज्जार गुणना लोगस्त ५ का काठसग ॥ १८ ॥ ( एमो सुअना-  
 षस्त ) दो हज्जार गुणना लोगस्त १० का काठसग ॥ १९ ॥  
 ( एमो तिष्ठस्त ) दो हज्जार गुणना लोगस्त ५ का काठसग करै  
 ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों उलीमें सर्व पदके उच्चव महो-  
 च्चव प्रज्ञावना कजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते  
 इतनी शक्ति नहीं होय तो एक उली तो विशेष उच्चवादिक संयुक्त  
 करणी चाहियै. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसैं वीश स्थानक सेवनविधि  
 संक्षेप मात्रसैं लिखी है. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसैं  
 वीशों पदकी जुदीर विधि गुरुके मुखसैं समझके करै. जो गुरुका  
 संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखकै वीस स्था-  
 नक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढ़ै, वीस  
 स्थानकजीकी पूजा करावै, अथवा शक्ति माफक वीसर ज्ञानोप-  
 करण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते  
 लगावे, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,



साहमी वछल कैर, इत्यादिकं इवै उर जावै विधि संयुक्त शुद्ध  
जावसैं जो जव्यजीव यह बीस स्थानक पदकों सेवन करेंगें सो  
जिन नाम कर्मकों उपार्जन करकैं तीसरै जव अनंत सुखकों प्राप्त  
होंगें, इत्यलंविस्तरेण ॥ इति बीस स्थानक तप उल्लो विधि सं० ॥

॥ अथ बीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

एमोणंतविन्नाएसदंसणाणं, सहाणंदियातेसजंतूगणाणं ॥  
जवज्जोवविन्नयणेवारणाणं, एमोवोदियाणं वाराणं जिणाणं ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हज्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनें पूजा ॥ अथ  
सिद्धपूजा ॥ लोगगजागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमशि-  
दियाणं ॥ निस्सेसकम्मस्सक्यकारणाणं, एमोसयामंगलधारणाणं ॥  
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेज्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥  
अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुस्संधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-  
णदयागिहस्स, एमो२ संधचन्नविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः  
॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरुसिंधुराणं, सुरीसरणां-  
मुणिबंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, एमोसयामंगलमंदिराणं ॥  
४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-  
त्तसंयमपतितजविजन अतिहधिरकरताज्जला ॥ अवगुणअडुषित  
गुणविज्जुषित चंडकिरणसमोज्जला ॥ अष्टाधिकादसहससीलांगरथ  
रुचिरधाराधरा, जवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोधिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं स्वविरायनमः ॥ अथ षष्ठ पद ॥ सवोदिवीजंकुरुकार-  
णाणं, एमोश्वायगावारणाणं ॥ कुवोदिवदंतीहरिणोसरणां ॥ विष्णो-  
यसंतवप्रयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ ६ ॥ अथ  
सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-  
णं ॥ तन्नाण पज्जायतरुवणाणं, एमो२ होउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ  
ह्रीं श्रीं सम्प्रगुसाधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ उदवपज्जा

यगुणाकरस्त, सयापयासीकरणोधुरस्त ॥ मिञ्चतत्राणातमोद्धरस्त,  
 णमो२ नाणदिवायरस्त ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥  
 ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्त, अणंतसंसारवि  
 दारणस्त ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्त, णमो२निम्मलदंसणस्त ॥  
 ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-  
 पद ॥ आणंदियासेसज्जणस्त, कुंदिंडयादामलताचणस्त ॥ सुध-  
 म्मजुत्तस्तदयासयस्त, णमो२श्रीविणयालयस्त ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं  
 श्रीं सम्यग्विनयैनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-  
 म्मोघकंतरदवानलस्त, महोदयानंदलयाजलस्त ॥ विन्नाणपंकेरुह  
 कारणस्त, णमोचरित्तस्तगुणापणस्त ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चा-  
 रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशन चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-  
 सुदप्पयस्त, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्त ॥ सव्वय्याज्जूषणज्जूषणस्त,  
 नमोदिशीलस्तअदूसणस्त ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ब्रह्मचर्यैनमः ॥ १२ ॥  
 अथ तेरमें किया पद ॥ विशुद्धसद्वाणविज्जूषणस्त, सुलद्धितंपत्तिसु  
 पोषणस्त ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्त, नमो२सुद्धिक्रियापदस्त ॥  
 १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्वक्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥  
 लद्धीसरोजावलितावणस्त, सुरूवसंलग्गसुपावणस्त ॥ अमंगलानो  
 कुहडुवस्त, नमो२निम्मलसत्तवस्त ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्वतव-  
 से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविज्जाकर  
 स्त, डुवालसंगीकमलाकरस्त ॥ सुलद्धासाजयगोयमस्त, नमोग्ग  
 णाधीस्तरगोयमस्त ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गौतमायनमः ॥ अथ  
 सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्ससत्तातिसयासयाणं, सुरा२धी सर-  
 वंदियाणं ॥ रवींडुर्विबामलसगुणाणं, दयाधणाणंहिनमोजिणाणं  
 ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जिनेज्ज्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद  
 ॥ सत्तिंदियापारविकारदारी, अकारणासेसज्जणावेगारी ॥ महाज्ज-

वातंकरणापहारी, जयोत्सदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्री  
 सम्यग्चारित्रधारी नमः ॥ १४ ॥ अथ अठारहें ज्ञानपदपूजा  
 ॥ शुद्धक्रियामंरुलमंरुणस्त, संदेहसंदोहविखंरुणस्त ॥ मुत्तीउपादा  
 नसुकारणस्त, नमोहिनाणस्तजसोधणस्त ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्री  
 सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १५ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव  
 ह्नीवनवारणस्त, सुबोहिबीजांकुरकारणस्त ॥ अर्णातसंसुद्धगुणाव-  
 यस्त, नमोदयामंदिरसठयस्त ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्श्रुतयै  
 नमः ॥ १६ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुच्यंनमःसकलविश्ववशं  
 कराय, तुच्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुच्यंनमःसुवनमंरुल  
 मंरुनाय, तुच्यंनमोस्तुजिनपंकविखंरुनाय ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री स  
 म्यग्तीर्थपदेच्योनमः ॥ १७ ॥ ध्वजासमेत अष्ट इव्य चढावै (पीठे)  
 ६४ इंडपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधमेंझायनमः १ ॥ ॐ इशाणें  
 जायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंझायनमः ३ ॥ ॐमाहेंझायनमः ४ ॥  
 ॐब्रह्मेंझायनमः ५ ॥ ॐलांतकेंझायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंझायनमः ॥  
 ७ ॥ ॐसहस्रारेंझायनमः ॥ ८ ॥ ॐप्राणतेंझायनमः ॥ ९ ॥ ॐअ-  
 च्युतेंझायनमः ॥ १० ॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ॥ ११ ॥ ॐसूर्येंद्रायनमः ॥ १२ ॥  
 ॐचमरेंद्रायनमः ॥ १३ ॥ ॐवर्लींद्रायनमः ॥ १४ ॥ ॐधरेंद्राय  
 नमः ॥ १५ ॥ ॐभूतानेंद्रायनमः ॥ १६ ॥ ॐवेषुदेवेंद्रायनमः ॥ १७ ॥  
 ॐवेषुदार्लींद्रायनमः ॥ १८ ॥ ॐहरिकितेंद्रायनमः ॥ १९ ॥ ॐहरिस्त  
 हेंद्रायनमः ॥ २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनमः ॥ २१ ॥ ॐअग्निमाण  
 वेंद्रायनमः ॥ २२ ॥ ॐपूणेंद्रायनमः ॥ २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः  
 ॥ २४ ॥ ॐजलकितेंद्रायनमः ॥ २५ ॥ ॐजलप्रजेंद्रायनमः ॥ २६  
 ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः ॥ २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः ॥ २८ ॥  
 ॐवेलवेंद्रायनमः ॥ २९ ॥ ॐप्रज्जनेंद्रायनमः ॥ ३० ॥ ॐघोषें  
 जायनमः ॥ ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनमः ॥ ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ उँमहाकालेद्रायनमः ॥ ३४ ॥ उँसरूपेद्रायनमः ॥ ३५ ॥  
 उँप्रतिरूपेद्रायनमः ॥ ३६ ॥ उँपूर्णज्ञेद्रायनमः ३७ ॥ उँमाणज्ज्ञेद्राय  
 नमः ॥ ३८ ॥ उँज्ज्ञेद्रायनमः ॥ ३९ ॥ उँमहाज्ज्ञेद्रायनमः ॥  
 ४० ॥ उँकिन्नरेद्रायनमः ॥ ४१ ॥ उँकिंपुरुषेद्रायनमः ॥ ४२ ॥ उँसत्पुरुषे  
 द्रायनमः ॥ ४३ ॥ उँमहापुरुषेद्रायनमः ॥ ४४ ॥ उँअमितकार्येद्रायनमः ॥  
 ४५ ॥ उँमहाकार्येद्रायनमः ॥ ४६ ॥ उँगीतरतींद्रायनमः ॥ ४७ ॥ उँगीत-  
 यज्ञेद्रायनमः ॥ ४८ ॥ उँसन्निहितेद्रायनमः ॥ ४९ ॥ उँसामानि-  
 केद्रायनमः ॥ ५० ॥ उँधार्त्रेद्रायनमः ॥ ५१ ॥ उँविधार्त्रेद्रायनमः  
 ॥ ५२ ॥ उँरुषिंद्रायनमः ॥ ५३ ॥ उँरुषिपालतेद्रायनमः ॥ ५४ ॥  
 उँइश्वरेद्रायनमः ॥ ५५ ॥ उँमहेश्वरेद्रायनमः ॥ ५६ ॥ उँवत्सेद्रा-  
 यनमः ॥ ५७ ॥ उँविसालेद्रायनमः ॥ ५८ ॥ उँहास्येद्रायनमः ॥  
 ५९ ॥ उँश्रेयसेद्रायनमः ॥ ६० ॥ उँहास्यस्तेद्रायनमः ॥ ६१ ॥  
 उँपदगेद्रायनमः ॥ ६२ ॥ उँपदगपतेद्रायनमः ॥ ६३ ॥ उँमहाश्रे-  
 येद्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसगइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-  
 देवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ उँरोहिण्यैनमः ॥ १ ॥ उँ-  
 प्रज्ञातैनमः ॥ २ ॥ उँवज्जश्रृंषलायैनमः ॥ ३ ॥ उँवज्जाकुशायैनमः  
 ॥ ४ ॥ उँचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ उँपुरुषदत्रायैनमः ॥ ६ ॥ उँका-  
 ल्यैनमः ॥ ७ ॥ उँमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ उँगौर्ध्यैनमः ॥ ९ ॥ उँ  
 गंयार्ध्यैनमः ॥ १० ॥ उँमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ उँमानव्यै-  
 नमः ॥ १२ ॥ उँवैरोव्यायैनमः ॥ १३ ॥ उँअवुसायैनमः ॥ १४  
 ॥ उँमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ उँमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति षो-  
 रुश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ अथ २४ यक्षपदे सो-  
 पारी चढावै ॥ ॥ उँब्रह्मशांतियैनमः ॥ २४ ॥ उँपा-  
 र्श्वयक्षायनमः ॥ २३ ॥ उँगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ उँनृकुट्यैनमः  
 ॥ २१ ॥ उँवरुणायनमः ॥ २० ॥ उँकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ उँय-

कैशायनमः ॥ १८ ॥ नैगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ नैगरुद्रायनमः ॥  
 १६ ॥ नैकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ नैपातालायनमः ॥ १४ ॥ नैय-  
 एमुखायनमः ॥ १३ ॥ नैकुमारायनमः ॥ १२ ॥ नैयक्षराजाय-  
 नमः ॥ ११ ॥ नैब्रह्मण्येनमः ॥ १० ॥ नैअजितायनमः ॥ ९ ॥  
 नैविजयायनमः ॥ ८ ॥ नैमातंगायनमः ॥ ७ ॥ नैकुसुमायनमः ॥  
 ६ ॥ नैतुंबुर्येनमः ॥ ५ ॥ नैरुक्तायकायनमः ॥ ४ ॥ नैत्रिमुखा-  
 यनमः ॥ ३ ॥ नैमहायकायनमः ॥ २ ॥ नैगोमुखायनमः ॥ १ ॥  
 इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥  
 नैचक्रेश्वर्येनमः ॥ १ ॥ नैअजितवलयैनमः ॥ २ ॥ नैउरितायैनमः  
 ॥ ३ ॥ नैकालिकायैनमः ॥ ४ ॥ नैमहाकाट्यैनमः ॥ ५ ॥ नैश्या-  
 म्नायैनमः ॥ ६ ॥ नैशांतायैनमः ॥ ७ ॥ नैभूकुट्यैनमः ॥ ८ ॥  
 नैसुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ नैअशोकायनमः ॥ १० ॥ नैमानव्यैनमः  
 ॥ ११ ॥ नैचंदायनमः ॥ १२ ॥ नैविदितायैनमः ॥ १३ ॥ नैअंकु-  
 शायैनमः ॥ १४ ॥ नैकंदपार्येनमः ॥ १५ ॥ नैनिर्वीर्यैनमः ॥  
 १६ ॥ नैबलायैनमः ॥ १७ ॥ नैवारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ नैधरणाप्रियायैनमः  
 ॥ १९ ॥ नैनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ नैगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ नैअं-  
 बिकायैनमः ॥ २२ ॥ नैपद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ नैलिङ्गायै-  
 नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ नैनैसर्पका-  
 यनमः १ ॥ नैपांडुकायनमः २ ॥ नैपिंगलायनमः ३ ॥ नैसर्वरत्नायनमः  
 ४ ॥ नैमहापद्मायनमः ५ ॥ नैकालायनमः ६ ॥ नैमहाकालायनमः  
 ७ ॥ नैमाणवायनमः ८ ॥ नैशंखायनमः ९ ॥ इति नव  
 निधान पदे ए कलश चढावे ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥  
 नैविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ नैक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ नैचक्रेश्व-  
 र्यैनमः ॥ ३ ॥ नैधरणेंद्रायनमः ॥ ४ ॥ नैपद्मावत्यैनमः ॥ ५ ॥  
 नैशंखायनमः ॥ ६ ॥ नैअय्येनमः ॥ ७ ॥ नैयमायनमः ॥ ८ ॥

ॐ नैऋताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ वायव्ये नमः ॥ ६ ॥  
 ॐ कुबेराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ नागाय नमः ॥ ९ ॥  
 ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥ १ ॥  
 ॐ चंद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्योत्स्नाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ध्रुवाय नमः ॥ ४ ॥  
 ॐ श्वेताय नमः ॥ ५ ॥ ॐ शुक्राय नमः ॥ ६ ॥ ॐ शनैश्वराय नमः  
 ॥ ७ ॥ ॐ राहवे नमः ॥ ८ ॥ ॐ केतवे नमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह  
 नाम ॥ इहां बीस स्थानक मंत्र पूजनकी विधि विशेष लिखी  
 है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंत्र प्रतिष्ठा  
 वल्लभाकुलादिककी संपूर्ण विधि नवग्रह मंत्र पूजामें लिख आए  
 हे उस मुजबूदी करणी । फेर विशेष विधि कराणी होय तो वि-  
 छजन गुरुकों पूठके करणी ॥ इति बीसस्थानक मंत्र पूजा वि० सं॥  
 ॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शशश देवत सामणी ए मुज सानिध कीजै, जुलौ  
 अक्षर जगति जणी सन्जई दीजै ॥ मोटो तप रोहिण तपो ए  
 जिणरा गुण गाई, जिम सुख सोहग संपदा ए वंजित फल पाई ॥  
 १ ॥ इक्षिण जरते अंगदेस ठै चंपानयरी, मधवा राजा राज्य करै  
 तिण जीता वधरी ॥ पाटतणी राणी रूवनी ए लखमी इण नामै,  
 आठ पूत्र जाया जिये ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे  
 कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठों पूत्रों ऊपरां ए तिण लागै प्यारी  
 ॥ बाधै चंडतणी कला ए जिम पख ऊजवालै, तिम ते कुमरी थाय  
 माय पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवनी ए घर अंगण वैठी,  
 दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन जुवन विच एहवी  
 ए नदी दूजी नारी, रंजा पत्तमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥  
 ॥ पुरुष न दोषै कोइ इसो जिणने परणां, आख्या आगल साल  
 वधै तिण चयन न पां ॥ देशना राजवी ए ततखिण तेमाया,

संबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक  
 राजातणो ए ठै कुमर सोजागी, कन्याकैरी आंखनी ए तिणसेती  
 लागी ॥ ऊजा देखै सकल लोक चढ़िया केइ पाखा, चित्रसेनरे कंठ  
 ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार,  
 रलियायत अयो देखने ए सरो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक ब  
 खत कन्यारो जामो, वीतशोकनो कुमर अयो सिर ऊपर  
 लामो ॥ ७ ॥ इम विवाह अयो जलो ए दीया दान अपार ॥  
 घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र  
 जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस  
 लीधो ॥ ८ ॥ ( ढाल-प्रभु प्रणमुं रे पास जिणोसर थंजणो ॥ ए  
 देशी ) ॥ तिण नगरी रे चित्रसेन राजा अयो, सुख मांही रे  
 केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा जला,  
 चढ़ते पख रे चंद्र जिसी चढ़ती कला ॥ ( उल्लाखो ) चढ़ती कला  
 हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी जूमी कंतसेती करै क्री  
 ना अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो,  
 पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ ( चाल )  
 इक कामण रे गोख चढ़ी ड़े पनी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे  
 खनी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण  
 अधिकेरो ड़ख हुं ॥ ( उल्लाखो ) ड़ख हुवो देखी रोहिणी हिव  
 कहै इम प्रीनम जणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा  
 धणी ॥ एहवो नाटक आज तांई में कदे देख्यो नही, मुऊने त-  
 मासो अने हासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ ( चाल ) इण वचनै  
 रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीना नवि लहै ॥ ए  
 ड़खणी रे पूत्र मुओ तरुपरु करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥  
 ( उल्लाखो ) जाणै तरै तूं वात ड़खनी गरवगहली कामनी, इम

कद्दी राजा हाथ जाख्यो तेहना बालकजणी ॥ सातमा जूयधी  
 तलै नारख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र  
 नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ ( चाल ) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै  
 करी, थयो मुरवित रे रोवै अति आंखया जरी ॥ परतो सुत रे  
 सासणदेवत जाखियो, कंचनमयरे सिंहासण वैसारियो ॥ ( उल्लाखो )  
 वैसारियो कर जोरु आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ  
 हसावै पायपंकज सेवता ॥ ऊनो जूपतने अचंनो देख ए कारण  
 कियो, जो कोइ ग्यानी गुरु पवारै पूठियै सांसो इसो ॥ १३ ॥  
 ( चाल ) चिंतवतां रे चारनिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो  
 वंदणने तिसै ॥ सुख देशना रे पूठे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी  
 रे पूरवज्जव बालकतणो ॥ ( उल्लाखो ) बालकतणो जव जूप पूवै  
 कहै इषा पर केवली, रोहणी राणीनो जवांतर अने राजानो बली  
 ॥ श्रीगुरु पासे पाठलै जव रोहणी तप आदर्यो, तपतणो सगते  
 साधुजगते तुम्ह जवसायर तर्यो ॥ १३ ॥ ( चाल ) कहै राजा रे  
 रोहणितप किम कीजियै, विधि जाखो रे जिम तुम पासे लीजियै  
 ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन  
 राजाजणी ॥ ( उल्लाखो ) राजाजणी विधि एह जंपे चंड रोहणतप  
 आवियै, उपवास कीजै लाज लीजै जली जावना जावियै ॥ बा-  
 रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे  
 कीजै तजी आलस अंगसुं ॥ १४ ॥ ( दाल-वीर सुणो मोरी वीनती  
 ॥ ए देशी ) ॥ तप करियै रोहणितणो, बलि करिये हो ऊजमणो  
 एम ॥ तप करतां पातक टलै, तिस कीजे हो तपसेती प्रेम ॥  
 त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिस आगे हो कीजै वृक्ष अशोक ॥  
 गुणानो बारम जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु शोक ॥ त०  
 ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरित्रियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीरु ॥



विधिसुं पुस्तक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ त० १७ ॥  
 सेवा कीजै साधूनी, बलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोबीजे  
 साहमी, मनरंगे हो करष पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोछी पूं-  
 ढना, भित लेखण हो जिलमिल सुजगीस, नवकरवाली बीटणा,  
 गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण  
 दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहशि आदरै,  
 ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (ढाल-धरम करो जिनवर  
 सणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानीगुरु परकासे  
 रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थकर पासे रे ॥ ५० २१ ॥  
 इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने  
 रोहणी, मन सूधै संजम लीधो रे ॥ ५० २२ ॥ आठै पूत्रे आदरी,  
 दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ बलि नानाविध तप तपै, धरमतणी  
 मति जागे रे ॥ ५० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल  
 शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित  
 लाया रे ॥ ५० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तवियो शिव-  
 पुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिबतणी, हिव पुन्ये सेवा पामी रे  
 ॥ ५० २५ (कलश) ॥ इम गगन डुगमुनि चंद्र वरसे ( १७२० )  
 चोथ आवण सुदि जली ॥ में कही रोहणतणी महिमा सुगुरु सु  
 ख जिम सांजली ॥ वासुपूज्य अमने अया सुप्रज्ञान चितनी चिंता  
 हली, श्रीतार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्या फली ॥  
 २८ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करै, रोहणी न-  
 हत्रके दिन उपवास करै, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूजन  
 करै, अगि अष्ट मंगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढ़ावै, देव वंदना-

मे प्रनिद्ध ज्ञेय, उक्त शास्त्रोंमें जगत्पुण्य श्रीमाधुगुणसें विगजमान  
चर्मशोलगणिः परमगुरु ज्ञेय, जिनोके शिष्य पंडित, श्रीकुशलनि  
धानमुनिः ज्ञेय, उक्त परमपुरुषदापूज्य मादाराजका चरणान्नचं  
चर्माक उ० श्रीगमलालगणिः ने शिष्यमंडली पं०। हेमचंद्रमुनिः वि०।  
हेमचंद्र अमरचंद्रादि शिष्योके तथा पाठशाला श्रीवीकानेर वास्तव्य  
अनेक विद्यार्थियोंके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्तव्य सर्व जी  
वोके उपगामार्थ उपायके प्रसिद्ध करा हे.

विकाणा पुस्तक मिलणे का वीकानेर ब्रम्हा उपगम विद्या-  
शाला उ० श्री। परमोपगारी युक्तिवारिधिः। रामलालज। गणिः ॥

